Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha

MAHASANGAM

तर्पण

2017

पितृपक्ष मेला, गया (बिहार)

जिला प्रशासन गया की प्रस्तुति

भगवान् विष्णु का श्रृंगार विभूषित
पूज्य-चरण

4-designer.com

Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha MAHASANGAM

तर्पण

2017

स्मारिका

प्रकाशक

जिला प्रशासन, गया

स्मारिका परिवार

संरक्षक

कुमार रवि, भा०प्र०से०
जिला पदाधिकारी, गया

प्रधान सम्पादक

गोवर्द्धन प्रसाद 'सदय'

संयोजक

दिलीप कुमार देव
उप-निदेशक
सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग

सम्पादक-मण्डल

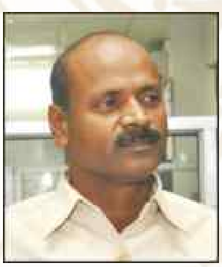

कंचन कुमार सिन्हा

डॉ० कृष्ण देव मिश्र

डा० सच्चिदानन्द प्रेमी

डॉ० राम सिंहासन सिंह

डा० राकेश कु. सिन्हा 'रवि'

डा० ब्रजराज मिश्र

केशरी नाथ त्रिपाठी
KESHRI NATH TRIPATHI

सत्यमेव जयते

राजभवन
पटना – 800022
RAJ BHAWAN
PATNA-800022

राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

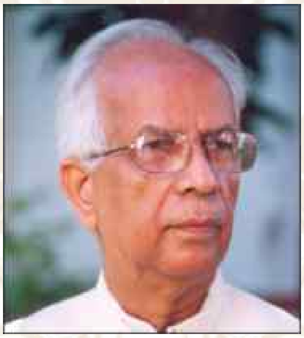

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि विश्वप्रसिद्ध पितृपक्ष मेला आगामी 5 सितम्बर, 2017 से प्रारंभ होकर 20 सितम्बर, 2017 तक जिला प्रशासन, गया के तत्त्वावधान में आयोजित होने जा रहा है।

आशा है, इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली 'स्मारिका' उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

मैं मेला के आयोजन एवं 'स्मारिका' के प्रकाशन की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

(केशरी नाथ त्रिपाठी)

Phone : 0612-2786100-107, Fax : 0612-2786178
e-mail : governorbihar@nic.in

नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री
बिहार

बिहार सरकार

आवास : 1, अणे मार्ग
पटना - 800001

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि पितृपक्ष मेला के अवसर पर जिला प्रशासन, गया ने एक 'स्मारिका' प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस वर्ष यह मेला 05 सितम्बर 2017 से प्रारंभ होगा और 20 सितम्बर 2017 तक चलेगा।

आदिकाल से गया नगर का धार्मिक महत्त्व रहा है। गया ज्ञान, कर्म और अध्यात्म चिन्तन का केन्द्र स्थल है। प्रत्येक साल देश-विदेश से लाखों लोग यहाँ अपने पितरों के आत्मा की शांति के लिए पिण्डदान करने आते हैं और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। बाहर से आनेवाले श्रद्धालु एक पवित्र कामना की पूर्त्ति हेतु यहाँ आते हैं। अतः उनका दर्जा आदृत अतिथि का है। इन्हें हर प्रकार की सुविधा मुहैया कराना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि आने वाले लोग अपने जेहन में इस मोक्षधाम की उत्कृष्ट छवि लेकर लौटें।

आशा है, इस अवसर पर प्रकाश्य 'स्मारिका' गया-महात्म्य का दर्पण होगी।

(नीतीश कुमार)

सुशील कुमार मोदी

उप मुख्यमंत्री

बिहार

बिहार सरकार

पटना

संदेश

यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि विश्वप्रसिद्ध पितृपक्ष मेला इस वर्ष 05 सितम्बर से 20 सितम्बर, 2017 तक आयोजित होगा और इस अवसर पर एक 'स्मारिका' का प्रकाशन भी किया जाएगा। गया की पावन धरती पर आयोजित होने वाले इस पितृपक्ष मेला में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु अपने पितरों की आत्मा की चिर शांति के लिए श्राद्ध, तर्पण एवं पिण्डदान करते हैं।

आशा है, आमजन एवं श्रद्धालुओं को मेला की पौराणिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्ता से अवगत कराने में स्मारिका महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

पितृपक्ष मेला एवं स्मारिका की सफलता हेतु हार्दिक मंगलकामलनायें।

(सुशील कुमार मोदी)

विजय कुमार चौधरी
अध्यक्ष
बिहार विधान सभा

बिहार सरकार

आवास : 2, देशरत्न मार्ग, पटना
फोन : 0612–2217856 (का०)
0612–2217856 (का०)
फैक्स : 0612–2217373
e-mail : vkumarchy@gmail.com

संदेश

प्रसन्नता की बात है कि विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला दिनांक 05 सितम्बर, 2017 से प्रारंभ होकर 20 सितम्बर, 2017 तक चलेगा तथा इस अवसर पर जिला प्रशासन, गया द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं इस आयोजन की सफलता की कामना करते हुए स्मारिका के सम्पादक मंडल को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(विजय कुमार चौधरी)

मो० हारूण रशीद
उप-सभापति
बिहार विधान परिषद्

बिहार सरकार

Md. Haroon Rashid
Deputy Chairman
Bihar Legislative Council

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला, 2017 के अवसर पर गया प्रशासन द्वारा स्मारिका प्रकाशित हो रही है।

हिन्दु-धर्म में यह मान्यता है कि माता-पिता एवं पूर्वजों का श्राद्ध-कर्म एवं पिंडदान गया जी में करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। पितृपक्ष को स्मरण करके जल चढ़ाते हैं, उनका श्राद्धकर्म एवं पिंडदान करते हैं। गया जी में पिंडदान करने का विशेष महत्त्व है। इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों लोग गया जी में आकर अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति एवं उनके मोक्ष प्राप्ति के लिए पिंडदान एवं तर्पण करते हैं। इस पत्रिका प्रकाशन के लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

(मो० हारूण रशीद)

आवास : 11/M, Strand Road, Patna
E-mail : haroonrashid11sep@gmail.com
Tel. + Fax : 0612 - 2215678 (O)
0612 - 2215986
Mob. : 9431250157

कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा

मंत्री

शिक्षा विभाग

बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

Krishnnandan Pd. Verma

Minister

Education Department

Government of Bihar, Patna

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी गया में विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला का 5 सितम्बर 2017 से शुभारम्भ हो रहा है। गया एक सांस्कृतिक नगरी है। यहाँ सदियों से विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच यह मेला पवित्रता एवं आस्था का प्रतीक है।

इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों में तीर्थयात्री यहाँ पधारते हैं और आस्था की इस नगरी में अपने पितरों की मुक्ति के लिए तर्पण एवं पिण्डदान करते हैं। यह सारा अनुष्ठान पितरों के सम्मान तथा उनकी आत्मा की मुक्ति/शांति हेतु ही किया जाता है।

यह हर्ष का विषय है कि इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन जिला प्रशासन, गया की ओर से किया जा रहा है। इस प्रकाशन से विश्वविख्यात पितृपक्ष मेला तथा सांस्कृतिक नगरी गया को नजदीक से समझने का सुअवसर मिलेगा।

इस आयोजन को सफल बनाने की दिशा में गया जिला प्रशासन के सभी अधिकारी, कर्मचारी एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता लगे हैं। मैं अपनी ओर से सभी के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

(कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा)

आवास : 3, स्टैण्ड रोड, पटना - 800015 / कार्यालय : विकास भवन, नया सचिवालय, बिहार, पटना

कार्यालय : 0612-2204904 फैक्स : 2215836

Res. : 3, Stant Road, Patna-800015/Office : Vikas Bhawan, New Secretariat, Bihar, Patna

Phone : 0612-224904 (O), 2215836 (F)

E-mail : ministereducation@gmail.com, Mob. : 9431271328

डॉ० प्रेम कुमार
मंत्री
कृषि विभाग
बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

कार्यालय :
द्वितीय तल, विकास भवन
बेली रोड, पटना (बिहार)
फोन : 0612-2231212 (का.)
फैक्स : 0612-2215526 (का.)
मो० : 9431818702

संदेश

हिन्दू धर्म और संस्कृति में पूर्वजों और पितरों की आत्मा की शान्ति के लिए आश्विन महीने के कृष्ण पक्ष यानी पितृपक्ष में पिंडदान एक अहम् कर्मकांड होता है। बिहार का गया पिंडदान के लिए लिए धार्मिक और पौराणिक रूप से सर्वोत्तम स्थल माना जाता है। पितृपक्ष के दौरान लोग अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति और मुक्ति के लिए पिंडदान करते हैं। इस अवसर पर भारतवर्ष सहित देश विदेश से भी लोग पिंडदान करने आते हैं।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि पितृपक्ष के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह स्मारिका पितृपक्ष में आनेवाले श्रद्धालुओं को इस पवित्र मोक्षधाम के संबंध में और अधिक जानकारी सुलभ कराने में सक्षम होगी।

मैं इस स्मारिका के सफल प्रकाशन की मंगलकामना करता हूँ।

(डॉ० प्रेम कुमार)

प्रमोद कुमार
मंत्री
पर्यटन विभाग
बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

कमरा सं०–72
पुराना सचिवालय, पटना
फोन : 0612-2211242 (का) 2215199 (फै)
E-mail : ministertourismbihar@gmail.com

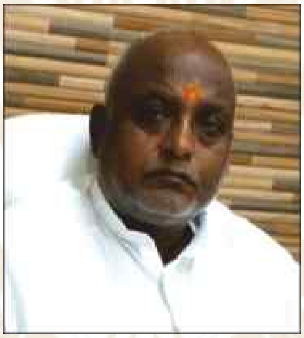

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि गया नगर में विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला दिनांक 05 सितम्बर, 2017 को प्रारंभ हो रहा है। यह मेला दिनांक 20 सितम्बर 2017 तक चलेगा। इस अवसर पर देश-विदेश के लाखों तीर्थ यात्री गया पहुँचकर अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए तर्पण करेंगे। हिन्दुओं के सद्ग्रंथों में ऐसी मान्यता है कि पितृपक्ष में गया में पितरों का पिण्ड दान करने से उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इस अवसर पर जिला प्रशासन के द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। स्मारिका में बिहार के विभिन्न पर्यटक स्थलों एवं गया के पौराणिक एवं धार्मिक महत्त्व का उल्लेख किया जायेगा, जिससे गया आने वालो देशी एवं विदेशी पर्यटकों को काफी लाभ मिलेगा।

मैं पितृपक्ष मेला, 2017 के सफल आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(प्रमोद कुमार)

अंजनी कुमार सिंह, भा०प्र०से०
Anjani Kumar Singh, I.A.S.
Chief Secretary

बिहार सरकार

बिहार सरकार
मुख्य सचिवालय, पटना – 800 015
GOVERNMENT OF BIHAR
Main Secretariat, Patna - 800 015
Tel. No. : 0612-2215804 (O), Fax : 0612-2217085
e-mail : anjani41@yahoo.com

संदेश

विश्व-विख्यात पितृपक्ष मेला दिनांक 05 सितम्बर 2017 से प्रारंभ होने जा रहा है। यह मेला लगभग 15 दिनों तक चलेगा। इस अवसर पर देश-विदेश के लाखों तीर्थयात्री गया पधारते हैं। गया जैसे प्राचीन नगर के नागरिक अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें इस अवसर पर लाखों अतिथियों की सेवा करने का अवसर प्राप्त होगा। हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए गयाजी के नाम से प्रसिद्ध यह तीर्थ-स्थल अत्यंत विश्वास और श्रद्धा का प्रतीक है। पूरे विश्व में यह अकेला स्थान है जहाँ पितरों की आत्मा की चिरशांति के लिए तर्पण तथा पिण्डदान किये जाते हैं।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका से संबंधित व्यक्तियों एवं जिला प्रशासन से जुड़े लोगों के प्रति मेरी शुभकामनाएँ हैं।

मैं हृदय से स्मारिका तथा मेले की सफलता की कामना करता हूँ।

(अंजनी कुमार सिंह)

आर. के. महाजन, भा०प्र०से०
R. K. Mahajan, I.A.S.
Principal Secretary

बिहार सरकार
स्वास्थ्य विभाग
विकास भवन, पटना-800015
GOVERNMENT OF BIHAR
HEALTH DEPARTMENT
VIKASH BHAWAN, PATNA-800015
Tel. : 0612-2215809 / Fax : 0612-2217608
Email : health-bih@nic.in

संदेश

गयाधाम का पितृपक्ष मेला विश्वविख्यात है। बिहार प्रान्त के ऐतिहासिक, पौराणिक एवं पुरातात्विक महत्त्व के गया नगर में प्रतिवर्ष पितृपक्ष में यह मेला आयोजित होता है। इस अवसर पर भारतवर्ष एवं विदेशों के श्रद्धालु यहाँ आकर पिण्डदान कर्म में सम्मिलित होकर अपने पितरों के प्रति सम्मान तथा श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

इस वर्ष भी पितृपक्ष मेला गया नगर में दिनांक 5 सितम्बर 2017 से आरंभ हो रहा है। इस अवसर पर जिला प्रशासन, गया की ओर से एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है। इस स्मारिका द्वारा पितृपक्ष के संबंध में आमजनों तथा श्रद्धालुओं को ज्ञानवर्द्धक सूचनाएँ उपलब्ध होंगी। साथ ही इसमें स्थानीय स्तर पर भाग लेने वाले व्यक्तियों को भी एक सामान्य-सूचना-पुस्त की तरह पर्याप्त जानकारियाँ प्राप्त होंगी।

मुझे इस बात का विश्वास है कि इस मेले के दौरान जिला प्रशासन, गया की स्वयंसेवी संस्थाएँ तथा हर श्रेणी के स्वयंसेवक गया नगर के प्रबुद्ध एवं आम जन निःस्वार्थ भाव से पितृपक्ष मेले में सम्मिलित होने बाहर से आए श्रद्धालु अतिथियों एवं दर्शनार्थियों को आवश्यक सुरक्षा एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

(आर. के. महाजन)

चैतन्य प्रसाद
CHAITANYA PRASAD
(I. A. S.)
प्रधान सचिव
Principal Secretary

बिहार सरकार

बिहार सरकार
नगर विकास एवं आवास विभाग
कमरा नं०-101, प्रथम तल
विकास भवन, बेली रोड, पटना-800015
GOVERNMENT OF BIHAR
Urban Development & Housing Deptt.
Vikas Bhawan, Patna - 800015
Tel. : 0612-2215550/2215580, Fax : 0612-2217059
e-mail : urbansec-bih@nic.in

संदेश

हर्ष की बात है कि ऐतिहासिक और पौराणिक नगरी गया में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पितृपक्ष मेले का आयोजन किया जा रहा है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार पितृपक्ष के अवसर पर गया शहर में फल्गु नदी के तट पर पिण्डदान एवं तर्पण से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसी मान्यता से विश्व एवं देश के हरेक कोने से लाखों श्रद्धालु पिण्डदान करने के लिए गया शहर में एकत्रित होते हैं। यहाँ का विष्णुपद मंदिर एवं अक्षयवट न केवल धार्मिक अपितु इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्त्व को भी दर्शाते हैं।

इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं को एक पावन नगरी में होने की अनुभूति कराने के लिए नगर विकास एवं आवास विभाग कृत संकल्पित है। सरकार की ओर से श्रद्धालुओं के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ एवं साफ-सफाई की विशेष व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है।

श्रद्धालुओं से निवेदन होगा कि प्रबुद्ध नागरिक की भाँति क्षेत्र की स्वच्छता एवं पवित्रता बनाए रखने में अपना बहुमूल्य योगदान सुनिश्चित करेंगे। पितृपक्ष मेले की सफलता की हार्दिक शुभकामनाएँ।

चैतन्य प्रसाद

(चैतन्य प्रसाद)

पंकज कुमार भा०प्र०से०
सचिव
Pankaj Kumar, I.A.S.
Secretary

बिहार सरकार

पर्यटन विभाग, बिहार सरकार
विकास भवन, पटना-800015
Department of Tourism, Govt. of Bihar
Main Secretariat, Patna - 800015
Tel. : 0612-2215531, Fax : 0612-2234194
E-mail : secy-tourism-bih@nic.in

संदेश

दिनांक 05-20 सितम्बर, 2017 तक गया में विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला का आयोजन किया जा रहा है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या तक के काल को पितृपक्ष या श्राद्धपक्ष कहते हैं। हिन्दू धर्म में तीन ऋणों के बारे में बताया गया है - देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। पितृ ऋण के निवारण हेतु पितृ यज्ञ अर्थात श्राद्ध कर्म का वर्णन किया गया है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार पितृपक्ष में तर्पण एवं श्राद्ध करने से व्यक्ति को पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, जिससे घर में सुख-शांति एवं समृद्धि बनी रहती है। पितरों की तृप्ति के लिए श्रद्धा से किया गया तर्पण, पिण्डदान अर्थात् पिण्ड रूप में पितरों को दिया गया भोजन, जल आदि को श्राद्ध कहते हैं। श्राद्ध पितृपक्ष के अंतिम दिन सर्वपितृपक्ष अमावस्या या महालया अमावस्या के रूप में जाना जाता है। महालया अमावस्या पितृपक्ष का सबसे महत्त्वपूर्ण दिन होता है। जिन व्यक्तियों को अपने पूर्वजों की पुण्यतिथि की सही दिन-तारीख पता नहीं होता, वे लोग इस दिन उन्हें श्रद्धांजलि और भोजन समर्पित करते हैं।

मुझे आशा है कि इस वर्ष भी देश-विदेश से लाखों तीर्थयात्री गया पहुँचकर फल्गु नदी के किनारे अपने पितरों की आत्मा की शांति हेतु तर्पण तथा पिण्ड अर्पित करेंगे। मुझे विश्वास है कि इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के माध्यम से गया जिले का पौराणिक माहात्म्य, पितृपक्ष से जुड़ी धार्मिक विशेषताएँ एवं श्रद्धालुओं हेतु की गई व्यवस्थाओं का व्यापक उल्लेख होगा जिससे आने वाले देशी एवं विदेशी श्रद्धालुओं को उनके अनुष्ठान में सहायता मिलेगी एवं उनका ज्ञानवर्द्धन भी हो सकेगा। मैं इस वर्ष होने वाले पितृपक्ष मेला के सफल आयोजन हेतु अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

पंकज कुमार

(पंकज कुमार)

Nayyar H. Khan
I. P. S.
Inspector General of Police
PATNA ZONE
Patna, Bihar

सत्यमेव जयते

Gandhi Maidan, Patna - 800 001
Ph. : 0612 - 2219406
Mobile No. : 9431822950
E-mail : zonalig-patna-bih@nic.in

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पितृपक्ष मेला के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'स्मारिका' प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। यह मेला 05 सितम्बर 2017 से प्रारम्भ होगा और 20 सितम्बर तक चलेगा। गया ज्ञान, कर्म और अध्यात्म चिन्तन का केन्द्र स्थल है। प्रत्येक वर्ष देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए पिण्ड दान करने गया आते हैं। उन्हें सभी प्रकार की सुविधा मुहैया कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी ताकि आने वाले लोग इस मोक्ष धाम की उत्कृष्ट व्यवस्था की छवि को लेकर लौटें।

आशा है यह पवित्र पितृपक्ष मेला शांति, सुव्यवस्था, स्वच्छता एवं सहयोगपूर्वक आयोजित किया जाएगा। पितृपक्ष मेला 2017 के सफल एवं शांतिपूर्ण संचालन तथा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(नैयर हसनैन खान)

Prof. Qamar Ahsan
Ph. D. (Econ.)
VICE-CHANCELLOR

अमृतं तु विद्या
मगध विश्वविद्यालय

MAGADH UNIVERSITY
NH-83, Bodhgaya, Gaya - 824 234. (Bihar) India
Mobile : +91-9431421013
Tele. : +91-631-2222714, 2220387 (R)
Fax : +91-631-2221717 (R), 2200572 (O)
Phone : +91-631-2200495 (O)
Website : www.magadhuniversity.ac.in
e-mail : ahsanparivar@yahoo.com

संदेश

मुझे अति प्रसन्नता है कि पितृपक्ष मेला 2017 के अवसर पर जिला प्रशासन के द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। ज्ञान एवं मोक्ष की भूमि पर आयोजित पितृपक्ष मेला का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व है। अपने पितरों की आत्मा की शान्ति हेतु तर्पण करने देश-विदेश से लोग गया की पावन धरती पर आते हैं। यह हम सबों का परम धर्म है कि गया में जन-सुविधाएँ, शान्ति, सौहार्द का वातावरण बनाए रखने में अपना पूरा सहयोग प्रदान करें।

मुझे पूरी उम्मीद है कि पूर्व की भांति ही गया प्रशासन इस बार भी पितृपक्ष के आयोजन में सफल होगा।

(कमर अहसन)
कुलपति

JITENDRA SRIVASTAVA
I.A.S.
Commissioner
MAGADH DIVISION
GAYA - 823001 (BIHAR)

सत्यमेव जयते

0631 - 2225821 (Office)
2229002 (Resid)
2221641 (Fax)
E-mail : divcom-magadh-bih@nic.in

संदेश

गया धाम का पितृपक्ष मेला अनादि काल से चला आ रहा है। यह मानव की आत्मिक चेतना का एक आध्यात्मिक रूप है। यह हमारी उस चेतना का प्रतीक है, जिससे हम अपने पूर्वजों के प्रति अपने हृदय की श्रद्धा तथा सम्मान अभिव्यक्त करते हैं। साथ ही, हमें यह भी महसूस होने लगता है अथवा यह संदेश भी दृढ़ता के साथ विश्वास के धरातल पर संपुष्ट होता है कि शरीर मरता है, आत्माएँ जीवित हैं और वे हमेशा अपनी संतानों के कल्याण के लिए उपस्थित रहती हैं।

उनके अतिरिक्त लाखों की संख्या में आए हुए तीर्थ-यात्रियों की सेवा करने का जो सौभाग्य गयावासियों को मिलता है, वह अत्यंत सराहनीय है। इसके कारण ही हमारी भारतीय संस्कृति संवर्द्धित होती रही है, संपुष्ट होती रही है।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इस पावन अवसर पर गया जिला प्रशासन द्वारा एक 'स्मारिका' का प्रकाशन हो रहा है। इस स्मारिका के माध्यम से आनेवाले तीर्थ-यात्रियों को पितृपक्ष के महत्त्व तथा गया जैसे सांस्कृतिक नगर को नजदीक से जानने तथा समझने का पुण्य अवसर प्राप्त होगा। मैं 'स्मारिका' के सफल प्रकाशन तथा मेला की पूर्णरूपेण सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(जितेन्द्र श्रीवास्तव)

गरिमा मलिक, भा.पु.से.
वरीय पुलिस अधीक्षक

सत्यमेव जयते

फोन नं० - 0631 - 2225901 (O)
2225902 (R)
मो० : 9431822973

संदेश

यह जानकर काफी प्रसन्नता हो रही है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी नैसर्गिक सुषमा से आच्छादित, समन्वयवादी संस्कृति से आप्यायित, आध्यात्मिक स्पंदन से झंकृत एवं कर्म-ज्ञान-भक्ति से आप्लावित, अन्तःसलिला के पुलिन पर अवस्थित नगर गया में प्रागैतिहासिक काल से आयोजित पन्द्रह दिवसीय पितृपक्ष मेला का दिनांक 05.09.2017 से शुभारंभ हो रहा है। ब्रह्मर्षियों का सत्संग ही कालचक्र के अनवरत प्रवाह-क्रम में वाह्य-कर्मकांड के विधान द्वारा श्रद्धा और आस्था के समेकित रूप से परिवर्त्तित होकर 'पिण्डदान' और 'पितृपक्ष मेला' के स्वानुष्ठान में आयोजित होता रहा है। ईश्वर के सगुण-साकार के प्रतीकात्मक स्वरूप की ब्रह्माण्डलीय सत्ता का पिण्ड में आवाह्न कर निर्गुण-निराकार रूप में विलय का संकल्प ही पिण्डदान है। इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों की संख्या में तीर्थयात्री पधार कर इस आस्था-नगरी में अपने पितरों के लिए पिण्डदान कर मुक्ति हेतु कामना करते हैं।

इस अवसर पर अपनी समस्त प्रशासनिक, अनुशासनिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक ऊर्जा का राशिभूत रूप इस पुनीत अवसर पर समर्पित भाव से निष्काम सेवा द्वारा प्रदान कर सुख, शांति एवं सुरक्षा की भावना को सतत् क्रियामन रखना पुलिस विभाग का मूल उद्देश्य है। 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव' का औपनिषदिक भाव हमारे पुलिस विभाग के समस्त सहकर्मियों के अन्तःकरण में संचरित होता रहे, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

गया नगर के तमाम नागरिकों, पितृपक्ष अनुष्ठान से जुड़े सभी आचार्यों-होताओं, अध्वर्यु, उद्गाताओं एवं अपने विभागीय सहकर्मियों का आह्वान करती हूँ कि अपनी सेवा एवं आतिथ्य भावना से आगत तीर्थयात्रियों को संतुष्ट और प्रसन्न रख कर अपनी गौरवमयी परम्परा को बनाये रखें।

इस शुभ अवसर पर प्रकाश्य 'स्मारिका' के सम्पादक-मण्डल, प्रकाशन से जुड़े नगर एवं जिला प्रशासन के समर्पित सहकर्मीगण एवं सुधी पाठकों के साथ-साथ सभी तीर्थयात्रियों एवं उनके पूर्व पुरुषों को नमन करती हूँ। 'स्मारिका' आर्य-संस्कृति की संवाहिका बनकर गवेषणात्मक तथ्यों से भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करें। इसी शुभकामना के साथ।

(गरिमा मलिक)
वरीय पुलिस अधीक्षक,गया

गया का पितृपक्ष महासंगम

कुमार रवि, भा.प्र.से.

गयाधाम एक धार्मिक तथा सांस्कृतिक नगर है। पिछले डेढ़ वर्षों से मुझे गया को जानने तथा समझने का मौका मिला है और सचमुच यह भगवान विष्णु की कृपा ही है। इस नगर की ईंट-ईंट में धार्मिकता भरी हुई है। चाहे विष्णुपद मंदिर हो या भगवान बुद्ध का मंदिर, हर जगह आस्थावान लोगों की भरपूर भीड़ लगी रहती है। फलतः प्रशासन के लिए बराबर सतर्कता की अपेक्षा रहती है। इस वर्ष पितृपक्ष मेला पांच सितम्बर से बीस सितम्बर तक आयोजित है। यह मेला पहले जिला पदाधिकारी की अध्यक्षता में गठित संवास सदन समिति की प्रत्यक्ष देख-रेख में सम्पन्न होता था। किन्तु बिहार सरकार की अधिसूचना दिनांक 2 सितम्बर, 2014 से इसे राजकीय मेला का दर्जा दिया गया है। जिसके उपरांत राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार सरकार के द्वारा मेला आयोजन के लिए आवंटन उपलब्ध कराया जाता है तथा इस आयोजन में नगर विकास विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, स्वास्थ्य विभाग, पर्यटन विभाग, सूचना एवं जन संपर्क विभाग सहित सभी अन्य विभागों के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है।

पितृपक्ष के अवसर पर देश-विदेश से लाखों की तादाद में यात्री/श्रद्धालु आते हैं। यहाँ ये कुछ दिन रहकर श्राद्ध-कर्म के सभी अनुष्ठानों को सम्पादित करते हैं। अतः इन सभी यात्रियों के स्वच्छ आवासन, स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ वातावरण, स्वास्थ्य, सुरक्षा आदि सभी सुविधाएँ सुनिश्चित कराना जिला प्रशासन का प्राथमिक दायित्व है। इसके लिए जिला प्रशासन के द्वारा चौदह कार्य समितियों का गठन किया गया है। ये समितियाँ विगत चार माह से पूरी सतर्कता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं।

पितृपक्ष मेला क्षेत्र में साफ-सफाई की व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इस दिशा में सभी के समन्वय से यह प्रयास है कि साफ-सफाई के मापदंड पर इस वर्ष का पितृपक्ष महासंगम सर्वश्रेष्ठ हो। हम सभी अवगत हैं कि देश के हर कोने से सनातन धर्मावलंबी पितृपक्ष में गया धाम आते हैं, जिसकी सुविधा का ख्याल रखते हुए इस अवसर पर विभिन्न प्रकार की उपयोगी जानकारियाँ तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओं से संबंधित सूचनाओं को पितृपक्ष महासंगम के अवसर पर विशेष रूप से तैयार वेबसाईट एवं मोबाईल एप्प के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है। पर्यटन विभाग के सौजन्य से राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय टीवी चैनलों पर वीडियों स्पॉट एवं देश के प्रमुख शहरों, यथा पटना, मदुरई, विशाखापट्नम, इन्दौर, जबलपुर आदि शहरों में एफएम रेडियो जिंगल के माध्यम से पितृपक्ष महासंगम में पधारने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है।

पितृपक्ष की अवधि में गया की आबादी लगभग दुगनी हो जाती है, जिससे यहां की आधारभूत संरचनाओं की अतिरिक्त व्यवस्था की आवश्यकता होती है। प्रशासनिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत श्रद्धालुओं के लिए सरकारी स्तर पर भी आवासन की विशेष व्यवस्था की जाती है। श्रद्धालुओं के लिए शुद्ध पेयजल, स्वच्छ शौचालय एवं बेहतर स्वास्थ्य सुविधा की व्यवस्था पूर्व के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए और भी बेहतर किया गया है। प्रतिवर्ष पितृपक्ष के अवसर पर आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के साथ-साथ पूरे साल श्रद्धालुओं के आवागमन को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा अतिरिक्त आधारभूत संरचनाओं के विकास की योजना बनायी जा रही है।

इस स्थान की समृद्ध संस्कृति एवं विरासत को देखते हुए ज्ञान एवं मोक्ष की भूमि के रूप में जग विख्यात गया में पर्यटकीय सुविधाओं को बढ़ाया जा रहा है ताकि पितृपक्ष अवधि एवं सामान्य दिनों में भी

श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को गयाधाम में समुचित सुविधा एवं सत्कार प्राप्त हो सकेगा। लाखों श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा एवं साफ-सफाई सुनिश्चित करने हेतु माननीय मुख्यमंत्री, बिहार के द्वारा स्वयं समीक्षा कर कई निर्देश दिए गए हैं जिसका अनुपालन जिला प्रशासन कर रहा है।

इनके अतिरिक्त पिण्डदानियों तथा तीर्थ-यात्रियों के धार्मिक एवं आध्यात्मिक मनोरंजन की भी व्यवस्था की गयी है। पितृपक्ष की अवधि में प्रतिदिन संध्या समय विष्णुपद परिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रम, भजन-कीर्त्तन तथा प्रवचन होते रहेंगे। दिनभर श्राद्ध-कर्म, पितर-पूजा आदि कर्मकाण्डीय अनुष्ठानों के बाद श्राद्ध-कर्त्ताओं को संध्या बेला में इन कार्यक्रमों से यथेष्ट शान्ति प्राप्त होगी, इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

इसी आध्यात्मिक बेला में तर्पण-2017 का प्रकाशन किया गया है। उद्देश्य यही है कि जो भी तीर्थ-यात्री गया आएँ, उन्हें अपने अनुष्ठानों में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो और वे जब यहाँ से जायें, तो गया की एक अच्छी छवि अपने साथ लेते जायें। तर्पण-2017 के माध्यम से गया धाम, पितृपक्ष तथा पितर-पूजा आदि के संबंध में पौराणिक, पारंपरिक तथा ऐतिहासिक तथ्यों की यथेष्ट जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकेगी। स्मारिका को काफी उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। इसके लिए इसके सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को मैं धन्यवाद देता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि तर्पण-2017 के पाठकों को यह स्मारिका भगवान विष्णु का प्रसाद ही प्रतीत होगा।

अन्त में मैं पितृपक्ष मेला में सफल आयोजन के लिए गया के सभी नागरिकों, स्वयं सेवी संगठनों तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को बधाई देता हूँ। इन सबों के हृदय में गया आने वाले तीर्थ-यात्रियों के लिए सदा सम्मान तथा सेवा-भाव बना रहता है। ये सभी यथासाध्य पूरी सहायता करने तथा सुविधा देने के लिए तैयार रहते हैं। ये उन्हें 'अतिथि देवो भव' समझकर उनकी सेवा में संलग्न रहते हैं। इस सबों का सत्प्रयास ही पितृपक्ष महासंगम की सफलता है।

शुभकामनाओं के साथ।

जिलाधिकारी, गया।

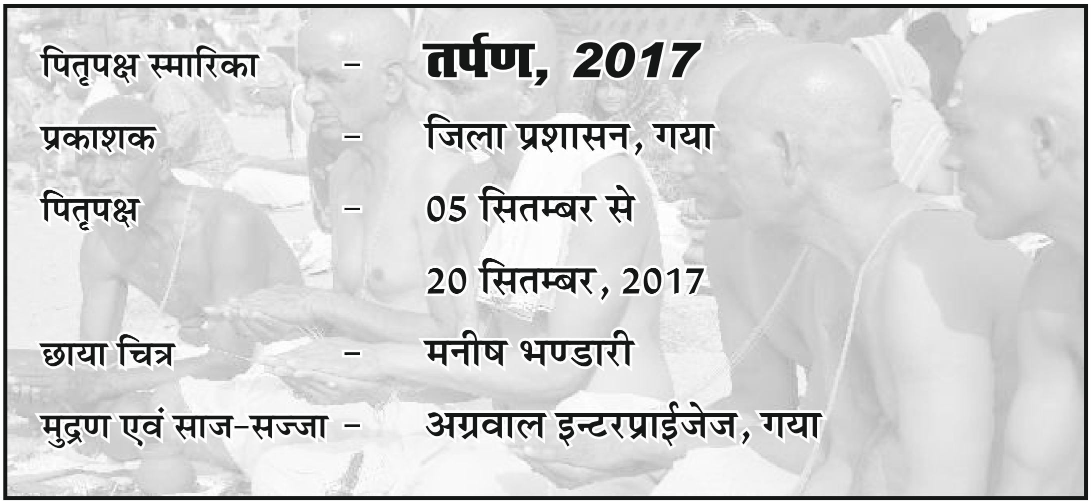

पितृपक्ष स्मारिका - **तर्पण, 2017**

प्रकाशक - जिला प्रशासन, गया

पितृपक्ष - 05 सितम्बर से 20 सितम्बर, 2017

छाया चित्र - मनीष भण्डारी

मुद्रण एवं साज-सज्जा - अग्रवाल इन्टरप्राईजेज, गया

स्मारिका के सम्पादन-कार्य से जुड़े सभी सदस्य अवैतनिक हैं। स्मारिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों के लिए स्वयं लेखक-गण उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय	श्री गोवर्द्धन प्रसाद सदय	–	1
2.	गया धाम में श्राद्ध का महत्त्व	ज० रा०स्वा० श्री बेंकटेश प्रपन्नाचार्य	–	3
3.	उत्तमोत्तम तीर्थ गया धाम	आचार्य लालभूषण मिश्र याज्ञिक	–	6
4.	त्रिभि: पुत्रस्य पुत्राता	डॉ० कृष्णदेव मिश्र	–	8
5.	तीर्थ श्रेष्ठ गयाधाम	श्रीमती डॉ० मंजू दूबे	–	11
6.	गया-श्राद्ध एवं पिण्डदान का महात्म्य	डॉ० ब्रजराज मिश्र	–	12
7.	पितृपक्ष का वैदिक विवेचन	डॉ० राधानंद सिंह	–	14
8.	गया-धाम वैष्णव शैव और शाक्त मत का समन्वय स्थल	आचार्य सुबोध कुमार मिश्र	–	16
9.	श्रद्धा, श्राद्ध और श्रद्धेय	डॉ० बच्चू शुक्ल	–	18
10.	गया धाम में पिण्डदान का आध्यात्मिक पक्ष	श्री राजेश चौधरी	–	20
11.	उत्तराधिकार और श्राद्ध का सम्बन्ध	श्रीमती अनुराधा प्रसाद	–	21
12.	राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जीवन-दर्शन	श्री द्वारिको सुन्दरानी	–	23
13.	विनोबा भावे का शैक्षणिक चिंतन एवं दर्शन	डॉ० यू० एस० प्रसाद	–	24
14.	गुरू-ज्ञान	डॉ० दिव्या सिन्हा	–	26
15.	भारतीय संस्कृति का अटूट अंग है पितृयज्ञ	श्री कंचन	–	27
16.	ब्रह्म ज्ञानं गया श्राद्धम्	डॉ० राम सिहासन सिंह	–	29
17.	योगीराज बाबा गम्भीर नाथ जी और गया धाम	प्रो० महेश कुमार शरण	–	33
18.	राष्ट्रधर्म, युवाधर्म एवं गीता	डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी	–	37
19.	भगवान विष्णु, वैष्णव तत्त्व और गया	डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'	–	39
20.	हमारी परम्पराएँ - हमारी विरासत	सुश्री रेणुका पालित	–	42
21.	गया जी को समझिए, गया जी को परखिए	श्री मुकेश कुमार सिन्हा	–	43
22.	सीता जी का निर्वासन क्या बिहार में हुआ था?	सुश्री प्राची प्रज्ञा	–	44
23.	मृत्यु अटल सत्य	श्री शिव देव प्रसाद	–	47
24.	पितृपक्ष : पुरखों के आशीर्वाद की अद्भुत कहानी	श्री अनिल सक्सेना	–	48
25.	तीन अनमोल वरदान	श्री अशोक कुमार सिन्हा	–	49

26.	**आत्मज्ञान ही है ब्रह्म ज्ञान**	डॉ० संकेत नारायण सिंह	–	52
27.	**नाम जपत मंगल दिसि दसहू**	सुश्री गीता कुमारी	–	54
28.	**संतोषं परमं सुखम्**	श्री सुमन्त	–	55
29.	**परिवार में पितृदोष : कारण एवं निदान**	प्रो० राधे मोहन प्रसाद	–	57
30.	**देशी-विदेशी अभिलेखों में गया**	डा० शत्रुध्न दांगी	–	58
31.	**मुण्डकोपनिषद् में वर्णित दर्शन**	डॉ० श्रीकांत भारवि	–	61
32.	**संस्कारों एवं व्रतों का महत्व**	डा० मंजु शर्मा	–	63
33.	**बोधगया स्थित जगन्नाथ मंदिर**	श्री राकेश कुमार कुन्नु	–	65
35.	**गया जी के परिप्रेक्ष्य में वैराग्य और गृहस्थ**	श्री राम वचन सिंह	–	67
33.	**मगह गयादिक तीरथ जैसे**	डॉ० कमला गोखरू	–	68
36.	**मंदिरों के नगर में**	सुश्री सुमित्रा कुमारी	–	70
37.	**इक्कीसवीं सदी में गया का शैक्षणिक वातावरण**	डॉ० मनोज कुमार अम्बष्ट	–	70
38.	**वृषोत्सर्गसमं किञ्चित् साधनं न दिवः परम्**	डॉ० रामनिहोर पाण्डेय	–	73
38.	**गया श्राद्ध का समाजशास्त्र**	श्री राजेन्द्र तिवारी	–	77
39.	**जन्म-मरण चक्र का अभाव ही मोक्ष**	प्रो० अरूण कुमार प्रसाद	–	78
40.	**गया श्राद्ध एवं तर्पण से पितरों की मुक्ति**	डॉ० कौशल किशोर पाण्डेय	–	79
41.	**गया तीर्थ में पार्वण श्राद्ध और मातृषोड्शी का महत्व**	श्री विजयानन्दन	–	80
42.	**पुराणों की दृष्टि में – गया तीर्थ**	पं० दया शंकर उपाध्याय	–	82
43.	**पितृ-यज्ञ मनुष्य को दिव्य बनाता है**	श्री अनिल स्वामी	–	85
44.	**आर्षग्रन्थों में गया**	डॉ० राम निरंजन परिमलेन्दु	–	87
45.	**पितृ-मुक्ति की भूमि-गयाधाम**	डॉ० सत्येन्द्र प्रजापति	–	88
46.	**हे गयाजी नमन तुम्हें**	श्री कमल नयन	–	90
47.	**मन के हारे हार है मन के जीते जीत**	डॉ० नलिनी राठौर	–	92
48.	**बेटा! सुनो .... और जरा समझो**	आचार्य नवीन चन्द्र मिश्र 'वैदिक'	–	94
49.	**'श्राद्ध' शब्द की व्युत्पत्ति एवं श्राद्ध की महत्ता**	डॉ० सुमन जैन	–	96
50.	**पितृपक्ष आश्विन कृष्ण पक्ष में ही क्यों?**	श्री शिव वचन सिंह	–	97
51.	**भारतीय संस्कृति और संस्कार**	डॉ० सोनू अन्नपूर्णा	–	99
52.	**मन्दिरों का शहर – गया तीर्थ**	श्री नवलेश वर्थवार	–	100
53.	**सीता माता ने गया में किया था दशरथ का पिंडदान**	डॉ० मनोज कुमार निराला	–	101
54.	**गया में 'अन्दर गया'**	श्रीमती उषा सिन्हा	–	102
55.	**क्या पितरों तक पहुँच पाता है?**	श्री सुनील सौरभ	–	103
56.	**समन्वय तीर्थ गया और पितृपक्ष**	डा० राजीव रंजन पाठक	–	104
57.	**पिता, पितर और पितृयज्ञ**	श्री कमलेश मिश्र	–	105
58.	**गयाश्राद्ध-पर्व**	पं० मणिलाल बारिक	–	106
59.	**गया जी में श्राद्ध करना पुत्र होने की योग्यता है**	आचार्य पं० अमरनाथ बौधिया	–	108
60.	**पिण्डदान : . उद्भव एवं विकास**	श्री मुद्रिका सिंह	–	109
61.	**सर्वमंगला शक्तिपीठ – मंगला गौरी**	श्री राम नरेश सिंह 'पयोद'	–	110
62.	**राष्ट्रीय एकता के लिए श्राद्ध और तर्पण का महत्त्व**	श्री विजय कुमार सिन्हा	–	111
63.	**गया संग्रहालय-सह-मगध सांस्कृतिक ....**	डॉ० विनय कुमार	–	112
64.	**स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक निर्देश**	डॉ० रामदीप मिस्त्री	–	114
65.	**गया का साहित्यिक गौरव है साहित्य सम्मेलन**	श्री नचिकता वत्स	–	115
66.	**पितृपक्ष महासंगम**	श्री दिलीप कुमार देव	–	117

सम्पादक की कलम से ....

पितृलोकान्प्रणीहि नः

''मनएव मनुष्यानां कारणं बन्ध मोक्षयोः'' अर्थात् मानव का मन ही उसके बन्धन और मोक्ष दोनो का कारण है। यह मन जब स्वंय इन्द्रियों के अधीन हो जाता है, तो हमें विनाश के मार्ग में ले जाकर फँसा देता है। क्योंकि गीता के अनुसार इन्द्रियाँ इस शरीर-रूपी रथ, जिसका स्वामी आत्मा है; को बरवस भोगों की ओर आकृष्ट करती है और भोग हमें काम तक सीमित कर देती है। जीवन के अंतिम गंतव्य मोक्ष तक पहुँचने नहीं देती। यह काम क्षणभर सुखदायी प्रतीत होकर हमे भ्रमित कर देता है तथा जन्म-मृत्यु के बन्धन में बांधे रखता है। यह काम जीव-मात्र में समान रूप से परिव्याप्त है, किन्तु मानवेत्तर योनियाँ मात्र भोग स्थली है; वहाँ मानव शरीर को गोस्वामी तुलसीदास जैसे तत्वद्रष्टा संत ने ''साधनधाम मोक्ष कर द्वारा' कहा है। किन्तु परमात्मा की कृपा से इस मानव-शरीर को पाकर भी जो लोक-परलोक को नहीं संवारते तो यह उनका दुर्भाग्य ही है और उन्हें आगे भी चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने से कोई नही रोक सकता। ब्रह्म वैवर्त पुराण में कहा गया है :-

कुरंग मातंग पतंग भृंगाः मीनाः हताः पञ्चभिरेवपञ्चः।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते चः सेवते पञ्चभिरेव नित्यम्।।

अर्थात् हरिण, हाथी, पतंग, भौरे और मछलियाँ एक ही इन्द्रिय की भोग लिप्सा (क्रमशः कान, त्वचा, आँख, नाक और जिह्वा) के अधीन होकर अपना सर्वनाश कर लेता है; किन्तु यह मानव तो उक्त पाँचो ही इन्द्रियों का भोग एक ही साथ एक ही समय भोगना चाहता है। ऐसी स्थिति में इसे कौन बचा सकता है ?इससे बचाव के लिए आचार्य शिवपूजन सहाय ने एक बड़ी ही अच्छी युक्ति बतलाई है। उन्हीं के शब्दों में ''मन बड़ा चंचल है। इसे भक्ति की जंजीरों में जकड़ देना चाहिए अन्यथा यह अपने स्वामी (आत्मा) को विनाश के मार्ग में ले जाकर फँसा डालता है।'' स्पष्ट है इस मन को नियंत्रित कर ऐन्द्रिय भोगों से उपराम हुए बिना, परलोक को संवारना अर्थात् मानव-जीवन को सार्थक कर पाना संभव नहीं।

सतत् संचरणशील संसार की सारी विभूतियाँ क्षणभंगुर हैं, वे अविनाशी नहीं हो सकती न ही हमें अविनाशी परमात्मा तक पहुँचने और उनकी कृपा प्राप्त करने देंगी। सुख-लिप्सा भस्मक रोग है जिसकी भूख कभी समाप्त नहीं होती। साथ ही उसकी तुष्टि हमें संपुष्टि प्रदान न करके उत्तरोत्तर क्षीण करती जाती है। अतः सुख प्राप्त करने के बजाय हमें पहले दुःखों से छुटकारा पाने का उपाय करना चाहिए। हमारे ऋषि मुनियों ने बतलाया है कि सुख और दुःख दोनों मानव-मन की प्रक्रिया है। यदि मानव दुःख से निवृत्ति पा जाय, तो उसे आन्तरिक आनन्द की अनुभूति प्राप्त हो सकती है। भौतिक जगत से प्राप्त ऐन्द्रिय सुखों का सम्बन्ध शरीर तक ही सीमित है। सच्चा आनन्द तो शरीर से परे आत्मिक सुख में है। आत्मिक सुख में ही जीवन की सार्थकता है। मानव जीवन में दुःखों की श्रृंखला तीन प्रकार की होती है। ये है - आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक। प्राकृतिक आपदाएँ, प्रियजनों का शोक आदि आधिदैविक दुःख है। रोग-व्याधियों तथा आकस्मिक कारणों से उत्पन्न दुःख आधिभौतिक दुःख हैं। जीवन-धर्म से विमुखता, सत्कर्मों में प्रवृत्ति न हो पाना तथा देवताओं और पितरों के कोप से प्राप्त होने वाले संस्कारहीनता आदि आध्यात्मिक दुःख हैं। मानव-मन इन तीनो ही दुःखों से उदेलित होता है। वह इससे बचने का अथक प्रयास करके भी सफल नहीं हो पाता।

उपर्युक्त दुःखों से निवृत्ति पाने का एकमात्र उपाय है अपने मन को नियंत्रित करना। मन को नियंत्रत किये बिना, नहीं तो हम योग कर सकते है, नहीं तो अन्य कर्म। अतः हमें चाहिए कि मन को हम आध्यात्म की उस दिशा में अग्रसर करें, ताकि वह ऐन्द्रिय भोगों की ओर जाये ही नहीं। ऐन्द्रिय भोगों से ऊपर उठने के बाद मन देवताओं पितरो तथा अन्य जीवों (प्राणी मात्र) की सेवा में लग जायेगा। तब मन मात्र द्रष्टा की भूमिका में होगा और जीवन के सारे

क्लेश स्वयमेव समाप्त हो जायेंगे। इसके लिए आवश्यकता है कि हम 'स्व' की परिधि से बाहर निकल कर अपने को 'पर' के विस्तार को समर्पित कर दें। देवाराधन, पितृतर्पण एवं श्राद्ध तथा प्राणिमात्र की सेवा एवं उनके प्रति सद्‌भाव ही इसका उपक्रम है।

सेवा, श्रद्धा और सद्‌भाव का समर्पण केवल देवताओं और जीवित प्राणियों के लिए ही नहीं, दिवंगत आत्माओं के लिए भी समान रूप से अनिवार्य है। चूँकि देवताओं की तरह ही हम पितरो के भी ऋणी हैं। अत: उन्हें तृप्तकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करना भी हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। इसके निमित्त हमारे शास्त्र पुराणादि आर्ष ग्रंथो में और्ध्वदैहिक, पार्षण एवं तीर्थ श्राद्धों की व्यवस्था दी गई है। गया धाम को इसके लिए प्रशस्त मुक्तिदायक धर्मक्षेत्र बतलाया गया है। इसकी प्रसिद्धि देवतीर्थ के साथ ही पितृतीर्थ के रूप में भी है। भारतवर्ष में देवतीर्थ तो अनेक हैं किन्तु पितृतीर्थ और उसमें भी मोक्ष भूमि तो गया, पुष्कर और बदरीकाश्रम जैसे गिने-चुने तीर्थ ही हैं।

यों तो गया धाम में कभी भी किसी भी दिन पिण्डदान और तर्पण पितरों के लिए मोक्षदायी तथा अपने लिए कल्याणकारी है, किन्तु वर्ष में एक बार अनन्त चतुर्दशी से महालया पर्यन्त (विशेष रूप से आश्विन महीने का सम्पूर्ण कृष्ण पक्ष) पितृ-पूजन, तर्पण एवं श्राद्धादि के लिए विशेष रूप से प्रशस्त माना गया है तथा इस अवसर पर यहाँ विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला का आयोजन सहस्त्राब्दियो से होता आ रहा है। इस अवसर पर लाखों की संख्या में विश्व के कोने-कोने से सनातन धर्मावलम्बी आकर यहाँ दिवंगत आत्माओं की शांति तथा तृप्ति के लिए श्राद्धतर्पण तथा पितृ-पूजन के विविध अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं। उसका मूल उद्देश्य ''सर्वेभवन्तु सुखिन'' है।

प्रति वर्ष पितृपक्ष में 'पितृ महासंगम' के अवसर पर लोग गया धाम में पितृपूजन, श्राद्ध, तर्पणादि के कार्य सम्पन्न करते हैं। आनेवाले तीर्थ-यात्रियों के लिए गया जिला प्रशासन द्वारा उनके आवास, खान पान, सुरक्षा तथा श्राद्ध तर्पणादि के निमित्त सुविधाओं की पूरी व्यवस्था की जाती है। यात्रियों को पितृ-यज्ञ के सम्पादन में कोई कठिनाई नहीं हो इसका पूरा ख्याल रखा जाता है। जिला प्रशासन तथा पुलिस उनकी सेवा तथा सुरक्षा में दिन रात सर्तक और सक्रिय रहती है। तीर्थक्षेत्र में यात्रियों को समुचित आध्यात्मिक वातावरण मिले इसके लिए जगह-जगह पर यज्ञानुष्ठान तथा धार्मिक प्रववचन के आयोजन किये जाते है। इसी कड़ी में पितृ-यज्ञ को उत्प्रेरक के रूप में आध्यात्मिक पत्रिका 'तर्पण' का प्रकाशन भी जुड़ा है।

'तर्पण' नामक स्मारिका का प्रकाशन विगत बाइस वर्षो से अनवरत होता आ रहा है। वर्ष 2017 के पितृपक्ष मेले के अवसर प्रकाशित 'तर्पण' का यह बाइसवाँ अंक अपने सुधी पाठकों तथा धर्मानुरागियों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम उल्लसित हैं। हम गया के जिलाधिकारी महोदय श्री कुमार रवि जी के प्रति कृतज्ञ है क्योंकि उन्होने अपने निर्देशन में 'तर्पण' 2017 का आध्याात्मिक स्वरूप बनाये रखकर इसे अधिकाधिक जनोपयोगी बनाने में हमारा सफल मार्गदर्शन किया है। जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी श्री दिलीप देव जी को भी हम धन्यवाद देते है, जिन्होंने इसके प्रकाशन में अपना हार्दिक सहयोग प्रदान किया है। हम अपने उन विद्वान लेखक-लेखिकाओं के प्रति सर्वाधिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने समय पर अपने वैदृष्यपूर्ण आलेखों को देकर इस प्रकाशन को सहज बनाने की कृपा की है। इसमें कई आलेखों में आवश्यकतानुसार आंशिक संशोधन तथा काट-छांट करनी पड़ी है, इसके लिए अपने विद्वान लेखकों से हम क्षमा-प्रार्थी हैं।

हमारे सम्पादक-मण्डल के सदस्यों में 'तर्पण'-2017 को निर्दोष बनाने के लिए भरपूर चेष्टा की है फिर भी इसमें कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं, इसके बावजूद हमें विश्वास है कि सुधी पाठक इसके लिए हमें क्षमा प्रदान करेंगे।

अंतत: धर्मानुरागी सुधी पाठकों से हमारा निवेदन है कि भगवान विष्णु की अवतार भूमि (विष्णुपदी भूमि) से प्रकाशित इस तर्पण को आप यदि भगवान वासुदेव के चरणोदल रूप में ग्रहण करेंगे तो हमें विश्वास है कि आपको अत्यधिक सारस्वत आनन्द की प्राप्ति होगी।

ओम् शान्ति: शान्ति: शान्ति:

✦

गोवर्द्धन प्रसाद सदय

प्रधान सम्पादक, तर्पण-2017

गया धाम में श्राद्ध का महत्त्व

ज०गु०रा० स्वामी वेंकटेश प्रपन्नाचार्य

सनातन आर्य संस्कृति में श्राद्धकर्म को बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य माना गया है। विष्णुपुराण का कथन है

श्राद्धं श्रद्धान्वितः कुर्वन् प्रीणयन्त्यखिलं जगत्
वि०पु० 3/14/02

विश्‍व के अनेक धर्मक्षेत्रों में श्राद्ध के लिए गयाधाम का स्थान सर्वोच्च है यह मोक्षभूमि है। यहाँ श्राद्ध करनेवाले श्रद्धालुओं की अनेक पीढ़ियों (हजारों पीढ़ियों) के पितर मुक्ति को प्राप्त करते हैं। तीर्थोत्तम गयाधाम श्री पादतीर्थ है। अतः इसकी महिमा अप्रतिम है। पूज्यास्पद अनन्त श्री दिव्यदेव श्री 1008 श्री त्रिदण्डीस्वामी जी महाराज का कथन है कि अखिल ब्रह्माण्ड में ही गया के समतुल्य कोई पुण्यस्थल नहीं है। क्योंकि अकारण करुणा-वरुणालय के अभीष्टप्रद, संस्कृति तारक पादपक्ष आज भी यहाँ विद्यमान है। जिसके सम्बन्ध में पुराणों में कहा गया है :-

ध्येयं सदा परिभवघ्न ह्यभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरणम्।
भृत्यार्ति हं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं,
वन्दे महापुरूषा ते चरणार विन्दम्

स्पष्ट है कि भगवान नारायण के श्रीपाद चिन्ह् विलसित गयाधाम सर्वोद्धारक है। इसलिए वह सर्वोपरि है। इनके अतिरिक्त वैष्णव मतावलम्बियों के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि भगवात्पाद जगद्गुरू अनन्त श्री स्वामी रामानुजाचार्य ने इस गयातीर्थ में शालग्राम शिला के रूप में भगवान की स्थापना की है। यथा :-

श्रीरङ्गं करि शैलभंजन गिरिं शेषाद्रि सिंहाचलम्।
श्री कूर्मं पुरूषोत्तमं च बदरी नारायणं नैमिषम्।।
श्रीमद्द्वारवती प्रयाग मथुराऽयोध्या गया पुष्करम्।
शालग्राम निवासिना विजयते रामानुजोऽयं मुनिः।।

इस अकाट्य तथ्य का ध्वजोत्तोलन आज भी श्रीरामानुजाचार्य मठ कर रहा है।

गया वही पुण्यभूमि वैष्णवधाम है, जहाँ आने पर श्री चैतन्य महाप्रभु के महाभाव का उदय हुआ था। "Chaitanya Deva was caught by very high devotion fever at Gaya and he returned to Nawadweep in a Genatic mood for him." तो यह दिव्यानुराग करी भूमि है, पितृतीर्थ है, मोक्षदा और ऋषि आकांक्षिता भूमि है।

गयाश्राद्ध का महत्त्व :- पुत्र का पुत्रत्व तभी पूर्ण होता है, जब वह गया-श्राद्ध करें। शास्त्र पुराणों की मान्यता है:-

जीवितो वाक्य करणात् क्षयाहे भूरि भोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पत्रता।।
देवी भागवत 6/4/15

मुक्ति की प्राप्ति भगवान जनार्दन से होती है-

''मोक्षमिच्छेज्जनार्दनात्''

वैसे भगवान जनार्दन गयाधाम में पितृरूप में उपलब्ध होते हैं। पुराणों में बतलाया गया है

गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः
(वायुपुराण गया माहात्म्य 4/92)

इस प्रकार गया श्राद्ध शत-कुल तारक है। गयासुर की छाती पर जब भगवान विष्णु का अवतरण हुआ (जो चरण-चिह्न आज भी विद्यमान है) तो अपने उद्धार के पश्चात् उसने भगवान विष्णु से वरदान माँगा है :-

''श्राद्धं सपिण्डकं येषां ब्रह्मलोकं प्रयान्तु ते''
(वायुपुराण गया मा० 2172)

अर्थात् जिनके कोई भी सपिण्ड (पुत्र, पौत्र, गोत्र, कलत्र, दौहित्रादि) गया में आकर पिण्डदान करें, उन्हें ब्रह्मलोक की प्राप्ति हो। इसके साथ ही इतिहास प्रमाण होने से भी गया-श्राद्ध का परम औचित्य सिद्ध होता है। इतिहास-पुराण साक्षी हैं भारत के महान् पुण्यात्मा चरित्रधन लोकनायकों ने गयाधाम में आकर अपने पूर्वजों का तीर्थ-श्राद्ध किया।

त्रेता युग में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम ने गयाधाम में आकर अपने दशरथादि पितरों का पिण्डदान किया तथा उनके आशीर्वाद से अठारह हजार वर्षों तक राज्य करने के पश्चात् विष्णुलोक को प्रस्थान किया। इसी तरह द्वापर में पितामह भीष्म और महाराज युधिष्ठिर ने भी गया में पिण्डदान किया तथा पितरों एवं बन्धु बान्धवों को मुक्ति प्रदान की। भीष्म के पिण्डदान से तृप्त महाराज शान्तनु ने इन्हें सकल शास्त्र का ज्ञाता होने, त्रिकालदर्शी होने तथा अन्त में विष्णुलोक को प्राप्त होने का वरदान दिया। स्पष्ट है कि गृहस्थश्रेष्ठ भगवान श्रीराम तथा विरक्त श्रेष्ठ पितामह भीष्म उभयकोटि के नरश्रेष्ठों ने इस पावन भूमि पर गया श्राद्ध करके इसे महिमामंडित किया है। तो ''महाजनो येन गत: सपन्था'' इस उक्ति का अनुसरण करते हुए अपने राष्ट्र के महान् पुरूषों से प्रेरणा लेते हुए भी गया श्राद्ध समाचरणीय है। इससे मानव का महापातक भी नष्ट हो जाता है, पिण्डदाता के पितरों की शाश्वत तृप्ति होती है। गया क्षेत्र की परिधि के सम्बन्ध में पुराणों में बतलाया गय है :-

पञ्चक्रोशं गया क्षेत्रं क्रोशमेकं गया शिरः।
तत्र पिण्ड प्रदानेन तृप्तिर्भवति शाश्वती।।
(गरुड़पुराण 83/3)

गया के कुछ पावन स्थलों में श्राद्ध का फल :-

यों तो सम्पूर्ण गयाधाम ही विष्णुपदी भूमि है, क्योंकि पौराणिक मान्यता है कि 'गयायां न हि तत्स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते' किन्तु आज के दिन गया शहर अपनी पौराणिक परिधि में सीमित नहीं है। सामयिक प्रवाह में इसका भी काफी विस्तार हुआ है इसके साथ ही कुछ वेदियों का लोप भी हो गया है। अत: कुछ अतिपूजित स्थलों तथा वहाँ पिण्डदान के महत्त्व का विवेचन यहाँ प्रासंगिक है।

फल्गु-तीर्थ में तपर्ण एवं श्राद्ध का महत्त्व :-

गया का माहात्म्य बतलाते हुए कहा गया है-

पृथिव्यां च गया पुण्याः गयायां च गया शिरः।
श्रेष्ठं तथा फल्गुतीर्थं तन्मुखं च सुरस्य हि।।
(गरूड़पुराण 83/23)

अर्थात् पूरी पृथ्वी में गया सर्वश्रेष्ठ एवं पावन है। गया में भी गया सिर श्रेष्ठ है तथा उससे भी श्रेष्ठ फल्गु तीर्थ है, जिसे देवताओं के मुख के रूप में जाना जाता है। चूँकि गया-क्षेत्र में पितर भी विष्णुरूप में विराजमान होते हैं। अत: फल्गु में दिया गया पिण्ड एवं जल सीधे उनके मुख में प्राप्त होता है। अत: पितरों को विष्णुलोक की प्राप्ति की कामना से (मुक्ति के लिए) फल्गु-तीर्थ में स्नान तर्पण और श्राद्ध करे। फल्गू तीर्थ में श्राद्ध का विधान बतलाते हुए कहा गया है :-

पितॄणां विष्णुलोकाय भुक्ति मुक्ति प्रसिद्धये।
फल्गूतीर्थे नरः स्नात्वा तर्पणं श्राद्धमाचरेत्।।
(वायु पुराण गया माहात्म्य 7/20)

विष्णुपद में श्राद्ध का महत्त्व :-

श्राद्धकर्त्ता को फल्गु-श्राद्ध के अनन्तर गदाधर भगवान के पूजन के बाद उनके निकटवर्ती विष्णुपद में आना चाहिए। विष्णुपद के दर्शन से मानव के सोरे पाप नष्ट हो जाते हैं। यहाँ पुत्र, पौत्र अथवा सपिण्डक द्वारा किये गये श्राद्ध से कर्त्ता के एक हजार पीढ़ियों (पूर्वजों) को दिव्य विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। पितरों को यहाँ दिया गया पिण्ड अक्षय होता है ऐसा वायुपुराण में (गया माहाल्य: 7156-58) कहा गया है।

गया सिर में पिण्डदान का महत्त्व :-

गया सिर में पिण्डदान करने से नरकस्थ पितरों को भी स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जो लोग स्वर्ग में हैं उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है। अत: वायुपुराण के अनुसार गया सिर (एक कोस की परिधि में, गया सिर वेदी पर) दिया गया पिण्ड त्वरित पितृतारक है।

प्रेतशिला में पिण्डदान का महत्त्व :-

गया शहर से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर प्रेतशिला नामक पर्वत है। यह गयाधाम के वायव्य कोण में अवस्थित है। इस पर्वत की चोटी पर प्रेतशिला नाम की वेदी है। यों प्रेतशिला के नाम से पूरा पर्वतीय क्षेत्र ही प्रशस्त है। अत: समर्थ लोग चार सौ ऊँची सीढ़ियों को चढ़कर उस चोटी पर

पहुँचते हैं, किन्तु वहाँ जा पाने में असमर्थ लोग पहाड़ के जड़भाग में भी तालाब के किनारे तथा शिव मन्दिर वगैरह के क्षेत्र में श्राद्ध कर लेते हैं। प्रेतशिला वेदी में श्राद्ध करने से किसी कारणवश, अपमृत्यु आदि के कारण प्रेतयोनि में भटकते प्राणियों को भी मुक्ति प्राप्त हो जाती है। यथा "पिण्डदानाच्च तस्यां तु प्रेतत्वान्मुच्यते नरः" (वायु पुराणः गया माहात्म्य 4/15)

श्रीराम तीर्थ में पण्डिदान का महत्त्व :-

रामतीर्थ में रामकुण्ड में स्नान एवं तर्पण तथा रामशिला पर श्राद्ध (पिण्डदान) करने से क्रुर एवं निकृष्ट कोटि के प्रेतों को भी मुक्ति मिल जाती है। सपिण्ड (कर्त्ता) के द्वारा वहाँ पिण्डदान का भगवान श्रीराम से ऐसी प्रार्थना करने का विधान है।

राम राम महाबाहो देवानामभयंकरः।
त्वां नमस्येह देवेश! मम नश्यन्तु पातकम्।।

तथा इसका माहात्म्य प्रतिपादित करते हुए कहा गया है

मन्त्रेण येन यः स्नात्वा श्राद्धं कृत्वा सपिण्डकम्।
प्रेतत्वात्तस्य पितरों विमुक्ताः पितृता ययुः।।
(वा०पु०ग०मा० 4/20-21)

राम तीर्थ के नाम से गया में दो स्थान प्रसिद्ध हैं। रामशिला जो गया शहर के वायव्यकोण में फल्गु के किनारे रेलवे लाइन और फल्गु पुल से सटे अवस्थित है तथा दूसरा रामगया जो फल्गु नदी के पूर्वी तट पर अवस्थित पर्वत पर सीता कुंड के बगल में है। दोनों ही जगह पिण्डदान का विधान है। राम गया फल्गु नदी के ही पूर्वी कछार पर अवस्थित है। वहीं पर सीता कुंड में पुत्रबधुओं द्वारा श्वसुर कुल के दिवंगत पूर्वजों को बालुकामय पिण्ड देने का प्रचलन है (क्योंकि सीता जी ने यहीं पर राजा दशरथ को बालू का पिण्ड देकर प्रसन्न किया था) इसके साथ ही मातृ पूजन हेतु यहाँ वस्त्र, श्रृंगार द्रव्य आभूषणादि (यथासमर्थ) दान की परम्परा है।

अक्षयवट में अन्नश्राद्ध :-

वायु पुराण में गया माहात्म्य के अंतर्गत बतलाया गया है कि गया धाम के अक्षयवट क्षेत्र में (वेदी) व्यक्ति अन्न से श्राद्ध करे और सावधान होकर स्थिर चित्त से भगवान बटेश्वर का दर्शन पूजन करे तो पितरों को सनातन और अक्षय ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। यथा -

कृते श्राद्धेक्ष्यवटे अन्नेनैव प्रयत्नतः।
दृष्ट्वा नत्वा च सम्पूज्य यो वटेशं समाहितः।
पितृन्नयेद्ब्रह्मलोकमक्षय्यं च सनातनम्।।
(वा०पु०, ग०म० 7/94-95)

उपर्युक्त प्रमुख स्थानों के अतिरिक्त कई अन्य स्थल भी हैं, जहाँ श्राद्ध का विधान है। पुराणों में गयाक्षेत्र में चौवन वेदियों के उल्लेख मिलते हैं। सामयिक प्रवाह में कुछ वेदियाँ तो लुप्त हो गई हैं, किन्तु महत्त्वपूर्ण वेदियाँ आज भी सुरक्षित हैं। पुराणों में वेद विहित मंत्रो द्वारा पितरों का ध्यान एवं आह्वान कर गया श्राद्ध का विधान एवं माहात्म्य बतलाते हुए उसे गृहस्थ जीवन का एक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक कार्य बतलाया गया है। वायु पुराण, गरुड़ पुराणादि में गया श्राद्ध की अपरिभित महिमा बतलायी गई है।

ब्रह्मज्ञानेन किं साध्यं, गोगृहेमरणेन किम्।
वासेन किं कुरुक्षेत्रे, यदि पुत्रो गयां व्रजेत्।।
गयायां सर्व कालेषु पिण्डं दद्याद्विचक्षणः।।

गयाधाम में उपर्युक्त समस्त श्राद्धीय कर्म के समापन के पश्चात् विष्णुपद मंदिर परिसर से उत्तर की ओर फल्गू तट पर अवस्थित भगवत्पाद श्री रामनुजाचार्य मठ तथा तत्रस्थापित भगवान की प्रतिमा का दर्शन अवश्य करें। यह देवघाट में अवस्थित है। कनियनूर शिरियाच्चान् स्वामीजी की उद्घोषणा हैः-

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं यतिराजो संशयः।
स एवं सर्वलोकानां उद्धर्त्तानात्र संशयः।।

अर्थात् यतिराज जगद्गुरु रामानुजाचार्य (उनका दर्शन एवं आशीर्वचन) भी तारक और उद्धारक है। अतः उनका, उनके श्रीविग्रह का अथवा तत्पीठाधीश्वर का दर्शन अवश्य करें। इससे पितृमोक्ष के साथ-साथ आपके स्वकृत सारे पातक नष्ट हो जायेंगे।

गया पीठाधीश्वर, श्री रामानुजाचार्य मठ
देवघाट, विष्णुपद, गया

✦

उत्तमोत्तम तीर्थ गया धाम

आचार्य लालभूषण मिश्र याज्ञिक

गरुड़पुराण के तीर्थ-वर्णन प्रसंग से स्पष्ट है कि सभी तीर्थों में उत्तमोत्तम तीर्थ गयाधाम है। वायुपुराण के अनुसार भी भारत के मोक्षदायक तीर्थों में गयाधाम सर्वोपरि है। धर्म की पुत्री धर्मव्रता को विष्णु से वरदान प्राप्त हुआ था कि गयाधाम (गयातीर्थ) उत्तमोत्तम मुक्तिदायक तीर्थ हो। वायुपुराण में वर्णित है :-

गदाधरो दृश्यतीर्थं सर्वतीर्थोत्तम्।
मुक्तिः भवेत् पितृणाञ्च वहूनां श्राद्धतः सदा।।
(अध्याय 107 श्लोक 47)

हरिद्वार, प्रयाग, नैभिषारण्य, पुष्कर, गयाधाम आदि तीर्थ श्राद्ध के लिए प्रशस्त हैं। श्राद्ध के स्थलों में अयोध्या, मथुरा एवं द्वारिका को विष्णु-प्रधान तीर्थ तथा हरिद्वार, काशी एवं उज्जैन को शिव-प्रधान तीर्थ कहा गया है। पुष्कर तीर्थ ब्रह्मप्रधान तीर्थ है। इनमें गया तीर्थ (गयाधाम) सर्वप्रधान है। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर सहित सभी देवगण तथा सभी देवियों का निरन्तर निवास है। सर्वप्रथम गय असुर ने तथा तत्पश्चात् धर्मव्रताने विष्णु से वरदान प्राप्त किया था कि गयाधाम में सभी तीर्थों का वास हो। अग्निपुराण के अनुसार सभी पवित्र नदियाँ, पवित्र सरोवर एवं सभी समुद्र एक बार प्रतिदिन गयातीर्थ में आते हैं:-

पृथिव्यां यानि तीर्थानि आसमुद्रात् सरांसिच।
फल्गु तीर्थं गमिष्यन्ति वारमेकं दिने दिने।
(अध्याय 115-श्लोक 20)

गयातीर्थ में प्राप्त होने वाली मुक्ति अन्य तीर्थों की मुक्ति से बढ़कर है। गयातीर्थ का श्राद्ध पितरों की मुक्ति प्रदान करने के साथ श्राद्धकर्त्ता को भी मुक्ति प्रदान करता है। गया का श्राद्ध एक हजार पितृकुल के लोगों को विष्णुलोक प्राप्त कराता है। वायुपुराण में वर्णन है :-

पितृणां कुल साहस्र मात्मना सहितोनरः।
श्राद्धादिना समुद्धृत्य विष्णुलोकं नयेत् ध्रुवम्।।

अन्य तीर्थों में श्राद्ध करने की स्थिति में भी गया-तीर्थ एवं गदाधर विष्णु का स्मरण श्राद्ध के आरम्भ में ही करने का शास्त्र वचन है:-

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम।
स्व पितृन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समारभेत्।।

गया-तीर्थ में निवास पितृमुक्ति का सहज मार्ग है। तीर्थ-निवास श्राद्ध का ही अंग है। गया-तीर्थ की विशेषता है कि यहाँ तीस दिनों तक रात्रि निवास करने से सात पीढ़ी का उद्धार हो जाता है। महभारत के वन पर्व के अनुसार पन्द्रह दिनों का कृष्ण पक्ष तथा पन्द्रह दिनों का शुक्ल पक्ष- एक मास का निवास निःसन्देह पितरों का उद्धार करा देता है:-

कृष्ण शुक्लावुभौ पक्षौ गयायां यो वसेत् नरः।
पुनात्या सप्तभं राजन् कुलं नास्त्यत्र संशयः।।

एक मात्र गया तीर्थ ही जीवित व्यक्तियों का श्राद्ध स्थल है। अपने लिए अथवा किसी अन्य जीवित व्यक्तियों के लिए जनार्दन नामक विष्णु भगवान् के दाहिने हाथ में दही एवं अक्षत का पिंड दिया जाता है। यह पिंड अपसव्य होकर नहीं बल्कि सव्य रहकर ही दिया जाता है। जनार्दन विष्णु के सामने मुख करके अर्थात् पश्चिम मुख करके तिल-रहित पिंडदान यहाँ होता है। जनार्दन विष्णु मंदिर भस्मकूट पर्वत पर मंगलागौरी मंदिर से उत्तर दिशा में है। जनार्दन विष्णु जिसके लिए उक्त पिंड ग्रहण करते हैं उसकी मृत्यु के बाद प्रतिनिधि होकर गया सिर वेदी पर पिंडदान करके उस का उद्धार करते हैं। प्रतिनिधि होकर दूसरों के लिए श्राद्ध करने का स्थल गया सिर वेदी है। अन्य तीर्थों में यह विशिष्टता नहीं है। वायुपुराण में अंकित है :-

जनार्दनों भस्म कूटे तस्य हस्ते तु पिंडदः।
आत्मनोऽप्यथवाऽन्येषां सव्येनापि तिलैर्विना।।
(अध्याय 108 श्लोक 85)

पुष्कर तीर्थ के अलावा ब्रह्मा का दर्शन अन्य तीर्थों में हम नहीं करते हैं। किन्तु गया में ब्रह्मा का मंदिर है। इनको पितृ तारक ब्रह्मा कहते हैं। इनके दर्शन से पितरों के साथ हम स्वयं भी परम् गति को प्राप्त करते हैं, मुख्य पथ पर ही पूर्व रूख हैं। वायु पुराण में कहा गया है:-

तारकं ब्रह्म विश्वेषां मृतानां जीवितामिदम्।
त्रिविक्रमं च ब्रह्माणं यः पश्येत् पुरूषोत्तमम्।
पितृभिः सह धर्मात्मा स याति परमां गतिम्।।
(अध्याय 08-श्लोक 38)

गयाधाम एक विशिष्ट श्राद्ध तीर्थ है। फल्गु नदी का ब्रह्मणीघाट सौर तीर्थ है। सूर्यास्त तक ही श्राद्ध का विधान है। किन्तु ब्राह्मणी घाट इसका अपवाद है। दिन में श्राद्ध नहीं होने की स्थिति में ब्रह्मणीघाट पर रात्रि में भी श्राद्ध होता है। यहाँ मंदिर में सूर्य के बारह स्वरूप स्तंभ में अंकित हैं। बारह नाम से वे सूर्य मूर्त्ति जाने जाते हैं। यहाँ विरिंचि नारायण के नाम से सात फीट की सूर्य मूर्ति भी प्रतिष्ठित है। साथ ही गया के नाम से गयादित्य मूर्ति भी विराजमान है। यहाँ महेश का स्वरूप सूर्य में सन्निहित है। सभी कलाओं से विभूषित सूर्य मूर्तियों के प्रभाव से यहाँ रात्रि में श्राद्ध का विधान है। उक्त विशेषता अन्यत्र नहीं है।

गयाधाम की विशिष्टता ब्रह्मयोनि पहाड़ से भी है। उक्त ब्रह्मयोनि पर मातृयोनि है। उसमें एक ओर से प्रवेश करके दूसरी ओर से निकलने का संकीर्ण मार्ग हैं। इसमें प्रवेश करके बाहर निकलने वाले ब्रह्मपद को प्राप्त करते हैं। उन्हें माता के गर्भ में पुनः आना नहीं पड़ता है। वायु पुराण में वर्णित है:-

ब्रह्मयोनि प्रविश्याथ निर्गच्छेद यस्तुमानवः।
परं ब्रह्म स यातीह विमुक्तो योनि संकटात्।।
(अध्याय 108 श्लोक 83)

गयाधाम का श्राद्ध सूर्य ग्रहण में श्राद्ध के समान अनन्त फलदायक है। सूर्य ग्रहण किसी अभावस्था को होता है। सूर्य ग्रहण में श्राद्ध का सीमित समय है किन्तु गया में प्रतिदिन श्राद्ध का वही फल है जो सूर्य ग्रहण में है। कहा गया है :-

यत् फलं पिंडदानस्य राहुग्रस्ते दिवाकरे।
फलं तदखिलं प्रोक्तं गयायां तु दिने दिने।।

गया तीर्थ में ऋषियों का तप स्थल है- गोदावरी तीर्थ। यह गृध्रकूट पर्वत पर स्थित है एवं गृध्रेश्वर महादेव का वास स्थल है। गृध्र (गीध) के नाम पर ही गृध्रेश्वर महादेव का नामकरण हुआ। यहाँ शिव-दर्शन एवं शिव-नमस्कार से शिवलोक प्राप्त होता है।

गृध्र रूपेण संसिद्धाः तयाः तप्त्वा महर्षयः।
अतो गिरि गृध्रकूटः तत्र गृध्रेश्वरः स्थितः
दृष्ट्वा गृध्रेश्वरं नत्वा यायात् शंभोः पदं नरः।।
वायु पुराण अध्याय 108 श्लोक 62

गयाधाम की विशेषता है कि देवघाट से पश्चिम सूर्यकुंड पर स्थित दक्षिण मानस सूर्य के दर्शन एवं नमस्कार मात्र से पितरों को सूर्यलोक प्राप्त होता है। यह पितृ उद्धारक सौर तीर्थ है। कहा गया है-

दिवाकर करोमीह स्नानं दक्षिण मानसे।
सूर्यं नत्वाऽर्चयित्वा च सूर्यलोकं नयेत् पितृन्।।
(वायुपुराण अध्याय 11 श्लोक 11)

महामंत्री, अखिल भारतीय विद्वत् परिषद्, गया
भलुआही, खरखुरा, गया - 823002
सम्पर्क- 9430412321, 9572148244

त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता

डॉ० कृष्णदेव मिश्र

हर मानव का शरीर जिसमें वह जीवन धारण करता है, माता पिता के रजाणुओं एवं शुक्राणुओं के योग से निष्पन्न है। वे ही उन्हें जीवन, शौर्य, सौन्दर्य तथा संस्कारादि प्रदान करते हैं। जो परिवेश के उर्वरक से विकास पाकर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। अतः हर मानव के ऊपर अपने पितरों (पितृ पितामहादि) के कुछ अदेय ऋण हैं जिससे वह मुक्त तो कदापि नहीं हो सकता किन्तु कुछ ऐसे कार्य हैं जिनके द्वारा मानव अपने पितृऋण को कम कर सकता है तथा पितरों की कृपा एवं उनके आशीर्वाद प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बना सकता है। साथ ही अपने साथ पूर्वोत्तर की पीढ़ियों का उद्धार कर सकता है। इसके लिए वेद-पुराणादि हमारे आर्ष ग्रंथों में उनके और्ध्व दैहिक श्राद्ध तथा गयादि पावन तीर्थों में श्राद्ध की महिमा प्रतिपादित की गई है। मानव को जब तक पितृ-पितामहादि तथा मातृ मातामहादि के आशीर्वाद एवं उनकी कृपा प्राप्त नहीं होती, तब तक उनके यज्ञ यजनादि, साधना पूजनादि सारे कार्य निष्फल होते हैं। हमारे शास्त्रों में बतलाया गया है:-

पिता स्वर्गः पिताधर्मः पिता हि परमं तपः।
पितरिप्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता।।

अर्थात् पिता ही स्वर्ग (स्वर्ग प्रदायक) हैं पिता (पितृसेवा) ही धर्म हैं। पितृजनों की प्रसन्नता से ही सारे देवता प्रसन्न हो जाते हैं। इसीलिए हमारे उपनिषदों में पितृदेवो भव! मातृदेवो भव! और आचार्य देवो भव! के उपदेश दिये गये हैं। वस्तुतः ये तीनों देव स्वरूप हैं और देवता पित-स्वरूप। अतः देवताओं का संबोधन भी माता पिता के रूप में किया जाता है। धर्मशास्त्रों में पुत्रों के लिए मुख्य रूप से तीन तरह के कार्य बतलाये गये हैं :-

जीवितो वाक्य करणत् क्षयहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता।।
(देवी भागवत 614/15)

अर्थात् पुत्रत्व उन्हीं का सार्थक है, जो जीवन भर माता-पिता की आज्ञा एवं उनके अनुदेशों का पालन करते हैं, उनकी मृत्यु के पश्चात् श्राद्ध में और पुण्य तिथि के अवसर पर (क्षयाहे) बहुत सारे लोगों को भोजन कराते हैं और गया-तीर्थ में (यहाँ निहितार्थ गया, प्रयाग, प्रभाष क्षेत्र, पुष्कर क्षेत्र तथा बदरीकाश्रम आदि श्राद्ध तीर्थों से है, जिसमें गया को प्राथमिकता एवं सर्वश्रेष्ठता प्रदान की गई है।) पिण्डदान तर्पणादि से श्राद्ध करते हैं। उक्त तीन कार्यों का सम्पादन नहीं करने वालों को पितरों का आशीर्वाद और उनकी कृपा नहीं प्राप्त होती। अन्यत्र भी कहा गया है :-

गयाभिगमनं कर्त्तुं यः शक्तो नाभिगच्छति।
शोचन्ति पितरस्तस्य वृथातेषां परिश्रमः।।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन ब्राह्मणस्तु विशेषतः।
प्रदद्यात् विधिवत् पिण्डान् गयां गत्वा समाहितः।।

अर्थात् गया जाने में समर्थ होते हुए भी जो लोग पितृपक्ष में या सामान्यतः गयाक्षेत्र में तीर्थ श्राद्ध नहीं करते। उनके पितर खिन्न होकर सोचते हैं कि उन्होंने व्यर्थ ही संतानोत्पादन तथा उनके पालन पोषणादि के लिए प्रयास किया। अतः मानव को पूरे प्रयत्न के साथ गया के पावन मोक्षधाम में पितरों की तृप्ति एवं मुक्ति हेतु गया-श्राद्ध करना चाहिए। जिन माता पिता तथा गुरुजनों ने अपने अथक परिश्रम से बहुविध कष्टों को झेलकर हमें जन्म दिया, पाला पोसा तथा हमारे निर्माण में जिनकी अहम् भूमिका रही उनके प्रति निश्चय ही हमारा भी कुछ दायित्व है और यदि हम उस दायित्व का निर्वाह नहीं करते तो हम विधर्मी हैं। पशु के समान हैं। नीति शास्त्र में कहा गया है

अहार निद्राभय मैथुनं च समानभेतद् पशुभिर्नराणां।
धर्मेव एको ह्यधिको विशेषो धर्मेणहीना पशुभिः समाना।।

अतः वे पुत्र भी पशु के समान हैं जो अपने माता पिता के प्रति दायित्वों का सम्यक् रूप से पालन नहीं करते। अतः माता-पिता की सेवा, उनके आदेशों का पालन, उनका निर्देशानुगमन तथा

आजीवन अपने मर्यादित कार्यों से उनके गौरव को समुन्नत करना, पुत्रों की अह् जिम्मेवारी है। गोस्वामी तुलसीदास ने मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम से कहलाया है :-

तनय भातु पितु तोषनिहारा।
दुरलभ जननि सकल संसार।।
(रामचरितमानस)

अत: हर व्यक्ति को अपने माता-पिता तथा अन्य पूर्वजों की तृप्ति निमित्त शास्त्र-विहित श्राद्धादि कर्म अवश्य करना चाहिए। यह श्राद्ध शब्द श्रद्धा का द्योतक है। पितरों के उद्देश्य से जो कर्म श्रद्धा पूर्वक किया जाय उसे श्राद्ध कहते हैं। **''श्रद्धया पितृन् उद्दिश्य विधिना क्रियते यत्कर्मतत् श्राद्धमू'' (श्राद्ध कल्पद्रुम)।**

वैयाकारणिक दृष्टि से भी श्राद्ध शब्द 'श्रद्धा' से निष्पन्न है श्रद्धार्थमिदं

श्राद्धम् श्रद्धयाकृतम् सम्पादितम् इति। **''श्रद्धया दीयते यस्मात् तच्छाद्धम्''** तथा **''श्रद्धया इदम् श्राद्धम्''** अर्थात् अपने मृत पितरों के निमित्त श्रद्धा से उत्प्रेरित होकर जो पिण्डदान, अन्न वस्त्रादि दान तथा भोजनादिदान के कार्य श्राद्ध है। भारतीय आर्षग्रंथों में मनुस्मृति, वीर मित्रोदय, श्राद्ध कल्पतरु, आदि अनेक ग्रंथों में श्राद्ध का माहात्म्य बतलाया गया है। इस सम्बन्ध में अनेक महिर्षयों के भिन्न मत प्राप्त होते हैं। महर्षि पराशर का कथन है :-

देशे काले च पात्रे च विधिना हविषा च चत्।
तिलैर्दभैश्च मंत्रेश्य श्राद्धं स्याच्छद्धया युतम्।।

अर्थात् देश काल पात्र में (तदनुरूप) हविष्यादि से विधिपूर्वक जो कर्म तिल कुश तथा मन्त्रों के योग से श्रद्धापूर्वक सम्पादित किये जायँ वह श्राद्ध है। इस श्लोक में विशेष रूप से पिण्डदान की ओर संकेत है जिसमें हविष्य (पायस) के साथ तिल और कुश का होना परम अनिवार्य है। इसके बिना श्राद्ध सम्पन्न ही नहीं हो सकता।

महर्षि वृहस्पति एवं महिर्ष पुलस्त्य के मतानुसार

संस्कृतं व्यंजनाद्यं च पयोमधु धृतान्वितम्।
श्रद्धया दीयते यस्माछाद्धं तेन निगद्यते।।

अर्थात् जिस कर्म में दुग्ध, धृत और मधु से युक्त सुसंस्कृत (अच्छी तरह पकाया अथक सिद्ध किया हुआ) अन्न व्यंजनादि श्रद्धापूर्वक पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणादि को भोजन कराया जाय अथवा दिया जाय, उसे श्राद्ध कहते हैं। श्राद्ध की व्यावहारिकता में उक्त दुग्ध, धृत, मधु, मेवा आदि को पिण्ड निमिक्तक बनाये गये पाक (हविष्यादि अन्न) में भी मिलाने की व्यवस्था है। श्राद्ध चाहे ओदन (भात) से हो, हविष्य से (पायस अथवा खीर से) हो अथवा भवपिष्ट (जौ के आटा) से; उसमें भी तिल, मधु, घी, शक्कर मेवा आदि मिलाने तथा दुग्धधारा से पिण्ड पूजन करने का विधान है। तात्पर्य यह कि श्राद्ध में शुद्ध सात्विक अन्नादि के ही प्रयोग होना चाहिए तथा ब्राह्मणों एवं ब्राह्मणेतर जनो सगे सम्बन्धियों आदि को भी वैसे ही अन्न व्यंजनादि का भोजन कराना चाहिए।

इसी तरह ब्रह्मपुराण में श्राद्ध को परिभाषित करते हुए बतलाया गया है कि :-

देशे काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्।
पितृनुदिश्य विप्रेभ्यो दत्तं श्राद्ध मुदाहृतम्।।

अर्थात् देश काल और पात्र के अनुरूप पितरों के निमित्त ब्राह्मणों को जो भोजन दानादि दिये जायें उन्हें श्राद्ध की संज्ञा दी गई है।

उक्त श्राद्ध-कर्म में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। शांत चित्त से पितरों के दिव्य एवं सौभ्य रूप का ध्यान एवं स्मरण करते हुए शास्त्रोक्त विधि से पितरों का श्राद्ध करना तथा श्राद्ध के अनन्तर उसके अंगीभूत ब्राह्मणों तथा दरिद्रों को वित्तसाठ्य विवर्जित् होकर दान देना संतान का परम कर्त्तव्य है। ऐसा करने से व्यक्ति पितरों को ही मुक्ति प्रदान नहीं करता, स्वयं भी धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष संज्ञक पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त कर लेता है। अर्थात् उस श्राद्धकर्त्ता संतान के भी लोक और परलोक के मार्ग प्रशस्त हो जाते हैं। महर्षि सुमन्त का कथन है :-

श्राद्धात्परतरं नान्यच्छेयष्कर मुदाहृतम्।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणाः।।

अर्थात् मानव-जीवन में श्राद्ध से बढ़कर कोई भी पुण्यकार्य नहीं है। पितरों का श्राद्ध करना

परम श्रेयष्कर अर्थात् पुण्यमय कार्य है। अत: अपने तथा अपनी संततियों के कल्याण चाहने वाला व्यक्ति पितरों का श्राद्ध अवश्य करें। कूर्म पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति शास्त्रोक्तविधि से शांत मन से श्राद्ध कर्म का सम्पादन करते हैं, वे जन्म-जन्मांतर के समस्त पापों से मुक्त होकर स्वयमपि आवागमन अर्थात् **''पुनरपि जनमं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम्''** के चक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाते हैं। उन्हें पुन: इस क्लेशमय संसार में आने तथा सांसारिक-सह-यमयातना झेलने की आवश्यकता नहीं पड़ती। स्पष्ट है कि जो पितरों के कृपापात्र नहीं होते, जिन्हें पितरों का आशीर्वाद नहीं मिलता उन्हें देवताओं की कृपा भी नहीं प्राप्त होती। अत: हर यज्ञादि धर्म-कार्य की सफलता के लिए देवताओं की कृपा प्राप्त करने के लिए भी पितरों की प्रसन्नता अनिवार्य है। इसीलिए हमारे धर्मशास्त्र एवं कर्मकाण्ड के ग्रंथों में यज्ञ यागादि से लेकर विवाहादि मांगलिक कार्यों में भी पितरों को आमंत्रित करने तथा आभ्युदयिक श्राद्ध (नान्दीमुख श्राद्ध) के रूप में उनके पूजन का विधान है। अत: पितरों की तृप्ति के लिए जीवन भर उनकी सेवा एवं निदेशानुगमन, उनके निधनोपरांत उनके श्राद्ध के द्वादशाह कर्म (त्रयषोऽशी) तथा तदनंतर उनके क्षयाह अर्थात् पुण्य तिथि (निधन तिथि) के दिन उनका श्राद्ध करते हुए पितृपक्ष में गया, प्रयाग तथा बदरीकाश्रमादि तीर्थों में वित्तसाठ्य त्यागकर पितरों का श्राद्ध अवश्य करने चाहिए। पिता की क्षय तिथि के अवसर पर पितृपक्ष में गया-तीर्थ में किया गया एकाह्निक श्राद्ध पार्वण श्राद्ध कहलाता है। इसी तरह कई दिनों तक वेदियों पर किये पिण्डदानादि की 'संज्ञा गया-श्राद्ध' की है।

गया में भगवान विष्णु के चरण हैं। यहाँ पहले तीथ-श्राद्ध का विधान है। यहाँ पितरों को दिये गये पिण्डों को विष्णु-चरण में निवेदित करने से उन्हें साक्षात् मुक्ति प्राप्त हो जाती है। गया श्राद्ध के अनन्तर दूसरा श्राद्ध तीर्थराज प्रयाग में जहाँ साक्षात् वेणीमाधव के रूप में भगवान विष्णु (नारायण) विद्यमान हैं, वहाँ नारायण का हृदय है। वहाँ गंगा यमुना और सरस्वती के संगम क्षेत्र में श्राद्ध का विधान है। वहाँ किसी भी दिन श्रद्धावान पुत्र श्राद्ध सम्पन्न कर सकते हैं। तदनंतर अंतिम श्राद्ध बदरीकाश्रम में ब्रह्मकपाल पर सम्पन्न करने का विधान है। वहाँ पिण्डदान के पश्चात् पितरों के पुनर्जन्म की संभावना नहीं रहती। तत्पश्चात् उन्हें मुक्ति अवश्य मिल जाती है। अत: वहाँ पिण्डदान के पश्चात् कहीं पिण्डदान नहीं होता। तर्पणादि दैनिक कार्य तथा दान ब्राह्मण भोजनादि द्वारा क्षयाह्निक अथवा सांवत्सरिक श्राद्ध किये जा सकते हैं। यदि कोई प्रभाष क्षेत्र, पुष्कर तीर्थ आदि में (अन्य श्राद्ध तीर्थों में) श्राद्ध करना चाहें तो उन तीर्थों में श्राद्ध के पश्चात् ही बदरीकाश्रम में श्राद्ध करना चाहिए क्योंकि ब्रह्म कपाल के पश्चात् कहीं भी पिण्डदान वर्जित हैं। उपर्युक्त तीर्थों पर श्राद्ध करने से पितर तो मुक्त होते ही हैं, श्राद्धकर्त्ता स्वयं भी जीवन के सारे सुखैश्वर्य को प्राप्त कर अंतत: मोक्ष को प्राप्त करता है। गरुड़ पुराण में कहा गया है :-

आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्।
पशून् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।।

अर्थात् पितरों की पूजा से मनुष्य को आयुष्य, संतान, यश, स्वर्ग कीर्ति, पुष्टि, बल, लक्ष्मी (धन) ऐश्वर्य, पशु (वाहनादि), सुख, सौख्य धन-धान्यादि समस्त मनोभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। अत: संतान को पितृपूजन, यानी श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। 'पितृपूजन' के अंतर्गत **'जीवितों वाक्य करणात् से गयायां पिण्डदानाच्च'** तक सारी बातें समाहित हो जाती हैं। मार्कण्डेय पुराण में भी बतलाया गया है :-

आयुः प्रजा धनं विद्या स्वर्ग मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिता।।

अर्थात् श्राद्ध और तर्पण से तृप्त होकर पितर (पिता, पितामहादि पूर्वज) अपनी संतानों को आयु, पुत्र, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष, सुख तथा राज्य प्रदान करते हैं। अत: संतान को उक्त तीन कार्यों को सम्पन्न करते हुए अपने पुत्रत्व की सार्थकता सिद्ध करनी चाहिए। यदि पिता के निधन की तिथि अज्ञात हो तो क्षयाह्निक अथवा पार्वणदि श्राद्ध पितृपक्ष की आमावास्या को सम्पन्न करना चाहिए।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, स्वामी धरणीधर महाविद्यालय
खुशडिहरा-परैया (गया) सम्पर्क : 9430092864

✦

तीर्थ श्रेष्ठ गयाधाम

श्रीमती डॉ० मंजू दूबे

मगधेषु गया पुण्यं नदी पुण्याः पुनः पुना।
च्यवनस्याश्रमः पुण्यं पुण्यं राजगृहं वनम्।।
(वायुपुराण)

अर्थात् मगध में गया, पुनपुन नदी, च्यवनाश्रम और राजगृह ये चार पवित्र क्षेत्र हैं। बिहार का गया क्षेत्र विश्व प्रसिद्ध है। इसकी महत्ता का उल्लेख महाभारत, वाल्कीकि रामायण एवं पुराणों में है। 'वायुपुराण' का लेखन स्थान भी मगध क्षेत्र ही है। इसकी पवित्रता एवं गृहस्थों के घरों में पाठ की चर्चा आदरणीय बाणभट्ट के 'हर्ष चरित्र' ग्रंथ में द्रष्टव्य है। पुराणों के अनुसार यह राजर्षि गय की राजधानी थी। यह अत्यन्त धर्मपरायण राजा थे, जिन्होंने गया में एक यज्ञ किया और 'ब्रह्मसर' तालाब का निर्माण कराया। धर्मपृष्ठ, ब्रह्मसर तथा गृध्रवट ये यहाँ के तीन प्राचीन प्रधान स्थान हैं, जो श्राद्धकर्म और पिन्डदान के लिए प्रसिद्ध है। परशुरामजी ने भी यहाँ श्राद्ध किया था। जिसकी पुष्टि मत्स्य० 12, 17: ब्रह्म०– 34, 13, 104, 19, 11, 47, 17, 60, 19 वायुपु०– 85–19 से होती है। अतः गया बिहार का सर्वाधिक प्राचीन नगर है, जो महिमामण्डित है। यथा–

गयायां नहि तत् स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते।
सांनिध्यं सर्व तीर्थाणां गया तीर्थ ततो वरम्।।
ब्रह्मज्ञानेन किं साध्यं गोगृहे मरणेन किम्।
वासेन किं कुरूक्षेत्रे यदि पुत्रो गयां व्रजेत्।।
(वायु पु०, गया महा०–3)

सनातन धर्म में पितरों का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। शास्त्रों ने माना है कि यहाँ पितर नित्य निवास करते हैं। क्योंकि उन्हें यह तीर्थ अत्यन्त प्रिय है– **पितृणां चातिवल्लभम्** (कू पु० 30 वि० 34/7)। किसी भी प्रकार से अतृप्त पूर्वज को गया–तीर्थ में अपने पैरों से भी जल का स्पर्श कर पुत्र उन्हें असीम सुख प्रदान कर देता है। यथा–

'गयां यास्यति यः पुत्रः सनस्त्राता भविष्यति।
पद्भ्यामपि जलं स्पृष्ट्वा सोऽस्मभ्यं किं न दास्यति।।'
(वायु 105/9)

इसी हेतु मनुष्य अनेक पुत्र की कामना करता है। क्योंकि –

''एष्टव्याः बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत्।
यजेत वाऽश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत्।।''
(वायु पु. 105/10, पद्म. पु० स्वर्ग खण्ड 37/17, वा.रामा. 2/107/13)

श्रीमद्देवीभागवत पुराण में पुत्र की सार्थकता का उल्लेख करते हुए कहा गया है–

जीवतो वाक्य कारणात् क्षयाहे भूरि भोजनात्।
गययां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता।
(श्रीदेवीभाग. पु. 6/4/15)

अतः अपना पुत्र अथवा औरस पुत्र कोई भी गया में पिण्डदान करके अपने पूर्वजों को संतुष्ट कर सकता है। मेरी दृष्टि में दुर्भाग्यवश किसी को पुत्र न हो और केवल पुत्री ही हो, तो उसे भी श्राद्ध तर्पण करने का अधिकार है, क्योंकि यहाँ देवी सीता ने भी श्राद्ध किया था तथा अत्यन्त पवित्र धर्म पुत्री धर्मशिला पर्वत भी है, जो प्रेतयोनि से मुक्ति दिलानेवाली है।

गया की पवित्रता के पीछे इतिहास यह है कि गय नामक असुर केवल तपस्या में ही रूचि रखता था और उसने कामना–रहित हो दीर्घकाल तक तपस्या कर श्री नारायण से वरदान प्राप्त कर लिया कि उसका देह समस्त तीर्थों से भी अधिक पवित्र हो जाय। इस वरदान के कारण देवगण संत्रस्त हो उठे। विष्णु के निर्देश पर ही ब्रह्माजी ने यज्ञ करने हेतु उसके सम्पूर्ण शरीर को माँग लिया। गयासुर सहर्ष अपने शरीर को इसके लिए प्रस्तुत कर दिया। किन्तु, यज्ञ पूर्ण होने पर वह फिर से उठने लगा, तो देवों ने

तत्क्षण धर्मवतीशिला को उसके शरीर पर रख दिया। इसपर भी वह पुनः उठने लगा, तब साक्षात् गदाधारी विष्णु स्वयं उसके शरीर पर अवस्थित हो गये। गयासुर की यह पूरी देह, जो 10 मील में फैली हुई है अत्यन्त पवित्र है।

अस्तु, गया में फल्गु नदी प्रथम तीर्थ है। इस भूलोक पर समुद्र से लेकर जितने भी तीर्थ सरोवर हैं, वे सब प्रतिदिन एक बार फल्गु तीर्थ में आया करते हैं। अतः इसमें श्रद्धापूर्वक स्नान करने से उनके पितरों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति एवं स्वयं के लिए भोग और मोक्षदायी होता है। (अग्निपु. अ. 115/25-3) गंगाजी भगवान् विष्णु का चरणोदक हैं तथा फल्गु रूप में साक्षात् भगवान् आदिगदाधर प्रकट हुए हैं। इसमें स्नान करने से बाह्य एवं आभ्यन्तर दोनों प्रकार की शुद्धि होती है।

तत्पश्चात् विष्णुपद गया का प्राचीन एवं प्रधान मंदिर है। यह फल्गु नदी के किनारे अवस्थित हैं। मंदिर में अष्टकोण वेदी पर भगवान् विष्णु का चरण-चिन्ह् है; जो सदा चित्त को निर्मल करने वाले हैं इसके अतिरिक्त पवित्र स्थानों में गदाधर, गयासिर, मुण्डपृष्ठ, आदिगया, सूर्यकुण्ड, जिह्वालोल, सीताकुण्ड और राम गया (यहीं सीता ने पिण्डदान किया था), उत्तरमानस, रामशिला, काकबलि, प्रेतशिला और ब्रह्मकुण्ड, वैतरणी, भीमगया, भस्मकूमट, गोप्रचार, ब्रह्मयोनी, कर्मनाशा सरोवर, सरस्वती नदी (बोधगया में निरंजना होती हुई) मतंगवापी, धर्मारण्य तथा बोधगया इत्यादि प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं। अतः सभी तीर्थों में गया श्रेष्ठ तीर्थ हैं। विश्व के प्रत्येक कोने से सनातनधर्मी यहाँ आने की कामना रखते हैं।

पूर्व विभाध्यक्ष, ओरियन्टल कॉलेज, पटना सिटी

✦

गया-श्राद्ध एवं पिण्डदान का महात्म्य

डॉ० ब्रजराज मिश्र

वेद पुराणों में भगवान विष्णु की पावन नगरी गयाधाम को तीर्थों का प्राण कहा गया है। गयाधाम पितृतीर्थ के रूप में विख्यात है। पितृगण को तारनेवाले सभी देवताओं के साथ गदाधर भगवान विष्णु यहाँ निवास करते हैं। यहीं वह धर्मशिला भी है, जो प्रेतयोनियों से मुक्ति दिलानेवाली है। गया जी में सभी समय श्राद्धकर्म किया जा सकता है।

वायुपुराण के अनुसार :-

गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद विचक्षणः।

अन्तः सलिला फल्गु गया जी का प्रथम तीर्थ है, गया तीर्थ में फल्गु का विशेष महत्त्व है। इसे गया का आभ्यन्तर तीर्थ कहा गया है। फल्गु में स्नान करके भगवान विष्णु का दर्शन करने से सभी पाप मिट जाते हैं और पुण्यफलों की प्राप्ति होती है। फल्गु में अमृत की धारा बहती है। नारदपुराण के अनुसार फल्गु तीर्थ में श्राद्ध करने से पितरों की तथा श्राद्धकर्त्ता को भी मुक्ति मिलती है।

आर्ष ग्रंथों में ऐसा कहा गया है कि पूर्वकाल में ब्रह्मा जी की प्रार्थना से भगवान विष्णु स्वयं फल्गु के रूप में प्रकट हुए थे। समस्त लोकों में जो सम्पूर्ण तीर्थ हैं, वे सभी पितृपक्ष में फल्गु तीर्थ में स्नान करने के लिए आते हैं। गंगा जी भगवान विष्णु का चरणोदक है और फल्गु के रूप में भगवान विष्णु साक्षात् प्रकट हुए हैं। वे स्वयं जल के रूप में विराजमान हैं। गया जी में कोई स्थान ऐसा नहीं है, जो तीर्थ न हो। यहाँ सभी तीर्थों का संगम है।

वायुपुराण के अनुसार :-

गयायां न हि तत्स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते।
सान्निध्यं सर्वतीर्थानां गयातीर्थं ततो वरम्।।

अग्निपुराण के अनुसार गयाजी में साक्षात् भगवान विष्णु पितृदेव के रूप में विराजमान हैं। भगवान कमलनयन का दर्शन करके मानव सभी ऋणों से मुक्त हो जाता है।

भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के ग्रंथों में पितृऋण से मुक्ति पाने के लिए अपने माता-पिता और परिवार के मृत प्राणियों के निमित्त गया-श्राद्ध करने की अनिवार्यता बतायी गई है। श्राद्धकर्म को पितृकर्म भी कहते हैं। पितृपूजा ही अपने पितरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का परम लक्ष्य है। पितृकर्म में वाक्य की शुद्धता तथा क्रिया की शुद्धता मुख्य रूप से आवश्यक हैं पितरों की मुक्ति के उद्देश्य से विधिपूर्वक जो कर्म श्रद्धा से किया जाता है, उसे श्राद्ध कहते हैं। उसे पितृयज्ञ भी कहते हैं।

आश्विन मास के कृष्णपक्ष को पितृपक्ष कहा जाता है। इस समय अनादिकाल से देश-विदेशों से लाखों श्रद्धालु गयाधाम में आकर अपने पितरों की मुक्ति और शांति के लिए श्राद्ध और तर्पण कार्य का सम्पादन करते हैं।

कूर्मपुराण के अनुसार पितृगण वायु का रूप धारण कर अपने सगे-संबंधियों के द्वार पर जाते हैं और देखते हैं कि उनके कुल के लोगों द्वारा श्राद्धकर्म किया जा रहा है कि नहीं। सुबह से सूर्यास्त तक यदि कोई वंशज नहीं आता, तो सूर्यास्त के बाद भूखे-प्यासे व्याकुल होकर वे निराश हो जाते हैं। बहुत देर तक दीर्घश्वास छोड़ते और अपने वंशजों को कोसते हुए वे अपने गंतव्य स्थान पर चले जाते हैं। फिर सुबह फल्गु तट पर अपने वंशजों द्वारा श्राद्धकर्म की आशा लिए बैठे रहते हैं।

गयाधाम श्राद्ध और पिण्डदान के लिए सभी तीर्थों में विशेष महत्त्व रखता है। देवता और पितृगण यहाँ आकर निवास करते हैं। कर्मपुराण के अनुसार गयाधाम पितरों के लिए अत्यन्त प्रिय है।

पितॄणां चातिवल्लभम् (कूर्म पुराण)

पितृगण अपने पुत्रों और सगे-संबंधियों को श्राद्धकर्म के निमित्त गयाधाम में आया देखकर प्रसन्नचित होकर उत्सव मनाते हैं। वायुपुराण के अनुसार -

गयाप्राप्त सुतं दृष्ट्वा पितॄणामुत्सवो भवेत्।

पितृगण आकांक्षा रखते हैं कि पुत्र और सगे संबंधी गयाधाम में आकर अपने पैरों से फल्गु जल को स्पर्श कर देंगे, तो भी उनका तरण-तारण हो जायेगा। वायुपराण के अनुसार -

गयां यास्यति यो पुत्रः स नस्त्राता भविष्यति।
पद्भ्यामपि जलं स्पृस्ट्वा सोऽस्मान कि न दास्यति।।

स्कंदपुराण के अनुसार-पितरों और देवताओं की ऐसी योनियाँ है कि वे दूर से ही कही गयी बातों को सुन लेते हैं और दूर से की गयी पूजा भी ग्रहण कर लेते हैं तथा दूर से की गयी स्तुति से भी संतुष्ट हो जाते हैं। इन्हीं मान्यताओं के आधार पर अपने पूर्वजों को तृप्त करने के लिए श्रद्धाभाव से भोज्य पदार्थ और जल अर्पित किया जाता है, जिससे उनकी आत्मा को शांति मिले और सदा संतुष्ट रहें।

वायुपुराण के अनुसार गयाधाम श्राद्ध और पिण्डदान के लिए प्रसिद्ध है। वेदों में भारत के सप्तप्रमुख पुरियों में गया जी का विशेष महत्त्व है। अनादिकाल से गयाधाम में पितृतर्पण और श्राद्धकर्म तथा पिण्डदान का विधान चला आ रहा है। गयाधाम में सुर, नर मुनियों के लिए श्राद्धकर्म मुक्ति के सर्वश्रेष्ठ सोपान हैं।

महाभारत में भी गयाधाम को एक महान तीर्थ माना गया है। महाभारत के अनुसार मृत्यु के बाद जब कर्ण को चित्रगुप्त ने मोक्ष प्रदान करने में अस्वीकृति प्रदान की, तो कर्ण ने कहा कि मैंने तो अपने सम्पत्ति को सदैव दान-पुण्य में ही लगाया है, फिर भी मेरे ऊपर यह कैसा ऋण शेष है? चित्रगुप्त जी ने कहा कि राजन! आप देवऋण और ऋषिऋण से तो मुक्त हो गये, लेकिन आपके ऊपर पितृऋण अभी शेष है। आप गयाधाम में जाकर श्राद्धकर्म करें

तभी आपका उद्धार होगा। कर्ण ने वैसा ही किया। उन्होंने गयाधाम आकर ज्ञात और अज्ञात पितरों का श्राद्धकर्म किया, जिससे उनको मुक्ति मिली।

नारदपुराण के अनुसार जब भीष्म जी गयाशिर में पिण्ड देने लगे, तो उनके पिता शान्तनु के हाथ सामने निकल आए। परन्तु भीष्म ने भूमि पर ही पिण्डदान किया। इससे प्रसन्न होकर शान्तनु ने आशीर्वाद दिया कि पुत्र! तुम शास्त्रीय सिद्धान्त पर दृढ़ता पूर्वक विश्वास करते हो, इस लिए तुम त्रिकालदर्शी होगे और अन्त में तुम्हें भगवान विष्णु की प्राप्ति हो। इसके साथ ही साथ जब तुम्हारी इच्छा हो, तभी मृत्यु तुम्हारा स्पर्श करें। ऐसा आशीर्वाद देकर शान्तनु मुक्ति पाकर परमधाम चले गए।

नारदपुराण के अनुसार जब भगवान श्रीराम गया जी के रूद्रपद में आकर पिता आदि को श्राद्ध और पिण्डदान करने लगे, तो उसी समय उनके पिता दशरथ स्वर्ग से अपने हाथ फैलाये वहाँ आ गये, परन्तु श्रीराम ने उनके हाथ में पिण्ड नहीं दिया। शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन न हो इसी लिए उन्होंने रूद्रपद पर पिण्ड को रख दिया प्रसन्न होकर दशरथ जी ने कहा कि पुत्र! तुमने मुझे मुक्ति प्रदान कर दी। रूद्रपद पर पिण्ड देने से मुझे रूद्र लोक की प्राप्ति हुई।

भारतीय सभ्यता संस्कृति और संस्कार को अक्षुण्ण रखने के लिए हमें गया-श्राद्ध और पिण्डदान अवश्य करना चाहिए। गयाधाम में श्राद्ध और तर्पण करने से पितरों को अक्षयतृप्ति और मुक्ति मिलती है। श्राद्ध-कर्म करने से पितरों को तो मुक्ति मिलती ही है, इसके साथ ही साथ श्राद्धकर्त्ता को भी परम् गति प्रदान होती है। पितृगण अत्यन्त दयालु और कृपालु होते हैं। अपने वंशजों और प्रियजनों से प्रसन्न होकर सर्व गुण सम्पन्न होने का आशीर्वाद भी प्रदान करते हैं। वे प्रसन्न होकर श्राद्धकर्त्ता को आशर्वाद देते हैं कि-

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्ष सुखनि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिताः।।

अतः गयाधाम आकर अपने पितृगण की आत्मा की शांति और मुक्ति के लिए पितर-पूजा और श्राद्धकर्म करते रहना चाहिए, जिससे हमारी आस्था और आर्ष परम्परा भारत में फूलती-फलती रहे।

प्रधानाचार्य
डॉ० जे०एन० मिश्र कॉलेज, मऊ (गया)
मो० - 9931894075

✦

पितृपक्ष का वैदिक विवेचन

डॉ० राधानंद सिंह

भारतीय संस्कृति धर्म और कर्मकांड के मूल स्रोत वेद ही हैं। पुराणादि सारे शास्त्र मूलतः वेदों के उपपबृंहण हैं। इस प्रकार वेद भारतीय वाड्मय की अमूल्य निधि है, जिसने विश्व-मानव को आकृष्ट किया है। भारतीय सनातन परंपरा में पितृपक्ष का विशिष्ट महत्त्व है। पुराणादि शास्त्रों में इसका विशद वर्णन मिलता है। इसका मूल कारण यह है कि वेदो में भी विस्तार से इसकी गाथा गायी गयी है।

सभी धर्मों में हिन्दु-धर्म ही ऐसा धर्म है, जो पुनर्जन्म को मानता है। श्राद्ध और पितृपक्ष का मूल आधार यही है। परन्तु आज के बृद्धिजीवी पितृलोक, पितर, श्राद्ध, पिण्डदान को कपोल कल्पना मानते हैं। एतदर्थ इसके समाधान के लिए वैदिक वाड्मय के आधार पर पितृपक्ष से संबद्ध तथ्यों को प्रमाणित करना अपेक्षित है।

वेदों में पितर और पितृलोक के संबंध में कहा गया है- हे अग्ने। आप प्राणियों की आयुष्य बढ़यें और जिनका निधन हो चुका है , वे पितर लोक को प्राप्त करें।

जीवनामायुः पितर त्वमग्ने लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः
अथर्ववेद 12/2/45

अर्थात् हे पिता! जिन पुरातन मार्गों से हमारे पूर्वज पितरगण गये हैं, उन्हीं से आप भी गमन करें। वहाँ स्वधारूप आमृतान्न से तृप्त होकर राजा यम और वरूण देवों का दर्शन करें।

प्रेहि प्रेहि पथियिभः पूर्याणैयेना पूर्वे पितरः परेताः।
उभा राजानौ स्वधया मन्दतौ यमं पश्यसि
वरूणं च देवम्।। अथर्व वेद– 18/1/54

इन वैदकि ऋचाओं से पितर, पितृलोक, पितृयोनि के साथ यमलोक में मृतात्माओं के भाग्य निर्णय करने के लिए दो अधिकारी नियुक्त हैं– यम और वरूण– ऐसा सिद्ध होता है। वेद में वरूण का उत्कर्ष बतलाने के लिए देव शब्द प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद में केवल वरुणदेव के लिए 'सम्राट' शब्द का प्रयोग हुआ है। अतएव यम के हाथ में दंड और वरुण के हाथ में पाश शासक का चिन्ह् है।

पितर का निवास कहाँ है? इस संबंध में वेदोक्ति है कि अंतरिक्ष के उस तीसरे स्थान पर पितर रहते हैं, जो 'प्रद्यौ' नाम से प्रख्यात हैं।

तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितरः आसते।
अथर्व वेद 18/2/48

इन विषयों से संबद्ध वेदों में असंख्य ऋचाएँ हैं। वेदों में अन्य तथ्यों को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि:–

सं गच्छस्व पितृभिः संयमे नेष्टा पूर्तेन परमे व्योमेन्।
हित्वा वद्यं नरस्तमें हिसं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः।।
अथर्व वेद – 18/3/58

अर्थात् हे पिता। आप उत्तम लोक स्वर्ग में यज्ञादि दान–पुण्य कर्मों के फलस्वरूप अपने पितरगणों के साथ संयुक्त हों। पाप कर्मों के प्रभाव से मुक्त होकर पुनः घर में प्रविष्ट हों तथा तेजस्वी देवरूप को प्राप्त करें।

अग्नि देव जो मृत पुरूष आपके लिए जो स्वधायुक्त आहुति के रूप को ग्रहण करता है, उसे आप दुबारा पितरजनों के लिए सृजित करें। हे सर्वज्ञ अग्निदेव! इसका जो आयु भाग शेष है, वह प्राण संपन्न हो तथा पुनः सुदृढ़ शरीरधारी बनें।

अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यां यस्त आहुतश्चरति स्वधाभिः।
आयुर्वसान उप वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जात वेदः।।
ऋग्वेद– 10/16/5

इन मंत्रों में मृतात्मा को लोकान्तर में पहुँचने और प्रत्यावृत्त होकर पृथ्वी में शरीर धारण करने का स्पष्ट वर्णन किया है। इसी प्रकार पितृलोक और पितृयोनि के बारे में वेद कहता है कि :–

यद् वो अग्निरज हादेकमङ्गं पितृलोकं
गमणञ्जातवेदाः।
तद् व एतत् पुनरात्यामि साङ्गाः स्वर्गं पितरों
मादय ध्वम्।।
अथर्व वेद– 18/4/64

इस प्रकार पितर, पितृलोक; पितृयोनि आदि का वर्णन विस्तार से वैदिक साहित्य में उपलब्ध है। वेदों के अनुसार जो जीव पितर–लोक पहुँच जाते हैं, उनके लिए प्रदान किये हुए पिण्डों अथवा ब्राह्मण भोजन के सूक्ष्मांश उन्हें प्राप्त होता है, जिससे वे तृप्त होते हैं। तृप्ति के पश्चात् वे अपने वंशजों को आशीर्वाद देते हैं।

त्वमग्न ईडितो जात वेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा
प्रादाः पितृभ्यः स्वधा ते अक्षन्नद्धि त्वं देवः प्रयता हवींषि।
अथर्व वेद– 18/3/42

हे जात वेदा अग्निदेवःहूम आपके प्रति स्तुति प्रार्थना करते हैं। आप हमारी श्रेष्ठ सुगंधित आहुतियों को स्वीकार करके पितरगणों को प्रदान करें। पितरगण स्वधा द्वारा समर्पित आहुतियों को ग्रहण करें। आहुतियों का सेवन करें। इसी प्रकार आगे की ऋचाओं में भी यही बातें कही गई हैं।

इसी प्रकार पितरों के अस्तित्व, पितृलोक, पितृयोनि तथा श्राद्ध आदि कर्म की सार्थकता और यहाँ तक कि पितरों द्वारा उसे ग्रहण करके आशीर्वाद देने की बात वैदिक ऋचाओं में स्पष्टतः वर्णित है। पितर के आवाहन, आगमन, हिविष्यान्न ग्रहण और उनके शुभाशीर्वाद प्राप्ति पर अथर्ववेद की ऋचाओं के उदाहरण के पश्चात् जब हम ऋग्वेद पर दृष्टि डालते हैं तो वहाँ इसका विस्तार से वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में पितृगण निम्न, माध्यम एवं उच्च तीन श्रेणियों में व्यक्त हुए हैं।

उदीरतामवर उत्परास उन् मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
अंसु यइयुर वृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।
ऋग्वेद- 10/15/1

अर्थात् हमारे तीनों प्रकार (उत्तम, मध्यम, और निम्न) के पितर अनुग्रह पूर्वक इस यज्ञानुष्ठान में उपस्थित हैं। वे पुत्रों की प्राण रक्षा के उद्देश्य से यज्ञ में समर्पित हविष्यान्न ग्रहण करें। पितर को प्राचीन, पश्चात्कालीन एवं उच्चतर कहे गये हैं।

जो पितामहादि पूर्वज उसके पश्चात् मृत्यु को प्राप्त पितरगण हैं या जो पृथ्वी के राजसी भोगों का उपयोग करने के लिए उत्पन्न हुए हैं या जो सौभाग्यवान वैभव-सम्पन्न बांधवों के रूप में हैं, उन सभी को नमन। पितर सोमप्रेमी होते हैं और कुश के आसन पर बैठते हैं।

अर्थात् हमने यज्ञानुष्ठान सम्पन्न करना विधि-विधान अपने पितरों से ही सीखा है। वे इससे भलीभाँति परिचित हैं। सभी पितर यज्ञशाला में कुश आसान पर प्रतिष्ठित होकर हविष्यान्न एवं सोमरस ग्रहण करें। ऐसा ही भाव ऋग्वेद 10/15/4-6 में व्यक्त किया गया है। वे इन्द्र एवं अग्नि के साथ आहुतियाँ लेने आते हैं। अर्थात् सत्यव्रती, हविष्य के इच्छुक, सोमरस पानकर्त्ता जो पितरगण हैं, वे इन्द्रदेव और अन्य देवगणों वे साथ संयुक्त रूप से रथ पर विराजमान हैं। हे अग्निदेव। आप उन सभी देव उपासक प्राचीन यज्ञीय अनुष्ठानों के निर्वाहक पितरगणों के साथ स्मृतियों द्वारा आवाहन किये जाने पर सादर पधारें।

इस प्रकार ऋग्वेद मंडल-15-16 का पूरा प्रसंग पितर से ही सम्बन्धित है। श्राद्धकर्म में समर्पित हव्य पितर तक पहुँचता है। यह वेद की घोषणा है। हम जानते हैं कि स्वाहा देवताओं को और स्वधा पितरों को हव्य प्रदान करती है।

यो अग्नि क्रव्यवाहनः पितृन्यक्ष दृतावृधाः।
प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्य पितृभ्यः आ।।
ऋग्वेद- 10/16/11

अर्थात् श्राद्ध कर्म के समय समर्पित हव्य को वहन करने वाले अग्निदेव यज्ञ को समृद्धि को वहन करने वाले अग्निदेव यज्ञ को समृद्धि सम्पन्न बनाते हैं। वे दोनों एवं पितरों तक हव्य पहुँचाकर उनकी परिचर्या करते हैं। इस प्रकार वेदों में पितर के स्वरूपादि एवं उसकी अन्य विशेषताओं पर विस्तृत विवेचन किये गए हैं।

पूणे (महाराष्ट्र)
मो० नं०- 9031333878

✦

गया-धाम वैष्णव शैव और शाक्त मत का समन्वय स्थल

आचार्य सुबोध कुमार मिश्र

भैरवी चक्र पर स्थित भष्म कूट पर्वत निवासिनी माँ मंगला और भगवान विष्णु के क्रीड़ा-स्थल गया जी की पावन पुण्यमयी भूमि का इतिहास नूतन नहीं, कोई पाँच सौ हजार वर्षो का नहीं, बल्कि प्राचीन, पुरातन और आदिकालिक है। इसके प्रमाण तो अनेक उपलब्ध है और ढेर सारे प्रमाण प्रकृति के गर्भ में समाहित होकर विस्मृत हो गये है। ज्यादा नहीं एक-दो ही प्रमाण पर्याप्त हैं। इस नगरी को आदिकालिक होने का।

गया जी वैष्णव तीर्थ की वह पुण्य भूमि है जहाँ श्री हरि, हर और योग माया आदि शक्ति की साधना की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। पुरातन नगरी में गयाजी का नाम सर्वथा स्मरणीय और वंदनीय है। यही कारण है सप्त मोक्ष दायी तीर्थो में गया जी की महिमा अति-विशिष्ट है। पृथ्वी पर समस्त सामान्य एवं मोक्षदायी तीर्थो में किसी एक देवी या देवता की उपासना स्थली के रूप में उसकी प्रधानता रही है। गया जी की मोक्ष भूमि पर सृष्टि के पालनकर्ता भगवान विष्णु की प्रधानता है। वहीं संहारक सदाशिव की लीला स्थली तथा माँ मंगला का पालन पीठ भी है, जो लौकिक, शास्त्रीय औरआगमीय साधना का एक सुव्यवस्थित एवं विशाल केन्द्र रहा

है। यह दुर्लभ संयोग विश्व में कही अन्यत्र उपलब्ध नही है। भगवान विष्णु के पावन मंदिर फल्गु नदी के तट पर स्थित है ठीक उसके पीछे मोक्ष भूमि श्मशान है। यहाँ के श्मशान में अंतिम संस्कार के पूर्ब मृतात्मा को भगवान श्री विष्णु का चरणोदक अवश्य दिया जाता है। जबकि मृत्यु के अधिष्ठाता स्वंय शिव है, जो श्मशान के मालिक है। शिव-शक्ति और भगवान विष्णु के समन्वित वर्चस्व का नाम 'गया जी' अथवा गयाधाम है। गया जी की भूमि आगमीय (तंत्रोक्त) है। अगम को परिभाषित करते हुए कहा गया है :-

आगंत शिव वक्त्राब्ज गतंतु गिरिजा श्रुतौ।।
मतश्च वासुदेवस्य तस्मात् आगम उच्चयते।।

सृष्टि का वह गोपनीय रहस्य जो जगदम्बा द्वारा लोक के कल्याण के लिए भगवान शिव से पूछा गया प्रश्न का उत्तर, जो श्री विष्णुं द्वारा समर्थित एवं प्रचारित है वह शास्त्र, स्थान या रहस्य आगमीय है। सामान्यत: लोगों की धारणा है कि गयाजी केवल मोक्ष भूमि है, परन्तु यह स्वत: सिद्ध है कि यह भूमि भोग योग और मोक्ष की त्रिवेणी है। सृष्टि में जितने भी देवी देवता हैं वे या तो भोग के अधिष्ठाता है, या मोक्ष के। लेकिन श्री विद्या का पावन शरण साधक को भोग और मोक्ष दोनों करतल गत कर देता है।

यत्रास्ति भोगो नहि तत्र मोक्ष :
यत्रास्ति मोक्ष : नहि तत्र भोग:
श्री सुन्दरी सेवन तत्पराणां
भोगश्च मोक्षश्थ करस्थ एव।।

माँ मंगला की पावन भूमि जहाँ भगवान विष्णु भी इस नगरी में शक्ति की उपासना पंचमकार से करते हैं और स्वयं श्मशान वासी बन जाते है। शिव तो इस क्षेत्र के स्वयं आदि आचार्य हैं। यही कारण है कि भगवान का एक अद्‌भुत और अलौकिक शिव मंदिर माँ मंगला के पीछे रुक्मिनी तालाब के तट पर स्थित है, जिसे लोग वृद्ध प्रपितामहेश्वर महादेव या बुढ़वा महादेव के नाम से जानते है। ऐसी अद्‌भुत प्रतिमा सम्पूर्ण विश्व के कुछ ही जगहों पर उपलब्ध है। जो शिव द्वारा शक्ति प्रेम और शक्ति उपासना को स्थापित करता है। भगवान शिव की असंख्य दिव्य-भव्य और बड़े मंदिर दर्शनीय है, परन्तु श्मशान वासी, अमंगल वेशधारी शिव सर्वथा मंगलमय एवं कल्याणप्रद हैं परन्तु मुण्डमाल-भूषित, शिव लिंग विग्रह उज्जैन में श्री महाकालेश्वर और गया जी में वृद्ध प्रपिता महेश्वर महादेव का शिवलिंग ही है। आप सभी जानते है कि भगवान शिव के गले में मुण्डमाल किसका है, वह कोई सामान्य मानवीय मुण्ड नहीं हैं। भगवान शिव के शक्ति या धर्मपत्नी देवी सती का जितना अवतार हुआ है, उन्हीं के प्रत्येक जन्मों का मुण्डमाल है। जिसे भगवान शिव ने प्रेम के वशीभूत होकरअपने गले में माला बनाकर धारण किया है। वृद्ध प्रपिता महेश्वर महादेव मंदिर भगवान शिव की शक्ति उपासना और प्रेम का अद्‌भुत चित्रण कर रहा है। प्रजापति दक्ष के यज्ञ-कुण्ड में देवी सती के आत्मदाह करने के बाद भगवान शिव की विह्वलता को कम करने के लिए भगवान विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से सती के अधजले अंगो को खण्डित किये जाने पर भगवती का स्तन, गया जी के भस्म कूट पर्वत पर गिरा, जो पालन-पीठ के रूप में विख्यात हुआ और भगवान शिव सती के इस जन्म का भी मुण्ड अपने गले की मुण्ड माला में पिरोकर भस्मकूट पर ही अक्षयवट के पार्श्व में रूक्मिणी तालब तट पर समाधिस्थ हो गये, वहाँ भी भगवान शिव का आज भी भव्य मंदिर है। जो गया जी नगरी की पौराणिकता एवं शाश्वतता को प्रमाणित करता है। यही कारण है कि इस मोक्ष भूमि में भगवान राम ने आकर अपने पूर्वजो के उद्धार के लिए पिण्डदान किया, महाराज युधिष्ठर और पितामह भीष्म ने भी पिण्डदान किया।

सभी मोक्ष भूमि की विशेषता है कि वहाँ मृत्यु होने पर मुक्ति मिलती है, लेकिन गया जी की पावन पुण्य भूमि ऐसी है जहाँ आपके कुल की हजारवीं पीढ़ी के भी कई व्यक्ति आकर पिण्डदान कर दे तो भी समस्त पूर्वज एवं कुल के सारे लोग भव-बंधन से मुक्त हो जाते है। उनका उद्धार हो जाता है तथा उनके आर्शीवाद से संतान भी पुरूषार्थ चतुष्टय को प्राप्त करते है।

संपादक , 'आगम-स्मृति' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका
डेल्हा, गया - 823002 मो० : 9430092863

श्रद्धा, श्राद्ध और श्रद्धेय

डॉ० बच्चू शुक्ल

पूरी दुनिया में जनसंख्या के दृष्टिकोण से गया सबसे बड़ा शहर है, ऐसा मेरा विश्वास है और ऐसी मेरी धारणा भी है। लेकिन, पूरी दुनिया, पूर्ण ब्रह्माण्ड मेरी इस धारणा से शत-प्रतिशत सहमत हो जाये, इसमें सन्देह है। हाँ, आस्तिक विचार वाले इसका समर्थन कर सकते हैं, पर नास्तिक विचारधारा वाले लोग इसे बकवास मानेंगे।

मेरी धारणा है कि अब गया जी की जनसंख्या सिर्फ भौतिक ही नहीं, आध्यात्मिक गणना पर आधारित है। वैसे तो इसके क्षेत्रफल में दिनानुदिन बढ़ोतरी हो रही है। आबादी घनी है और लोग गाव-जेवार छोड़कर गया के विभिन्न क्षेत्रों में बसते जा रहे हैं। इससे भौगोलिक क्षेत्रफल दिनानुदिन बढ़ रहा है।

मेरा मानना है कि गया जी की धरती पर जितनी जनसंख्या है, उसके ठीक ऊपर आकाश में कई-कई करोड़ गुणा वैसी आबादी है, जिन्हें हम बड़ी सहजता से गिन ही नहीं सकते। कारण केवल और केवल श्राद्ध और तर्पण के द्वारा अपने जीवित पुत्र और पुत्रियों के माध्यम से किए जा रहे पवित्र कार्यों से स्वर्ग में अपना स्थल सुरक्षित करने के लिए बेचैन रहते हैं।

यह पौराणिक धारणा है कि जब कोई व्यक्ति अपना शरीर छोड़ता है, तो उसकी आत्मा आकाश में इसी श्राद्ध की प्रतीक्षा में इधर-उधर घूमती रहती है और जब तक उनकी संतानें उनके लिए श्राद्ध और तर्पण नहीं करते, तब तक उन्हें शांति नहीं मिलती। चूँकि पूरे ब्रह्माण्ड में केवल गया जी ही ऐसा पवित्र स्थल है, जहाँ उनकी संताने श्राद्ध, पिण्ड और तर्पण के साथ-साथ दान-पुण्य नहीं करते, तब तक वे तड़पते रहते हैं। उनकी आत्मा को शांति नहीं मिलती, फलस्वरूप वे व्याकुल रहते हैं। यही नहीं, उनकी संताने भी चैन से नहीं रहती, जब तक अपने पूर्वजों के लिए श्राद्ध और तर्पण के कार्य नहीं करते। दरअसल गया जी ब्रह्माण्ड के संपूर्ण क्षेत्रों में सर्वोत्तम पुण्य क्षेत्र है, जहाँ उनकी संताने पिण्ड और तर्पण विधियों के द्वारा अपने पूर्वजों के द्वारा किए जा रहे, पवित्र कार्यों से संतुष्ट नहीं हो जाते। 'गंगा महात्म्य' के अनुसार सनतकुमार और नारद जी के बीच होने वाली बात-चीत के क्रम में सनतकुमार ने कहा -

"वक्ष्ये तीर्थ परं पुण्यं श्रद्धादौं सर्वतारकम्। गयातीर्थ सर्वदेशे तीर्थमतोऽप्यधिकं श्रृणु। गयासुरस्तपरतेपे ब्रह्मण्य क्रतवेऽर्थितः। प्रापतस्य तस्यशिरसि शिलां धर्मोह्यधारचत्। तत्त् ब्रह्माकरोद्यांग स्थितश्रनिगदाः। फल्गुनी तीर्थादिरूपेण निश्चलार्थमपर्निशम्। गयासुरस्य विपेन्द्र ब्रह्मद्येदैवतै सह। तयज्ञो ददौ ब्रह्मा ब्रह्मणेभ्यो गृहादिकम्। श्वेतकल्पे तु वाराहे गयो योगमकारयत्। गयानाम्ना गयाख्यातं क्षेत्रे ब्रह्मर्षिकांक्षितम् कांक्षनित पितरः पुत्रान् मरकाद्भयभीखः। गयां यास्यति चः पुत्रो से नस्त्राता भविष्यति। गयाप्राप्तं सुतः हश्ट्वा पितृणामुत्सवो भवेत। पदीयामपि जलं स्पृष्टवा षोऽस्मभ्यं किन्ना दास्यति। एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोडपि गयां व्रजेत्। यजेद्धा चाश्रमेधेन नीलं वा वृषममुत्सृजेत्। गयां गत्वान्नदाता चः पितरस्तेन पुत्रिणः। पक्षत्रर्यानिवासी च पुनात्यासप्तमं कुलम्। नो चेत्पंचदशाहं वा सप्तरात्रं त्रिरात्रकम्। महाजन्मतं पापं गयां प्राप्त विनश्यति। पिंड दद्याच्च पित्रादेरात्मनोऽपि तिलैर्विनि। ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वगनागमः। पापं तत्संसर्गजं सर्व गयाश्राद्धाद् विनश्चति .... शिरसि श्राद्धद् यस्तु कुलानां शतमुद्धरेत्। गृहाच्चलितमात्रेण गयायां गमनं प्रति। स्वर्गारोहणसोपानं पितृणां च पदे-पदे। पदे-पदे ऽश्रवमेधस्य यत्फलं गच्छतों गयाम्। तत्फलं च भवेनृणां समग्रेन नात्र संशयः।"

वास्तव में गया माहात्म्य के अनुसार एक बार शौनकादि श्रृषियों के साथ नारद जी ने गया के महात्मय की जिज्ञासा से सनत् कुमार से कहा कि हे मुनिवर, आप गया की उस विशेषता के संबन्ध में कुछ बतलाइए, जो अभी तक किसी को मालूम नहीं है। इसके बाद नारद जी ने कहा कि ''हे सनतकुमार! उत्तमोत्तम तीर्थ के महात्म्य कहिए जिसके पाठ व श्रवण करने से समस्त प्राणी को मोक्ष मिल जाता है। सनतकुमार जी बोले कि परम पवित्र श्राद्धादि कर्म करने से मोक्ष देने वाले देशों में श्रेष्ठ गया-तीर्थ के माहात्म्य को सुनो। प्रथमतः गया सुर दैत्य ने ब्रह्मा से यज्ञ कराने की इच्छा करके तप किया, तो धर्मराज ने आकर गयासुर के सिर पर पत्थर की शिला रखी। उसी शिला पर ब्रह्मा जी यज्ञ किये, वहीं पर आदि गदाधर भगवान तीर्थ रूप से प्रकट होकर दिन-रात उसके निश्चलार्थ स्थित हुए।

इसके उपरान्त उन्होने यह भी कहा कि - ''श्वेतकल्पे तु वाराहे गयौ योगमकारक्षत्। गय नाम्ना गयाख्यात। क्षेत्र ब्रह्मार्षिकांक्षितम्।। कांक्षनित पितरः पुत्रान् नरकाद् भयवीखः। गयां यास्यति चः पुत्रो स नास्त्राता भवेत्।। पद्भ्यामापि जलं स्पृष्ट्वा सोऽस्मभ्यं किन्न दास्यति। एप्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोडपि गयां व्रजेत्। यजेद्धा चाश्रमेधेन नीलं वा वृषभमुत्सृजेत्। गयां गात्वान्नदाता च पिस्तस्तेन पुत्रिणः।। पक्षत्र यनिवासी च पुनात्यासप्रमं कुलम्। नो चेत्पंचदशाह वा सपतरात्रं त्रिरात्रकम्।।

इतना ही नहीं पुनः सूत जी ने कहा कि - ''**महाजन्मत पापं गयां प्राप्त विनश्यति। पिंड दधाच्च पित्रादेरात्मनोऽपि तिलैर्बिना।। ब्रह्महत्या सुरापान स्तेयं शुर्वगनागमः। पापं तत्संसग्रजं सर्व गया श्राद्धाद विनश्यति।। आत्मजोऽयन्यजो वाणि गया भूमौ यदा तदा। चन्नाम्ना पातयेतिपण्डं तं नयेद् ब्रह्मशाश्रव तम्।। ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्ध गोगृहे मरणं तथा। वासंःपुसां कुरूक्षेत्रे मुक्तिरेषा चतुविद्धा।। ब्रह्माज्ञानेव कि साध्यं गोगृहे मरणेन किम्। वासेन किं कुरूक्षेत्रे यदि पुत्रों गयां व्रजेत।।**

वास्तव में यदि शुद्ध विधि, पवित्रता, सही मंत्रोचार पूर्वक श्राद्ध और तर्पण, पिण्ड-कार्य शुद्ध हृदय से निर्विकार हो किये जायें, तो कोई कारण नहीं कि लोगों का कल्याण न हो तथा पितरों का भी स्वर्गारोहण नहीं हो सके। लेकिन पुरोहित जी और यजमान किसी तरह जल्दी से कार्य को निबटाना चाहते है इसमें श्रद्धा की कमी और समय की कमी के कारण हो जाती है। ऐसी स्थिति में यथोचित फल की प्राप्ति कैसे सम्भव है?यही कारण है कि न तो निर्विकार मन से पाठ होता है और शुद्ध रूप से फल की प्राप्ति होती है। अतः यथोचित लाभ हो, इसलिए सही विधि, सही मंत्र और सही साधन नहीं होते है, इसलिए फल की प्राप्ति भी सही नहीं होती।

पण्डित और यजमान-दोनों स्वार्थ साधन में ही रहते हैं। ऐसे में घर की शांति कहाँ से मिलेगी! कहीं भूत-प्रेत का उपद्रव, कहीं-कहीं घर में अकस्मात् आग लग जाना और कहीं-कहीं अर्द्ध रात्रि में किवाड़ो की टकराहट जैसी घटनाएं होती रहती हैं। ऐसी स्थिति में केवल श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान आप जितने करवाएँ, सही शांति, प्रेत-शांति असम्भव है। अतः आवश्यकता है शुद्ध हृदय, अडिग श्रद्धा और शुद्ध मंत्रोचारण की ताकि देव-पितर को आसानी से स्वर्ग का सुख उपलब्ध हो और यजमान को शांति मिल जाये तथा मोक्ष की प्राप्त हो सके।

वास्तव में बिना श्रद्धा के मोक्ष मिल ही नही सकता। ''श्राद्धात-दीयते, इति श्राद्धम, अर्थात बिना शुद्ध हृदय के श्रद्धा हो ही नहीं सकती, बिना श्रद्धा के दिया गया पिण्डदान उन्हें उपलब्ध ही नही हो सकता, वह तो छलावा हो जायेगा, पितरों के साथ ठगी हो जायगी'' और यह कार्य यजमान के साथ-साथ श्राद्ध कर्त्ता को भी अनिष्ट की ओर ले जायेगा।

गया माहत्म्य के अनुसार - ''तेषां पिण्डो गया दूतो ह्याक्ष्यमुपतिष्ठतु। मुष्टिमात्रप्रमाणं च आर्दामलकमात्रकम्। शमीपत्रप्रमाणेन पिंड दद्याद् गयाशिरे। उद्धरेत्सप्तगोत्राणां कुलमेकोत्तरं शतम्।। पितृर्मातुश्र भर्याया भगनया दुहितुस्तथा। पितृष्वसुर्मातृवष्वसुः सप्तगोत्राः प्रकीर्तिताः।

चतुर्विंशच विशच्चषोडश द्वादशैवहि। रूद्रा दश वसुश्रेव कुलान्येकोत्तर शतम्। अस्मत्कुलै मृता थे च गतिर्येषां न विद्यते।।

'बृहद् श्राद्ध परिजात' के अनुसार श्राद्ध नहीं करने से जो दुष्परिणाम भुगतने पड़ते है वे निम्नांकित है –

न सनित पितश्चेति त्वा मनसि यो नरः।
श्राद्धं न करूते मोहात्तस्य रक्तं पिबन्ति ते।

साथ ही श्राद्ध करने से जो फल की प्राप्ति होती है, उसके संबंध में लेखक ने स्पष्ट घोषणा करते हुए लिखा है कि –

आयुः पुत्रान्यशः स्वर्ग कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्।
पशून्सौख्यं धनं धान्य प्राप्तुयात्पितृ पूजनात्।।

अर्थात् पितरों की पूजा करने से आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल, लक्ष्मी, पशु, सुख, धन और धान्य की प्राप्ति होती है और उनके पितर तो सुख का भोग करते ही हैं, पिण्डदान करने वाले को भी शांति मिलती है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामया,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिदुख भाग्भवेत।

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, गया कॉलेज, गया

✦

गया धाम में पिण्डदान का आध्यात्मिक पक्ष

श्री राजेश चौधरी

गया भारतवर्ष का एक प्रमुख पितृतीर्थ है। इसकी महिमा पितरों की क्षुधापूर्ति एवं प्रेतत्व मुक्ति से जुड़ा हुआ है। भारतीय समाज में प्रमुखतः षोडश संस्कारों का उपयोग किया जाता है। गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि पर्यन्त इन संस्कारों का निर्वाह किया जाता है। मीमांसा दर्शन में कर्मवाद वर्णित है। कर्मवाद में मनुष्य के जन्म के पूर्व से मृत्यु के पश्चात् तक के क्रियाकलापों का विवेचन है। अंतयेष्टि क्रिया का महात्म्य संपूर्ण भारत में अग्रणी है। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार यहीं से पिण्डदान प्रारंभ करनी चाहिए। जनश्रुति है कि अयोध्या नरेश ने यहीं सीता एवं राम से पिण्डग्रहण किया था। भारत के विभिन्न राज्यों से लोग गया में आकर पिण्डदान करते हैं। पिण्डदान का आध्यात्मिक महत्व उल्लेखनीय है।

भारतीय समाज के मूल तत्वों में इसकी प्राचीनता, विविधता, कर्म एवं पुनर्जन्म में विश्वास की अटूट परम्परा, पुरूषार्थ एवं विभिन्न प्रकार के ऋणों के दायित्व की भावना का समावेश, इस समाज को अन्य दूसरे समाजों से अलग स्थिति प्रदान करता है। विभिन्न धर्मों के अनतर्गत पायी जाने वाली धार्मिक मान्यताएँ, परम्परा एवं लोकाचार समाज की प्रकृति में भिन्नता के आधार पर अलग–अलग हुआ करती है और भारतीय धार्मिक परम्पराएँ इसका अपवाद नहीं है। जन्म एवं मृत्यु को कल्पना और उससे जुड़े हुए मानवीय दायित्वों का उल्लेख सभी धार्मिक व्यवस्थाओं में हैं। हिन्दू धार्मिक व्यवस्था इस संदर्भ में अन्य दूसरे धर्मो से कुछ इस प्रकार भिन्न है, जिसमें आत्मा को अमर किन्तु शरीर को नश्वर, साथ ही कर्म के आधार पर एक शरीर की मृत्यु हो जाने से पुनः दूसरे शरीर के माध्यम से उस आत्मा का पुनर्जन्म होता है। इसके बीच की अवधि में सूक्ष्म शरीर को अपने कर्मों के अनुरूप भोग भोगना पड़ता है। इस कर्म और पुनर्जन्म के चक्र में आत्मा की मुक्ति के लिए उस प्रेत की संतानों के सारा कुछ धार्मिक कृत्यों का संपादन यथा 'श्राद्धकर्म' जिसमें पिण्डदान भी सम्मिलित है, किया जाता है। हिन्दू कर्मकाण्ड से जुड़े हुए अनेक पुस्तकों में इसका उल्लेख किया गया है, जो अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारतीय समाज के व्यवहार में प्रचलित है।

गया में पिण्डदान करने की परम्परा उपर्युक्त तथ्यों से ही जुड़ी हुई है। सनातन धर्म की मान्यता यह है कि मृतक के पुत्र अथवा कोई भी वंशज के द्वारा गया में दिये गये पिण्डदान के माध्यम से उस मृतात्मा को स्वर्ग की प्राप्ति हो जाती है। प्रेत-योनि से मुक्ति मिल जाती है। वैसे तो इसका प्रारम्भ किसी व्यक्ति की मृत्यु के प्रात: काल से ही दसवें दिन तक उस परिवार के पुरोहित के माध्यम से पिण्डदान किया जाता है और आद्य श्राद्ध एकादशा या द्वादशा मृत के ग्यारहवें या बारहवें दिन सम्पन्न किया जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि मन को छोड़कर शरीर में दस इन्द्रियां (पांच कर्मेन्द्रिया और पांच ज्ञानेन्द्रियां) हैं, इन्हीं दस अंगों का निर्माण होने के उद्देश्य से दस दिनों तक कर्त्ता के द्वारा पिण्डदान किया जाता है, ताकि ग्यारहवें दिन और बारहवें दिन तक वह उस मृतात्मा का सूक्ष्म शरीर सभी अंगों से मुक्त होकर पूर्ण हो जाये एवं कर्त्ता के द्वारा अर्पित की गई आवश्यक वस्तुयें उसे प्राप्त हो सके। मृतक की मृत्यु के पांच वार्षिक एकोदिष्ट के उपरान्त ही उसका कर्त्ता सामान्यतया गया में उसे पिण्डदान अर्पित करता है और हिन्दू धर्म की मान्यता है कि उसके बाद मृतात्मा प्रेत-योनि से मुक्त होकर स्वर्ग लोक में आरोहरण कर जाती है।

इस प्रकार से गया में पिण्डदान की परम्परा को जहाँ एक ओर लोग अपने धार्मिक कर्त्तव्यों की पूर्ति का एक अंग मानते हैं, वहीं दूसरी और इसकी सामाजिक मान्यता व्यक्ति को एक सामाजिक सदस्य के रूप में उसे सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करती है। गरुड़पुराण एवं अन्य आर्ष ग्रंथों में गया पिण्डदान की व्यापक चर्चा की गई है। भगवान स्वंय कहते हैं - हे खगेश्वर! पितृभक्ति से प्रेरित हो करके पुत्र को एक वर्ष के अनन्तर ही गया-श्राद्ध करना चाहिए। गया-श्राद्ध करने से पितर भवसागर से मुक्त हो जाते हैं। थगवान गदाधर की कृपा से वे परम गति को प्राप्त होते है। (गया के विष्णुपद तीर्थ में) तुलसी की मंज्जरी से भगवान विष्णु के चरण का पूजन करना चाहिए और उसके आस-पास के अन्य तीर्थो में यथा-क्रम पिण्डदान करना चाहिये। जो व्यक्ति गयासिर में शमी के पत्ते के समान वाले पिण्ड को देता है, वह सातों गोत्रों के (अपने) एक सौ एक पुरूषों का उद्धार करता है। कुल को आनन्दित करने वाला जो पुत्र गया में जाकर श्राद्ध करता है, पितरों को तुष्टि देने के कारण उसका जन्म सफल हो जाता है। इसलिए शास्त्रों में बहुत से पुत्रों की कामना की गई है, क्योंकि उनमें से कोई एक भी गया जाकर उनका श्राद्ध या पिण्डदान करेंगे, तो उन्हें निश्चय ही मुक्ति मिलेगी।

अपर समाहर्त्ता, पटना

✦

उत्तराधिकार और श्राद्ध का सम्बन्ध

श्रीमती अनुराधा प्रसाद

संसार में पहली सबसे दुलर्भ वस्तु के रूप में हम सबों को यह मनुष्य शरीर मिला है। यह भगवान की असीम कृपा के रूप में प्राप्त हुआ है। हमारे अनंत जन्मों के पाप को स्थगित करके प्रभु ने यह मानव शरीर प्रदान किया। पूर्व जन्मों में हमारे द्वारा कुछ अच्छे कर्म किये गये होंगे, जिसके संस्कारों के फलस्वरूप यह मानव-तन मिला है। तुलसीदास ने भी 'मानस' में लिखा है कि 'बड़े भाग्य मानुष तन पावा' और उन्होंने आगे इसकी व्याख्या करते हुए बताया कि मोक्ष का द्वार इस मनुष्य शरीर से ही प्राप्त करना संभव है। भगवान जब किसी जीव पर प्रसन्न होकर उसे मोक्ष देना चाहते हैं, तो उसे मनुष्य का तन प्रदान करते है। मृत्यु के बाद अपने कर्मों के अनुसार जीवात्मा को उत्तम, मध्यम या कनिष्ठ स्थान मिलता है। हमारी भारतीय संस्कृति की एक बड़ी विशेषता यह है कि यह जीते जी तो विभिन्न संस्कारों द्वारा धर्म

का पालन करते हुए मानव को सम्मुन्नत करने का तो उपाय बताती ही है, मृत्यु के बाद अंत्येष्टि संस्कार के उपरांत भी जीव की सद्गति के लिए किये जाने वाले योग्य संस्कारों का वर्णन करती है। हिन्दू धर्मावलंबी अपने जीवित माता–पिता की सेवा तो करता ही है, उनके देहावसान के बाद भी उनके कल्याण के लिए कार्य करता ही है और उनके अधूरे शुभ कर्मो को पूरा करने का प्रयत्न करता है। हिंदू धर्म में एक अत्यंन्त ही मौलिक पुण्य है, कृतज्ञता की भावना जो कि बालक में अपने माता–पिता के प्रति स्पष्टतः दिखलाई पड़ती है। मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यमय है, यानि यह कर्त्तव्य का पर्याय है, उसे कर्त्तव्य करते हुए ही जीना है। इस कर्त्तव्यमय जीवन का एक महायज्ञ है 'पितृयज्ञ'। इसका तात्पर्य हुआ जो पालन करने वाले देव, ऋषि, विद्वान, आचार्य, माता–पिता इत्यादि चूकि पित्रादि की सेवा करना सत्कार, सम्मान करना है।

अतः पितृयज्ञ का तात्पर्य हुआ श्राद्ध। हमारे यहाँ पुत्र के लिए अपने माता–पिता बड़े बुजुर्ग की सेवा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना महत्वपूर्ण तथा सर्वश्रेष्ठ धर्म माना गया है। पूर्वजों की सेवा श्रद्धा से की जाती है और तर्पण भी पितृयज्ञ को ही कहते हैं, क्योंकि हमारी सेवा सत्कार आदि से ही पालनकर्त्ता पित्रादिजन तृप्त होते हैं।

'उत्तराधिकार' और 'श्राद्ध' का मौलिक सम्बन्ध माना जाता है। प्रेतयोनि से छुटकारा दिलाना और पितरों को सद्गति दिलाना पुत्र का प्रथम कर्त्तव्य है। जीवित माता–पिता, गुरूजनों की आज्ञा पालन करने से तथा उनकी मृत्योपरांत संस्कार, श्राद्ध–तर्पण करने से पुत्रता सिद्ध होती है। यानि उपरोक्त कार्यों का सम्पादन ही पुत्रत्व का द्योतक है। पितरों के निमित्त किया हुआ तर्पण और श्राद्ध निश्चित रूप से उन्हें मिलता ही है। प्रयागराज, काशीधाम और गया जी को मृत परिजनों की मुक्ति और मोक्ष के लिए त्रिस्थली की संज्ञा दी गयी है, पर इन तीनों में 'गया' को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। वायुपुराण में कहा गया है कि गया में पिंडदान से मनुष्य को जो फल मिलता है उसका वर्णन करोड़ों कल्प में नहीं किया जा सकता है। पद्मपुराण और गरूड़पुराण आदि विभिन्न धर्मग्रन्थों में भी गया में पिंडदान के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि गया जी में पिंडदान करने से एक सौ आठ कुल और सात पीढ़ी तक को नरक भोग से मुक्ति मिल जाती है। पुराणों और धर्मग्रन्थो में इस बात का भी वर्णन है कि भगवान कृष्ण की सलाह पर पांडवों ने गया में चार महीने तक प्रवास कर युधिष्ठिर के नेतृत्व में अपने पूर्वजों के मोक्ष के लिए गया–श्राद्ध किया था।

धर्म ग्रंथों के अनुसार राजा दशरथ के निधन के बाद अपने बनवास के दिनों में भगवान राम और सीता ने भी मोक्ष की प्राप्ति के लिए गया में पिंडदान किया था। गया जी पूर्वजों के उद्धार के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान है, जहां कोई व्यक्ति पवित्र मन से आकर तर्पण–श्राद्धादि का कार्य सम्पन्न करता है। श्राद्ध कर्म करने से कर्त्ता के पितृगण तो स्वर्ग को जाते ही है, उसे भी 'अश्वमेघ यज्ञ' करने का फल मिलता है। पितरों को तारने वाले सभी देवता भगवान विष्णु के साथ यहां निवास करते है। पूर्वजों को उद्धार करने वाली अन्तः सलिला फल्गु नदी यहीं प्रवाहित होती है। शास्त्रों का कथन है कि गया में श्राद्ध करने वालों को किसी काल का विचार नहीं करना चाहिए। गया में पिण्डदान और तर्पण का काम सालों भर चलता रहता है फिर भी पितृपक्ष आश्विन मास का श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ और उत्तम फल देने वाला माना गया है।

मौलागंज, गया

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जीवन-दर्शन

द्वारिको सुन्दरानी

हवा बदलने के खातिर,
आंधी की आज जरूरत है।
लपटों में बैठी दुनिया को
गाँधी की आज जरूरत है।।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण जीवन एक खुली किताब की तरह है। जिसका हर पन्ना प्रेरणादायी प्रसंग तथा संदेश से भरा है। शायद यही कारण था कि स्वयं गाँधी जी ने कहा था कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। सत्य, प्रेम और करूणा का जीवन जीने वाला व्यक्ति मानव नहीं बल्कि महामानव था। इसलिए रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें महात्मा की उपाधि से सम्बोधित किया।

अलबर्ट आईंस्टाईन जैसे महान वैज्ञानिक ने भी गाँधी के सम्बंध में कहा था कि आने वाली पीढ़ी यह विश्वास नहीं करेगी कि एक साधारण हाड़-मांस का बना हुआ मानव सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर विशाल अंग्रेजी हुकूमत को भारत को आजाद करने के लिए विवश कर दिया।

वे एक ऐसे मनुष्य थे कि जो कहते थे, वही करते थे और जो करते थे, उसे ही जीवन में उतारने के लिए कहते थे। उनके जो ग्यारह व्रत है :-

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह
शरीर-श्रम, भय-वर्जनम्।
सर्वधर्म समानत्व, स्वदेशी वस्तुओ का वरण
विनम्र, व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्यहे।।

गाँधी जी ने उन व्रतों को स्वयं अपने जीवन में उतारा। इतने बड़े साम्राज्यवादी व्यवस्था से भारत को गुलामी से मुक्त कराने के लिए हिंसक अस्त्रों का सहारा नहीं लिया, बल्कि सत्याग्रह चरखा, सविनय अवज्ञा, सत्य अहिंसा और आत्मबल का सहारा लिया। इसी से अपनी लड़ाई जारी रखकर अंग्रेजों को सात समुन्दर पार जाने का रास्ता दिखा दिया। उन्होंने आजादी की लड़ाई के साथ-साथ समाज में व्याप्त बुराई से भी संघर्ष किया। जैसे- भंगी-मुक्ति अभियान चलाकर अछूतोद्धार, कुष्ठ निवारण हेतु कुष्ठ रोगी की स्वयं, मरहम पट्टी करना, अन्त्योदय सर्वोदय, अखिल भारतीय चरखा संघ का गठन करना, ग्राम स्वावलम्बन, ग्राम स्वराज, गाँव की बनी हुई चीज का अधिक-से-अधिक उपयोग करना ये सब उनके जीवन के आदर्श थे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी साकार रूप में इस दुनिया में 79 वर्षो तक रहे। उनके जीवन के प्रारम्भिक ढाई-तीन दशकों को छोड़ दिया जाय, तो लगभग 50 वर्षों का समूचा जीवन पूरी तरह सार्वजनिक सरोकारो से भरपूर रहा। आज से 100 वर्ष पहले अपनी पुस्तक "हिन्द स्वराज" में गुलामी के प्रति मनुष्यता को आगाह करते हुए अपने शरीर को ही जीवन का सबसे भरोसेमन्द यंत्र के रूप में निरूपित किया था।

गाँधीजी की जीवन-दृष्टि विशिष्टता में न होकर सहज मनुष्यता में थी। एक बार साबरमती आश्रम में एक व्यक्ति चोरी करने की नियत से घुस आया। शंका होने पर उस समय जाग रहे आश्रम वासियों ने उस व्यक्ति को पकड़कर आश्रम के एक कमरे में बन्द कर दिया। सुबह प्रार्थना एवं नाश्ते के बाद आश्रम वासी उस व्यक्ति को बापू के पास ले गये और कहा कि बापू यह आदमी चोरी करने के लिए आश्रम में घुसा था। हमने इसे कमरे में बन्द किया है, हम अब क्या करें ? बापू ने उस व्यक्ति को लाने वाले आश्रम वासियों से पहला प्रश्न था। इस भाई को सुबह का नाश्ता दिया। बापू ये तो चोरी करने आये थे, इसे नाश्ता ? बापू ने शान्त चित्त उत्तर दिया, चोर बाद में होगा पहले मनुष्य है। आपने नाश्ता किया, तो इसे भी आपके साथ ही नाश्ता मिलना चाहिए था। आश्रम वासी भौचक्के रहे गये और बापू की जीवन-दृष्टि ने उस भाई की समूची सोच को ही बदल दिया और वह व्यक्ति आजादी को आन्दोलन में सजग कार्यकर्ता बन गया।

गाँधीजी दुनियाँ के ऐसे अनोखे वकील थे, जो मुकदमा जितना नहीं, बल्कि समस्या का समाधान चाहते थे। वे ऐसे वैद्य थे जो समूचे जीवन को ही आरोग्य दृष्टि के आधार पर सदैव रोग-मुक्त रखने का उपक्रम करते थे। ये धन-सम्पदा को व्यक्तिगत ऐश्वर्य का साधन न मानकर विश्व-स्तर के रूप में रखी हुई समाज की सार्वजनिक धरोहर के रूप में देखते थे। गाँधी जी एक ऐसे अनोखे मनुष्य थे, जिन्होंने कभी भी खुद को अपनी पीठ नहीं थपथपाई, वरन् कमजोर से कमजोर और निराशा से भरे हुए मनुष्य की पीठ पर हाथ रखकर उसमें हमेशा सकारात्मक ऊर्जा के साथ सतत् सक्रिय बने रहने की सम्भावना खोज कर उसे क्षमतावान बनाया।

आधुनिक काल में उन्हें तथा उनका जीवन-दर्शन विस्मृत करने का नतीजा है कि हम सब देश और दुनियाँ में यांत्रिक सभ्यता को तो बहुत ज्यादा बढ़ते देख रहे हैं, पर मनुष्य मात्र की प्राकृतिक जीवन शैली सभ्यता को लोभ-लालच के महासागर में डुबो रहे हैं।

स्थिति यह है कि -

उनके मजारों पर दिये नही जले,
जिनके खून से लिखा है चरागे-वतन।
जगमगा रहे उनके मजार
जो बेचा करते थे शहीदो के कफन।।

समन्वय आश्रम, बोधगया।

✦

विनोबा भावे का शैक्षिण चिंतन एवं दर्शन

डॉ० यू० एस० प्रसाद

मानव इतिहास में शिक्षा मानव-समाज के विकास के लिए सतत् क्रिया एवम् प्रेरणा रही है। मनोवृत्तियो, मूल्यों, ज्ञान और कौशल जैसी क्षमताओं के माध्यम से शिक्षा लोगों को बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप बनने के लिए उन्हें शक्ति प्रदान करती है, सामाजिक विकास के लिए प्रेरित करती है और उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है। आचार्य विनायक नरहरि भावे ऐसे ही महान चिन्तक और साधक थे, जिन्होने गांधीवादी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए देश के करोड़ो भूखे, नंगे और पीड़ित लोगों को सामाजिक एवम् सांस्कृतिक परिवर्तन हेतु प्रेरित किया।

विनायक नरहरि भावे का जन्म महाराष्ट्र के भागोदा ग्राम में 11 सितम्बर 1895 में हुआ था। अपनी माता से उन्हें प्रेम, सहृदयता और समर्पण जैसे गुण संस्कार में मिले थे। 10 वर्ष की आयु में उन्होने आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा कर ली थी। उनकी मृत्यु 15 नवम्बर, 1982 को हो गई। विनोबा जी को महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी माना जाता है। उन्होने देश के सामने नैतिक, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करने के लिए 'पंचशक्ति' का सुझाव रखा था। ये शक्तियाँ है - जन-शक्ति, महाजन-शक्ति, संतजन-शक्ति, विद्वत-शक्ति और सज्जन-शक्ति। इन पाँच शक्तियों का सुंदर समन्वय ही हमारी शिक्षा-प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली से निराश होकर उन्होंने कहा था - ''आज की विचित्र शिक्षण-पद्धति के कारण जीवन के दो टुकड़े हो गए हैं। आयु के पहले पन्द्रह-बीस वर्षो में आदमी जीने के झझट में न पड़कर केवल शिक्षा प्राप्त करे और बाद में शिक्षण को बस्ते मे लपेटकर मरने तक जिए।'' समाज और पाठशाला का गहरा संबंध स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं - विचारों का प्रत्यक्ष जीवन से नाता टूट जाने से विचार निर्जीव हो जाते हैं और जीवन विचार शून्य बन जाता है। मनुष्य घर में जीता है और पाठशाला में विचार सीखता है। इसलिए जीवन और विचार का मेल नहीं बैठता। उपाय इसका यह है कि एक ओर घर में पाठशाला का प्रवेश होना चाहिए और दूसरी ओर पाठशाला में घर को घुसना चाहिए। उनके शिक्षा

दर्शन का आधार साम्ययोग है। वे कहते हैं – शिक्षण का कार्य कोई स्वतंत्र तत्व उत्पन्न करना नही है, बल्कि सुप्त तत्त्वों को जागृत करना है।

विनोबा जी ने शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत रूप से गुण–विकास और सामाजिक रूप से मूल्य–विकास माना है। बचपन में ही बालक इन्द्रियों को, अपने मन को और अपनी बुद्धि को संयम में रखना सीखें और यही मुख्य दृष्टि होनी चाहिए। वे बालक को विचार–शक्ति में भी स्वावलम्बी बनाने के पक्षधर थे। उसे उदर निर्वाह के लिए दूसरे पर निर्भर न रहना पड़े, ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्र शक्ति का निर्माण हो और अपने आप पर नियंत्रण की शक्ति भी हो। सामाजिक दृष्टि से भी वे शिक्षा का उद्देश्य नये मूल्यों का विकास करना वे मानते थे एवं एक नए समाज का निर्माण करना चाहते थे। उनका लक्ष्य वर्गहीन और शोषण–मुक्त समाज का निर्माण करना था। यही उनका साम्योग और सर्वोदय भी है। शिक्षा का एक और उद्देश्य विनोबा जी यह मानते थे कि विद्यार्थी को संत बनना है, पंथ नही बनना है। संत वह है जो सत्य का उपासक है और पंथ वह है जो किसी बने बनाए रास्ते पर जड़वत् चलता है। 1972 में सेवाग्राम में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में उन्होंने शिक्षा के तीन उद्देश्य रखे थे – योग, उद्योग और सहयोग। योग यानी चित्त पर कैसे अंकुश रखना, इन्द्रियों पर कैसे सत्ता रखना, जुबान पर कैसे काबू रखना है – यही योग का सच्चा अर्थ है। उद्योग में कुछ भी हो, किन्तु खेती के साथ, प्रकृति के साथ संबंध होना आवश्यक है। और सहयोग अर्थात हम सबको इकट्टा जीना, सह जीवन जीना है और विश्व–मानव बनना है।

विनोबा जी शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं – 'शिक्षको को पहले आचार्य कहा जाता था। आचार्य अर्थात् आचारवान्। स्वंय आदर्श जीवन का आचरण करते हुए राष्ट्र से उसका आचरण करा देने वाला आचार्य है। ऐसे आचार्यों के पुरूषार्थ से ही राष्ट्र का निर्माण हुआ है। राष्ट्र निर्माण का कार्य अभी बाकी है। आचार्यवान् शिक्षकों के बिना यह संभव नही है।

1967 ई० में विनोबा जी ने बिहार में आयोजित शिक्षा विद्वत परिषद में कहा था – यह शिक्षा जगत का दुर्भाग्य है कि जो स्वायत्ता इस देश में न्याय विभाग को है, उतनी स्वायत्तता शिक्षा विभाग को प्राप्त नहीं है। शिक्षक की स्वतंत्र हस्ती होनी चाहिए। वह क्या पढ़ाए, कैसे पढ़ाए, परीक्षा की पद्धति क्या हो, यह निर्णय आचार्य का होना चाहिए न कि सरकार का। इस स्वायत्तता को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को अपनी स्वतंत्र शक्ति का विकास करना चाहिए।

समाज को अगर कोई सुधारेगा तो वह पुलिस या सेना नही, बल्कि शिक्षक ही सुधारेगा। शिक्षकों को केवल शिक्षण की भ्रामक कल्पना छोड़कर स्वतंत्र जीवन की जिम्मेदारी–जैसी किसानों पर होती है वैसी – अपने ऊपर लेनी होगी और विद्यार्थियों को भी उसी में दायित्वपूर्ण भाग देकर उनके चारों ओर शिक्षण की रचना करनी चाहिए अथवा अपने आप होने देनी चाहिए। बिनोबा जी चाहते थे कि शिक्षक, विद्यार्थी–परायण, विद्यार्थी शिक्षक–परायण, दोनो ज्ञान–परायण और ज्ञान सेवा–परायण हो। हमारी पाठशाला की यही योजना होगी जो नए समाज के निर्माण की शिक्षा दे सके। बिनोबा जी ने ग्रामीण क्षेत्रों में एक घण्टे की पढ़ाई का सुझाव भी प्रस्तुत किया था कि गाँव के समूचे जीवन को समवायित कर विद्यालय को ग्राम की सेवा का केन्द्र बनाया जा सके। वे ग्रामीण जीवन को सर्वागपूर्ण मानते थे। प्रत्येक गाँव में सम्पूर्ण शिक्षा का प्रबन्ध कर ग्राम गुरूकुल की स्थापना करना चाहते थे।

नई शिक्षा के पाठ्यक्रम के संबंध में उनके स्पष्ट सुझाव थे – नई तालिम में जीवन की सब बुनियादी चीजों का पूरा ज्ञान होना चाहिए। लंबा–चौड़ा इतिहास और निकम्मे राजाओं की नामावली याद रखने की जरूरत नहीं है। लेकिन जीवन के जो बुनियादी विचार हैं, जिनसे हमारा जीवन विकसित होता है, उसका ज्ञान जरूरी है। तत्व–ज्ञान, धर्म–विचार, नीति–विचार इन सबकी जानकारी जरूरी है। समाज–शास्त्र, मानव–शास्त्र

का पूरा इतिहास आदि की जानकारी आवश्यक है। विज्ञान के मूलभूत विचार लड़कों को मालूम होना चाहिए। अपने विचार ठीक ढंग से प्रकाशित करने की कला मालूम होनी चाहिए। विनोबा जी अप्रासांगिक ज्ञान देने के पक्ष में कभी नही थे।

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था – आप लोग अलग–अलग युनियनें बनाते है। ऐसी यूनियनो में रहने के लिए एक खास–प्रणाली का अनुसरण जरूरी होता है। मैं आपसे पूछता हूँ – शेरो का भी कभी कोई युनियन बनता है क्या ?युनियन तो भेड़ो का बनता है। मेरा मतलब यह नही कि दूसरों के साथ आपको सहयोग नहीं करना है। अच्छी बातों में सहयोग जरूर करना है। लेकिन विचारों को स्वतंत्र रखना है और सत्य–दर्शन के लिए उसमें आवश्यक परिवर्तन को सदा तैयार रहना है। इसे ही सत्यनिष्ठ कहते है और बलवान् बनने का यही मार्ग है।

विनोबा जी के इसी तरह अपने भाषा–ज्ञान संबंधी विचार भी स्वतंत्र थे। उनके विचार से जनसेवा के लिए मातृभाषा का ज्ञान, देशभक्ति के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान और धर्म और तत्वज्ञान के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है। उन्होंने कहा था –पाठशालाओं में शिक्षा का माध्यम उस प्रान्त की प्रदेश भाषा ही होनी चाहिए। अंग्रेजी के अध्ययन के बारे में उनका कहना था – अंग्रेजी ने बड़ा पराक्रम किया है, उस भाषा में अनमोल रत्न पड़े है। इसलिए कोई उसे सीखना चाहता है तो जरूर सीखे। विनोबा जी भारतीय शिक्षा में शरीर–श्रम को प्रथम स्थान देने के पक्ष में थे। वह कहते थे कि – 'परिश्रम चाहे जिस प्रकार का हो, कातने का हो, बढई का हो, रसोई बनाने का हो, सबका मूल्य एक ही है। हर एक उपयुक्त परिश्रम का नैतिक, सामाजिक और आर्थिक मूल्य एक ही है।'

शरीर और मन का बहुत निकट संबंध है। योग–शास्त्र में मन:शुद्धि के लिए प्रथम शरीर शुद्धि बताई गई है। हमारे शिक्षण शास्त्र का आधार भी यही होना चाहिए। शरीर वृद्धि के साथ मनोवृद्धि होती है। लड़कों को मनोवृद्धि करनी है, उनको शिक्षा देनी है तो शारीरिक श्रम कराके उसकी भूख जाग्रत करनी चाहिए।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विनोबा जी के शैक्षिक चिन्तन का आधार न सिर्फ गांधीवाद है, बल्कि साम्ययोग भी है। उन्होंने शिक्षा को लोकाभिमुख बनाने पर जोर दिया है। उनके शैक्षिक चिन्तन में आज की व्यवसायिक शिक्षा को ठोस आधार देने के लिए पर्याप्त प्रेरणा निहित है। उनके शैक्षिक दर्शन में युगानुकुल नये जीवन–मूल्यों, सामाजिक न्याय और सर्वधर्म समभाव पर आधारित एक नए समाज की संरचना के बीज अन्तर्निहित हैं, जो समय आने पर देश और समाज के लिए अत्यंत फलदायी और लाभकारी सिद्ध हो सकेगा।

प्राचार्य–सह–क्षेत्रीय निदेशक
डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल
कैन्ट एरिया, गया – 823004

✦

गुरु–ज्ञान

डॉ० दिव्या सिन्हा

आध्यात्मिक जीवन में गुरु की आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता है। गुरु जीवन की पूर्णता हैं। गुरु पवित्रता, शांति, प्रेम, ज्ञान की साक्षात् प्रतिमूर्ति होता है। विद्या कोई हो, लौकिक या आध्यात्मिक, इसके सारे तत्त्व को समझने के लिए गुरू की आवश्यकता होती है। विद्या के विशेष गुरु ही उसका बोध कराने में सक्षम और समर्थ होते हैं। गुरु के अभाव में अर्थवान विद्याएं भी अर्थहीन हो जाती हैं। सौभाग्य होता है जब गुरु एवं भगवान एक साथ आते है। द्वापर में श्री कृष्ण अर्जुन के लिए गुरू बनकर एवं सारे विश्व के लिए जगत गुरू बनकर आए थे। सदगुरू द्वारा प्राप्त दिव्य दृष्टि से ही आत्मा का, परमात्मा का, परम सत्य को दर्शन और साक्षात्कार संभव है।

गुरुतत्व की अनुभूति शिष्यात्व की पराकाष्ठा है। गुरू अपने लक्ष्य की पवित्रता द्वारा शिष्य को अपने आंतरिक विकास की ओर अभिमुख करता है। गुरु सर्वप्रथम शिष्य को उसके अंदर स्थित गुरू तत्व के प्रति सजग बनाता है। गुरुतत्व सभी के अंदर विद्यमान होता है। अध्यात्म में पवित्रता सर्वोपरि होती है। शिष्य यदि उसे अपने अंत:करण में धारण कर ले और गुरु के निर्देशानुसार चले, तो वह अध्यात्म तत्वज्ञान के उस सत्य की उपलब्धि कर सकता है। जब शिष्य के भीतर शक्ति का जागरण होता है तो वास्तव में यह आतंरिक गुरु का ही उन्नयन है। बाह्य जगत में हम जिन सुखों के पीछे भागते हैं, वे भ्रम के अलावा कुछ नहीं हैं। हमारा आंतरिक गुरू परमानंद का अनन्त स्रोत है।

गुरु-शिष्य संबंध निष्ठामूलक है। धीरे-धीरे वही श्रद्धा में रूपांतरित हो जाता है। जब वह पूर्ण प्रगाढ़ होता है तो संपूर्ण गुरूत्व शिष्य में संचारित हो जाता है फिर वह साधारण नहीं, असाधारण बन जाता है।

शिष्यों के लिए आवश्यक है - समर्पण, विसर्जन एवं विलय की सघनता। गुरुदेव ही स्मरणीय हैं, चिंतनीय हैं माननीय हैं। उनकी पराचेतना में रमण करने से श्रेष्ठ और कुछ नही है, परंतु शिष्य साधक बौद्धिक रूप से इस सच्चाई को जानते हुए भी भावरूप से इसमें डूब नही पाते है, क्योंकि उनकी बुद्धि तरह-तरह के सांसारिक गणित लगाती रहती है।

भगवान ने मनुष्य को जहाँ शक्ति और सुविधाएं दी हैं वही उसे एक विशेष सुविधा स्वतंत्र चयन करने की भी दी है। इस स्वतंत्रता का प्रयोग कौन किस प्रकार करता है यही परीक्षा पद्धति हरेक के समक्ष है, सही मार्ग चयन में हमें सदगुरु ही सहायक सिद्ध होता है।

गुरु की कृपा से ही शिष्य उनके शब्दो का मनन, चिंतन तथा मंथन कर रामरस प्राप्त कर सकता है। सद्‌गुरु की चेतना से शिष्य उनके सर्वव्यापी चेतना का अभिन्न अंश बन जाता है।

गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पँक्ष।
बलिहारी गुरु आपनो जो, गोविंद दियो बताय।

शिक्षिका, रा० सिंह वनमाली बाबा
कन्या उच्च विद्यालय, चाँद चौरा, गया
मो० 9431290755

✦

भारतीय संस्कृति का अटूट अंग है पितृयज्ञ

श्री कंचन

भारतीय संस्कृति धर्म पर आधारित हैं, हम भारतीय सदा से धर्म परायण धर्ममय एवं धर्म संस्कार युक्त रहे हैं, हमारे लिए धर्म व संस्कृति वास्तव में एक ही हैं। केवल दो अलग-अलग नाम है। चूंकि हमारा देश परारंभ से ऋषि-मुनियों का देश रहा है और उनकी विचारधारा के अनुसार ही देश का विकास होता रहा। इसी कारण हमारा धर्म वही है, जो भारतीय आर्ष में निहित है और जो ऋषि मुनियों के उपदेशों के माध्यम से समाज को अनुप्राणित करते रहे है। अत: यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि हमारा धर्म वेदमूलक है। वेद ही हमारा आदि ग्रंथ है। सृष्टिकर्त्ता ने वेदो के माध्यम से ही हमारे कर्मो को निर्धारित किया है। हमारे जीवन में छोटे-बड़े सभी कार्य धर्म के आधार पर व्यवस्थित किये गये हैं। अग्नि का धर्म दाहकता है, जल का शीतलता है। अगर दाहकता न हो तो अग्नि की और शीतलता न हो तो जल की तो सत्ता नहीं रह जाती। उसी प्रकार यदि धर्म न हो तो भारतीय समाज की सत्ता नही रह पाएगी। हमारा सब कुछ धर्म पर ही निर्भर है। अत: यह समझ लेना आवश्यक है कि धर्म का मूल रूप क्या है ?

हमारे आर्ष ग्रंथो से यह प्रकट होता है कि प्राणी का प्रयत्न शाश्वत सुख पाने का है। अतएव शाश्वत सुख, जहां किसी प्रकार का दु:ख न हो, उसे ही प्राप्त करने के लिए अंतर्मुखी होना आवश्यक है। बहिर्मुख होने से मनुष्य तथा समाज असंयम तथा विनाश की ओर अग्रसर होता है, ऐसे में मन में संयम रखा जाये। मन को खुला छोड़ देने पर जीवन में विकृति आती है जो हानिकर है। मन को संयमित रखने में ही जीवन में शांति व सुख की प्राप्ति होती है। तभी शाश्वत सुख प्राप्त किया जा सकता है। शाश्वत सुख का यर्थाथ मोक्ष में निहित है। मनुष्य अपने जीवन में सुख प्राप्त करना चाहता है और शाश्वत सुख मोक्ष प्राप्त करने पर ही मिल सकता है। हमारे आर्ष ग्रंथो में जिन चार पुरूषार्थों का उल्लेख किया गया हैं वे है धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। धर्म पहला पुरूषार्थ है। धर्मपूर्वक जीवन यापन से अर्थ, काम व मोक्ष की स्वत: प्राप्ति होती है। यह मोक्ष केवल अपने लिए नहीं वरन् औरो के लिए भी सुलभ करने की प्रेरणा हमारा धर्म ही देता है। इसमें 'स्व' से उपर उठने का भाव विद्यमान है। हमारी भारतीय संस्कृति की यही विशेषता रही है कि हम स्वार्थ सिद्धि की अपेक्षा पर सेवा, समाज सेवा जैसा परार्थ कर्म पर अधिक जोर देते हैं। हमारे ऋषि–मुनियों ने व्यक्ति को समाज में समष्टि में तथा भगवान में लीन होने का उपदेश दिया है और उसका मार्ग बताया है जो मार्ग जो विधि जो क्रिया हमें भगवान की ओर ले जाती है वही भारतीय संस्कृति है आर्ष संस्कृति है, हिंदू संस्कृति है, श्राद्धकर्म, तर्पण, पितर–पूजा आदि में भारतीय संस्कृति की मूल भावना ही निहित है। श्राद्ध कर्म अंतर्मुखी हृदय का ही बाह्य प्रकरण है। आज के वैज्ञानिक युग में हम थोड़ा विचलित हो गये हैं। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में हम भारतीय संस्कृति को भूलते जा रहे है। पाश्चात्य सभ्यता अर्थ प्रधान है।

भारत में अर्थ को कभी प्रधानता नही दी गयी। अर्थ हमारे जीवन–यापन का एक साधन है, साध्य नहीं। धनार्जन के क्षेत्र में हम अपने को संस्कारी बनाये रखने की अपेक्षा उस कुहेलिका में ढकेलते जा रहे हैं, जहाँ से शाश्वत सुख की दूरी निरंतर बढ़ती जा रही है। धनोपार्जन हम सुख के लिए करते है, किंतु सात्विकता के अभाव में सुख के स्थान पर दु:ख एवं अशांति का परिवेश हमें आवेष्टित कर लेता है। उदाहरण के लिए कहा जा सकता है कि किसी ने चोरी से अथवा बलात किसी प्रकार धन प्राप्त कर लिया, तो देखने में वह धनी व सुखी हो गया। किंतु सच्चाई यही है कि उसकी मानसिक शांति भंग हो गयी वह मन में बहिर्मुख होकर स्वार्थपरता से आबद्ध हो गया। मन की दासता ने उसे जकड़ लिया। अब वह असंयम मार्ग का अनुसरण करेगा और अनंत दुखो के चक्रव्यूह में भटकता रहेगा। ऐसे में जरूरी है कि भारतीय संस्कृति की रक्षा का हम प्रयत्न करें। हम मन का दास न बनें। मन को अपने अधीन रखें। बर्हिमुख होने की अपेक्षा हमें अंतर्मुख होना होगा। पाश्चात्य सभ्यता के पोषक संदेश देते हैं कि अंतर्मुख होने से समाज नही चलेगा, देश नही चलेगा। यह धारणा भ्रांतिपूर्ण है सच तो यह है कि व्यक्ति में जो चेतना है, वह अंतस्तल से आती है। यह प्रत्यक्ष अनुभव की बात है कि जिस काम में जितनी एकाग्रता होगी, वह कार्य उतना ही अच्छी तरह संपन्न होगा। इसी शक्ति पर व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन निर्भर है।

हमें भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए इस ओर ध्यान देना ही होगा। आजकल टेलीविजन आदि मीडिया के द्वारा जो दुष्प्रचार हो रहे है, उनकी वजह से हम अपनी संस्कृति का विशुद्ध स्वरूप भूलते जा रहे है। नये किस्म की सभ्यता की छाया में हम अपनी भारतीयता को गौण व अभारतीय आडंबरो को महत्वपूर्ण मानने लग गये हैं। अत: यह परमावश्यक है कि हम अपनी संस्कृति की रक्षा की दिशा में सचेष्ट रहें और मीडिया तथा अन्य माध्यमों से भारतीय संस्कृति पर जो अहर्निश प्रहार हो रहे हैं, उससे इसकी रक्षा करे। पितृपक्ष की अवधि में जो पितृयज्ञ किये जाते हैं वे भारतीय संस्कृति के अटूट अंग है, इन्हें हर प्रकार से संरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है।

चीफ रिपोर्टर, प्रभात खबर, गया

ब्रह्म ज्ञानं गया श्रादम्

डॉ० राम सिहासन सिंह

भारत की भूमि अनादिकाल से साधकों, तपस्वियों एवं मनीषियों की रही है। हिमालय की पर्वतीय गुफाएँ, बद्रीनाथ, ऋषिकेश, वैष्णव देवी साधना और संस्कृति के लिए अपनी अलग–अलग पहचान के लिए सुप्रसिद्ध हैं, तो कन्याकुमारी से रामेश्वरम्, पुरी, कोणार्क आदि को अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक वैशिष्टता प्राप्त है। अयोध्या, काशी, मथुरा, वृन्दावन की अपनी साधना स्थली एवं सांस्कृतिक महत्ता है तो गया के धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में इन सभी धर्मो का संगम स्थल है। गया नगर का एक गौरवमय इतिहास रहा है। यह वह धरती है जहाँ से सत्य, प्रेम, अहिंसा और करूणा के साथ विभिन्न सम्प्रदायों, मत–मतान्तरों, मान्यताओं को एक साथ देखा जा सकता है। यहाँ सभी धर्मो के पूजास्थल प्रतिस्थित है। इस दृष्टि से केवल बिहार राज्य ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण देश में गया अन्य तीर्थ–स्थलों से सर्वथा भिन्न है।

भारतीय साधना और संस्कृति का मिलित योग ही गया की प्रधानता है। यहां महान साधकों की तपः स्थली रही है। भारतीय साधक एवं मनीषियों ने मानव–जीवन में साधना को सर्वाधिक आदर्श बताया है। विश्व सत् और असत् दो तत्व के संयोग से बना है। विश्व का सत असत् उसे स्थिर और अविनश्वर रखता है तथा असत् अंश अस्थिर और विनश्वर। एक चेतन है, दूसरा जड़। एक को मानसिक पक्ष है, दूसरे में पार्थिव। कतिपय दार्शनिक–पार्थिव पक्ष को मानसिक पक्ष का ही रूपान्तर मानते है। इनके मत में आन्तरिक विचारधारा, भावना तथा सत्कार ब्राह्य चेष्टाओं और शारीरिक विकास में प्रकट हुआ करते हैं। दूसरे दार्शनिक ठीक इसके विपरीत कहते हैं। इनके मत में मानसिक क्रियाएँ बाह्य शारीरिक चेष्टाओं का परिणाम है। कुछ हो, इतना तो निश्चित है कि विश्व इन दोनो तत्वों से सम्पृक्त रहकर बना है।

भारतीय ऋषियों का चिन्तन केन्द्र प्रायः विश्व का सत् अर्थात चेतन अंश रहा है। असत् अंश की उन्होने उपेक्षा ही की है। उनकी दृष्टि में मल–मूत्र–मात्र, अस्थि चर्मातयव विशिष्ट पार्थिवता का कोई महत्व नही है। यह तो साधना है। साध्य वस्तु इससे भिन्न है। हमारे ऋषियों ने इस साध्य वस्तु को आत्म तत्व कहा है –

'आत्मावा अरे दृष्टष्यः श्रोताव्यो मन्तव्यो निदिहयासितव्य'

'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति'।

अर्थात् आत्मा ही दर्शनीय श्रवणीय और मननीय है। हमें उसी का चिन्तन करना चाहिए। उसी के लिए अन्य वस्तुएँ प्रिय लगती हैं।

भारतीय ऋषि परमार्थप्रिय थे। प्रत्यक्ष से नहीं, वे परोक्ष प्रेम करते थे। परोक्ष सिद्ध हो गया तो प्रत्यक्ष अपने आप बन जायेगा। अतः वे अन्तर्मुखी बनकर प्रत्यक्ष से परोक्ष की ओर चलते थे। जाग्रत अवस्था के अन्नमय तथा प्राणमय कोषों को छोड़कर वे चित के सहारे स्वप्नावस्था के मनोमय कोष और वहाँ से सुषिप्ति अवस्था के आनन्दमय कोाष तक पहुँचते थे। फिर कोष को भी छोड़कर वे तुरीयावस्था की सहज आनन्दरूपता का अनुभव करते थे। प्रत्यक्ष प्रकृति है माया है, संसार है। परोक्ष आत्मा है, चित् है। प्रत्यक्ष चलायमान है, परिवर्तनशील है, अतः नाश्वान् है। आत्मा शाश्वत है, अतः अविनाशी है। आत्मा आनन्दरूप है। आनन्द की कामना सभी को होती है। दुःख की इच्छा कोई नही करता। अतः हमारे साधकों को स्पष्टरूपसे यही मन्तव्य था कि मानव के पुरूषार्थ मुख्य लक्ष्य दुखों से निवृत्ति और आनन्द की प्राप्ति करना है।

'त्रिविधिदुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरूषार्थः (कपिल–सांख्य)

अभ्युदय प्रवृत्ति मूलक है और निःश्रेयस निवृत्ति प्रधान। प्रवृत्ति मार्ग साधना के क्षेत्र में निष्काम कर्म का द्योतक है। निवृत्ति पथ में ज्ञान एवं उपासना की प्रधानता है। इस प्रकार भारतीय ऋषियों

की साधना, ज्ञान, कर्म एवं उपासना इन तीन धाराओं में प्रवाहित होने वाली त्रिपथगा गंगा के समान है। इन तीनो मार्गो पर चलकर मानव अपने अभिष्ट को प्राप्त करता है। अनेक आचार्यो एवं संतो ने एक पथ की सम्पूर्ण उतीर्णता को भी अभीष्ट प्राप्ति का साधन माना है, पर सर्वमान्य सिद्धान्त यही रहा है कि तीनों मार्गो का समन्वय की सम्यक सिद्धि का हेतु है। उपनिषदों का सारभूत ग्रंथ गीता में भी ज्ञान, कर्म एवं उपासना तीनों की विवेचना पायी जाती है, पर प्रधानता निष्काम कर्म को दी गई है, जो ज्ञान और उपासना के बिना सम्भव नहीं।

ज्ञान बुद्धि से सम्बन्धित है और उपासना श्रद्धा एवं विश्वास पर अवलम्बित है। प्रत्येक कार्य के मूल में इन दोनो का होना अत्यन्त आवश्यक है। जिस प्रकार कर्म के लिए ज्ञान और उपासना, बुद्धि और श्रद्धा विश्वास की आवश्यकता है, उसी प्रकार ज्ञानार्जन के लिए कर्म (तप) और उपासना (श्रद्धा) तथा उपासना के लिए ज्ञान और कर्म अपेक्षित है।

उपासना से पूर्व भक्ति की भूमिका में स्तुति तथा प्रार्थना आती है। स्तुति प्रभु के गुणों का कीर्तन होती है। किसी के गुणों का ज्ञान उसके स्वरूप को समझने में अधिक सहायक सिद्ध होता है। अतः स्तुति (गुण कीर्तन) ज्ञान कुण्ड के अन्तर्गत आता है। प्रार्थना में प्रभु के पाप के प्रक्षालन और पुण्य की प्रापित के लिए याचना की जाती है। दानवता का दमन और दैवी विभूतियों का विकास कर्म की अपेक्षा रखते है। अनवरत कर्म, सतत अभ्यास के द्वारा ही उनकी सिद्धि सम्भव होती है। इस प्रकार अकेली भक्ति भी ज्ञान (स्तुति) कर्म (प्रार्थना) और उपासना की पावन त्रिवेणी के संगम का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार हम देखते है कि भारतीय साधना में कर्म, ज्ञान, भक्ति उपासना सन्निहित है। इसी परिप्रेक्ष्य में गया का मूल्यांकन करना प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य है।

इस प्रकार साधना का पथ हमारे आदिकालीन साहित्य से ही निःसृत अथवा सम्बद्ध होकर हमारे अनविच्छ रूप से आज तक हमारे साथ चला आया है। इस साधन पथ की अन्तिम परिणति, चरमसीमा, प्रधान लक्ष्य आत्मतत्व की प्राप्ति अथवा जीवन के चरम उत्कर्ष आनन्द की उपलब्धि है। इसी परिप्रेक्ष्य में गया के साधको एवं साधना स्थली पर विचार विमर्श किया जायेगा।

विश्व के मानतम संस्कृति में भारतीय संस्कृति की अपनी अलग पहचान है। प्राकृतिक विधान के अनुरूप संस्कार की हुई पद्धति ही संस्कृति है। 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से भूषण अर्थ में सुटका आगम करके 'क्तिन' प्रत्यय करने से संस्कृति शब्द बनता है। इसलिए भूषण युक्त सम्यक् कृतियों का सम्पूर्ण क्षेत्र संस्कृति का क्षेत्र है। पशु-पक्षी, कीट-पंतगादि भोग्यानियों में जीवन की चेष्टाएँ स्वाभाविक हीं हुआ करती हैं। उनमें सम्यक्-असम्यक् का भेद नहीं किया जा सकता। मनुष्य योनि में जीव कर्म करने में स्वतंत्र माना गया है। मनुष्य सम्यक्-असम्यक् दोनो प्रकार की चेष्टाएँ करने में समर्थ होता है। इसलिए सम्यक् चेष्टा याकृति - संस्कृति का प्रयोग मनुष्य के सम्बन्ध में हीं किया जा सकता है। इसलिए मनुष्य की भूषणागत सम्यक् संस्कृति या चेष्टा ही संस्कृति है।

जिन चेष्टाओं के द्वारा मनुष्य अपने जीवन के समस्त क्षेत्रों में उन्नति करता हुआ सुख-शांति प्राप्त करें वे चेष्टाएँ हीं उसके लिए भूषणभूत समन्वयक चेष्टाएँ कहीं जा सकती हैं। अथवा मनुष्य की आधि भौतिक, आधि दैविक एवं आध्यात्मिक उन्नति में अनुकुल चेष्टाएँ ही उसकी भूषणाभूत सम्यक चेष्टाएँ हैं। या मनुष्य की वैयक्तिक, सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में लौकिक पारलौकिक औयुदय के अनुकुल दैहिक मन-बुद्धि, चित्ताहङ्कार की चेष्टा ही उसकी मूल भूत सम्यक् चेष्टा या संस्कृति है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मनुष्य के लौकिक-पारलौकिक विचारों के अनुकूल आचार-विचार ही संस्कृति है। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन आचार-विचार हीं होता है। इसलिए संस्कृति के क्षेत्र में मानव-जीवन के समस्त क्षेत्र आ जाते है। अतएव मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वेदादि शास्त्रानुकूल आचार -विचार की व्यवस्था का सक्रिय रूप वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था में प्राप्त होता है। इसलिए वर्णाश्रमानुकूल आचार-विचार ही हिन्दू संस्कृति का प्रत्यक्ष रूप है

और वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा कला–कौशल, भाषा, वेषभूषा, उपासना, आदि सम्बन्धी हलचलें या आचार–विचार वर्णाश्रमधर्मानुकूल हो। यही हिन्दू संस्कृति का आदर्श है। इसी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में गया की महानतम् संस्कृति की विवेचना की जायेगी।

भारतीय साधना, सभ्यता और संस्कृति के उद्‌भव विकास में गया की विशिष्ट स्थान है। स्पष्ट है कि गया विश्व के प्राचीनतम नगरो में से एक है। गया का इतिहास गयासुर की कथा से प्रारम्भ होता है। हमारे पौराणिक वेता तथा इतिहासकार गयासुर को ऋग्वैदिक काल के समकालीन माना है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के प्राप्त अवशेष यह प्रमाणित करते है क भारतीय उपमहाद्वीप में ऋग्वैदिक सभ्यता के भी पूर्व नदी घाटी सभ्यता का उदय हुआ। नवादा जिले के इंटवा नामक स्थान पर नदी घाटी सभ्यता के कुछ अवशेष प्राप्त हुये थे। इससे यह प्रमाणित होता है कि गया अथवा आसपास वैदिक काल के पूर्व भी एक सभ्यता का प्रादुर्भाव हुआ था। गया फल्गु नदी के तट पर बसा हुआ है। फल्गु के स्वरूप को देखते हुए भूगोलविद इसकी विवेचना मोहना एवं निरंजना नामक दो पहाड़ी नदियों में सम्मिलित जलप्रवाह की व्यवस्था के रूप में करते हैं। वैज्ञानियों का भी ऐसा अनुमान है कि फल्गु प्राचीन तट पर सिंधु घाटी सभ्यता का अभ्युदय हुआ होगा। प्राचीन वेदो में भी गया का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में 'कीकट' शब्द आया है, जिस 'कीकट' को विद्वानों ने मगध की संज्ञा से विभूषित किया। विद्वानों ने इसे अथर्ववेद में भी 'मगध' और 'व्रात्य' शब्द सहचरी के रूप में माना है। मगध का केन्द्र बिन्दु गया ही है।

'व्रात्य' अथवा 'कीकट' सभ्यता का केन्द्र मगध (गया) ही था। निरूक्त में 'गया' शब्द का उल्लेख मिलता है –

'समारोहणों विष्णुपदे गया कोऽसि'।

गयासुर से ही प्राय: गया के नामकरण का सम्बन्ध है ऐसा विद्वानों का मानना है। इस नगरी में गयासुर के घनघोर साधना और तपस्या की थी। अत्यन्त प्राचीन काल से ही गया साधना स्थली रहा है। गयासुर के संहार हेतु स्वंय भगवान विष्णु को गया आना पड़ा था। विष्णु शब्द का अर्थ होता है –व्यापनशील, यह– व्यापकता, अर्थात जो सर्वत्र व्याप्त हो। इस अर्थ में विष्णु परमब्रह्म या परमात्मा हैं। वेदो में इसे अव्यक्त और व्यापक कहा गया है, व्यक्त रूप में वही विष्णु हैं। विष्णु से सम्बन्धित हमारे वेदो में इसके स्वरूप की व्याख्या इसी ओर संकेत करती है।

विष्णोर्नु के वीर्याणि प्रयोाचं यः पार्ववनि विमसे रजन्ति।
योऽकभायटुनर साधस्थं विचक्रमणस्त्रेधोरूगलो विष्णुवे रचा।।

भगवान विष्णु की शक्ति और उसकी महत्ता सर्वोपरि है। जिस प्रभु ने समस्त लोकों में अग्नि, वायु, सूर्य रूप से तीन पद धारण किए अर्थात इन तीनों की स्थापना की वह स्वंय अपरम्पार है। इसलिए विष्णु शब्द विश्ववादी की संज्ञा से अभिभूत किया जा सकता है। गया तीर्थ में विष्णु पद मंदिर का विशेष महत्व है। भगवान विष्णु का चरण चिन्ह् को दर्शन पाकर भक्त धन्य हो जाते है। ऐसा कहा जाता है कि गयासुर के कम्यायमान शरीर को सुस्थिर करने के लिए भगवान ने अपने चरण उस राक्षस राज के वक्षस्थल पर रखे थे। वही चरण चिन्ह मंदिर में आज भी सुप्रतिष्ठित है। आज भी साधक जब इस मन्दिर में प्रवेश करते है तो ऐसा लगता है कि भगवान विष्णु की तरंगो की अनुभूति उन्हें स्वंय हो रही हो। यह भगवान विष्णु की साधना और महिमा का ही प्रभाव है। प्रत्येक साधक अपनी अनुभूतियों में इसे अनुभव कर सकता है।

भारत के अनेकों एवं महान साधकों ने गया को अपना साधना–स्थली केन्द्र बनाया है। गौतम बुद्ध का उसमें विशिष्ट स्थान था। गौतम बुद्ध ने लगभग बीस वर्षो तक गया में साधना की थी। ऐसा कहा जाता है कि रामशिला पर्वत पर गौतम बुद्ध ने सत्रह वर्षो तक साधना की है। रामशीला पर्व गया का एक महत्वपूर्ण पर्वत है, जो साधकों का केन्द्र रहा है। इसे हम तंत्र पीठ भी कह सकते है। गया के इर्द–गिर्द

भगवान गौतम बुद्ध ने कठिन साधना की है और अन्त में बोधगया में पीपल वृक्ष के नीचे उनको बोधतत्व की प्राप्ति हुई। इसकी कथा पुराणों में भी मिलती है।

भगवान कपिल मुनि का नाम भी भारतीय साधकों में बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। वे सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक, ज्ञानमार्ग के परमाचार्य माने जाते हैं। वे परम साधक और तपस्वी थे। उनकी साधना पद्धति आज भी साधको के लिए प्रेरणादायक है। भिन्न-भिन्न स्थलों पर उन्होने साधना की है, जहाँ तंत्र पीठ बन गया है। गया भी उन्हीं स्थलों में एक है। ऐसा कहा जाता है कि कपिल मुनि गया में ब्रह्मयोनि पहाड़ के निकट वर्षो तक घनघोर साधना की थी। आज भी गया के कपिलधारा स्थल प्रमाण है। गया में कपिल धारा एक झरने की तरह है, जहाँ जल प्रपापि होता रहता है। गया गयावाल बिगहा से पूर्व और ब्रह्मयोनि से पश्चिम की ओर अवस्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष मेला भी लगता है। गर्मी के दिनों में यहाँ लोग पिकनीक मनाने भी जाते है। इस तरह हम देखते है कि गया भगवान कपिल मुनि की भी साधना स्थली रहा है।

भारतीय साधना और संस्कृति के क्षेत्र में भक्त साधकों की भी अहं भूमिका रही है। भक्त साधकों में श्री चैतन्य महाप्रभु का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। श्री कृष्णा परम्परा एवं भक्ति आन्दोलन के वे एक सर्वश्रेष्ठ साधक थे। ऐसा कहा जाता है कि उनमें भक्ति की धारा प्रस्फुटित होने का श्रेय गया को ही है। श्री चैतन्य महाप्रभु के बचपन का नाम श्री निमाई था। श्री निमाई बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उनके पांडित्य का प्रदर्शन बचपन में ही होने लगा था। कम उम्र में ही उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। पिता के श्राद्ध करने हेतु स्वंय श्री निमाई गया पहुँचे। उन्होने बहुत ही भक्ति और श्रद्धापूर्वक गया में श्राद्ध और तर्पण किये। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि जब चैतन्य महाप्रभु गया पधारे तो उस समय बोधगया के महंथ जो बहुत ही विद्वान एवं उच्च कोटि के साधक थे। उसकी चैतन्य महाप्रभु से भेंट हो गयी। उस समय बोधगया के महंत प्रतिदिन सुबह की बेला में भगवान विष्णु के मंदिर में पैदल ही आते थे तथा पूजा अर्चना, साधना कर बोधगया लौटते थे। उसी क्रम में इनकी भेंट चैतन्य महाप्रभु से होती है। बोधगया में महंत ने अपनी पांडित्यपूर्ण प्रज्ञा से आपूरित होकर साधना की कुछ बातें बताईं। चैतन्य महाप्रभु बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरू मानकर उनसे दीक्षा ले ली। ऐसा भी कहा जाता है कि गया से श्राद्ध कर जब चैतन्य महाप्रभु घर लौटे तो अपने पति के वियोग में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। चैतन्य महाप्रभु पर कृष्णा भक्ति का और अधिक रस-चढ़ गया। प्रभु का गुण-गान करते करते तथा कीर्तन भजन में संलग्न स्वंय चैतन्य महाप्रभु समाधिस्त हो जाते थे। भृगु मुनि भी महान साधकों में एक हैं। भारतीय साधना में उनका भी योगदान विशिष्ट रूप से रहा है। गया की पर्वत-गुफाओं में उन्होने भी साधना की थी। इसी मगध क्षेत्र में औरंगाबाद जिले में पुनपुन और मदार नदी के संगम पर उन्होने बहुत दिनों तक साधना की थी। आज भी वहाँ मेला लगता है तथा भृगुराही (भरारी) मेला के नाम से प्रसिद्धि है।

गया के निरंजना नदी के तट पर स्वंय भगवान श्री राम ने भी साधना की है। वनवास के क्रम में श्री राम, लक्ष्मण और सीता जी के साथ गया आए हैं और अपने पिता को श्राद्ध-अर्पण किया था। भारतीय संस्कृति में श्राद्ध क्रिया का महत्वपूर्ण योगदान है। 'श्रद्धा' शब्द से - 'श्रद्धया त सम्पादितमिदम, इंद श्राद्ध म'। अर्थात-अर्थो में 'अण' प्रत्यय करने पर 'श्राद्ध' शब्द की निष्पति होती है। भावार्थ यह है कि अपने मृतक पितृगण के उद्देश्य से श्रद्धापूर्वक किये जाने वाले कर्म-विशेष को श्राद्ध कहते है। इस दृष्टिकोण से गया की संस्कृति अत्यन्त महानतम है, भारतवर्ष के हीं नहीं, अपितु देश-विदेश के भी लोग यहाँ ओकर अपने पूर्वजनों का श्राद्ध करते है और भव बन्धनों से मुक्ति दिलाते हैं। ऐसा कहा भी गया है -

'ब्रह्मज्ञानं गया श्राद्धं गो गृहे मरणं तथा।
वासः पुंसा कुरुक्षेत्रे मुक्तिरेषा चतुर्विधा।।

प्रधानाचार्य (से० नि०)
रामलखन सिंह यादव कॉलेज, गया

✦

योगीराज बाबा गम्भीर नाथ जी और गया धाम

प्रो० महेश कुमार शरण

पितृतीर्थ गयानाम सर्वतीर्थवरं शुभम्
यत्रास्ते देवदेवेशः स्वयमेव पितामहः।।

अर्थात गया नामक पितृतीर्थ सभी तीर्थो में श्रेष्ठ एवं मंगलदायक है। वहाँ देवदेवेश्वर भगवान पितामह स्वयं ही विराजमान हैं। इसके अतिरिक्त हमारे सभी पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का निष्कर्ष यह है कि मनुष्यों को अनेक पुत्रों की अभिलाषा करनी चाहिए, क्योंकि उनमें से यदि एक भी पुत्र गया की यात्रा करेगा अथवा अश्वमेघ यज्ञ का अनुष्ठान कर देगा या नील वृष (साँड) का उत्सर्ग कर देगा तो हमारा अनुष्ठान हो जायेगा। वे लोग धन्य हैं अर्थात् महान भाग्यशाली हैं जो गया में पिण्डदान करने वाले होते है। वे वर्तमान और भविष्य के पिता और माता के सात कुलों को उद्धार कर देते हैं और स्वयं भी परम पद (मोक्ष) की प्राप्ति किया करते हैं। यही कारण है कि गया में सभी धर्मो के संत एवं महात्माओं का आगमन हुआ करता था। अतः यहाँ के लोगों ने सभी धर्मों का आदर किया। इस कारण गयाजी सर्व धर्म समभाव की नगरी है। यहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई, बौद्ध और जैन सभी धर्मो का समान आदर हुआ और उन्हें पूजा गया। भगवान राम के सीता और भाई लक्ष्मण के साथ गया आने का प्रमाण मिलता है। इसी प्रकार युधिष्ठिर के यज्ञ करने की तथा धर्मारण्य में पिण्ड देने का प्रमाण मिलता है। सिद्धार्थ को यहीं ज्ञान की प्राप्ति हुई तथा वह गौतम बुद्ध हो गये। सिंगरा स्थान में श्रृंगेरी ऋषि, कपिल धारा में कपिल मुनि, कश्यप ऋषि के अतिरिक्त अन्य सन्त महात्माओं के आने का प्रमाण हमें प्राप्त होते हैं। मोक्ष, ज्ञान व तप की यह भूमि गयाजी को देश विदेश के लोग नमन करने आते हैं। पितृपक्ष में तो यहाँ लाखों की संख्या में देश के कोने-कोने से तीर्थयात्री अपने पूर्वजों का श्राद्ध करने आते है। पितृपक्ष का भारतीय संस्कृति में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। पितरों की पूजा एवं पिण्डदान हमारी प्राचीन श्रद्धा तथा सदाचार है तथा पितृऋण से मुक्त होने का यह एक अवसर भी है। यह अनुष्ठान अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान तथा कृतज्ञता का भी प्रतीक है जिसे सम्पन्न करने हेतु एवं धर्म में आस्था रखने वाला प्रत्येक हिन्दू गया धाम आने की इच्छा रखता है। गया साधकों का भी बड़ा साधना केन्द्र रहा है। ऐसी चर्चा है कि गया के श्मशान को आज तक कोई भी सिद्ध नही कर पाया है, यह तन्त्र का बड़ा साधना-केन्द्र है। तन्त्र-साधना केन्द्रों में फल्गु नदी का मध्य भाग, श्मशान घाट, भैरव स्थान और गोदावरी का शीर्ष भाग तन्त्र-स्थल के रूप में चिन्हित है।

सबसे महत्वपूर्ण तथ्य हमारे समक्ष यह है कि धार्मिक साहित्य की प्राचीनता को छोड़कर आधुनिक काल के किसी भी विद्वान ने जो गया पर अपनी लेखनी चलाई है - उस योगीश्वर गम्भीरनाथ जी महाराज का उल्लेख अपने साहित्य में नही किया है, जिन्होंने हठ योग, राजयोग व लय योग में सिद्धि प्राप्त की थी और गया के कपिलधारा में तब तक तप करने का निश्चय किया जब तक उन्हें अवधूत अवस्था की प्राप्ति न हो पायी। अब हम योगीश्वर गम्भीरनाथ महाराज जी के गया आगमन, गया के कपिलधारा में अवधूत पद की प्राप्ति तथा गोरखपुर जाने के विषय में वर्णन करेंगे। अपने 45 वर्षों के गया प्रवास को जब मैं गोरखनाथ की भूमि गोरखपुर में शिक्षक जीवन की सेवा निवृति के बाद आया, तो वहाँ के योगिराज जी के विषय में पूछने लगे। जब तक मैं गया में रहा मुझे योगिराज जी के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं मिली थी। गया पर लिखित कई पुस्तकों को भी मैने पढ़ा था, पर योगिराज जी के विषय में किसी ने भी नही लिखा था। लेकिन प्रमथनाथ भट्टाचार्य लिखित ''भारत के महान साधक'' - प्रथम खण्ड जो बंगला भाषा में लिखित पुस्तक ''भारतेर साधक'' का हिन्दी अनुवाद है और

श्री रामनन्दन मिश्र जी ने हिन्दी अनुवाद किया है, नवभारत प्रेस लहेरिया सराय से इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ था। इस पुस्तक में श्री भट्टाचार्य योगीश्वर गम्भीरनाथ जी पर पृ० 241 से पृ० 259 तक लेख है। जिसके पढ़ने से यह स्पष्ट हुआ कि योगिराज गम्भीरनाथ जी का जन्म विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे चरण में कश्मीर के एक गाँव में समृद्ध परिवार में हुआ था। बचपन से ही वह अध्यात्म मुखी थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा साधारण ढंग की थी। उनकी सांसारिक पदार्थो में तनिक भी आस्था नहीं थी। धन, परिवार आदि से वे स्वभाविक रूप में विरक्त थे। जब गम्भीरनाथ जी युवावस्था में प्रवेश कर रहे थे उन्हें खबर मिली कि गाँव में एक योगी का आगमन हुआ है और वे गाँव के श्मशान में ही निवास कर रहे हैं। इस खबर से प्रभावित होकर गम्भीरनाथ जी श्मशान में योगी से मिलने गये। उन्होंने योगी से बड़ी श्रद्धा से कहा, ''महाराज! घर पर मेरा मन नही लगता है। संसार के विषय-भोग मुझे काट खाते हैं। मैं योगाभ्यास करना चाहता हूँ।'' योगीनाथ सम्प्रदाय के थे। योगी ने गम्भीरनाथ जी से कहा ''तुम गोरखपुर जाकर गोरखनाथ के महन्त योगी बाबा गोपाल नाथ जी महराज से योग की दीक्षा लो। मैं तुम्हारी महत्वाकांक्षा से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम उच्च कोटि के योगी होगे।''

गम्भीरनाथ जी योगी के आदेश से गोरखपुर चले गये। लोग उन्हें देखकर आश्चर्यचकित हो गये। वे देखने में बड़े सभ्य, सौम्य और सुन्दर थे। महन्त गोपालनाथ जी से मिलने पर उनके चरणों में उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त जी ने नाथ सम्प्रदाय के योग मार्ग में गम्भीरनाथ जी को दीक्षित कर लिया। अपनी वेशभूषा का परित्याग कर गम्भीरनाथ जी ने कौपीन धारण कर योग साधना के निष्कंटक राज्य में प्रवेश किया। महन्त गोपालनाथ जी ने उनकी शान्त मुद्रा से प्रसन्न होकर गम्भीरनाथ नाम प्रदान किया तथा अब बाबा गोपालनाथ जी की महती पुण्यमयी कृपा दृष्टि प्राप्त कर मठ में निवास कर वे योगाभ्यास करने लगे। बाबा गोपालनाथ ने धीरे-धीरे उनको मठ के उपास्य की पूजा-अर्चना में नियुक्त करना आरंभ किया। उन्हें गुरू ने प्रसन्न होकर पुजारी का कार्यभार सौंपा। इस प्रकार योगी गम्भीरनाथ के तपोमय साधना-जीवन में कर्मयोग और भक्ति-योग के उदय ने ज्ञान-योग परक अन्तरस्थ ज्योति के दर्शन का पथ प्रशस्त कर दिया।

संवत् 1937 विक्रमान्द में योगी गोपालनाथ जी ने शिवधाम प्राप्त किया। इस समय गम्भीरनाथ जी गोरखपुर से बाहर परिभ्रमण काल में थे। गुरू के इस दुखद संवाद को सुनकर गम्भीरनाथ जी गोरखपुर लौट आये। गोपालनाथ के बाद महन्त पद पर बलभद्रनाथ जी का आगमन हो गया, जिन्होंने गम्भीरनाथ जी को मठ में ही रहने का आग्रह किया। कुछ दिनों के बाद गम्भीरनाथ जी पर्यटन के लिए गोरखपुर से निकल पड़े और बिहार राज्य अन्तर्गत गया को अपना कर्मक्षेत्र बनाकर कपिलधारा नामक स्थान में पहुँच गये। यह स्थान गम्भीरनाथ जी के लिए आकर्षण का केन्द्र हो गया, क्योंकि यह स्थान गया नगर से कुछ दूरी पर अत्यन्त शान्त और रमणीय था। निर्जन कपिल धारा में गम्भीरनाथ जी ने तब तक तप करने का दृढ़ संकल्प लिया जब तक अवधूत अवस्था की प्राप्ति न हो जाती। अक्कू नाम का कुर्मी जाति का एक व्यक्ति ने योगी गम्भीरनाथ के चरणों में श्रद्धा अर्पित की और उनके भोजन आदि की व्यवस्था तथा सेवा का सहज अधिकार प्राप्त कर लिया। योगिराज गम्भीरनाथ जी के पास कौपीन, एक कम्बल और खर्पर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। कुछ दिनों के बाद नृपतिनाथ नामक एक श्रद्धालु योग साधक ने अक्कू का कार्य हल्का कर दिया। योगिराज गम्भीरनाथ जी की प्रसिद्धि बड़ी तेजी से बढ़ने लगी। वे सदा शान्त चित्त से ध्यानस्थ रहा करते थे। मौन उनकी वाणी का अलंकार था। संकेत उनके भावों का प्रहरी था। निर्जनतामयी योग साधना ही उनकी जीवन संगिनी थी। प्रकृति की कमनीय कान्ति से सम्पन्न कपिल धारा पहाड़ी की दिव्यता उनकी योगलीला की रंगभूमि थी। रात्रि में दूसरी पहाड़ियों पर तप करने वाले सिद्ध महापुरूष और योगीराज उनका दर्शन करने तथ सत्संग प्राप्त करने आया करते थे। गया के एक धनी पण्डा माधव लाल अपनी

संकट की घड़ी से मुक्त होने के लिए बाबा के पास आये थे। उनकी व्यथा को सुनकर योगिराज का हृदय द्रवित हो उठा और योगीश्वर ने कहा ''चिन्ता मत करो – तुम्हारा भला ही होगा।'' मुकदमें में माधव लाल पण्डा की जीत हुई और माधव लाल बाबा की सेवा में लगा रहा। अपने इस भक्त के साग्रह अनुरोध पर गम्भीरनाथ जी ने उन्हें कपिल धारा के साधना स्थल में एक गुफा का निर्माण कराया। योगी गम्भीरनाथ जी ने उसी गुफा में प्रवेश कर लगभग बारह वर्षो तक तप करते रहे। दर्शनार्थियों और मिलने वालों की भीड़ अपने आप में कम होने लगी। भोजन के रूप में वे केवल ढाई सौ ग्राम दूध नित्य लेते थे। बाद में चलकर प्रत्येक मंगलवार को थोड़ी देर के लिए बाबा गुफा से बाहर आकर दर्शकों और भक्तों को अपने दर्शन से तृप्त करते थे। तीन वर्षो तक उन्होंने यही क्रम रखा। उसके बाद वे प्रत्येक पूर्णिमा और अमावस्या को गुफा से बाहर आते थे। इस प्रकार कपिलधारा में उन्होंने अवधूत अवस्था की प्राप्ति कर ली। उनकी पवित्र उपस्थिति से उस तपोभूमि में सत्य, अहिंसा, शान्ति और दिव्यता का साम्राज्य उपस्थित हो गया। कपिलधारा के समाहित जीवन के परिवेश को छोड़कर योगीश्वर बीच–बीच में तीर्थ–भ्रमण के लिए चले जाते थे। घूम–फिरकर वे पुनः कपिल धारा आश्रम में लौट जाते थे।

जिस समय योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी कपिल धारा में तप कर रहे थे उसी समय महात्मा विजय कृष्ण गोस्वामी आकाश गंगा पहाड़ी पर अपने कुछ भक्तों के साथ साधना में तल्लीन थे। वे बाबा गम्भीरनाथ जी की योग शक्ति से बहुत प्रभावित थे। वे कभी–कभी योगिराज का दर्शन करने कपिल धारा आया करते थे। योगिराज गम्भीरनाथ आधी रात में सितार बजाकर भजन गाया करते थे। कभी–कभी कपिल धारा पहाड़ी की चोटी पर गम्भीरनाथ के सितार और भजन से आकृष्ट होकर आधी रात में प्रेमोन्माद में विह्वल होकर विजयकृष्ण गोस्वामी उनको दर्शन करने आया करते थे। एक दिन रात की निर्जनता में बाबा गम्भीरनाथ जी पहाड़ी पर सितार बजाते हुए घूम रहे थे। महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी ने शिष्यों से कहा ''अहा! कितना मधुर संगीत बाबा गम्भीरनाथ अपने अराध्य देव के चरणों में अर्पित कर रहे हैं। बाबा साक्षात् प्रेम रूप हैं। ऐसे योगी का दर्शन भारतवर्ष में इस समय दुर्लभ है। बाबा में सृष्टि, स्थिति और प्रलय की शक्ति है। वे क्षण–मात्र में संसार का सृजन और संहार कर सकते हैं। उन्होंने प्रेम का माधुर्य इस तपोभूमि में भर दिया है।''

योगिराज गम्भीरनाथ विक्रम संवत् 1950 में कपिलधारा आश्रम से प्रयाग के कुंभ में पधारे हुए थे। उनकी गम्भीर मुद्रा और शान्ति तथा तप–माधुरी से दर्शकों का मन सहज में ही मुग्ध हो गया। प्रत्येक समय उनके निवास पर दर्शकों की भीड़ लगी रहती थी। अपने शिष्यों के साथ महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी भी उनके दर्शन करने आये थे। महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी के शिष्य मनोरंजन ठाकुर ने कुंभ की एक पटना का वर्णन किया है। एक धनी व्यक्ति ने योगिराज के हाथ से 100 कम्बलों का वितरण कराना चाहा। बाबा उस समय गम्भीर चिन्तन में रत थे। थोड़ी ही देर के बाद उन्होने आँखें खोली और अपने सामने कम्बलों का ढेर देखा। उन्होंने हाथ से वितरण का संकेत किया। क्षण–मात्र में दीन दुखियों और असहायों में वे कम्बल वितरित कर दिये गये। योगीश्वर गम्भीरनाथ जी कुंभ मेले से ही लोगों के विशेष आग्रह पर गोरखपुर चले आये और गोरखनाथ मठ के अध्यक्ष का उत्तरदायित्व स्वीकार कर जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्होंने अपना कार्य बड़ी सात्विकता और पवित्रता से सम्पादित किया। नाथ–सम्प्रदाय के तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ योगी के रूप में उनकी ख्याति चारों ओर फैल गयी। साधु मण्डली में वे सिद्ध पुरूष के रूप में विख्यात हो गये। गोरखनाथ मठ में आगमन के बाद लोग उन्हें बूढ़ा महाराज के विशेषण से समलंकृत कर विशेष श्रद्धा प्रकट करते थे। उनके आगमन से गोरखपुर में ऐसा लगता था मानो गोरखनाथ की तपोभूमि में हठ, लय और राजयोग ने ही त्रिमूर्ति शिव के रूप में प्रवेश किया हो।

इस समय गोरखपुर मठ के महन्त सुन्दर नाथ युवक और अव्यवस्थित चित्त थे।

नाथ–सम्प्रदाय का नेतृत्व, पूजा और अतिथि–सत्कार आदि का भार उन्हीं के ऊपर था। पर इस भार को सहन करने की क्षमता की कमी उनमें थी। मठ की सम्पत्ति का प्रबन्ध ठीक ढंग से नही दे रहा था। गम्भीरनाथ जी के कानों तक इस कुप्रबन्ध की चर्चा पहुँचने लगी। अन्त में गुरू–धाम के इस संकट को देखकर वह उससे दूर नहीं रह सके। सुन्दर नाथ जी को महन्त पद पर रखते हुए वह मठ के सभी कार्यो पर नियंत्रण रखने लगे। यह घटना सन् 1906 ई० की है। अब बाबा गम्भीरनाथ जी महाराज स्थायी रूप में मठ में ही रहने लगे। सम्प्रदाय का नेतृत्व, गृहस्थ जनों को उपदेश दान, साधु महात्माओं की सेवा आदि कर्तव्यों का पालन जिस निष्ठा के साथ वे करते थे उसी निष्ठा के साथ प्रजाजन को दुख–कष्ट और अभाव अभियोगों के निवारण के लिए भी तत्पर रहते थे। पर इस प्रकार व्यस्त रहते हुए भी उनके निर्विकार एवं सदा प्रसन्न रूप में कोई अन्तर नहीं पड़ा था।

जीवन के अन्तिम दिनों में बाबा गम्भीरनाथ जी को नेत्र ज्योति की क्षीणता से मोतियाबिन्द का रोग हो गया था। योगिराज गम्भीरनाथ जी ने विक्रम संवत् 1974, चैत्रकृष्ण त्रयोदश को सवा नौ बजे प्रात:काल तदनुसार 21 मार्च 1917 को परमधाम की यात्रा की। गोरखनाथ मन्दिर के परम पवित्र प्रांगण में ही उनका समाधि–मन्दिर है, जो शाश्वत सत्य और शान्ति का दिव्य प्रतीक है। इस मन्दिर में उनकी संगमरमर की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। नित्य नियमपूर्वक प्रतिमा की पूजा आरती होती है। शिष्यों को वे कभी–कभी स्वप्न में दर्शन देकर उनका पथ–प्रदर्शन करते रहते हैं। योगिराज योगपुरूष महात्मा गम्भीरनाथ योग, साधना, तपस्या और भक्ति के चिन्मय मूर्तिमान प्रतीक स्वरूप थे। दीन, दरिद्र पड़ोसी और प्रजा के वह पिता एवं प्रतिपालक थे। कोई यदि एक बार उनकी सहायता अथवा आश्रय की याचना करता तो उसे भी निराश नहीं करते। यही कारण है कि उनके ब्रह्मलीन हो जाने के बाद उनके समाधि–मन्दिर के सामने प्राय: दीन दरिद्र जनों को आँसू बहाते देखा जाता था। उनकी आर्तवाणी सुनाई पड़ती – बूढ़े महाराज ! आप आज कहाँ छिपे हुये हो ! आप जहाँ भी हो आपकी कृपा दृष्टि हमलोगों के ऊपर बनी रहे। हमारे दुख दृष्टि को सुननेवाला हमारे अभावों को दूर करने वाला अब कौन रह गया है ?

आज भी गोरखनाथ मन्दिर में दोनों शाम भोजन मुफ्त में कराया जाता है तथा पीड़ित–जन महन्त जी के पास फरियाद लेकर हजारों की संख्या में आते हैं। गोरक्षपीठाधीरश्वर प्रत्येक फरियादी की समस्या का समाधान स्वयं करते तथा जिसमें कानूनी दाव पेंच है उसे उन विभागों में अनुशंसित कर भेजा करते हैं जिस विभाग से उसका सम्बन्ध हो। वर्तमान गोरक्षणीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भी हैं – उनकी अनुपस्थिति में मन्दिर में स्थायी रूप से अधिकारी जनता की फरियाद सुनते हैं और सरकारी विभागों में उनकी समस्याओं के समाधान हेतु अनुशंसा करते हैं तथा माननीय मुख्यमंत्री जी के गोरखपुर प्रवास में न केवल गोरखपुर बल्कि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के लोग अपनी समस्याओं के समाधान हेतु यहाँ आते हैं।

इस वर्ष गोरखपुर में योगीश्वर गम्भीरनाथ जी के ब्रह्मलीन होने का शताब्दी वर्ष बड़े ही धूमधाम से मनाया गया और गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज जो उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भी हैं, के द्वारा ''योगीराज बाबा गम्भीरनाथ'' नामक पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया है जिसके आधार पर मैने योगीश्वर गम्भीरनाथ के गया प्रसंग को लिखकर गया के विद्वानों से आग्रह कर रहा हूँ कि अक्कू नामक व्यक्ति जो गया का रहने वाला थे, नृपतिनाथ नामक एक श्रद्धालु जो अक्कू का सहायक बनकर योगीराज की सेवा में लग गया तथा श्री माधव लाल पण्डा जी पर विशेष खोजकर यह सिद्ध करने का प्रयास करें कि गया हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई, जैन, बौद्ध और नाथ सम्प्रदाय के लिए भी एक पवित्र तीर्थ स्थल है।

अपराजिता, 26–आर, बैंक कॉलोनी
पादरी बाजार, गोरखपुर
मो०- 9452778554

✦

राष्ट्रधर्म, युवा धर्म एवं गीता

डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी

गीता का प्रादुर्भाव युद्धक्षेत्र में हुआ है, जहाँ वीरों का महापर्व मनाया जा रहा है एवं दोनों ओर सेनाएँ खड़ी है। त्रिलोकीनाथ श्रीकृष्ण एक सेनापति के सारथि है औरअपना वाले स्वभाव का नटखटपन दिखा रहे हैं - यानी अर्जुन के रथ का चालन करते हुए दोनों सेनाओं के बीच लाकर रथ को खड़ा करते हैं। अर्जुन ने बाल काल से ही यातनाएँ झेली है। सम्पूर्ण परिवार के दर्शन आज ही वे कर पा रहे है वह भी युद्ध क्षेत्र में। प्रेम स्नेह के लिए नही एक दूसरे को मारने-काटने के लिए। उनके मन में यह भावना उत्पन्न हो रही है कि कभी अपने कुटुम्बियों के स्नेही-जनों के जन्म विवाह आदि मांगलिक संस्कारों को तो देखा नहीं। सचमुच ये लड़ने योग्य नहीं हैं, ये प्रेम करने योग्य हैं। दूसरी शंका संजय के संदेश से है। युद्ध के महीनों पूर्व संजय सुलह के लिए पांडवों के पास पहुँचे थे। परन्तु शर्तें मान्य नहीं होने से श्रीकृष्ण ने उन्हें बैरंग वापस कर दिया था। मित्रभाव से शिष्टाचार वश अर्जुन उन्हें विदा करने गए थे। उस समय संजय ने अर्जुन से कुटुम्ब प्रेम और समाज-प्रेम देखकर युद्ध की धार्मिकता एवं विभीषिका के प्रभाव से अवगत करा दिया था। वह जहर भी अर्जुन के ह्रदय में उस समय अनुकूल वातावरण देखकर पनप गया था। अर्जुन जब संजय को विदा कर लौटते है तब उनका चेहरा निस्तेज दिखलाई पड़ता है। श्रीकृष्ण तो तुरंत भाँप जाते है परन्तु अर्जुन के ह्रदय में कुछ द्वन्द्वउत्पन्न होने लगा था। इसी का उपचार गीता है। यानी गीता के प्रादुर्भाव की स्थिति बनती है कि-

1. यह शास्त्र जंगल में नहीं लिखा गया
2. गुरु-शिष्य के बीच नही बोला गया
3. व्यवहार में डूबे हुए दो परम वीरों की परम मैत्री से उद्‌भूत यह मधुरतम व्यावहारिक सुलभ संवाद है।

यद्यपि कि इसका प्रादुर्भाव युद्ध क्षेत्र में हुआ है और यही कारण है कि यह उपनिषदों का उपनिषद है। प्रत्येक आयु के, प्रत्येक व्यवसाय के स्त्री-पुरूषों के लिए श्रेष्ठ मानवीय विकास का शाश्वत मार्गदर्शन इसमें मिलता है। इसमें कुल 700 श्लोक हैं। एक श्लोक में चार चरण हैं, प्रत्येक चरण में एक शिक्षा है दो हजार आठ सौ, चरणों में अठाइस युगों से चुनी हुई एक-एक सौ शिक्षाएँ है।

गीता का प्रारम्भ ''धृतराष्ट्र'' उवाच से होता है। धृतराष्ट्र के बाहर भी अंधकार है और अन्दर भी तमस है। पिता श्री महामुनि व्यास के द्वारा दिव्य दृष्टि प्रदान करने के प्रस्ताव को वे अपने घायल पुत्रों के छिन्न-भिन्न अंगों को देखने की असहज वेदना के भय से चाहकर भी अस्वीकार करते हैं और वह दृष्टि संजय को दिलवाते हैं। इसलिए वे पूछते हैं कि - किंअकुर्वत् संजयः

प्रथम श्लोक के चार चरणों में बताया गया है कि दुर्जनता की पराकाष्ठा में राजा धृतराष्ट्र ने राजा के चार गुणों की मर्यादाओं का उल्लघंन किया है :-

1. उन्होंने पूर्व पुरूषों की पुण्य-परम्पराओं का संवर्द्धन नहीं किया, बल्कि कुरू महाराज की साक्षात्कार भूमि में रक्त-रंजित जंग ठानी है।
2. उन्होंने राज्य की प्रजा का पालन बिना भेदभाव के पुत्रवत नही करके मेरे पराए का भेद पालकर सम्पूर्ण कुटुम्ब को दो भागों में विभक्त कर रण-क्षेत्र में खड़ा कर दिया है।
3. प्रजा के स्नेह मिलन के लिए कोई पर्व का आयोजन कभी नहीं किया बल्कि लड़-मरने के लिए प्रसंग खड़ा कर दिया।
4. राज्य पर संकट आने के पूर्व सावधान नहीं होकर युद्ध को आमंत्रित कर लिया। अब जब नौका डूबने लगी तो हाल जानने के लिए व्याकुल हो रहे हैं।

धृतराष्ट्र बस यहीं तक उत्सुक दिखते हैं। उन्हें नहीं तो ज्ञान-प्रेम है, नहीं श्रीकृष्णा की बातों में रूचि है। वे गीता तत्व के क्षुद्र स्रोता हैं। आगे वे बिल्कुल मौन दिखते हैं। प्रशंसोक्ति तो है परन्तु

स्वीकारोक्ति नहीं है। परन्तु यह भी स्पष्ट है कि धृतराष्ट्र नहीं होते तो युद्ध नहीं होता। युद्ध नहीं होता तो गीता नहीं होती।

अप्रत्यक्ष रूप से गीता के निमित्त धृतराष्ट्र ही हैं। अत: यही कारण रहा होगा – ''धृतराष्ट्र उवाचं'' से गीता के आरम्भ का। दुर्योधन भी इस युद्ध के निमित्त बनते हैं। इनके वाणी–व्यवहार का वर्णन दस श्लोको में मिलता है। इनके स्वभाव की परिस्थिति समझे बिना इनका चरित्र नहीं समझा जा सकता– (1) इनका जन्म नगर में हुआ। (2) पिता श्री अन्धे हैं। (3) माता श्री ने भी आँख को केवल भोग–साधन मान कर पति के प्रति कर्तव्य निर्वहन के लिए बालक के प्रति कर्तव्य का बलिदान अपनी आँखों पर पट्टी बाँध कर दिया। (4) बालकों को कभी स्नेह नहीं मिला। लकड़ी के निर्जीव खिलौने, अस्त्र–शस्त्र के प्रतीक ही उनके जड़ साथी रहे जिन्हें प्रयोग के बाद ठोकर मार कर फेंक देते। अंधराजमहल में शून्य–झमेलों का पारावार लिए ऊपर से शकुनि मामा का दु:संग। इस परिस्थिति में उनकी दृष्टि से आर्य संस्कृति विलोपित हो गई है। ये मर्यादायें भूल गये।

1. पहले प्रणाम करने की जगह गुरू के हृदय को आघात लगे–ऐसी मर्मान्तक भाषा का उपयोग किया।
2. गुरू–प्रदत्त विद्या का उपयोग नही कर या गुरू का मार्गदर्शन नही लेकर अपनी सेना की विशालतर रचना में स्वयं का मार्गदर्शन किया।
3. अपनी सेना की व्यवस्थित देख–रेख के बदले शत्रु सेना के व्यूह की जासूसी की प्रधानता दी।
4. अपनी सेना तैयार नहीं है, फिर भी पहले शंख फूंकने की अधीरता है।

   अहंकार में आकंठ डूबे दुर्योधन का बल है उसकी सेना की संख्या एवं शस्त्रों का जखीरा।

आचार्य एवं पितामह दोनों हतप्रभ हैं। भीष्म के पास बाल–ब्रह्मचारी शक्ति है, श्रीकृष्ण को पहचान रहे हैं – उनके प्रति भक्ति भी है परन्तु दुर्योधन का नमक खाने के कारण सत्य तिरोहित हो गया है। असत्य पक्ष के साथ खड़ा होना पड़ा है। तामसिक धृति से मिथ्या राज्यनिष्ठा है और परोक्ष में दुर्योधन को खुश करने की वृति।

युद्ध का आरम्भ शंख वादन से होना है। इसकी प्रेक्षा तो हुई नहीं। आतुरता हावी है। शंख–पितामह के होठ से जैसे ही लगा कि सारी मर्यादायें समाप्त हो गईं।

महारथी – रथी ––हाथीदल –– अश्वदल –––पैदल का क्रम नहीं रहा। ग्यारहों छावनी सेना के सारे वाद्य एक साथ बज उठे। शोरगुल मच गया।

दूसरे दल में इसकी आतुरता नही है। सभी आदेश एवं मर्यादा सूत्र में बन्धे हैं, 26 महारथियों के शंख बजने में ही तीन–चार घंटे लग गए।

परन्तु इससे युद्ध आरम्भ नहीं होता। अर्जुन की उम्र 64 वर्षो की है। इनका जन्म जंगल में हुआ था। माता–पिता की अमृत दृष्टि का छलकता हुआ पोषण उन्हें मिला है तथा प्रकृति के पशु, पक्षी, नदी, पहाड़, वनादि के आश्रम, तपोवनों के वेद–उपनिषद, धर्म–चर्चाओं के सतसंग उनके संवेदनशील हृदय को ऐसा झकझोरते हैं कि रिपुदल के लोग उन्हें कुटुम्ब–सम्बन्धी दिखलाई पड़ते हैं। इस प्रकार अर्जुन का मोह आरम्भ होता है।

यहाँ 18ऋ श्लोकों में अर्जुन अपना तर्क लेकर खड़ा नजर आता है। लड़ना नही है – यह निश्चित है। श्रीकृष्ण अर्जुन की भावना समझते हैं। उसकी निष्कामता सहयोग – भावना, दूरदृष्टि, त्याग, क्षमा, पापभीरूता, सच्चे सुख का शोध, सब की वन्दना करते हैं। लेकिन अपनी कठोर आँखों से युद्ध–विराम की आज्ञा नहीं देते। इसलिए प्रथम अध्याय में विषाद योग का प्रतिपादन किया गया है। कुछ लोग गीता का दूसरे अध्याय से ही आरम्भ मानते हैं। उपदेश यहीं से आरम्भ होता है। आत्मज्ञान और समत्व बुद्धि यानी जीवन सिद्धांत और स्थित–प्रज्ञता। इसे गणित की भाषा में विनोबा ने सांख्य बुद्धि (निर्गुण)+योग बुद्धि (सगुण)+स्थित प्रज्ञ (साकार)

तीसरे अध्याय में कर्मयोगी यानी–योग: कर्मसु कौशलम्, सम्पूर्ण जीवन शास्त्र माना है। चौथे अध्याय में कर्मयोग सहकारी साधना यानी विकर्म, पाँचवे अध्याय में योग और सन्यास यानी दुहरी अकर्मव्यवस्था छठे अध्याय में चित्तवृत्ति निरोध (योग चित्तवृति निरोध) सातवें अध्याय में ईश्वर शरणता यानी भक्ति योग, आठवें अध्याय में, सातत्य योग यानी प्रमाण साधना, नौवें अध्याय में समर्पण योग यानी मानव सेवा रूपी राजविद्या, दसवें अध्याय में विभूति–चिंतन ग्यारहवें अध्याय में विश्वरूप दर्शन, बारहवें अध्याय में सगुण–निर्गुण–भक्ति तेरहवें अध्याय में आत्मानात्म–विवेक, चौदहवें अध्याय में गुणोत्कर्ष और गुण–निस्तार, पन्द्रहवें अध्याय में पूर्णयोग यानी सर्वत्र पुरूषोत्तम दर्शन, सोलहवें अध्याय में दैवी और आसुरी वृतियों का झगड़ा, सत्रहवें अध्याय में साधक का कार्यक्रम जिसमे आहाशुद्धि एवं व्यवहार शुद्धि सन्निहित है एवं अठारहवें अध्याय में फल त्याग की पूर्णता – ईश्वर प्रसाद की सम्पूर्ण एवं सम्यक् व्याख्या है। अर्जुन का अंतिम प्रश्न वहीं समाप्त होता है और उत्तर भगवान श्रीकृष्ण एक श्लोक में देते हैं।

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामकं शरणं व्रज।
अहत्वां सर्व पापेयो, मोक्षस्यामि माशुच:।

और इस अध्याय के 78वें श्लोक में गीता की प्रतिपूर्ति होती है –

यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिधुर्वा नीतिर्मतिर्मय।

इसलिए गीता सभी लोगों के लिए सभी समय में समान और सम्यक रूप से उपयोगी है – यह स्वयं सिद्ध है। और यही मोक्ष है। इस मोक्ष में जीवन है और जीवन्तता है। मृत्यु के उपरान्त मोक्ष की प्राप्ति तो सिर्फ विचार है।

राष्ट्रीय संयोजन, राष्ट्रीय शिक्षा समिति आचार्यकुल
आनन्द बिहार, कुञ्ज माड़नपुर, गया
दूरभाष – 91-9430837615

✦

भगवान विष्णु, वैष्णव तत्व और गया

डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'

युग युगान्तर से मानव जीवन में मुख्य रूप से प्राय: तीन लीलाएँ उद्घटित होती है – उत्पत्ति, पालन व संहार और इनमें पालन का तत्व उत्पत्ति व संहार के बीच एक ऐसा नियामक उपस्थित करता है जिसके बगैर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती और उन्हीं पालन शक्तियों के प्रधान पुरूष है देव श्री विष्णु, जिनहें जगत् नियंता, चराचर नाथ व विश्वपालक देव के रूप में रेखांकित किया जाता है।

सर्वप्रथम यह जानने की बात है कि विष्णु भगवान कौन है?ब्रहावैवर्त पुराण के ब्रह्मखंड (17/19) से स्पष्ट है कि 'विष्' धातु व्यक्तिवाचक और 'णु' का आशय सर्वत्र से है अर्थात सर्वात्मा हरि सर्वत्र व्यापक रहने के कारण श्री विष्णु कहे जाते हैं। महाभारत के शांति पर्व (341) में इसका उल्लेख है कि सभी प्राणियों में अतिक्रमण करके जो स्थित है इसी कारण इन्हें विष्णु कहा गया है। समस्त भारतीय धर्म साहित्यों में देव श्री विष्णु को जगत् के प्रात्यक्ष देवता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो यज्ञ के देवता है तो मोक्ष के परमनिधि है और इन्हीं के प्रधान पूजन स्थलों में पितृतीर्थ मोक्षधाम 'गया' का नाम आता है।

गया की धरती पर भगवान विष्णु का एक नव रूप में अवतरण हुआ है, जिसे गदाधर (गजाधर) कहा जाता है और भगवान के दशावतारों यथा मत्स्यावतार, कच्छपावतार, वराहावतार, नृसिंहावतार, वामनावतार, परशुरामावतार, रामावतार, कृष्णावतार, बुद्धवतार व कल्किवतार के साथ हरि के चौबीस अवतार यथा श्री सनकादि, वराह, नारद, नर–नारायण, कपिल मुनि, दतात्रेय,

यज्ञ, ऋषभदेव, पृथु, मत्स्य, कूर्म, धन्वतरि, श्री मोहिनी, नृसिंह, वामन, हयग्रीव, ध्रुव, परशुराम, व्यास, हंस, श्रीराम, बलराम, बुद्ध व कल्कि से विलग इसका अपना वैशिष्ट है जिसे परम तेजस्वी तपोनिष्ठ गयासुर के उद्धार हेतु प्रभु ने वरण किया था। आज भी गया क्षेत्र में भगवान विष्णु के गदाधर तीर्थ की महत्ता दूर-देश तक कायम है जहाँ के प्रधान देवालय में प्रभु का दहिना चरण युगो-युगों से जनकल्याण के लिए उपस्थित है।

धर्म साहित्य में इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से हुआ है कि भगवान विष्णु का मस्तक बदरीनाथ, वक्षस्थल हरिद्वार तो पाद स्थल गया ही है जहाँ धर्म शिला पर अंकित उनके चरणार्विद के स्पर्श व पूजन से साक्षात सायुज्य मोक्ष की प्राप्ति होती है। एक अन्य विवरण स्पष्ट करते है कि बदरीनाथ में प्रभु शिला के रूप में जगन्नाथपुरी में प्रभु काष्ट के रूप में तो गया में प्रभु चरण के रूप में नित्य विराजमान है। धर्मज्ञों की राय में प्रभु द्वारिका में स्नान जगन्नाथपुरी में भोजन, बदरीनाथ में शयन करते है और जहाँ इनका नित्य श्रृगांर होता है वही गया है जिसे परमपद प्राप्त करने वाले जीवन्त तीर्थो में परिगणित किया जाता है।

भारतीय वांङमय में भगवान विष्णु की अनन्त लीलाएँ उद्धृत हैं। भगवान विष्णु को पुराण पुरूष कहा जाता है। पद्य पुराण में इसका उल्लेख है कि ब्रह्मपुराण भगवान विष्णु का सिर, पद्यपुराण हृदय, विष्णु पुराण दक्षिण बाहु, शिवपुराण वाम बाहु, भागवत पुराण जंघा युगल, नारद पुराण भी, मार्कण्डेय पुराण दक्षिण चरण, अग्नि पुराण वाम चरण, भविष्य पुराण दक्षिण जानु, ब्रहवैवर्त पुराण वाम जानु, लिंग पुराण दक्षिण गुल्फ, वराह पुराण वाम गुल्फ, स्कन्द पुराण रोम, वामन पुराण त्वचा, कूर्म पुराण पीठ, मत्स्य पुराण, गरूड़ पुराण मज्जा और ब्रहाण्ड पुराण प्रभु का अस्थि है इस तरह प्रभु विष्णु जो पुराण विग्रह के प्रत्यक्ष तत्व हैं जिनके सहस्त्रनाम में भी इनकी यशकारी महिमा स्वत: उजागर होता है।

भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग अर्थात गुप्तकाल तक आते-आते सम्पूर्ण देश में प्रमुखता के साथ श्री विष्णु की न सिर्फ आराधना की जाने लगी, वरन् बड़े-बड़े देवालयों का निर्माण किया जाने लगा जिसमें कहीं अर्द्धागिंनी लक्ष्मी तो कहीं उनके अवतारों को प्रमुखता से स्थान दिया गया। श्री विष्णु के वाहन गरूड़ को भी भारतीय देव वाहनों में उच्चासन प्राप्त है जिसे धरती का "देवदूत" भी कहा गया है।

श्री विष्णु षोड्शनाम स्त्रोत भी इस कलियुग में विविध प्रकार से उपयोगी हैं और गया में इसका प्रचार गयासुर के जमाने से व्याप्त है। विवरण है कि औषधि लेने समय विष्णु, भोजन के समय जनार्दन, शयन काल में पद्नाम, विवाह मे प्रजापति, युद्ध में चक्रधर, प्रवास में त्रिविक्रम, तनुत्याग में नारायणं, प्रिय संगम में श्रीधरं, दु:स्वप्न में गोविन्द, संकट में मधुसूदन, जंगल में नरसिंह, अग्नि में जलाशयिनम्, जल के मध्य में वराह, पर्वत पर रघुनन्दन, यात्रा काल में वामन और शेष सभी कार्यो मे जो श्री माधव का नाम स्मरण करता है उसके समस्त कार्य निर्विध्न सम्पन्न हो जाते हैं और अंत काल में वह विष्णुलोक में स्थान पा जाता है।

ध्यान देने की बात है कि भारत देश में युगों-युगों से चारों दिशाओं में चार धाम की चर्चा होती है जिसमें उत्तर में श्री बदरीनाथ, पूरब में श्री जगन्नाथ जी और पश्चिम में श्री द्वारिका नाथ श्री विष्णु के ही रूप हैं, जबकि एकमेव दक्षिण का धाम रामेश्वरम के तीर्थ नायक श्री भोले भंडारी हैं। धर्मतत्व विवेचन व नवयुगीन शोध गया जी को पंचम् धाम के रूप में श्रृगांरित करता है जो देव श्री विष्णु का जाग्रत धाम है। विवरण है कि विष्णु भगवान के चरण तीनों लोकों में अंकित है और मर्त्यलोक में यह जहाँ विभूषित है, वही गया है यहाँ भगवान के दाहिने पद का चरण करीब सवा तेरह ईंच लम्बा उत्तराभिमुख है। इसके अलावे रामशिला, प्रेतशिला, ब्रह्मयोनि, बोधगया, कोल्हुआ पर्वत, बारा पर्वत, बराबर पर्वत व उमगा पर्वत पर भी भगवान के चरण विघ्न की पूजा होती है।

भारतीय शिल्प जगत् व प्रतिमाशास्त्र के अध्ययन अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण गया जिले से श्री सूर्य नारायण व तथागत बुद्ध की विभिन्न कलात्मक मुद्राओं की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है पर इस श्राद्ध पिंडदान की भूमि पर भी और इसके चार्तुदिक ग्रामीण क्षेत्रों में भी श्री विष्णु की आकर्षक प्रतिमा विराजित हैं। इनमें कोंचडीह, काबर, नौडीहा, पुनावाँ, दुब्बा, गुनेरी, डबूर, कोच्ची, कुर्किहार, नैली बाँकेधाम, अंधेरिया, रौना, जीरी, उपथु, चुरी, केसपा, उतरेन, धुरियावाँ, दधपा, कजूर, आरोपुर, दुबहल, सिसवर, पिण्डरा, हड़ाही स्थान, मंडौल व कण्डी आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है जहाँ प्रभु के विभिन्न शैली की आकर्षक मूर्त्त शिल्प देखे जा सकते हैं।

गया का श्री विष्णुपद मंदिर महारानी अहिल्याबाई की कृपा से विशिष्टता को प्राप्त हुआ, जो इन्दौर के होल्कर स्टेट की महारानी थीं और परम शैवभक्त थी पर यह प्रभु का आशीर्वाद है कि महारानी ने एक छोटे देवालय को विश्वविख्यात बना दिया। इसी परिसर में श्रीनृसिंह मंदिर, जनार्दन मंदिर, बाँके बिहारी मंदिर, गोपाल मंदिर, राम दरबार, गरूड़ मंदिर, चक्रतीर्थ और गया गदाधर मंदिर भगवान विष्णु की दिव्य प्रतिभा से ओत-प्रोत है। गया नगर में इन देवालयों के अलावे पुण्डरीकाक्ष मंदिर, जर्नादन (अविभुक्तेश्वर नाथ) मंदिर, अक्षयवट, श्री गोपाल तीर्थ, गोवच्छवा, विश्वकर्मा मंदिर, रूक्मिणी मंदिर, आकाशगंगा, कपिलधारा, कोटि तीर्थ और दर्जन भर ठाकुरबाड़ी श्री विष्णु भगवान की उपासना के जीवन्त दस्तावेज है। पाञ्चरात्र आगम के अनुसार बैकुण्ठ, आमोद, प्रमोद और सम्मोद इन चारों की गणना वैष्णव स्थलों में की गई है, जिनके तत्व गया से भी पुरातन काल से शेखरीभूत है।

प्रारम्भ काल से ही यहाँ वैष्णव पर्व की अपनी धूम रही है और साल के चार माह तो वैष्णव जन नित्य देव दर्शन का विधान स्वीकार करते है। गया से भगवान विष्णु से जुड़े 'विहस्पति पर्व' व 'एकादशी पर्व' के साथ 'अमावस्या' की पुण्य प्रतिष्ठा प्राच्य काल से कायम है।

अस्तु! धर्म प्राण देश भारतवर्ष के देवी देवताओं में श्री विष्णु जी की महिमा प्रकाराक्तर से प्रतिष्ठित है जो गया तीर्थ के सर्वप्रधान देवता हैं। आदि काल में अर्थात् वैदिक युग में समस्त संस्कार निर्वहन में यज्ञों की प्रधानता रही इस कारण प्रभु यज्ञ के देवता बने और फिर इन्हीं के हाथों में जीवनदायिनी शक्ति का मूल अंश समाहित हो गया। 'हरि' का यह वैश्विक रूप हर एक भारतीय के हृदय मंडल में व्याप्त है और गया भी भारत माता के हृदय भाग पर अवस्थित है। अस्तु! समस्त प्राणियों की आत्मा, प्रतिकृति व पुरूषत्व के प्रभु, महालक्ष्मी के प्राणेश्वर देव श्री विष्णु की महिमा अनन्त व कृपा अपरम्पार है। जो गृहस्थ जीवन मार्ग में सच्चे मन से इनकी पूजा-अराधना, सेवा-संस्कार व जप-तप करता है, उसके लिए कुछ भी असंभव नही रहता।

अखिलेशायन
गोदावरी (भैरोस्थान), गया
सचल - 9934463552

✦

यज्ञर्थीत्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः
तदर्थं कर्त कोन्तेय मुक्तसङ्ग : समाचर।।

''यज्ञ के निमित्त किए जानेवाले कर्मों से अतिरिक्त दूसरे कर्मों में लगा हुआ ही यह मनुष्य समुदाय कर्मों से बँधता है। इसलिए हे अर्जुन ! तु आसक्ति रहित होकर यज्ञ के निमित्त ही भलीभांति कर्त्तव्य कर।''

– श्रीमद्भागवतगीता

हमारी परम्पराएँ – हमारी विरासत

रेणुका पालित

आज दुनिया के सभी देशों पर दृष्टि घुमा कर देखें तो कमोबेश एक ही दृश्य नजर आता है – कहीं गृहयुद्ध हो रहा है। कोई देश गृहयुद्ध के कगार पर है। यह सभी युद्ध रंगभेद, धर्म और जाति के नाम पर लड़े जा रहे है। मनुष्य अपनी ही प्रजाति को समाप्त करने पर तुला है जबकी संसार के हर एक धर्म का मूलमंत्र शांति, अहिंसा, समभाव और सहिष्णुता ही है। धार्मिक ग्रंथो का लोगों ने अगर सिर्फ प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाकर गहराई से अध्ययन किया होता और ईमानदारी से उसके बताए हुए उसूलों पर चले होते तो ब्रहमाण्ड में दुनिया एक खूबसूरत ग्रह, एक सुन्दर फूलों का गुलदस्ता होता।

सभी धर्मों ने शांति एवं सहिष्णुता का मार्ग बताया है। अन्य धर्मों की तो मैं सूक्ष्म विवेचना भी नहीं कर सकती जहाँ हिन्दुत्व और सनातन धर्म की बात है तो मैं दावे के साथ इस बात को कह सकती हूँ कि सनातन धर्म जिसमें समाहित अनुष्ठानों और परम्पराएं हैं वह सभी प्रति को ध्यान में रखते हुए विज्ञान पर आधारित है और इस बात को आधुनिक विज्ञान ने भी प्रमाणित किया है।

हम कह सकते है कि हिन्दुत्व कोई धर्म नहीं, मानव मात्र के कल्याण के लिए व्यवस्थित की गई एक सात्विक जीवन शैली है जो जीवन के हर पहलू को मानवता से जोड़ती है।

प्राचीन काल की ओर लौटें हम। पाषाण काल जब मनुष्य के पास कुछ नही था तब पर्वत की अनेक गुफाएँ मनुष्य की शरण–स्थली बनी जो उन्हें, सर्दी, गर्मी, बरसात के अतिरिक्त अनेक प्राकृतिक आपदाओं से बचाती थी। पत्थर उनके हथियार बने जो उनके शिकार को सुलभ बनाते थे। कालान्तर में इन्हीं पत्थरों से कालजयि अग्नि का अविष्कार हुआ।

ऐसे पत्थरों के प्रति मनुष्य की अभक्ति उसकी स्वभाविक प्रक्रिया ही थी। आश्चर्य नहीं की किसी सुघड़ पत्थर के प्रति उसकी आस्था जग गई हो और मनुष्य ने उपलब्ध फूलों और पत्तों से उसकी आराधना शुरू कर दी हो जिन्हें आज हम भगवान शंकर के रूप में पूजते हैं और भगवान शंकर का स्वरूप भी देखिए न पूरी तरह प्रकृति से तारतम्य बढ़ाता हुआ है।

सिन्धु घाटी सभ्यता सबसे प्राचीन सभ्यता मानी जाती जो सही मायने में एक विकसित नगरीय सभ्यता थी। आज वो विश्व में मोहन जोदड़ो के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है मृतकों का टीला। अवश्य ही सिन्धु सभ्यता के विनाश के बाद इसका बिगड़ा हुआ नाम हो गया मृतकों का टीला। कभी हमने यह सोंचने की तकलीफ नही उठाई की इसका पूर्व में वास्तविक नाम क्या होगा ?जिस तरह वह एक व्यवस्थित नगर था तो उसकी जोड़ का कोई अच्छा सा नाम भी जरूर होगा। सुमेर आधुनिक इराक में एक जगह सिन्धु घाटी की एक जगह का नाम ''मेलूहा'' इंगित किया गया है पर उसका अर्थ क्या है?असल में अपनी धरोहर को महत्व न देना भी हमारी रगो में समाई हुई आदत है।

1921–22 में मोहन जोदड़ो में उत्खनन के दरम्यान जो कुछ प्रतीक, कुछ चिह्न मिले हैं वह उस समय के सनातन धर्म की ओर ही इंगित करते हैं। भले ही कुछ इतिहासकार किसी देश–विशेष के दवाब या प्रभाव में आकर तथ्यों एवं दृष्टिगोचर होते हुए चिह्नो के प्रति अपना स्पष्ट विचार न देकर ''किन्तु'' – ''परन्तु'' जैसे सीमित शब्द कहकर यर्थाथ को मानने की हिम्मत नही जुटा पाए।

असल में गुलाम मानसिकता का असर काफी दिनों तक रहता है।

खुदाई में निकली भगवान शिव की मूर्ति जिसे इतिहासकारों ने स्वयं ''पशुपति'' कहा है। वह मूर्ति स्वयं योगमुद्रा में अवस्थित है और उनके चारों ओर विभिन्न पशु–पक्षी शान्त मुद्रा में बैठे हैं, जैसे वो भी योग ध्यान में लीन हों।

कहा जाता है कि हिन्दुस्तान त्योहारों का देश है। किन्तु एक भी त्योहार निरर्थक नहीं। हर त्योहार कुछ न कुछ संदेश देता है चाहे वृक्षों की पूजा हो, नागों की नाग पंचमी हो या दशहरा – दीवाली, होली, हर त्योहार का एक मकसद है – एक उद्देश्य है। त्योहार हमारे सामाजिक ताने–बाने को मजबूत बनाता है।

सिन्धु घाटी से निकली मूर्तियों ने न सिर्फ अनेक आभूषण धारण कर रखे हैं, बल्कि महिला मूर्तियों ने सिन्दूर भी लगा रखे हैं।

यज्ञ करते लोग, यज्ञ में आहुति देते लोग, वृक्षों की पूजा अर्चना करते लोग, सभी सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेषों में परिलक्षित हैं। यहाँ तक की हवन कुण्डों में लकड़ी के कोयले और राख तक के अवशेष मिले है। संभवतः वो मातृ प्रधान समाज था। इसीलिए मातृदेवी की मूर्तियाँ मिली है।

पेड़, पौधों और वृक्षों की महता के प्रति अब हम जागृत हो रहे हैं। किन्तु हिन्दुस्तान में हमारे पुरूषों ने सदियों पूर्व वृक्षों की महत्ता को रेखांकित किया था – इसीलिए अनेक महत्वपूर्ण वृक्षों यथा पीपल, आँवला, तुलसी जैसे औषधीय गुणों से भरपूर वृक्षों को पूजनीय उनके गुणों के कारण कहा था। वृक्ष लगाने के कार्य को पुण्य का कार्य बताया था।

आज विज्ञान भी हमारे पौराणिक ग्रन्थों की मान्यताओं को लाभकारी और गुणों से परिपूर्ण मानते है। क्योंकि यह सच्चाई है।

दुनिया के अनेक देश अपनी भाषा और संस्कृति को प्राथमिकता देते हैं। हमें भी अपनी संस्कृति जो हमारी समृद्ध धरोहर है उसे आगे बढ़ाते हुए भविष्य की पीढ़ी को इसकी महत्ता बताते हुए अग्रसर करना चाहिए ताकि लाखों हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने जिस अथक खोजों, शोधों और अनुसंधान के पश्चात वैज्ञानिक आधार पर इस संस्कृति को समाज को समर्पित किया था, वह अक्षुण्ण रहे और आने वाली पीढ़ी इससे लाभान्वित होते हुए अपनी संस्कृति पर गर्व कर सकें।

पूर्व अध्यक्ष, जन शिक्षण संस्थान, गया
अध्यक्ष – विमेन हेल्प लाइन, गया
56, गौतम बुद्ध रोड, गया।
मोबाईल नं० – 09431224669

✦

गया जी को समझिए, गया जी को परखिए

डॉ० मुकेश कुमार सिन्हा

'गया जी' की माटी में पला–बढ़ा। इस माटी ने मुझे जवान बनाया। आज 'गया जी– से दूर 'चाकरी' करता हूँ। मेरे सहकर्मी मुझे देखकर यह कहते है कि 'मुकेश! उस शहर का है, जहाँ बिना पेड़ का पहाड़ है, बिना पानी की नदी है, और बिना ...।' मैं टोंकता हूँ, उन्हें रोकता हूँ। कहता हूँ –'गया जी' को जानिए, 'गया जी' को मानिए 'गया जी' को समझिए, 'गया जी' को परखिए। यह नायाब शहर है। अपने–आप में अकेला और यूँ कहें कि अनोखा। शहर के नाम के साथ आदर सूचक शब्द 'जी' लगने वाला संभवतः यह एकमात्र शहर है।

हम अनेकानेक परेशानियों से घिरे होते है। भागती–दौड़ती जिंदगी के बाद भी हमारी इच्छा होती है, 'गया जी' की भूमि पर आना, फल्गु में तर्पण करना और पिंडवेदियों पर पिंडदान। गया तीर्थ करने की तमन्ना हर उस शख्स की होती है, जिसे कर्मकांड और धर्म पर गहरी आस्था है। ऐसा इसलिए ताकि पितरों की आत्मा को शांति मिले और घर में खुशहाली आये।

'गया जी' सदियो से साक्षी रहा है कर्मकांड का। कभी 365 पिंडवेदियों पर पिंडदान हुआ करता था, लेकिन अब संख्या सिमटकर 45 हो गयी है। खैर, पहलू यह है कि 'गया जी' नायाब है। गया को श्रेष्ठतम तीर्थ स्थल कहा जाता है। ऐसा यूँ ही नहीं

कहा गया है। मान्यता है कि 'गया जी' के कण-कण में भगवान रचते-बसते हैं।

गयायां न हि ततेस्थानं यत्रतीर्थ न विद्यते...।

दैवीय प्रभाव के कारण 'गया जी' की यह भूमि ज्ञान, दीक्षा और मोक्ष के लिए अनुकूल है। देखिए न, गया की पावन और पवित्र भूमि ने ही महात्मा बुद्ध के ज्ञान का चक्षु खोला। न जाने ज्ञान की तलाश में 'वो' कहाँ-कहाँ गये ?फिर भी उन्हे सुकून नहीं मिला। 'गया जी' ने ही उन्हें 'बुद्ध' बनाया। संकीर्तन आंदोलन के प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु को 'गया जी' में ही दीक्षा मिली थी।

ऐतिहासिक और पौराणिक ग्रंथो में 'गया जी' का महत्व अंकित है। सांस्कृतिक रूप से समृद्धि प्राप्त की वजह से ही यह मगध प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में ख्यात रहा। मगध मतलब उस वक्त का शक्तिशाली महाजनपद। एक बात और! मगध खासकर गया को बराबर प्राकृतिक और कृत्रिम आघातों का प्रहार सहना पड़ा, लेकिन गया में कला, संस्कृति, संस्कार की जड़े इतनी मजबूत रही कि झंझावत के बाद भी इसकी महत्ता आज भी अक्षुण्ण है। तर्पण, पिंडदान और कर्मकांड एक मिसाल है। आधुनिकता और विज्ञान के बढ़ते वर्चस्व के बाद भी अनंत काल से चली आ रही पिंडदान की परंपरा कायम है। मान्यता है कि जब तक सृष्टि रहेगी, यह विधान अक्षुण्ण रहेगा।

पिंडदान की अवधारणा नई पीढ़ी की सोच का परिणाम नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की पहचान है। मुक्ति की कामना को लेकर हम 'गया जी' पहुँचते है। मान्यता है – गया श्राद्ध करने से सिर्फ पितर ही नहीं तरते, बल्कि श्राद्ध करने वाले भी पाप मुक्त हो जाते हैं। गरूड़ पुराण कहता भी है कि श्राद्ध, पिंडदान अन्न व जलदान करने एवं भगवान गदाधर की पूज से ब्रह्म लोक की प्राप्ति होती है।

श्रद्धेय पिंड दानेन अन्न दानेन वारिदः।
ब्रह्मलोक वाप्नोति समुज्यादि गदाधरम्।।

अब सोचिए! गया जी की पावन धरा, जहाँ कण-कण में भगवान हैं, जहाँ स्पर्श मात्र से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। जहाँ शहर के नाम के बाद आदरसूचक शब्द 'जी' लगता है। जहाँ अनगिनत साधु-महात्माओं, ऋषि-मुनियों का आगमन हो चुका है। उस भूमि पर रहने वाले लोग इठलाये नहीं, इतराये, नहीं तो और क्या करें ?यह शहर अनोखा है। यदि यहाँ बिना पेड़ का पहाड़ है, यदि बिना पानी की नदी है, ... तो यह भी अजूबा है न्! कहिए ... सच है न्!

जिला भविष्य निधि कार्यालय
नवादा (बिहार)
मो० - 9304632536

✦

सीता जी का निर्वासन क्या बिहार में हुआ था?

सुश्री प्राची प्रज्ञा

गयाधाम भारतवर्ष के सभी तीर्थो में सर्वोत्तम माना जाता है। अनेक ऋषि महर्षियों तथा पुराण प्रसिद्ध राजा महाराजाओं ने यहाँ आकर पितरों की मुक्ति के लिए पिण्डदान तर्पण आदि कार्य सम्पन्न किया है। गया धाम में भगवान श्री राम द्वारा अपने पूर्वजों के पिण्डदान की कथा भी पुराणों में आयी है। गया धाम में रामशिला, रामकुंड, राम गया, सीता कुंड आदि कई स्थल है जो भगवान राम द्वारा गया में श्राद्ध तर्पण आदि किये जाने की बात प्रमाणित करते है। सीता कुंड में भूगर्भ से हाथ निकालकर सीता जी से पिण्डदान मांगते राजा दशरथ और भगवान श्री राम और लक्ष्मण की अनुपस्थिति में ही राजा दशरथ के हाथ में बालुकामय पिण्ड देवी सीता जी की मूर्ति (आज के समय में मन्दिर) भगवान श्री

राम द्वारा गया धाम में पिंडदान करने की सत्यता तथा गया क्षेत्र से राम कथा का सम्बन्ध प्रमाणित करते है। वहाँ से लगभग पचास–साठ किलोमीटर की दूरी पर गया–नवादा मुख्य मार्ग से लगभग दस किलोमीटर अंदर वजीरगंज से पूरब और हिसुआ (तिलैया) से पश्चिम मंझवे रेलवे स्टेशन के आसपास 'सीतामढ़ी' नामक एक ग्रामीण कस्बा जहाँ आज के समय प्रखंड सह अंचल कार्यालय और पुलिस स्टेशन तथा छोटा सा साधारण बाजार है। यह आज नवादा जिले में है। कहा जाता है कि देवी सीता ने श्री राम द्वारा अयोध्या से निर्वासन के बाद यही निवास किया तथा अपने जीवन के अन्तिम काल को व्यतीत किया था। यों उत्तरी बिहार में भी सीतामढ़ी एक जनपद है जिसे सीता जी की जन्मभूमि बतलाया जाता है। कुल मिलाकर भगवती सीता और भगवान राम की लौकिक एवं पौराणिक इतिवृत्त बिहार से काफी घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। वहीं भगवान विष्णु एवं भवानी देवी मंगला की अवतरण भूमि एवं पावन तीर्थ भी है।

मेरा मानना है कि बिहार आदि काल से ही ज्ञान और मोक्ष की भूमि रहा है। स्त्री पर अत्याचार और वह भी मर्यादा पुरूषोत्तम द्वारा बिहार के लिए कब स्वीकार्य होता ?जहाँ की मिट्टी से उत्पन्न सीता महर्षि निमि का कुल गौरव रही हो। वैसे भी भगवान राम नारी की मर्यादा स्थापित करने हेतु अहिल्या का उद्धार, त्रिजटा राक्षसी की प्रशंसा तथा शबरी जैसी अबोध भिलनी के उच्छिष्ट नैवेध को स्वीकार करते हुए भक्ति और नारी को महिमामंडित किया है। उनके द्वारा सीता की पूर्ण आचारगत पवित्रता को जानकर भी उनका त्याग भले ही उनकी राजनयिक विवशता अथवा प्रजा तोषण की बात रही है। जिसे महाकवि भवभूति ने 'लोकाराधन' कहा है, किन्तु सामाजिक तथा नैतिक दृष्टि से यह बात बिल्कुल ही असह्य प्रतीत होती है।

तमसा नदी के किनारे महर्षि बाल्मीकि का आश्रम का होना, तपश्चर्या का चलना एवं उनके स्वभाव सद्भाव और प्रभाव से क्षेत्र को प्रभावित होना संभव है परन्तु जनक नन्दिनी, रघुकुल की गरिमा और रामराज्य की स्वामिनी सीता का निर्वासन बड़ा ही असह्य और मर्मस्पर्शी है। हमारे धर्मग्रन्थो में कई सनातन धर्म विरोधियों ने घुसकर ऐसा प्रहार किया है जो कालांतर में सत्य प्रतीत होने लगा है। हमारे प्राचीन विद्वान संस्कृत को देवभाषा मानते रहे तथा उन्होंने अपनी ग्रन्थ रचना का माध्यम भी इसे ही बनाया। आगे चलकर श्रुतिधर पंडितों ने इसे अपने कंठ में धारण कर संजोया तथा उसे प्रचारित प्रसारित किया। उन्होंने इसका ख्याल नहीं किया ऐसे कार्यो के माध्यम से हमारे धर्म और संस्कृति के साथ विश्वासघात किया जा रहा है। अनेक म्लेच्छ सदियों से इसे कलुषित करने में लगे रहे। कहा जाता है कि वैसे ही गुणाढ्य नामक राक्षस ने अपनी बहुकथा में पाली भाषा में सीता वनवास की कथा भगवान राम को लांछित करने के लिए जोड़ी है। जैन धर्म के पक्षपाती होने के कारण आचार्य क्षेमेन्द्र ने 'रामायण मञ्जरी' के रूप में इसे लिपिबद्ध किया तथा वाल्मीकि रामायण के उत्तर में उसे जोड़कर 'उत्तरकाण्ड' बना दिया। वस्तुतः वाल्मीकि रामायण में युद्धकाण्ड के बाद कोई काण्ड नहीं है। यह भाव एवं भाषा से ही स्पष्ट है। वाल्मीकि रामायण में 'युद्ध काण्ड' के अंत में ही यह श्लोक आया है –

रामायणमिंद कृत्स्न श्रृण्वतः पठतः सदा।
प्रीयते सततं रामः स हि विष्णुः सनातन।।
बा० रा० 6/28/119

लव कुश कहते है :– ''पुरावृत्तमाख्यानं''

फिर उत्तर कांड की कल्पना कैसे की गई ?यह निश्चित रूप से बाहर से जोड़ा हुआ प्रतीत होता है। आगे –

एत दाख्यान भानुष्यं समविष्य सहोत्तरम्।
कृतवान प्रचेत सः पुष्पास्तद् ब्रह्माण्यन्वमन्यत्।।

युद्धकाण्ड के अंतिम सर्ग में ही सुग्रीव विभीषादि के चले जाने का प्रमाण मिलता है फिर वे कहीं आये नहीं। परन्तु उत्तर काण्ड के प्रणेता ने उन्हें फिर 40 वे सर्ग में पुनः प्रस्थान कराया है। इसमें स्पष्ट विरोधाभाष दीखता है।

श्री राम कथा प्रसंगाधीन या स्वतंत्र होकर आदि रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण, वायु पुराण,

नृसिंह पुराण, हरिवंश, हनुमानाष्टक में भी मिलता है। परन्तु कही भी सीता निर्वासन का प्रसंग नही मिलता। कहा गया है – ''यन्न भारते तन्न भारते'' अर्थात जिस घटना का वर्णन महाभारत में नहीं मिलता है वह घटना कहीं घटित नहीं हुई। महाभारत के वन पर्व में रामाख्यान पर्व (अ० 273 से 292) वर्णित है। द्रौपदी दुःखी होकर महर्षि मार्कण्डेय से प्रश्न करती है। उसकी व्यथा को दूर करने के लिए महर्षि मे मार्कण्डेय द्वारा कहा गया रामाख्यान रामजन्म से आरम्भ होकर राज्याभिषेक तक चलता है और अश्वमेघ यज्ञ के साथ पूरा (समाप्त) हो जाता है। वहाँ न तो सीता जी के परित्याग की कथा है नहीं तो अश्वमेघ यज्ञ में भगवान राम के साथ बैठने हेतु सोने की सीता की मूर्ति बनवाये जाने की। सनातन धर्म की परम्परा के अनुसार जीवित व्यक्ति की मूर्ति नहीं बनायी जाती नही तो उसकी प्राण प्रतिष्ठा ही हो सकती है। उस स्थिति में एक ओर वनवास में जीवित सीता की मूर्ति बनाकर उसमें प्राण प्रतिष्ठा का अनुदेश महर्षि वशिष्ठ जैसे आचार्य कैसे दे सकते है?

दूसरी ओर लंका–विजय के बाद विशालाक्षी श्री जानकी जी की अग्नि परीक्षा हुई और सम्पूर्ण भूतों ने (जीवों) ने उन्हें अग्निकुंड में प्रवेश करते तथा वहाँ से अदग्ध निकलते हुए देखा। यथा –

ददृशुस्तां विशालाक्षीं पतन्तीं हव्यवाहनम्।
सीतां सर्वाणि रूपाणि रूक्मवेदिनियां तदा।।
– बा० रा० 6/116/32

तो क्या धोबी को इस बात की जानकारी नही थी?

उस समय श्री राम अग्नि के समक्ष प्रतिज्ञा करते है :–

''विशुद्ध त्रिषु लोकेषु मैथिली जनकात्मजा।
न विहातुं मया शक्या कीर्तिरात्मवता यथा।।''
बा०रा० 6/118/20

महानाटक में उनका वचन है :–

''द्विशरंनाभिसंधते रामोद्विर्नाभिभाषते''
महानाटक 2/24

रामायण को भारतीय आर्ष परम्परा में साक्षात वेद की माना गया है। जहाँ कहा गया है :–

वेद वेधे परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षात्''

गोस्वामी जी ने भी दावा किया है :–

''नानापुराण निगमागम सम्मतं यद्रा मायाणे
निगदितं क्वचिदभ्न्तोऽ''
रामचरित मानस 1/1/9

''वहीं भगवान राम ने स्वयं जानकी जी के लिए कहा है :–

''जनकसुता संतत मनिन्दिता'' अर्थात सीता जी की कहीं कोई निन्दा नही हुई। तो फिर उनका निर्वासन क्यों सीता जी का चरित्र सर्वथा लोक वेद प्रशस्त रहा है। यथा –

कौसल्यादि साखु गृह माहीं।
सेवइ सबन्हि, मान माद, नाहीं।।
मानस 7/24/8

दुई सुत सुन्दर सीता जाये।
लव कुश वेद पुरानन्ह गाये
मानस 7/25/6

ओरिएण्टल इंस्टीच्यूट ऑफ बड़ौदा के अतिरिक्त अनेक जगहों पर किये गये अनुसंधानों से यह स्पष्ट हुआ है कि वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है। ओरिएंटल इंस्टीच्यूट में सम्पन्न शोध के अनुसार वाल्मीकि रामयण में उत्तर काण्ड को दूसरी या तीसरी शताब्दी में जोड़ा गया है। डॉ० प्रियदर्शन ने भी अपने शोध में यही पाया है कि उत्तर काण्ड प्रक्षिप्त है। अनेक मनीषियों ने शोध के पश्चात यही निष्कर्ष निकाला कि वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है।

डा० राधा नन्द सिंह (अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गया) ने भी काफी शोध एवं विश्लेषण के पश्चात बतलाया है कि सीता का निर्वासन वस्तुतः नहीं हुआ है। अतः न वे कभी तमसा तट पर वाल्मीकि के आश्रम में रही न बिहार के गया जिला के सीतामढ़ी गाँव में। अतः सीता निर्वासन की बात सर्वथा अतार्किक और अप्रमाणिक है। वैसे भक्तों ने

नाम के आधार पर 'सीतामढ़ी' को सीता राम की कथा से जोड़ रखा है। यह दूसरी बात है। 'सीतामढ़ी' गाँव में स्थित शिलाखण्ड के धरती फटने और सीता जी को उसमें प्रवेश की बात भी युक्ति संगत नही लगती। सम्प्रति वहाँ बने मन्दिर में बुद्ध की प्रतिमा स्थापित है। यो प्रतिमा के आधार पर कहीं कुछ कहना (यहाँ सीता जी ने निवास किया या नहीं) कुछ कहना उचित नही जान पड़ता।

अत: उपर्युक्त विविध शोधों तथा उनकी निष्पत्तियों के आधार पर ही रामकथा को समझने का प्रयास होना चाहिए। किसी गाँव या कस्बे के नाम पर नहीं।

वरीय भाषाध्यापिका
रामगढ़ (छतीसगढ़)

✦

मृत्यु अटल सत्य

श्री शिव देव प्रसाद

मृत्यु जीवन की एक ध्रुव और निश्चित घटना है। यहाँ सब कुछ रह जायगा, केवल हम नही रहेंगे। विचित्र है न - जीवन और मृत्यु के बीच की आँख-मिचौली का खेल। मृत्यु सत्य होने के बावजूद हम जितना मृत्यु से डरते हैं, उतना किसी अन्य चीज से नहीं। करना कोई नहीं चाहता है - यह जानते हुए भी कि शारीर पंच-तत्व निर्मित है एक दिन भस्म हो जायगा।

हम कहाँ जा रहे हैं - प्रतिक्षण मृत्यु की ओर ही। यह भी सत्य है कि हमारी जिस प्रकार की भावना जीवन भर रहती है, मृत्यु भी वैसी ही होती है मृत्यु का मुकाबला करने के लिए ही जीवन है। जीवन ऐसा होना चाहिए कि मरते समय भी प्रसन्नता, आनंद का अनुभव हो और इसके लिए आवश्यक है जीवन भर परमात्मा का स्मरण, चिंतन, ध्यान, पूजन। मृत्यु भीषण भी है, मधुर भी है। भीषण उनलोगों के लिए है जो संसार की मोह, ममता, आशम्ति में उल्टे पड़े हैं। मधुर उनके लिए है जो परमात्मामय है, उन्हें न कोई चिंता है, न शोक, न मोह।

एक महत्वपूर्ण बात है - मृत्यु जीवन की इति नही है मृत्यु जन्म का उल्टा हो सकता है, परंतु जीवन का नहीं। जीवन का प्रवाह तो एक है, सनातन है, दिव्य है वह कई योनियों से होता हुआ, पूर्ण होने के लिए व्याकुल होता हुआ चलता रहता है। एक ही जीवन क्रम में कई जन्मों की श्रृंखला लगी है। जन्म ही जीवन का आरंभ नही है और न मृत्यु इसका अंत। जन्म और मृत्यु तो जीवन रूपी आध्यात्म का अथ और इति है।

मृत्यु का क्षण बड़ा महत्वपूर्ण होता है। उस आखिरी क्षणों में अजीबो गरीब अनुभव प्राप्त होता है। अंतिम क्षण में मानवीय वृत्तियों की जकड़न में मन जीवन काल की वही प्रपंच की बात सोचता है या श्रेष्ठ बातें सोचते हुए विदा लेते हैं। वस्तुत: हम संसार से अपना भावनात्मक लगाव लगाये रहते हैं जिससे कि पल भर के अलगाव को सहन नहीं कर पाते हैं और मृत्यु की बात आने पर दु:खी और परेशान हो जाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका जीवन का उद्देश्य सेवा और सहयोग रहता है उनका जीवन परमार्थ की धुरी पर घूमता है। वे ईश्वर परायण होते है और मरने से नही डरते है दो चीजे है - बदलनेवाली और न बदलनेवाली। शरीर बदलनेवाला है, हम नहीं बदलनेवाले हैं। शरीर वह नहीं रहा, पर हम स्वयं वही है। स्वयं तक प्रकृति भी नहीं पहुँचती है न तो शरीर रहता है, न आत्मा मरती है। तत्व ज्ञान होने पर न शरीर बदलता है, न आत्मा प्रत्युत स्वभाव बदलती है।

हमें जीवन को श्रेष्ठ और सुंदर बनाना चाहिए और हमेशा सत्कर्म में रहना चाहिए। मृत्यु के लिए हमें तैयार रहना चाहिए, ताकि मौत का स्वागत किया जा सके, आलिंगन किया जा सके, मृत्यु उत्सव मनाया जा सके। मृत्यु अटल सत्य है

यह साँझ उषा का आँगन, आलिंगन विरह मिलन का
चिरहास अश्रुमय आनन खेल है इस मानव जीवन का

ए० पी० कॉलोनी, गया
मो० 8294418820

पितृपक्ष : पुरखो के आशीर्वाद की अद्‌भुत कहानी

श्री अनिल सक्सेना

पितृपक्ष का महत्व : देवताओं से पहले पितरों को प्रसन्न करना अधिक कल्याणारी होता है। देवकार्य से भी ज्यादा पितृकार्य का महत्व होता है। वायु पुराण, मत्स्य पुराण, गरूड़ पुराण, विष्णु पुराण आदि पुराणों तथा अन्य शास्त्रों जैसे मनुस्मृति में भी श्राद्ध कर्म के महत्व के बारे में बताया गया है। पूर्णिमा से लेकर अमावस्या के मध्य की अवधि अर्थात पूरे 16 दिन नियमपूर्वक कार्य करने से पितृ–ऋण से मुक्ति मिलती है। इस दौरान ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान–दक्षिणा दी जाती है।

हिंदू धर्म में पुरखों की पूजा बहुत अहम् मानी जाती है। पितृपक्ष के दौरान लोग अपने पूर्वजों को याद करते है और उनकी याद में भोज कराते हैं। माना जाता है कि पितृपक्ष के आखिरी दिन पुरखे कौओं के वेश में खाना खाने आते है इसलिए लोग घर के बाहर खेत–खलिहानों में खाना रखते है ताकि कौए उन्हें खा सके।

पूर्वजों की महिमा देवताओं से कम नही है। माना जाता है कि उनके आशीर्वाद से घर में सुख–शांति बनी रहती है और मनोकामनाएं पूरी होती है। इस मौके पर सुनिए पुरखों के आशीर्वाद की एक अनोखी कहानी

मार्कंडेय पुराण में वर्णित एक कहानी के मुताबिक रूचि नाम के एक प्रजापति थे, जिन्होंने खुद को सांसारिक मोहमाया से दूर कर लिया था। उन्होंने शादी भी नहीं की थी और अकेले वन में विचरण करते रहते थे। गृहस्थ जीवन की तरफ उनका जरा भी झुकाव नही था। रूचि का यह रवैया देखकर उनके पूर्वज बहुत चिंतित हो गए। उस वक्त एक ऐसे राजा की जरूरत थी जो दुनिया को चला सके लेकिन रूचि तो इन सबसे उदासीन हो चुके थे।

आखिर पुरखों ने रूचि को दर्शन दिए और उन्हें गृहस्थ जीवन का महत्व समझाया। पूर्वजों ने रूचि से कहा कि वह शादी कर लें, ताकि उनकी संतान मनुष्य के वंश को आगे बढ़ा सके। पुरखों के काफी समझाने पर रूचि शादी के लिए तैयार तो हो गए लेकिन उनके मन में कई शंकाएं थी। पहली बात तो यह कि रूचि लगभग बूढ़े हो चले थे। दूसरे उनके पास धन या सुख साधन नहीं थे। ऐसे में कौन उनसे अपनी बेटी की शादी कराता?आखिरकार सभी चिंताए छोड़कर रूचि ब्रह्मा जी की आराधना में लग गए, क्योंकि ब्रह्मा जी ही इस सृष्टि के रचयिता हैं।

रूचि से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने उन्हें दर्शन दिए। उन्होंने रूचि से कहा कि वह अपने पुरखों के लिए तर्पण करें और फिर से उनकी आराधना करें। ब्रह्मा जी की बात मानकर रूचि ने एकांत में जाकर अपने पुरखों के लिए तर्पण किया और पूरी श्रद्धा के साथ उनकी स्तुति की। रूचि ने उस समय जो स्तुति में जो कुछ भी कहा उसे 'पितृ स्त्रोत' का नाम दिया गया। रूचि की प्रार्थना से प्रसन्न होकर पूर्वज एक बार फिर उनके सामने प्रकट हुए। उन्होंने रूचि से वरदान मांगने को कहा और रूचि ने सुयोग्य पत्नी मांगी। पुरखों ने कहा कि तुम्हें जल्दी ही एक पत्नी मिलेगी और तुम पिता भी बनोंगे। पुरखों के अंर्तध्यान होने के कुछ ही देर बाद नदी से प्रमोल्चा नाम की अप्सरा अपनी बेटी को लेकर रूचि के सामने प्रकट हुई। उसने रूचि से कहा कि वह उसकी बेटी से विवाह करें।

इस तरह रूचि से शादी करके गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। कुछ समय के बाद दंपती को एक बेटा हुआ जिसका नाम मनु रखा गया। रूचि का पुत्र होने की वजह से उसे ''रौच्य मनु'' भी कहा गया। आगे चलकर यह बालक पूरी पृथ्वी का स्वामी बना।

यह तो पूर्वजों के महिमा की सिर्फ एक कहानी है। हमारे धर्म ग्रंथो में ऐसी न जाने कितनी कहानियां भरी पड़ी है। यही वजह है कि आज भी लोग पूरी श्रद्धा के साथ पितरों को याद करते हैं।

पितृपक्ष अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता

प्रकट करने, उनका स्मरण करने और उनके प्रति श्रद्धा अभिव्यक्ति करने का महापर्व है। इस अवधि में पितृगण अपने परिजनों के समीप विविध रूपों में मंडराते है और अपने मोक्ष की कामना करते हैं। परिजनों से संतुष्ट होने पर पूर्वज आशीर्वाद देकर हमें अनिष्ट घटनाओं से बचाते हैं।

पिंडदान की विशेष जगहें : शास्त्रों में पिंडदान के लिए तीन जगहों को सबसे विशेष माना गया है। पहला है बद्रीनाथ जहां ब्रह्मकपाल सिद्ध क्षेत्र में पितृदोष मुक्ति के लिए तर्पण का विधान है। दूसरा है हरिद्वार जहां नारायणी शिला के पास लोग पूर्वजों का पिंडदान करते हैं और तीसरा है गयाधाम, जहां साल में एक बार 16 दिन के लिए पितृ–पक्ष मेला लगता है। कहा जाता है पितृपक्ष में फल्गु नदी के तट पर विष्णुपद मंदिर के करीब और अक्षयवट के पास पिंडदान करने से पूर्वजों को मुक्ति मिलती है। पितरों के तर्पण के लिए विश्व में मात्र गया जी का नाम ही पुराणों में आता है। इससे यहां प्रतिवर्ष लाखों लोग पिंडदान करने पहुंचते हैं। देश के अलावा विदेशों से भी लोग यहां पिंडदान के लिए पहुंचते हैं।

पितृपक्ष में सूर्य दक्षिणायन होता है। शास्त्रों के अनुसार सूर्य इस दौरान श्राद्ध तृप्त पितरों की आत्माओं को मुक्ति का मार्ग देता है। कहा जाता है कि इसीलिए पितर अपने दिवंगत होने की तिथि के दिन, पुत्र पौत्रों से उम्मीद रखते हैं कि कोई श्रद्धापूर्वक उनके उद्धार के लिए पिंडदान तर्पण और श्राद्ध करें लेकिन ऐसा करते हुए बहुत सी बातों का ख्याल रखना भी जरूरी है। जैसे श्राद्ध का समय तब होता है, जब सूर्य की छाया पैरो पर पड़ने लगे। यानी दोपहर के बाद ही श्राद्ध करना चाहिए। सुबह–सुबह या 12 बजे से पहले किया गया श्राद्ध पितरों तक नहीं पहुंचता है।

सचिव, सीनियर सिटीजन वेलफेयर सोसाइटी

273 अनुग्रहपुरी (गया) मो० – 9431272010

✦

तीन अनमोल वरदान

डॉ० अशोक कुमार सिन्हा

बड़े भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।

मनुष्य योनि बड़ा दुर्लभ है। हमारे भारतीय ग्रंथों में तथा ऋषि–मुनियों ने बार–बार कहा है कि मनुष्य योनि इतना दुर्लभ है कि इसे प्राप्त करने के लिए देवता भी छटपटाते रहते हैं। जन्म–जन्म के पुण्य उदय होने के पश्चात् जीव नर–तन प्राप्त करता है।

नर–तन प्राप्त करने के बाद परम–पिता परमेश्वर उसे बिना माँगे ही, तीन अनमोल वरदान दे देते हैं। ये तीन अनमोल वरदान है – समय, सम्पत्ति और शक्ति। इसके लिए किसी को याचना नहीं करनी पड़ती है।

बचपन, जवानी, बुढ़ापा – बीतता रहता है, समय के प्रवाह में। समय अनवरत चलता रहता है। काल का प्रवाह कभी रूकता नहीं।

किन्तु मनुष्य काल के प्रवाह को, समय की गति पर ध्यान नहीं देता है। इस अनमोल वरदान को वह यों हीं खेल कूद में कुसंगति में पड़कर बरबाद करता रहता है।

आवश्यकता है, हम समय के वरदान को यों ही व्यतीत होने न दें। समय के एक क्षण का भी हम दुरूपयोग न करें। ऐसा होने पर ही हमारा जीवन सुखमय हो सकता है।

इसी प्रकार सम्पत्ति है। हमें भगवान ने सम्पत्ति के रूप में यथेष्ट वरदान दिया है। रूपये–पैसे, परिवार–मकान–जमीन–विचार विवेक के सब हमारी सम्पत्तियाँ हैं। भगवान ने इन्हें इसीलिए दिया है कि हम इनका महत्व समझें। हम रूपये–पैसे, सत्कार्य में खर्च करें। परिवार को सत्य के मार्ग पर आरूढ़ रखे। कोई गलत कार्य न करें।

किसी तरह भी अपनी सम्पत्ति का दुरूपयोग न होने दें। ऐसा करने से हमारा जीवन सुखी रहेगा। भगवान ने हमें शक्ति भी अपरिमित दी है। इसका दुरूपयोग नही होना चाहिए। शरीर बल, धन–बल, विद्या–बल, परिवार–बल, समाज–बल आदि शक्तियों हर मनुष्य को दी गयी है। हर मनुष्य को चाहिए कि वह हम सभी शक्तियों का सदुपयोग करे। यदि धन की शक्ति है, तो इस सत्कार्य में लगाये। तप और दान देकर हम धन–बल का सदुपयोग कर सकते हैं। यदि कोई भूखा है तो हमें उसे अन्न–दान देना चाहिए। कोई मूढ़ है तो उसे अपनी विद्या से उसके हृदय की मूढ़ता रूपी अन्धकार को मिटाना परम धर्म है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य का सोचना समझना आवश्यक है ताकि किसी की कोई भी शक्ति निरर्थक व्यय न हो।

हमारा कर्त्तव्य

मनुष्य योनि प्राप्त होने के बाद हम अपना कर्त्तव्य भूल जाते हैं और नाना प्रकार की अनीति करने लगते हैं। किन्तु हमें यह समझना चाहिए कि हमें जो मनुष्य–योनि मिली है – वह बड़ा अनमोल है। इस योनि के ऐसा दूसरा कोई योनि नही है –

नर तन सम नहि कवनिउ देही।

जीव चराचर जाँचत तेही।।

जड़–चेतन जितने भी जीव है, सब यही चाहते है कि हमें नर–तन प्राप्त हो, क्योंकि

नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी

ज्ञान–विराग–भगति सुम देनी।।

मनुष्य का शरीर पाकर ही हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। वैराग्य प्राप्त कर सकते हैं। भक्ति प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञान–वैराग्य और भक्ति के सहारे ही हम भव–बन्धन से छूट सकते हैं।

मनुष्य–योनि एक ऐसी सीढ़ी है, जहाँ से हम उपर चढ़ सकते है और देवत्व का स्पर्श कर सकते हैं। इस योनि में आकर यदि हम अपने समय, अर्चना, सम्पत्ति और अपनी शक्ति का सदुपयोग नहीं करेंगे। तब हम पुन: नीचे की ओर गिरेंगे और जन्म मरण के चक्र में घूमते रहेंगे।

चार पुरूषार्थ

हमारे ऋषि–मुनियों ने तथा हमारे सभी आर्य–ग्रंथो में मानव–मात्र के लिए चार पुरूषार्थ की बात कही गयी है। ये पुरूषार्थ हैं – अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। अंतिम पुरूषार्थ मोक्ष माना गया है। हमारा लक्ष्य है कि हम मोक्ष की प्राप्ति करें। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम अर्थ और काम को धर्म के साथ जोड़ कर चलें। यह तभी सम्भव होगा जब हम धर्म के रास्ते पर चलते हुए अर्थ का उपार्जन करें। अर्थात् हम जो भी धन–दौलत इकट्ठा करें, वह अनीति से लिया गया न हो। सात्विक तरीके से ईमानदारी के साथ पैसा कमायें और इनका खर्च पर ईमानदारी से अच्छे और नेक कार्यो में करें। हमारे हृदय में बराबर धर्म–भाव जागता रहे।

इसी प्रकार हम काम में अर्थात राग–रंग, मनोरंजन आदि वासनाओं को ग्रहण करें तो उसमें भी धर्म का भाव सन्निहित रहे। हम अपना चरित्र एक आदर्श रूप में रखें। यदि हम अपने हृदय में बराबर धर्म–भव रखेंगे, तब हमसे अत्याचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार जैसे कुकर्म नहीं होंगे। हर स्थिति में हमें धर्म–भाव अपना कर ही चलना है। अर्थ–उपार्जन और अर्थ के व्यय में हमे धर्म से काम लेना है। इसी प्रकार काम–वासना की तृप्ति के लिए भी हमें सदा धर्म के रास्ते पर ही चलना है।

धर्म का रास्ता ही एक ऐसा है जिस पर चलते हुए हम मानव जीवन के अंतिम पुरूषार्थ, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। भगवान ने इसके लिए एक बड़ा सुगम उपाय बताया है। वह है भक्ति का मार्ग।

नवधा भक्ति

भगवान रामचन्द्र अपने वनवास के दिनों में एक बार शबरी के आश्रम में आए। शबरी ने उनका आतिथ्य किया कन्द–मूल–फल खिलाया। भगवान राम ने बताया जात–पाँत–कुल, बड़ाई, धन, फौज, परिवार आदि जितनी भी चीजें है, उन सब को छोड़कर जो भक्ति को अपनाता है, वह सब कुछ पाता है –

जात–पात–कुल–धर्म–बड़ाई।

धन बल परिजन गुन चतुराई।।
भगतिहीन नर सोहई कैसा।
बिनुजन वारिद देखिय जैसा।।

सब कुछ है, लेकिन मनुष्य में अगर भक्ति नही है, तो सब व्यर्थ है – जैसे बिना पानी के बादल। घटाटोप बादल घिरे लेकिन बरसे नहीं तो फिर किस काम का।

इसलिए भगवान राम ने कहा कि मनुष्य को अपने हृदय में भक्ति जगाये रखना चाहिए –

प्रथम भगति संतन कर संगा।
दूसरि रति मम कथा–प्रसंगा।।

पहली भक्ति है संतो की संगति – सत्संग से भक्ति प्राप्त होती है और फिर भगवान की कथा सुनने से।

गुरूपद–पंकज–सेवा तीषरि भगति अमान।
चौथी भगति मम गुनगान करइ कपट तजियान।।

तीसरी भक्ति है अभिमान को त्यागकर गुरू के चरण कमलों की सेवा करना और चौथी है कपट छोड़कर भगवान का गुण–गान करना।

मंत्र जाप मम दृढ़ विस्वासा।
पंचम भजन सो वेद प्रकासा।।

पाँचवी भक्ति है भजन, जो वेदो में प्रकाशित हैं, मंत्र का जाप और भगवान पर दृढ़ विश्वास।

छद्***म*** सी***ल विरति*** ब***हु*** क***र्मा***।
निरत निरंतर सज्जन धर्मा।।

छठी भक्ति है इंद्रियों को वश में रखना और शीलवान होना तथा बहुत से बेकार के कामों से अपने को अलग रखना। हमेशा सज्जनों के धर्म का पालन करना।

सातव सम मोहिमय जग देखा।
मो ते संत अधिक करि लेखा।।

सातवीं भक्ति है सम दृष्टि रखना, सब को समान देखना और सब में भगवान को देखना तथा भगवान से भी बढ़कर संतो को मानना–

आठव जथा लाभ संतोषा।
सपनेहु नहि देखहू परदोषा।।

आठवीं भक्ति है, जो कुछ ईश्वर की कृपा से प्राप्त हो जाय, उसमें ही संतुष्ट रहना और भूलकर भी किसी में किसी प्रकार का दोष नहीं देखना।

नवम् सरल सबसन छल हीना।
मम भरोस हिय हरस न दीना।।

नवमी भक्ति है सरल–विनीत रहना, किसी के साथ किसी प्रकार का छल–कपट नहीं करना, बराबर भगवान पर भरोसा रखना, न किसी बात पर हर्ष और न किसी बात पर दुखी होना। सुख–दुख जो भी आये, उसे भगवान का वरदान समझना।

भगवान का कथन है कि जो भी व्यक्ति भक्ति के इस मार्ग का अनुसरण करेगा उसका जीवन सदा सुखमय रहेगा।

नवधा भक्ति में नौ प्रकार की भक्ति बताई गयी है, इसमें एक का भी जो हृदय से पालन करेगा, भगवान उस पर सदा प्रसन्न रहेंगे।

ऐसे व्यक्ति के जीवन में कभी कष्ट नहीं आयेगा। उसके लिए यह लोक भी सुखमय रहेगा और परलोक में भी उसे बराबर सच्चिदानन्द की प्राप्ति होती रहेगी।

ऐसे व्यक्ति का समय – सम्पत्ति और शक्ति कभी व्यर्थ नही जायगी।

सुखमय जीवन जीने का यही अनन्य मार्ग है। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

बी–20, इंदिरापुरी कॉलोनी
पो०– बी० भी० कॉलेज, राजाबाजार, पटना

✦

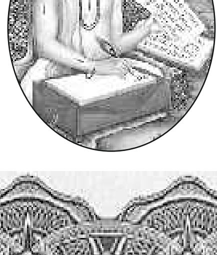

चार पदारथ कर तक ताकें।
प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें।
– रामचरितमानस

आत्मज्ञान ही है ब्रह्म ज्ञान

डॉ० संकेत नारायण सिंह

हमारा वैदिक मंत्र है – 'सर्वे भवन्तु सुखिन' विश्व के सभी धर्म विश्व कल्याण की बात करते हैं। मानव–जीवन में सुख और दु:ख समान रूप से व्याप्त है। यद्यपि मनुष्य हमेशा सुख की कामना करता है और दुख देखना नही चाहता। किन्तु सुख–दु:ख ईश्वरीय विधान है, जिस पर मानव का कोई वश नहीं चलता। इसलिए सुख–दुख में सदा मनुष्य को समभाव रखना चाहिए। पुरूषार्थ और परिश्रम द्वारा सुख प्राप्त करने से स्थायी सुखशांति तथा आत्म–संतोष प्राप्त होता है। मनुष्य को सदा सुख–दुख दोनों को, ईश्वर का दिया हुआ वरदान मानकर उन्हीं को अर्पण कर देना चाहिए, तभी हमें आत्मोन्नति करने की शक्ति प्राप्त होगी। सम्पूर्ण मानव जगत को अपना परिवार मानेंगे तभी हम अपना सुख–दुख भी बाँट सकते है। अत: अपने साथ सब के सुख की कामना ही मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। मानव जीवन में सफलता पाने के लिए जरूरी है समय के मूल्य को पहचानं। मानव के लिए सबसे दुखदायी है व्यर्थ समय गवाँ देना। संत तुलसीदास ने रामचरित मानस में स्पष्ट रूप से कहा है कि – का वर्षा जब कृषि सुखाने, समय चुकि पुनि का पछताने। अर्थात कृषि मारी गई तो वर्षा होने से भी क्या फायदा और समय व्यर्थ चला गया तो फिर पछताने से क्या लाभ ?समय के महत्व को समझते हुए उचित अवसर को नही गँवाने वाले लोग ही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। इसलिए समय के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। क्योंकि बिता हुआ समय कभी वापस नही होता। कहा भी गया है कि समय बड़ा बलवान होता है।

मानव जीवन की सफलता के लिए संयमित जीवन का बड़ा ही महत्व है। वाणी का संयम, शारीरिक संयम, मानसिक संयम, खान–पान का संयम, रहन–सहन का संयम आदि इसके कई स्वरूप हैं। संयम का मतलब है निरंतर सहनशीलता, चारित्रिक नियंत्रण और संयम मानवीय गुणों के पोषक हैं। जीवन मानवता का मंदिर है, जिनका जीवन संयमित और सहिष्णु होता है वह ईश्वर के निकट आसानी से पहुँच जाता है और उसे अहित होने की संभावना भी कम होती है। लोक व्यवहार में संयम का बड़ा ही महत्व है। संयमित व्यक्ति समाज का भी प्रियपात्र बनता है। मनुष्य की आत्मा निर्मल और पवित्र होती है। आत्मा आनन्दमय है और दुखी होना नहीं चाहती, बल्कि वह सुखाभिलाषी होती है। आत्मा के सुख की अनुभूति व्यक्ति के स्वभाव, अवस्था और दृष्टिकोण आदि पर निर्भर करती है। यह सत्य है कि मनुष्य सुख और आनन्द के लिए अनेकी कार्य करता है और धनोपार्जन भी सुख के लिए करता है। कोई धन प्राप्ति में आनंदित होता है, तो कोई ईश्वर भजन में ही सुख का अनुभव करता है। किन्तु सही मायने में आत्मा का परमात्मा से मिलन ही परम आनन्द है।

दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति ही मानव सफलता का मूलमंत्र है। इच्छा शक्ति से कार्य सिद्ध होते हैं, किन्तु मनुष्य की सभी इच्छाएँ पूरी नही होती। राम चरितमानस में संत तुलसीदास ने कहा है कि जो इच्छा करिहौ मन माँहि, हरि प्रसाद दुर्लभ कुछ नहीं। जीवन मे नैतिकता का बड़ा महत्व है। प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने के लिए आध्यात्मिकता की शक्ति की आवश्यकता पड़ती है, जो नैतिकता से ही संभव हो सकता है। नैतिकता आचरण की शुद्धता से ही पाई जा सकती है। नैतिकता–विहीन जीवन निरर्थक है। नैतिकता को अपने आचरण में अपनाकर ही हम धार्मिक बन सकते हैं। संसार के सभी व्यक्तियों के साथ नैतिकता का व्यवहार ही धर्म का उत्तम मार्ग है। आत्म सुधार से ही हम दूसरे को सुधारने के लिए सक्षम सिद्ध हो सकते हैं। नैतिकता जीवन के हर क्षेत्र में जरूरी है। यह मनुष्य का आन्तरिक सदगुण है, जिससे समाज का भला होता है और मनुष्य की प्रतिष्ठा बढ़ती है। मनुष्य को संसार के बंधन से मुक्त होने के लिए आत्मज्ञान की जरूरत होती है। इससे मनुष्य की सारी इच्छाएँ और चिंतायें मिट जाती है और वह परमात्मा को सही रूप से जानने का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। आत्मज्ञान के होने पर

मनुष्य का ध्यान भौतिक सुविधाओं से हटकर परम आनन्द की प्राप्ति में लग जाता है। शरीर क्षण भर का है और आत्मा स्थायी है और वह परमात्मा का ही अंश है। अत: आत्मज्ञान होने पर ही हम परमात्मा से साक्षात्कार करने में समर्थ होंगे। परमात्मा की अनुभूति होना ही जीवन को परम आनन्द की अवस्था है। मानव जीवन में संतोष का बड़ा ही महत्व है, क्योंकि इससे जीवन में शांति और स्थिरता प्राप्त होती है। भगवान बुद्ध ने भी कहा है – संतोष ही परम सुख है और लोभ दुख का कारण है। शास्त्रों में भी यह बात है – संतोषम् परम सुखम्। संतोष से जीवन में सुख शांति का अनुभव तो होता ही है, साथ ही घर, परिवार और समाज में ईर्ष्या, द्वेष अनीति आदि कम होती है तथा समाज में शांति और सद्भाव का वातावरण बनता है। मानव जीवन में संकल्प का होना भी बहुत आवश्यक है, क्योंकि संकल्पयुक्त होने पर ही व्यक्ति अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कभी विफल नही होता। संकल्प शक्ति की दृढ़ता के लिए आत्म–विश्वास की आवश्यकता होती है। इससे व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों में मजबूती आती है, जिससे मनुष्य कठिन–से–कठिन कार्य को पूर्ण करने में सक्षम होता है। मानव जीवन में सफलता के लिए उसमें मातृभाव का होना अति आवश्यक है। जीवन में आरम्भ से ही माता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जो जन्मकाल से ही मनुष्य में वात्सल्य रस घोलती है। आरम्भ काल में माँ के दूध से ही मनुष्य का जीवन विकसित होता है और माँ की श्रेष्ठता के अनुसार ही संतान का जीवन निर्माण होता है। माँ की कृपा पर ही बच्चों का भावी जीवन निर्भर होता है और वे समाज के लिए उपयोगी कार्य करने के योग्य बनते है। माँ ही बच्चे के आचरण को उत्तम बना सकती है और उसमें अच्छी भावना पैदा कर सकती है। इसलिए यह अति आवश्यक है कि मनुष्य अपनी श्रद्धा और सम्मान अपनी माँ के चरणों में सदा अर्पित करे। इसलिए जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी ऊँचा है। माता कभी भी अपनी संतान का साथ नही छोड़ती और उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहती है। यह सृष्टि भी मातृशक्ति का ही रूप है जिसमें समस्त जीवों का कल्याण निहित है।

इस पृथ्वी पर माता–पिता और गुरू ही ऐसे है जो नि:स्वार्थ भाव से मनुष्य का कल्याण करने के लिए सदा प्रयासरत होते हैं। अत: वे मानव के लिए भगवान स्वरूप हैं। मानव का जीवन एक कला है, इसलिए जीवन को सुखमय बनाने के लिए उसमें सदगुणों का ही विकास करना चाहिए और स्वविवेक से अपने दुर्गुणों का त्याग करना चाहिए क्योंकि जिस तरह किसी कलाकार की प्रतिमा दूसरों के मनोरंजन और आनन्द के लिए उपयोगी होता है उसी तरह मनुष्य द्वारा अर्जित धन, दौलत, बुद्धि , विवेक, क्षमा, दया आदि का उपयोग अपने साथ–साथ दूसरे के हित में ही होना चाहिए। मनुष्य में ईश्वर ने मानवीय गुण दिया है, उसका उपयोग लोकहित में करने से जीवन महान बनता है।

आधुनिक युग के कुछ महान पुरूषों का जीवन हमारे लिए मार्गदर्शक हैं – महात्मा गाँधी ने अपना जीवन समाजहित में समर्पित कर दिया और अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। इसलिए उन्हें आज संसार सादर याद करता है। मदर टेरेसा ने एक नर्स के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया और सारा जीवन मानवता की सेवा में अर्पित कर दिया। आज उसे संसार में मृत्यु के बाद भी सादर याद किया जाता है। कितने धन दौलत वाले की मृत्यु पर शोक मनाया जाता है, किन्तु महात्मा गाँधी मदर टेरेसा आदि इन्सानों की मृत्यु पर तो अधिकांश देशों के झंडे झुका दिए गए और अनेक देशों के राज्याध्यक्षों ने आकर उनके शव पर फूल मालाएँ अर्पित किया। यही जीवन का महत्व है। अपनी ही चिन्ता करने वाला व्यक्ति तो पशु के समान है जो दूसरे की भी चिन्ता करता है, वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। इसलिए मानव जीवन का महत्व मानवता और इन्सानियत का अनुसरण करने में ही है। मनुष्य जीवन का स्वभाव जल की तरह ही है जो हमेशा नीचे की ओर प्रवाहित होने का प्रयास करता है। उसे उन्नति के मार्ग पर ऊपर उठाने के लिए सर्वस्व त्याग रूपी सद्विचार के बाँध की आवश्कता होती है। शील स्वभाव, विवेक, बुद्धि, क्षमाशीलता, परहित आदि सदगुण ही मानव जीवन की उन्नति के मार्ग हैं क्योंकि चरित्रवान व्यक्ति के समक्ष दुनिया झुक जाती है और सर्वत्र उसका आदर होता है।

प्रख्यात चर्म रोग चिकित्सक
संस्थापक - 'समर्पण'
माड़नपुर, बाईपास रोड, गया

✦

नाम जपत मंगल दिसि दसहू

सुश्री गीता कुमारी

हमारे आर्ष ग्रंथो में तथा अध्यात्म से जुड़े हर प्रकरण में नाम-जप की महिमा पायी गयी है। वर्तमान युग में प्रभु को प्राप्त करने की दिशा में इसे छोड़कर कोई भी मार्ग सुगम नही है। इसलिए मेरा हृदय हमेशा कहता रहता है –

मजा ले हरि का नाम रे मनुआ, भजले हरि का नाम।।
यहाँ न कोई अपना-पराया, यहाँ न अपना धाम।।

कहा गया है कि कई योनियों में भटकने के बाद मनुष्य योनि प्राप्त होता है। यहाँ तक की यात्रा एक प्रमुख पड़ाव की यात्रा है। आगे का लक्ष्य मनुष्य के कर्मो का परिणाम माना गया है। मनुष्य ईश्वर का अंश है। ईश्वर ही सत्य है और सत्य ही ईश्वर है। इसी सत्य की खोज में चलते-चलते मानव-तन की प्राप्ति हुई। यों तो जितने जीव है सब पशु-सरीखे हैं, किन्तु उनमें जब सत्य को खोजने की चेतना जगी, तब वे मनुष्य की श्रेणी में आये। पशुओं में कोई खोज की प्रवृत्ति नही रहती है वे जहाँ है, वहीं संतुष्ट रहते है। किन्तु मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है – उसके अंतरतर में बराबर खोज की प्रक्रिया चलती रहती है। वह बराबर इस खोज में रहता है कि वह कौन है? सृष्टि क्या है? मानव का गन्तव्य क्या है? और जो इस खोज में नहीं रहते है, वे अभी पशु की श्रेणी में ही माने जायेगें। ऐसे ही लोग –

एक-एक पाई जमा *करके अपना घर बनायेंगे।*
सुख-सम्पति इकट्ठा करके बैंक बैलेन्स बढ़ायेंगे।।
जीवन सुख सुविधा हेतु ऋण लेकर मौज मनायेंगे।
और फिर ऋण चुकाने के लिए चिन्ता से शरीर को वृक्ष बनायेंगे
चिन्ता से तरह-तरह की व्याधियों से त्रस्त रहेंगे।
फिर काल का जब बुलावा आयेगा, तब कोई चाल नही चलेगी।
देखते-देखते इस दुनिया से विदाई मिल जायेगी।।

मनुष्य के पशु-जीवन का यही लेखा है। मनुष्य अपने आपको इसी साचे में ढालकर दिन-रात भटकता रहता है। वह भूल जाता है कि उसकी मनुष्य-यात्रा का ध्येय क्या है? लक्ष्य क्या है? मनुष्य अपनी यात्रा का लक्ष्य न भूले, इसी कारण हमारे सभी धार्मिक ग्रंथो में नाम-जप की महिमा गायी गयी है। कलियुग में भगवान का यही संदेश है –

जप-तप दान और यज्ञ से बढ़कर है
भगवान का नाम।
नाम-जप में लग जा मनुआ इससे
बढ़कर नही कोई काम।।

ईश्वर तो बस एक है। धर्म एवं सम्प्रदाय चाहे जितने भी हों। कृष्ण, राम, अल्लाह, खुदा, प्रभु, ईश्वर या वाहे गुरू चाहे, जो कहो, जिसे भजो, सब एक है। इसीलिए जो भी सुगम जान पड़े उसका भजन ही मनुष्य यात्रा के लिए सर्वश्रेष्ठ पाथेय सिद्ध होगा।

सभी धर्मों में पितरों और पूर्वजों की सेवा सर्वमान्य काम है। बस उनकी आत्मा को शांति मिले इसके लिए ही प्रभु से दुआ सलाम है।।

अनादिकाल से गया में पितर-पूजा का अनुष्ठान चलता आ रहा है। गया धाम में विष्णुपद प्रतिष्ठित है। यहाँ प्रति वर्ष पितृपक्ष के अवसर पर देश-विदेश से लाखों सनातन धर्मी आते हैं और अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध आदि अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं। तर्पण आदि कर्मों के सम्पादन से पूर्वजों की आत्मा को शांति मिलती ही है। साथ ही इन अनुष्ठानों के कर्त्ताओं को भी भरपूर लाभ मिलता है। इनके माध्यम से उनके हृदय में सात्विक चेतना की जागृति होती है।

अपने पूर्वजों को ध्यान में रखकर जो पितर-पूजा की जाती है, उसमें भी आवश्यक है कि हरि के नाम का जप निरंतर चलता रहे, तभी पूर्वजों का आशीर्वाद उनकी संतानों को मिलता है।

भजले हरि का नाम।
इससे बढ़कर नही दूसरा काम।।

हमारे पूर्वज जो सशरीर हमारे बीच नही है, उनकी आत्माएँ अपनी संतानों को आशीर्वाद देने के लिए बराबर तत्पर रहती है। इनके अतिरिक्त जिन देवताओं का भजन हम करते हैं वे सब एक हैं। कृष्ण राम, विष्णु, ब्रह्मा, शिव और जगत जननी माता – सब एक हैं। आत्माओं में कहीं कोई भेद नही है। सबों का हृदय प्रेम से भरा है और अपने भक्तों के लिए सदा सर्वदा क्षमामयी है। मनुष्य के सभी अपराध और नव-कर्म हमारे भगवान क्षण भर में धो देते हैं। बशर्ते कि जीवन में निरंतर उनका सुमिरन किया जाये। अर्थ, धर्म, काम मोक्ष – सभी पुरूषार्थ इससे ही सुलभ हो जाते हैं। नाम- जप में जो अनादि आता है, वह अनिर्वचनीय है और मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस जीवन तथा इसके उपरान्त भी वही काम देगा, इसमें जरा भी संदेह नही है, इसलिए मैं बराबर कहती हूँ –

भजले हरि का नाम मनुआ, भजले हरि का नाम!

इस संसार में सब खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ ही जायेंगे। नाते रिश्ते-पास-पड़ोस के लोग तथा जो भी परिचित हैं – सब धीरे-धीरे अपने काम में इतने मशगूल हो जायेंगे कि जाने के बाद किसी को कोई स्मरण नहीं करता। ऐसे में एक मात्र सहारा है नाम – जप !

हमारे सभी आर्ष ग्रंथो में नाम जप की यथेष्ट महिमा गायी गयी है। प्रभु प्रेम स्वरूप है। नाम जपने से हृदय में प्रेम की उद्‌भावना होती है। प्रेम जगने पर नाम जप में भी गहराई आती है, जिसके कारण शरीर के तंतुओं में चेतना का स्फुरण होता है। इसी से कहा गया है – राम ही केवल प्रेम पियारा। जिसके हृदय में प्रभु का नाम जग जगेगा, उसके हृदय में प्रेम की लौ अवश्य जागेगी। प्रेम अपना विस्तार पाने के एक से दूसरे हृदय में संचरण करता रहता है। इसलिए हमारे ऋषि-मुनियों का यह कथन है कि सभी प्राणी को सुखी देखने के लिए हम अपने प्रेम का हाथ बढ़ाते रहे। मनुष्य को चाहिए कि यदि उसके समक्ष कोई प्रेम का हाथ बढ़ता है तो उसे झटकने न दे, बल्कि उसे चूमे और हृदय से लगा कर रखे। नाम जप से इसी शाश्वत प्रेम का उदय होता है। इस प्रेम के कारण ही ऋषि-मुनियों की आयु बढ़ती थी तथा उन्हें स्वस्थ जीवन जीने का वरदान मिलता था। प्रेम ही सत्य है। प्रेम ही ईश्वर है। सत्य और ईश्वर की प्राप्ति तभी संभव है, जब हम नाम, जप में तल्लीन रहेंगे। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है

भाव कुभाव अनस आलसह।
नाम जपत मंगल दिसि दसहू।।

संयोजिका, मगध सुपर 30, गया

✦

संतोषं परमं सुखम्

श्री सुमन्त

ब्रह्मवैवर्त में कहा गया है –

गया शीर्ष वसेनित्य स्नान फल गवां चरेत्।
गया शीर्षे सदा पिण्डमेतत् स्वर्गेपि दुलर्भम।।

अभिप्राय यह कि गयाजी में आकर फल्गु में स्नानकर पिण्डदान करने से जिस सुख की अनुभूति मन में होती है वह स्वर्ग में भी दुर्लभ है। शायद यही कारण है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में देश-दुनिया के लोग और खास कर सनातन धर्मावलम्बी अपने जीवन-काल में कम-से-कम एक बार मोक्ष की पावन-पुण्य भूमि गयाजी में आकर अपने पितरो को पिण्डदान कर उनके प्रति श्रद्धा निवेदित करने के लिए प्रेरित होते हैं। प्राचीन काल से चली आ रही पिण्डदान की परम्परा आज भी उसी रूप में जीवंत है। प्रत्येक वर्ष पितृपक्ष मेले में लाखों-लाख की संख्या में आने वाले पिण्डदानी इस बात के जीते-जागते गवाह है। हाल के वर्षो में विदेशी अप्रवासी भारतीयों की संख्या बढ़ी है। अब

तो देखा-देखी ही सही, कई विदेशी पर्यटक भी अपने पितरो को पिण्डदान करते पितृपक्ष मेला क्षेत्र में देखे गए है।

भारतीय धर्मग्रंथों के अनुसार जीवन में सुख की प्राप्ति के लिए चार पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की बात कही गई है। इनमें धर्म, अर्थ और काम की पूर्णता तभी सार्थक होती है, जब मोक्ष की प्राप्ति हो और मोक्ष की प्राप्ति के लिए सबसे सरल और सुलभ गया तीर्थ है। ऐसी मान्यता है कि गया श्राद्ध से इक्कीस गोत्रों की सात पीढ़ियों तक के सभी पितरों को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। वायुपुराण के अनुसार -

ब्रह्मज्ञानं गया श्राद्धं गोगृहे मरणं तथा।
वासः पुसां कुरूक्षेत्रे मुक्तिरेषांचतुर्विधा।।
ब्रह्म ज्ञानेन किं साध्यं गोगृहे मरणेनकिम्।
वारोन किं कुरूक्षेत्रे यदि पुत्रों गयां ब्रजेत।।

अर्थात ब्रह्म ज्ञान, गया श्राद्ध, गोशाला में मरण, कुरुक्षेत्र-वास मुक्ति के चार साधन हैं, किन्तु यदि किसी का पुत्र गयाजी आकर श्राद्ध कर दे, तो अन्य तीन साधनों की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती। जो भी हो लेकिन लोगों के मन में गया श्राद्ध के प्रति आस्था पूर्ववत है। श्राद्धकर्म के बाद पिण्डदानियों के मन में इस बात का परम संतोष होता है कि उन्होने अपने पितरों क भटकती आत्मा को पिण्डदान कर मुक्ति प्रदान कर दी। यह बात सच है कि आज के इस भाग-दौड़ भरे जीवन में परिवार के बड़े-बुजुर्गो की सेवा लोग चाह कर भी नहीं कर पाते है। जीते जी इस बात का एहसास तो नहीं होता, लेकिन उनके मरने के बाद इस बात का मलाल मन में अवश्यक ही होता है कि जिन्होने हमें पाल-पोस कर इतना बड़ा किया, उनके लिए जीते-जी हमने कुछ भी नहीं किया। ऐसे लोगों का चित अशान्त हो जाता है। उनके लिए पिण्डदान संतोष प्रदान करता है कि उनकी आत्मा की शांति के लिए हमने गयाजी आकर श्राद्धकर्म किया। जब मन को किसी बात का संतोष हो जाए, तो उससे बड़ा सुख भला और क्या हो सकता है। पितृपक्ष मेले में गयाजी आकर श्राद्ध करने वालों का मन कभी मलिन नही होता ?वे कष्टों को सहकर भी प्रसन्नचित रहते हैं। उन्हें इस बात का पूरा भरोसा होता है कि वे पिण्डदान अपने पितरो की मोक्ष प्राप्ति के लिए कर रहे है और पिण्डदान करने के बाद उनके मन को इस बात का संतोष हो जाता है कि अब उनके पितरो का मोक्ष की प्राप्ति अवश्य हो जायेगी। मन में संतोष से उत्पन्न परम सुख की प्राप्ति हर एक पिण्डदानियों को होता है। अपने देश में कई स्थानों पर ऐसी मान्यता प्रचलित है कि किसी भी मृत व्यक्ति के लिए गया श्राद्ध न कर पाने तक उनके परिवार वालो को प्रत्येक वर्ष अपने घर पर श्राद्धकर्म करना होता है। ऐसे में उस स्थान विशेष के लोग गया-श्राद्ध के बाद परम सुख, सकुन व शान्ति का अनुभव करते है।

परम सुख की प्राप्ति सभी को नहीं होती। पहुँचे संत-महात्मा-फकीर ही इसे प्राप्त करने में सक्षम होते है। लेकिन गयाजी में अपने परिजनों की मृत-आत्माओं के प्रति श्राद्ध-पिण्डदान-तर्पण से जिस सुख की प्राप्ति पिण्डदानी करते है, वह भी परम सुख से कम नहीं होता ?अपने धर्मग्रंथों में मृत्यु के बाद स्वर्ग-नरक की कल्पना की गई है। मान्यता यह भी है कि पितर जिस लोक में भी हो, पितृपक्ष के समय बिना बुलाये अपने वंशजो के घर में वास करते है और पूरी अवधि तक श्राद्ध-पिण्ड लेने की आशा लगाये रहते हे। श्राद्धकर्म के बाद ही इन्हें तृप्ति मिलती है और आत्म संतोष के बाद परम सुख की प्राप्ति होती है। श्राद्धकर्म व पिण्डदान के लिए स्वर्ग, पाताल व मर्त्य लोक में गयाजी के समान कोई दूसरा तीर्थ नहीं है। कहा गया है -

स्वर्ग पाताल मृर्त्येश नास्ति तीर्थ गया समम्।
पितरों भनित देवत्वं दत्ते पिण्ड गया शिरे।।

महेश शान्ति भवन
हनुमान नगर, गया

✦

परिवार में पितृदोष : कारण एवं निदान

प्रो० राधे मोहन प्रसाद

पितृगण हमारे पूर्वज है, जिन्हें हम देवता के समान पूजते है। पितृगण हमारे बुजुर्गो के वह सूक्ष्म शरीर है जो मृत्युपर्यन्त पुर्नजन्म होने तक विभिन्न लोको में वास करते है तथा अपनी वृत्ति अनुसार भोगों की याद करते है, जो उन्होने इन्द्रियों द्वारा इस धरती पर भोगे थे पर स्थूल शरीर उपलब्ध न होने के कारण उनकी याद में तड़पते हैं। इस सम्बन्ध में 'मनुदेवल' का कहना था कि 'पिता को वसु, पितामह को रूद्र तथा प्रपितामह को आदित्य जानना चाहिए। मृत्यु के पश्चात स्थूल शरीर से आत्मा के अलग हो जाने के बाद शरीर तो मिट्टी में मिल जाता है, पर आत्मा का शरीर के बिना भी अस्तित्व बना रहता है। आत्मा को दूसरा शरीर मिलने में कुछ समय लग सकता है। यह पहले स्थूल शरीर के त्याग तथा दूसरे स्थूल शरीर के प्राप्त होने के बीच संभव होता है। यह सूक्ष्म शरीर आत्मा यदि शुभ संस्कारी न हो तो प्रेत-पिशाच आदि अशरीरी योनियों में भटकती है। आत्मा जो काम स्थूल शरीर के रहते हुए नहीं कर पाती, वह सूक्ष्म शरीर धारी होकर पूरा करने में समर्थ हो जाती है। यहाँ पृथ्वी पर मनुष्य अपनी भौतिक इच्छा इन्द्रियों के द्वारा पूरा करने का प्रयास करता है। मृत्यु के समय तक उसकी अदम्य वासना अथवा इच्छा पूरी करने की मानसिकता उसे प्रेत-योनि की ओर ले जाती है। परद्रव्य का दुरूपयोग करने से या वासना रहने से जीवन प्रेत-योनि में आ जाता है।

प्राणी को अपने पूर्व जन्मों में किये गये कर्मो का फल भी भोगना पड़ता है। भगवान ने मात्र मनुष्य को ही यह विशेषाधिकार दिया है कि यह धर्म और कार्य के साथ, पूर्वजन्म के कुकर्मो के अन्तर्गत मिले दंडो और कष्टों को कम करें। वर्तमान को भी सुधारें, इसलिए तो मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ कहलाती है। पितृदोष वह पारिवारिक दोष होता है जो किसी परिवार में यदि हो तो उस परिवार को विभिनन प्रकार से प्रभावित करता है। पितृदोष से ग्रसित परिवार के पूर्वज जिनकी मृत्यु हो चुकी है, उनकी अप्रसन्नता से उत्पन्न होता है। जिनकी मुक्ति नही हुई होती है, जिनको अकाल मृत्यु अर्थात् असमय मृत्यु होती है, सर्पदंश से जिनकी मृतयु हुई हो, जिन्होंने आत्महत्या की हो, अति बाल्यावस्था में जो चले गये, वे पितृ जिनका विवाह न हुआ हो या नि:सन्तान रहे, कहीं गिरने या डूबने से जिनकी मृत्यु हुई हो, जिनका विधिवत दाह संस्कार आदि क्रियाऐं न हुई हो, वे ही पितृगण अप्रसन्न और असंतुष्ट रहते है। पुराणों के अनुसार 'पितृपक्ष' में हमारे उपर्युक्त पूर्वज सुक्ष्मकण से मृत्युलोक में अपने वंशजो के निवास स्थान में इस आशा से वास करते है कि 'हमारे कुल में क्या ऐसा कोई बुद्धिमान धन्य पुरूष उत्पन्न हुआ है, जो धन के लोभ को त्यागकर हमारे लिए श्राद्ध तर्पण करेगा ?उनकी इस आशा को पूरा कर देने पर वे प्रसन्न होकर अपने परिवार को आशीर्वाद देते हैं और श्राद्ध तर्पण न मिलने पर निराश हो शाप देकर लौट जो है। कर्मपुराण के अनुसार

जलेनापि च न श्राद्ध शाकेनापि करोति च।
अमायां पितरस्तस्व शांप दत्वा प्रचनित च।।

वर्तमान समय समाज में ढेर सारे ऐसे उदाहरण देखने को मिलते है कि परिवार में सर्वसम्पन्नता के बाद भी शांति नही है। अप्रत्याशित बाधा यदा कदा उत्पन्न होते रहती है जिनका कोई स्पष्ट कारण नजर नहीं आता। उदाहरणस्वरूप पति-पत्नी में कलह, नि:संतान दंपति, देर से विवाह, संतान की मंदबुद्धि या विकलांग होना, अकाल मृत्यु, असाध्य रोग से ग्रस्त होना, परिवार में एकता की कमी आदि संभव है। इन कष्टों के पीछे का मुख्य कारण पूर्वजो का अतृप्त होना रहा हो। अगर किसी परिवार में इस तरह की घटनाएँ हो रही हों, तो इनसे मुक्ति पाने के लिए यथाशीघ्र गया-श्राद्ध करना चाहिए, ताकि पूर्वजो के शाप से मुक्ति मिल सके। व्यवहारिकता में यह पाया जाता है कि लोगों के द्वारा समाज में सभी कार्य यथासंभव निपटाये जाते है पर

पूर्वजों की मुक्ति हेतु गयामें 'पिंडदान' करने की बात हो तो अभी न करने के अनेक कारण दिये जाते है। इसके चलते इन कष्टों से छुटकारा नही मिल पाता। इसलिए श्राद्ध को भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि माना गया है। प्राचीन काल से ही प्रेतों की मुक्ति और पूर्वजों की सद्गति के लिए गया तीर्थ की यात्रा का नियम चला आ रहा है। गया धाम में जो श्राद्ध किया जाता है, उससे पूर्वज तो तृप्त होते ही है, देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं; तभी तो गयाजी को सर्वोत्तम तीर्थ माना जाता है। हमारी हिंदू संस्कृति में पुत्र के लिए अपने माता-पिता की सेवा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना महत्वपूर्ण तथा श्रेष्ठ धर्म माना गया है। इनकी मृत्यु उपरांत संस्कार श्राद्ध-तर्पण करने से पुत्रता सिद्ध होती है, यानि उपर्युक्त कार्यो का सम्पादन ही पुत्रत्व का द्योतक है।

धर्म, साधना एवं शास्त्रों में रूचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कोई भी श्रेष्ठ शुभ कार्य करने के पहले पूर्वजों का ध्यान जाकर करते है। सूक्ष्म शरीर होने के कारण पूर्वजो की शक्ति अत्यन्त विशाल बन जाती है। वे शक्ति एवं सिद्धि के निश्चित स्वरूप बन जाते है। यदि उनकी पूर्ण कृपा रहती है तो वे अपने परिवार के सदस्यों का श्रेष्ठ कार्यो के लिए सदा मार्गदर्शन करते है।

अर्थशास्त्र विभाग
जगजीवन कॉलेज, गया

✦

देशी-विदेशी अभिलेखों में गया, गयावाल एवं गया श्राद्ध

डा० शत्रुध्न दांगी

विश्व के प्राचीनतम नगरों में गया पवित्र फल्गु नदी के तट पर बसा एक ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पुरातात्विक नगर है जिसकी विरासत अति सुदृढ रही है। मान्यता है कि यहाँ पिंडदान करने से प्राणी को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसकी कारण प्रायः सालों भर तीर्थ-यात्री पिंडदान करने यहाँ आते है। किन्तु, आश्विन मास के कृष्णपक्ष में पन्द्रह दिनों के लिए यहाँ 'पितृपक्ष' का भारी मेला लगता है, जिसमें लाखों तीर्थयात्री अपने पितरो को मोक्ष दिलाने हेतु इस अवसर पर आते है। कहा जाता है कि इस अवसर पर हिन्दुओं के चौरासी करोड़ देवता यहाँ वास करते है। मृतात्माएँ भी अपने पुत्रों से तर्पण एवं पिंडदान की आशा लिए इस मोक्ष धाम में पधारते है। इसी कारण गया पितृतीर्थो में सभी तीर्थो से श्रेष्ठ और शुभ माना गया है।

पितृतीर्थ गया नाम सर्वतीर्थ वरं शुभम।
यत्रास्ते देव देवशः स्वमेव पितामहम।।

ब्राह्मी लिपि में "कलिवन अभिलेख" (जो 186 ई० का है) से ज्ञात होता है कि 'गया' एक तीर्थस्थल के रूप में तथा 'फल्गु' को मोक्षकर्म से संबंधित बताया गया है। फल्गु नदी पितरो की मुक्ति, तर्पण तथा ध्यान का स्थान माना गया है। गया का विश्वप्रसिद्ध विष्णुपद मंदिर, जो इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा निर्माण कराया गया, वह हिन्दुओं के लिए पवित्र धार्मिक केन्द्र के रूप में यहाँ प्रतिष्ठापित हैं। इसमें विष्णु चरण सुशोभित एवं पूजित है। इसके अलावे अक्षयवट, गयासिर, उत्तरमानस, वैतरणी, ब्रह्म सरोवर, रामशिला, प्रेत शिला, सीताकुंड जैसे पैतांलिस अन्य धार्मिक केन्द्र पूजित है। "बुकानन" (1811-12 ई०) ने इन पैतालिस तीर्थस्थलों की सूची उपलब्ध करायी जहाँ मराठे और श्रेष्ठी (धनी) बलि चढ़ाने आते थे। बुकानन ने उन धार्मिक केन्द्रों का जिक्र किया है जिनका परवाना मिला था। कई इन धार्मिक केन्द्रो का आज कोई नामोनिशान भी नही है। यहाँ तक की यहाँ के पंडा भी उन्हें नहीं बता पाते।

इन धार्मिक केन्द्रो के उपेक्षित होने के कई कारण हैं। उनमें एक प्रमुख कारण तीर्थयात्रियों परसंख्यानुसार धार्मिक केन्द्रो को श्रेणीबद्ध कर उन पर ''परवाना शुल्क'' लगाना है। प्रथम श्रेणी मे 'फल्गु' का दर्शन था। उसे दर्शन करने के लिए उस समस्त तीर्थयात्रियों से दो रूपये पौने दो आने परवाना शुल्क देना पड़ता था। द्वितीय श्रेणी के धार्मिक केन्द्रो में 'विष्णुपद' को रखा गया था। यहाँ दर्शन के लिए यात्री को तीन रूपये पौने दो आने परवाना शुल्क देना पड़ता था। तीसरी श्रेणी के धार्मिक केन्द्र में पैतालिंस अन्य धार्मिक स्थल थे, जिनके लिए तीर्थयात्रियों से आठ रूपये पौने पांच आने प्रति यात्री परवाना शुल्क वसूल किया जाता था। परिणामत: 1770 ई० से 1920 के बीच गरीब तीर्थयात्रियों का आना लगभग बंद हो गया। यदि वे आते भी तो मात्र 'फल्गु' और 'विष्णुपद' का दर्शन कर लौट जाते। 1920 ई० के बाद जब परवाना शुल्क खत्म किया गया, तब तीर्थयात्रियों का आगमन पुन: शुरू हो गया और वे अन्य धार्मिक केन्द्रो पर भी जाने लगे। दो सौ वर्षो के इस लंबे अंतराल के बीच कई अन्य धार्मिक केन्द्र प्राय: लुप्त हो गये। चीनी यात्री फाहियान 399-413 ई० में भारत भ्रमण पर आया और गया होकर गुजरा था। उसने अपने यात्रा वृतांत में लिखा कि ''ब्राह्मण पुरोहितों और बौद्धों -संन्यासियों का मंदिर तथा धर्म मित्र भाव से पनपे हैं'' उसे गया को जंगलों से भरा हुआ मरूभूमि तथा बिल्कुल ही जन शुन्य'' के रूप में वर्णन किया है। साथ ही सातवीं शताब्दी (729-634) ई में चीनी यात्री हवेनसांग भारत भ्रमण में वह भी गया होकर गुजरा। उसने ''गया को एक हिन्दू शहर'' के रूप में वर्णन किया है। उसने लिखा है कि ''ब्राह्मणों के 1000 परिवार यहाँ वास करते है जो अपने का ऋषि संतान बताते है और जिन्हें मृत्यु कर से छूट मिली हुई थी। यह आंकड़ा गयावालों के 1484 परिवार की पुष्टि करता है।

द बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के संपादक एल०एस०एस० ओ० मैली के अनुसार गया 10 वी शताब्दी में प्रसिद्ध तीर्थस्थल था। किन्तु, 8वीं सदी में गया की प्रसिद्धि का जिक्र भारत के तीर्थ स्थलों में नही मिलता। इसके लिए उन्होने निम्नलिखित श्लोकों से पुष्टि की है :-

''अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका, पुरी, द्वारवती चैव सपतेताह मोक्षदायिका।'' अर्थात् अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंती और द्वारिका ये सात ही स्थान मुक्ति दिलाने वाले है।

संभव है उन दिनों गया का स्थान स्थानीय धर्म केन्द्र के रूप में होगा। 10 वीं शताब्दी के गया अक्षयवट वृक्ष के नीचे से प्राप्त शिलालेख से ज्ञात होता है कि ''उस समय यह स्थल यात्रियों के लिए अत्यंत पवित्र वेदी के रूप में माना जाता था। आज भी सभी तीर्थ यात्री इस पवित्र स्थल व वट वृक्ष का अवश्य दर्शन कर सुफल प्राप्त करते है और तब घर वापस लौटते है। वर्ष 1060 ई० के एक दूसरे शिलालेख में उत्कीर्ण नयापत्त के शासक वज्रपाणी ने इस स्थल की चर्चा करते हुए कहा है कि यह स्थान एक छोटी सी जगह से अमरावती (इन्द्र की राजधानी) बन गया।''

एक तीसरे शिलालेख (1242 ई०) में गया की धार्मिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए एक राजपूत दीवान ने उत्कीर्ण करवाया कि 'मैने गया किया। वहाँ प्रपितामह को देखता हूँ।' इसे लोग 'साक्षी-श्रवण' कहते हैं। संपूर्ण अनुष्ठान को समाप्ति पर यात्री यहाँ आते है और वे ईश्वर की साक्षी के लिए प्रार्थना करते हे कि उसने नियमपूर्वक सारे कार्य संपन्न, किए अब वह अपने पूर्वजो के ऋण से मुक्त हो गया।

1053 ई० के कृष्ण-द्वारका मंदिर अभिलेख में भी गया को 'मोक्ष प्राप्ति का द्वार' बताया है। उसी प्रकार नरसिम्हा मंदिर अभिलेख में 'गया को पितृ तीर्थ का महत्वपूर्ण स्थल' माना है। यक्षपाल अभिलेख में वर्णित है कि 'गया उन पितरो के लिए एक सीढ़ी की तरह है जो 'स्वर्ग' जाना चाहते है। वहीं कर्नाटक बेलगाँव से प्रापत 1082 ई० का विक्रमादित्य षष्ठ के हुली अभिलेख में 'गया को एक अति पवित्र स्थल माना है।'

इस प्रकार 11वी सदी के अंत तक गया, गयावाल, तथा गया श्राद्ध को प्रमुखता मिल गई थी, किन्तु दुर्भाग्य यह कि इसी काल में 1113 ई० में

मुहम्मद बख्तियार खिलजी का गया पर आक्रमण हुआ। असंख्य मूर्त्तिया तोड़ दी गई। उन्हें पैरो तले कुचला गया। भय से पुजारी तथा संन्यासी यहाँ से पलायन कर गये। उन्होने पासके गाँव कटारी, परोरिया, दुभल, कुर्कीहार आदि जगहों में शरण ली। इसी काल में बिहार का लोकप्रिय बौद्ध धर्म भी प्राय: समाप्त हो गया। मुस्लिम सल्तनत के इस काल में हावी हो जाने से गयावालो का सामान्य जीवन अस्त व्यस्त हो गया। यात्री भी कम आने लगे। गया की आबादी एकाएक कम हो गई। कुछ धर्मांध तीर्थयात्री यहाँ आते तो उन्हें मुसलमान ओफिसरो तथा लूटेरो से सामना करना पड़ता। वह स्थिति लगभग दो तीन सौ वर्षो तक चलती रही। अंत में उदयपुर (राजस्थान) के महाराजा लक्षा ने 1446 ई० में गया को यात्रा की और ततारियों के विरूद्ध लड़ाई लड़ी परन्तु इस लड़ाई में उन्हें स्वंय वीरगति प्राप्त करनी पड़ी। फिर उनके पुत्रों और पोतो ने भी पांच पीढ़ियों तक इस लड़ाई को जारी रखा। अंत मे छठी पीढ़ी के राजा सांगा ने 1509 ई० में इस लड़ाई को जीता और गया को तातारियों से मुक्ति मिली। फिर भी गया की स्थिति 1660 ई० तक वैसी ही बनी रही।

समयचक्र बदला। औरंगजेब का शासन–काल आया। तब इसी बीच गयावालों के बीच के ही सीताराम चौधरी के बड़े पुत्र शहरचंद चौधरी जो एक अच्छे संगीत, कलाकार एवं तांत्रिक की सिद्धि प्राप्ति की थी, ने किसी प्रकार बादशाह की मल्लिका तक संबंध बना लिया। बादशाह तक पहुँचने का सुअवसर मिला। शहरचंद ने बादशह के सामने गया, गयावाल तथा गया धार्मिक केन्द्र की दुर्दशा से बादशाह को अवगत कराया। बादशाह ने शहरचंद की बातो तथा व्यवहारों से खुश होकर ढेर सारे उपहार दिये तथा दान में गयावालों को बसने के लिए 400 एकड़ जमीन दी। किन्तु इसके लिए शहरचंद को एक बड़ी कुर्बानी देनी पड़ी कि उसे मुस्लिम धर्म स्वीकार करना पड़ा। आज का विष्णुपद मंदिर तथा गयावालो के आलीशान अट्टालिकाऐ जो पतली गलियो के बीच खड़ी है और जिनकी सुरक्षा के लिए उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम में चार दरवाजे लगे थे इस ऐतिहासिक घटना के साक्षी है। इन्हीं सब कारणों के कारण द डायमिक्स ऑफ कल्चर चेंज के लेखक बी० मैलीनास्की ने गयावाल समुदाय के इस परचिन्ता जतायी है। उन्होने कहा है कि "डर है कि संपूर्ण रूप में इस समुदाय की ह्रास न हो जाय। अतएव गयावालो के विषय में एक ऐतिहासिक रूप रेखा बनाने की आवश्कयता है। "इसी परिप्रेक्ष्य में ई० ई० इवांस प्रचाई जो सोशल एन्थ्रोपोलॉजी के लेखक है ने भी कहा है कि इतिहास सांस्कृतिक गतिविधियों की समाष्टि है। यह हमें आधुनिक सांस्कृतिक गतिविधियों की समाष्टि है। यह हमें आधुनिक सांस्कृतिक जटिलताओं जो भूतकालिक प्रक्रिया का परिणाम है को समझने बूझने के लिए समर्थ बनाता है। इससे हम समुदाय विशेष की रूपरेखा, उसके प्रचलित रीति – रिवाजों की प्रमुख मान्यताओं तथा उसकी सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन कर सकते है। इन्होंने भी गया और गयावालों के प्रति ध्यान देने की बात कही है। गयावाल समुदाय आज मिटता जा रहा है। डर है कि भविष्य में इसका और ह्रास न हो जाय। अतएव इसके लिए इसकी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बनानी होगी और उसके हास की गति को निश्चित करनी होगी। क्योंकि यह स्वंय भूतकाल का बचा हुआ अवशेष है। यह अपनी सामाजिक मान्यताओं और रीति रिवाजों को निश्चित करने के लिए प्राय: पीछे की ओर ही देखते है और अपनी भूतकालीन उपलब्धियों से गौरवान्वित होते हैं।"

खुशी की बात है कि वर्तमान समय में गयावाल समुदाय ने इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक दुनिया में प्रवेश कर विकास की राह पकड़ी है। बिहार सरकार भी इस समुदाय तथा गया के विकास के लिए विष्णुपद से जुड़े पितृपक्ष मेले को सरकारी मेला की मान्यता देकर विकास का मार्ग प्रशस्त किया है।

निदेशक, सांस्कृतिक अनुसंधान केन्द्र
दाँगीनगर, लाव (गया) 9430607530
Email : shatrughandangi@gmail.com

✦

मुण्डकोपनिषद् में वर्णित दर्शन

डॉ० श्रीकांत भारवि

उपनिषद् भारतीय आर्य मनीषा की सर्वतोभद्र एवं सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है, जिसमें अद्‌भुत चिन्तन की उत्तमता एवं परमोदात्तता मिलती है। इसमें मानव आत्मा की अनत: प्रेरणाओं की क्रियाओ की परिभाषित किया गया है। उपनिषदें अपनी स्थापनाओं को आध्यात्मिक अनुभूति पर आधारित करती है। अत: वे हमारे लिए अमूल्य एवं महार्घ है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। ये मनुष्य के आध्यात्मिक इतिहास में एक बृहद आयाम के समान हैं। उपनिषदों में रहस्यवादी गूढ सिद्धान्तों की एक प्राणवन्त एवं सर्वथा समुन्नत विचारधारा प्रवर्त्तित है। उपनिषदें एक अदृश्य सत्य का एक पूर्ण रेखाचित्र प्रदान करती है, मानव अस्तित्व के रहस्यों पर बहुत ही गहरे, सीधे और विश्वस्त ढंग से प्रकाश डालती है। ये उपनिषदें ऐसी धारणाओं की स्थापना करती है, जो भारत में यो संभवत: विश्व में अप्रतीम एवं अद्वितीय हैं।

उपनिषद 'उप' नि उपसर्ग तथा सद् धातु से व्युत्पन्न है। सद धातु का अर्थ है मुक्ति। अत: उपनिषद् का जिन ग्रंथो में ब्रहाज्ञान की समुन्नत विचारणा रहती है, वे उपनिषद् कहलाते है, अत: वेदान्त माने जाते है - वेदान्तों नाम उपनिशद प्रमाणम्।

प्रस्तुत सन्दर्भ में मुण्डकोपनिषद् में वर्णित दर्शन का विवेचन अभीष्ट है। रहसयवादी चिनतन की परिपूर्णता का नाम दर्शन है जिसमें मैं कौन हूँ?कहाँ से हूँ?किससे हूँ?इत्यादि निरतिशय जटिल प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया गया है। दर्शन मूलत: दर्शन-मनन की महार्घता से अभ्यूपेत शास्त्र है। मुण्डकोपनिषद् के दार्शनिक चिनतन में परम सत्य, ब्रह्मा, परम सत्य आत्मा, आत्मा के रूप मे ब्रह्म जगत की स्थिति, माया और अविधा, जीवात्मा, अनत: स्फूर्ति और बुद्धि विद्या और अविद्या (ज्ञान और अज्ञान) कर्म और पुनर्जन्म का विवेचन है। मुण्डकोपनिषद् अथर्ववेद के मन्त्रभाग के जिसमें अपरा एवं पर विद्या और उसकी प्राप्ति के साधनों का विवेचन है। इसके प्रथम मुण्डक में परा तथा अपरा विद्या का निरूपण है - उनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद, शिक्षा, कला, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष - यह अपरा विद्या है तथा जिससे अक्षरब्रह्म का ज्ञान होता है उसे परा विद्या कहते है, **तत्रापरा ऋग्वेदों : सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं दन्दो ज्योतिषमिति। अथ पर ययो तदक्षरमधिगम्यते।'** इस प्रकार इस उपनिषद् में अपरा तथा इन दो विद्याओं का निरूपण प्राप्त होता है। जिसके द्वारा ऐच्छिक और आमुष्मिक अनात्म पदार्थों का ज्ञान होता है, उसे परविद्या की संज्ञा दी गई है। अपराविद्या वस्तुत: अविद्या ही है,

व्यवहार में उपयोगी होने के कारण उसे विद्या की संज्ञा दी जाती है।

इसके पश्चात् मुण्डकोपनिषद् में भूतों की योनि अक्षरब्रह्मा का निरूपण दृष्टान्तों के द्वारा किया गया है और कहा गया है कि जिस प्रकार मकड़ी जाल को बनाती है और निगल जाती है, जैसे पृथ्वी में औषधियाँ उत्पन्न होती है, उसी प्रकार उस अक्षर (ब्रह्म) से यह विश्व प्रकट होता है -

यथोर्णनाभिः सृजते गृहते च यथा पृथिव्यां
ओषध्यः सम्भावित।
यथा सतः पुरूषाकेशलोमानि तथा
क्षरात्सम्भवतीह विश्वम्।।

मुण्डकोपनिषद् में अक्षर शब्द का प्रयोग ब्रह्म के लिए हुआ है। जिसका अर्थ है जिसका क्षरण अर्थात विनाश न हो, अविनाशी। यह अक्षर परम सत्य का वाचक है जिसे ब्रह्म कहते है। ब्रह्म वह है जो सम्पूर्ण विश्व में बृहणशल है। बृहदारण्यक मे ब्रह्मा को सत् कहा गया है - सन्मात्रं हि ब्रह्म। छांदोग्य के अनुसार जिस प्रकार न्यग्रोध (वटवृक्ष) ऐसे

सूक्ष्मतत्वका बना है जिसे हम देख नहीं पाते है, उसी प्रकार यह जगत् असीम ब्रहा का बना है। ब्रह्म निरूपण के पश्चात् इसमें सृष्टिक्रम का निरूपण है। ज्ञानरूप तप के द्वारा ब्रह्म कुछ उपचय को प्राप्त होता है, उसी के अनन उत्पन्न होता है, पुनः अन्न से क्रमशः प्राण, मन, सत्य, लोक, कर्म औरअमृतसंज्ञक फल उत्पन्न होता है। मुण्डक में ऐहिक और पारलौकिक की असारता प्रतिपादित की गयी है। गुरू के उपदेशही शान्तिचित एवं सर्वथा विरक्त शिष्य के अन्त:करण में अक्षर पुरूष का ज्ञान कराता है। मुण्डक में कहा गया है कि यह अक्षर ब्रह्मसत्य है। जिस प्रकार पूर्ण प्रदीप्त अग्नि से तत्समान रूप वाले सहसत्र स्फलिडग निकलते है, उसी प्रकार उस अखरब्रह्म से अनेक भाव प्रकट होते ह और उसी में प्रविलित हो जाते है। ब्रह्म के परमार्थिक रूप का निरूपण करते हुए कहा गया है कि वह अक्षर ब्रह्म निश्चय ही दिव्य, अमूर्त्त, पुरूष ब्राह्माभ्यन्तर विद्यमान अजन्मा, अप्राण, मनोहीन, शुभ्र एवं श्रेष्ठ अक्षर से भी उत्कृष्ट है –

दिव्यों हयमूर्त्तः पुरूष स ब्राह्माभ्यन्तरो अजः।
अप्राणों हयमना शुभ्रो हक्षरात्परतः पर।।3

इसमें ब्रह्म का सर्वकारणत्व वर्णित है। इस अक्षर पुरूष से ही प्राण, मन, सभी इन्द्रियाँ, आकाश, वायु, तेल, जल विश्वधारिणी, पृथ्वी का उद्‌भव होता है –

एतस्माज्जायते प्राणों मनः सर्वेन्द्रियाणि च।
खं वायुज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी।।4

यह ब्रह्म सर्वभूतान्तरात्मा और विश्वरूप है। अग्नि (भुलोक) जिसका शीर्ष है, चन्द्र सूर्य जिसके नेत्र है, प्रसिद्ध वेद वाणी है, सम्पूर्ण चराचर जगत् जिसका ह्दय और जिसके चरणों से पृथ्वी प्रकट हुई है, वे देव सम्पूर्ण भूतों की अन्तरात्मा है। उस अक्षर पुरूष से चराचर जगत् की उत्पति हुई है। इन्द्रिय विषय और इन्द्रिय स्थानीय भी ब्रह्मजनित ही है। पर्वत, नदी और औषधि का भी ब्रह्मजन्यत्व प्रतिपादित है।

मुण्डक में रूपरहित अक्षरब्रह्म की प्राप्ति के उपायों को भी बताया गया है। ब्रह्म में मनोनिवेश करने का विधान भी प्रज्ञपत है। ब्रह्मवेधन की विधि निरूपित करते हुए कहा गया है महान् अस्त्र रूप धनुष लेकर उस पर उपासना द्वारा निश्चित बाण का संधान कर पुनः उसे खींचकर ब्रह्मभावानुगत चित्त से उस लक्ष्य को वेधन करो –

धनुगृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं, शरं ह्युपासनिश्चतं सन्धयीत।
आयम्य तद्भावगतेन चेतसा, लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि।।5

रूपाकालङ्कार के द्वारा ब्रह्मवेधन के साधनों को भी निर्दिष्ट किया गया है जिसमें कहा गया है कि प्रणव ओङार धनुष है, सोपाधिक आत्मा बाण है और ब्रह्म उसका लक्ष्य कहा जाता है। अप्रमत्त होकर उसका वेधन करना चाहिए शरवत्तन्मय हो जाना चाहिए –

प्रणवो धनुः ह्यात्मा ब्रह्मा तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरत्तन्मयो भवेत्।।6

ओङाकाररूप ब्रह्मचिनतन से मनुष्य अज्ञान के उस पार गमन करने में समर्थ होता है और उसका मङगल होता है। ब्रह्मासाक्षात्कार के फल का निर्देश करते हुए कहा गया है कि ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेने पर जीव की ह्दयगन्थि भिन्न हो जाती है और सभी संशय छिन्न हो जाते है और सभी कर्म क्षीण हो जाते हैं –

भाद्यते ह्दग्रन्थिश्छिद्यन्त सर्वसंशयः
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे।

ब्रह्म ज्योतिर्मय है, निर्मल, निष्फल और विरज है। वह शुभ्र और सम्पूर्ण ज्योतिर्मय पदार्थो की ज्योति है और उस ज्योतिर्मय ब्रह्म ज्ञानी पुरूष ही जानते है – जो हिरण्यमय परम कोश में विद्यमान है – ब्रह्म सर्वव्यापक है। यह सम्पूर्ण जगत् सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म ही है।

मुण्डक में ब्रह्म और जीव के स्वरूप को आलंकारिक भाषा में उपनिबद्ध किया गया है और कहा गया है कि एक साथ रहने वाले तथा समान

आख्या वाले दो सुपर्ण (पक्षी) एक ही वृक्ष का आश्रय ग्रहण कर रहते हैं। उनमें एक तो मधुर एवं आस्वाद्य निप्पल तथा समान आख्यान वाले दो सुपर्ण (पक्षी) एक ही वृक्षका आश्रय ग्रहण कर रहते है। उनमें एक तो मधुर एवं आस्वाद्य पिप्पल (कर्मफल) का भोग करता है और दूसरा भाग न करता हुआ केवल साक्षरभाव से देखता रहता है। एक अमर्त्य चिरन्तन है तथा दूसरा मर्त्य है, जो अविद्या काम, कम और वासनाका आश्रम ?ङिगदेहरूप उपाधि वाला जीव है। दूसरा नित्य शुद्ध बुद्ध-मुक्त स्वरूप, सर्वज्ञ मायोपाधि ईश्वर है जो उसे ग्रहण नही करता हुआ भोग नही करता है। वह तो साक्षित्वरूप सत्ता मात्र से भोक्ता और भोग्य दोनो का प्रेरक ही है।

आत्मदर्शन के साधन के रूप में सत्य, तप, समग्ज्ञान और ब्रह्मचर्य को बताया गया है। इस ज्योतिर्मय शुभ्र आत्मा को क्षीण दोष योगिजन अनत: शरीर में देखते है। इसके अनन्तर सत्य की महिमा निरूपित है। वह विराट् ब्रह्म महान, दिव्य और अचिन्तय रूप है, सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर है, दूर से भी दूर और इस शरीर मे अत्यन्त समीप भी है। वह चेतन प्राणियों में इस शरीर के भीतर बुद्धि रूप गुहा में छिपा हुआ है। वह चक्षु, वाणी, इन्द्रियों तथा तप से भी ग्रहण नही किया जाता है। ज्ञान प्रसाद से जब पुरूष प्रभास्वर चित्त होता है। तभी वह ध्यान करने पर आत्मतत्व का दर्शन करता है।

21, अशोक नगर, गया

✦

संस्कारों एवं व्रतों का महत्व

डा० मंजु शर्मा

हमारी भारतीय संस्कृति पर संस्कारो का साक्षात् दर्शन पितृपक्ष मेले में दिखता है। इस दृष्टिकोण से गयाजी का महत्व सर्वाधिक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पूरे विश्व में गया तीर्थ ही एक ऐसा तीर्थ स्थान है जहाँ पिन्डदान या श्राद्ध करके हम अपने पितरो को मोक्ष प्रदान करने की अभिलाषा रखते है। हमारा पालन पोषण इस प्रकार किया जाता है कि हम अपने संस्कार, संस्कृति धर्म, कर्मकाण्ड, व्रत, पूजा-विधानों के माध्यम से जीवन सार्थक बनाते है और परलोक में भी सुख की कामना करते है। प्रत्येक मनुष्य अपने जन्म के साथ कुछ न कुछ गुण एवं अवगुण लेकर पैदा होता है और उस पर पूर्व जन्मों के संस्कार छाए रहते है, जैसे तैसे उसका जीवन आगे बढ़ता है, उस पर नए संस्कार भी पड़ते है। मनुष्य जो भी अच्छ या बुरे कर्म करता है उसके सूक्ष्म संस्कार मनुष्य के चित्त पर सूक्ष्म बीज रूप से अंकित रहते है, इन्हें हम संचित संस्कार या संचित कर्म कहते है। कालान्तर में वही संचित बीज रूपी संस्कार हमारे वर्तमान या पूर्व जन्म के या अगले जन्म के भोग यानि सुख-दुख के रूप में प्रकट होते है। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है -

''कर्मण्येवाधिकारसते मा फलेषु कदाचन्।''

इस आलोक के माध्यम से मानव जाति को संदेश दिया कि कर्म करना ही हमारा अधिकार है फल पाने में हमारा कोई अधिकार नही है। फल कर्म के अनुसार मिल जाता है अचछे या बुरे कर्मो के कारण ही उत्थान या पतन की प्राप्ति होती है। हमारी भारतीय संस्कृति में यह स्पष्ट है कि जैसा कर्म या जैसे हमारे संस्कार होंगे वैसा ही हमारा जीवन होगा। साथ ही हम यह भी जानते है कि हमारे जीवन के उत्थान, पतन के कुछ स्थाई कारक भी होते है जो हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में विद्यमान रहते है। हम अपने उचित संस्कारो के माध्यम से उत्थान या पतन का रास्ता चुन सकते है। उत्थान के संस्कार बीजो को गीता में दैवय सम्पदा का नाम दिया गया है तथा जो पतन के संस्कार-बीज होते है उन्हे आसुरी सम्पदा के नाम से जाना गया है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने जिन सद्गुणो को बतलाया है वे निम्न प्रकार है - अभय, बुद्धि की पवित्रता, ज्ञान व योग में व्यवस्थित होना,

- दान, इन्द्रियों का संयम, या, स्वाध्याय, तप

• सरलता, अंहिसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, सहनशीलता ईर्ष्या न करना, प्राणियों पर दया, विषय भोगों का लालच करना

• मृदुलता, जल्ला,स्थिरता, तेज, क्षमा, पवित्र धारणा और शौच

• किसी से द्रोह न करना तथा मिथ्या अभिमान करना।

• आसुरी सम्पदा में निम्न दुर्गुणो को रखा गया है।

• दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, निर्दयता और अज्ञान प्रत्येक मनुष्य के अन्तःकरणमें दैवी और आसुरी सम्पदा के बीज संस्काररूपमें विद्यमान रहते है। यह हमारे ऊपर ही निर्भर करता है कि हम किन गुणों या अवगुणों को पल्लवित एवं पुष्पित करते है। जिनसे आसुरी शक्तियों को बढावा मिलता है या पोषण मिलता है वे है–

• आवश्यकता से अधिक निद्रा, आलस्य प्रमाद नास्तिकता, कुसंगति, समय की बर्बादी, लापरवाही, नशा करना आमिस भोजन, परपीड़न, आतंक इत्यादि। विषय लोलुपतागष्ठि भोजन, रप्रतिष्ठा, आमोद (अत्यधिक) भोग में लिसा।

ठीक इसके विपरीत दैवी सम्पदा सत्संगति, स्वाध्याय, साधना, सदाचार, समय का सदुपयोग, खतोगुणी भोजन, स्वावलम्बन इत्यादि से पोषित होती है। मनुष्य को अपने उत्थान के लिए अपने अन्तःकरण में विद्यमान दैवी सम्पदाओं के बीजों का समाज में विद्यमान उनके सहयोगी कारको से पोषित करें। इसे लिए प्रयास करना पड़ता है। परन्तु अपने पतन के लिए मनुष्य को कोई प्रयत्न नही करना पडता है क्योंकि पतन के कारक तत्व बड़ी तेजी से बिना प्रयास के ही आसुरी सम्पदाओं को बढ़ाते है। जिस प्रकार अच्छी फसल पाने के लिए खेतो को तैयार करना, अच्छे बीज, खाद, जल, खरपतवार एवं जानवरो से बचाना, रक्षा करना जरूरी होता है परन्तु खेत को यूँ ही छोड़ दे तो खरपतवार स्वतः ही उत्पन्न हो फैल जाते है। उसे लिए कोई प्रयास करने की जरूरत नही होती है।

काहु न कोउ सुख–दुख कर दाता।
निज त करम भोग सब भ्राता।।
जहाँ सुमति तहं सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहं विपत्ति निधाना।।
मानस गोस्वामी तुलसीदास

मानव जीवन या शरीर को पाने का स्वर्णिम अवसर हमारे हाथ मे है वो चाहे उत्थान की ओर या पतन की ओर जाए। परन्तु मनुष्य अपने कर्मो का फल भोगने को विवश है। मनुष्य अपने अच्छे संस्कारों कर्मो के द्वारा मोक्ष–प्राप्ति की कोशिश कर सकता है। भगवान कृष्ण ने कहा है कि

''उद्धारेदात्म नात्मान ना त्मानाव सादयेत''

अर्थात् मनुष्य अपनी आत्मा का स्वंय उद्धार करे, अपनी आत्मा का स्वंय पतन न करे क्योंकि उसका अपना मन ही अपना मित्र है और वही शत्रु भी है। हमारे यहाँ गुरुकुल परम्परा के अन्तर्गत प्रत्येक गुरुकुल में नित्य यज्ञ होते थे जिसमें सस्वर वैदिक मंत्रो का उच्चारण होता था वेद मंत्रो के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि तंरगे जब यज्ञीय ऊष्मा के साथ सम्बद्ध हो जाती है तो अलौकिक वातावरण प्रस्तुत करती है और वातावरण में उपस्थित लोगों के व्यक्तिव में अनेक विशेषताएँ अनायास ही प्रस्फुटित हो जाती है। व्यक्तित्व के विकास की के लिए यह मनोवैज्ञानिक पद्धति है। संस्कारो से सम्बन्धित मंत्रो में अनेक विधाएँ भरी पड़ी है और ये प्रत्येक परिस्थिति के लिए उपयोगी सिद्ध होती है।

हम भारतीयों को जीवन शैली विभिन्न संकायो यथा – नामकरण, मुण्डन, विद्याराम्भ, उपनयन, विवाह, वानप्रस्थ, अन्त्येष्ठि, श्राद्ध एवं विभिन्न पर्वो से भरी पड़ी है और इन्हें मनाना ही हमारा कर्म है। पितृपक्ष में इसीलिए पूरे विश्व से हमारे प्रवासी भारतीय गयाजी में आकर श्रद्धा से श्राद्ध कर्म करके अपने को धन्य मानते है, तथा असीम शांति का अनुभव करते है चाहे यहाँ आने वाले लाखो लोगों को कई प्रकार की तकलीफे भी क्यों न उठानी पड़े। महर्षि कणद ने बताया कि व्रत–पूजा व्यक्तिगत जीवन को अधिक पवित्र बनाने के लिए और विभिन्न जनितयाँ, महामानवों से प्रेरणा लेने के लिए होती है। दुर्गुण छोड़ने और सृगुण अपनाने के लिए देवपूजन करते समय संकल्प लिए जाते है और संकल्प के आधार पर व्यक्तिव ढाला जाता है। पर्व और त्योहार जन–जन में नैतिकता तथा सचरित्रता का भाव जागृत करते है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने एक बार अपने उद्‌बोधन में पर्व प्रथा के महत्ता को बतलाते हुए कहा

था कि वर्ष में सांस्कृतिक परिवेश बनाए रखने के लिए वर्षों में पड़ने वाले पर्वो को जैसे दीपावली, गीता – जयन्ती, बंसतपंचमी, शिवरात्रि, होली, गंगा दशहरा, व्यास पूर्णिमा, श्रावणी रक्षाबन्धन, पितृ विसर्जन एवं विजयादशमी सोल्लास मनाया जाए।

पितृ विसर्जन –अपने पूर्वजो के प्रति श्रद्धा ज्ञापित करने के लिए, श्रद्धातर्पण श्रद्धांजलि अर्पण के निमित किया जाने वाला कार्यक्रम इसके अतिरिक्त रामनवमी, जन्माष्टमी, हनुमान जयन्ती, गणेश चतुर्थ तथा कई क्षेत्रीय पर्व है, जिनमें कई तरह की शिक्षाएँ एवं प्रेरणाएं सन्निहित रहती है। कृषिप्रणाली की शिक्षा पद्धति में संस्कारो एवं पर्वो, व्रतों का काफी महत्व है। कथा कहानियों के माध्यम से भी धर्म संस्कार एवं पर्वो की महत्ता बतलाई जाती है। धार्मिक मेले, पर्व स्नान एवं तीर्थो की स्थापना भी इसी उद्देश्य से की जाती है ताकि काफी संख्या में जनमानस एक स्थान पर एकत्रित हो और आपस मे विचार विमर्श, समर्थ मार्ग दर्शन, सामाजिक समस्याओं का निवारण और भावी योजनाओं का निर्धारण कर सके। साथ ही इन्ही माध्यमों से हम अपनी राष्ट्रीयता एकता एवं अखण्डता से बंधे रहते है। पितृपक्ष मेला और उसमें संस्कार सहित श्राद्ध कर्म करना, इसी धर्म एवं मानव, राष्ट्र प्रेम एवं सौहार्दका प्रतीक है। इन्हीं कर्मों से हमारी जीवन्तता बनी रहती है और हम अपनी भारतीयता पर गर्व महसूस करते है। पितृपक्ष मेला सबसे बड़ा त्योहार है। हमारे जीवन की सार्थकता है। पितृ पक्ष मेला को सभी तीर्थ यात्रियों के साथ नमन।

सेवानिवृत्त प्रोफसेर, मनोविज्ञान विभाग
जीबीएम कॉलेज (गया) मो० : 9431225810

✦

बोधगया स्थित जगन्नाथ मंदिर

श्री राकेश कुमार कुन्नू

गयाधाम का कण–कण आध्यात्मिक उर्जा से ओत प्रोत है। इसके पार्श्व में मात्र 11–12 किलोमीटर दक्षिण की दूरी पर स्थित, बोधगया का भी अपना खास महत्व है। विशेष कर भगवान बुद्ध का मंदिर जब से विश्व–धरोहर के रूप में परिगणित हुआ, तब से इसकी महत्ता और भी बढ़ गयी है। देश–विदेश के पर्यटक यहाँ प्रतिदिन आते रहते है। पहले भी आते थे और आज भी। पहले केवल बुद्ध–मंदिर का दर्शन और भ्रमण लक्ष्य रहता था। किन्तु आज बुद्ध मंदिर के साथ–साथ यहाँ जगनाथ मंदिर का दर्शन भी अभिप्रेत हो गया है।

बोध गया में पितृपक्ष के अवसर पर सनातन धर्मावलंबियों का आना जाना प्राचीन काल से लगा हुआ है। यहाँ पितर–पूजा के लिए दो वेदियाँ है एक धर्मारण्य और दूसरा मांतगवापी। इन दोनो स्थानो पर अपने पितरो के लिए श्राद्ध–कर्म करने तर्पण–श्राद्ध आदि के अनुष्ठान सम्पन्न करने के लिए तीर्थ–यात्री आते थे और फिर आकर्षण केन्द्र बुद्ध मंदिर का दर्शन करते हुए वापस चले जाते थे। उनकी दृष्टि में वहाँ और कोई दर्शनीय स्थान नहीं था।

आज स्थिति बिल्कुल बदल गयी है। आज जो भी यात्री बोधगया आते है वे बुद्ध मंदिर के सामने ठीक उत्तर की ओर अवस्थित भव्य जगन्नाथ मंदिर का भी दर्शन अवश्य करते है। विशेष रूप से सनातन धर्मावलंबी यहाँ पर आकर शान्ति की अनुभूति करते है। इस मंदिर की भी एक कथा है। गया जी के लोगों का बोधगया आना–जाना बराबर लगा रहता था। ऐसे ही ई० दो हजार के प्रथम दशक में गया जी के एक सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री शिवराम डालमिया का ध्यान बुद्ध मंदिर के सामने उत्तर की ओर अवस्थित जगन्नाथ जी के जीर्ण–र्शीण मंदिर की ओर गया। मंदिर में भगवान जगन्नाथ का एक छोटा सा विग्रह प्रतिष्ठित था। मंदिर की दीवारे झर रही थी। उसकी ईट–ईट झाँक रहा थ। तीर्थयात्री जो यहाँ की वेदियों पर पितर–पूजा का अनुष्ठान करने आते थे – सम्भवतः उन्हें भी इस मंदिर का ज्ञान नहीं था। यदा–कदा ही कोई भक्त यहाँ पहुँच पाते थे। लगभग 2008 ई० की रथ यात्रा का समय था। घमूते–फिरते श्री शिवराम डालमिया अपने कई मित्रों के साथ बोध गया के जगन्नाथ मंदिर की ओर आए। वहाँ उस समय

यह परिवेश शान्त था। सन्नाटा छाया था। यह सन्नाटा शिवराम जी के अन्त:करण तक पसर कर उनहें बेधने लगा। उसी रात्रि, दैव योग से, किसी ने जगन्नाथ पुरी से उनहें फोन किया। फोन पर रथ-यात्रा की दिव्य महिमा की गाथा उन्हें सुनाई गयी। रात्रि में सोते-सोते बोधगया स्थित जगन्नाथ मंदिर इनमें सपनो में कौंधने लगा। फिर तो, इसके ठीक दूसरे दिन से उनका संकल्प लोगों को प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने लगा। शिवराम जी मंदिर के भव्य निर्माण में लग गए। काम शुरू हो गया। अब मंदिर का जीर्णोद्धार नहीं, वरन् पुनर्निर्माण का काम प्रारंभ किया गया। इस क्रम में उन्होंने न रात देखी न दिन न धूप, न शीत, न वर्षा। दिन-रात, तन-मन-धन से पूरे समर्पण के साथ बोध गया-स्थित भगवान जगन्नाथ का मंदिर निर्मित होने लगा। लगभग दो-ढाई वर्षो में मंदिर-निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ। फिर जगन्नाथ भगवान बलभद्र जी तथा सुभद्रा जी के तीन विग्रह का निर्माण पुरी के ही कलाकारों द्वारा कराया गया। उन्हें गया के बोध गया-स्थित जगन्नाथमंदिर में पूरी वैदिक विधि से शंकराचार्य जी की देख-रेख में पुरी के पुरोहितों के हाथो यहाँ प्राण-प्रतिष्ठा हुई। उस समय गया के प्राय: सभी धर्माचार्य, रामानुज मठ के राघवाचार्य, रामाचार्य, महन्त कन्हैया जी आदि उपस्थित थे। प्राण-प्रतिष्ठा का भव्य समारोह कई दिनों तक चला। इसके पश्चात यह मंदिर सनातन धर्मावलंबियों के लिए एक विशिष्टआकर्षण का केन्द्र बन गया।

मंदिर में भगवान जगन्नाथ की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद उस वर्ष से ही प्रत्येक वर्ष यहाँ की रथ-यात्रा ने भी अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली। जगन्नाथ पुरी में यह समारोह कई दिनों तक चलता है। गया धाम में भी बोधगया के जगन्नाथ मंदिर से जो भव्य रथ-यात्रा निकाली जाती है, उसका भी स्वरूप और उद्देश्य वही है, जो पुरी में संस्थापित है। पूरा समारोह कई दिनो तक चलता है और इस पूरे समारोह का श्रेय शिवराम डालमिया को जाता है। आज शिवराम डालमिया नहीं है, किन्तु जगनाथ मंदिर का सभी समारोह तथा व्रत-अनुष्ठान आज भी वैसे ही संचालित रहता है। पितृपक्ष के समय जो भी तीर्थ-यात्री अपने पूर्वजो के लिए बोधगया-स्थित पिण्ड वेदियों पर तर्पण तथा श्राद्ध कार्य करते हैं - वे इस मंदिर में भी निश्चय आते है। यह मंदिर आज अपने भव्य रूप में प्रत्येक सनातन धर्मवलबियों के लिए एक आकर्षण का केन्द्र बन गया है। इस मंदिर में निरन्तर भण्डारा चलता रहता है। जिसकी व्यवस्था तथा देखरेख में शिवराम डालमिया की धर्मपत्नी उषा डालमिया लगी रहती है। इस जगन्नाथ मंदिर के ठीक दक्षिण की ओर एक राम मंदिर उषा डालमिया की है देखरेख में बन रहा है। इसका भी ठीक उसी तरह विकास हो रहा है जैसा जगन्नाथ मंदिर का हुआ है। सनातन धमावलंबियों के लिए तथा पर्यटकों के लिए यह भी ऐसा आकर्षण केन्द्र रहेगा कि लोग बुद्ध मंदिर के साथ-साथ इन नवनिर्मित पुण्य-स्थानों को देखना न भूलेगें। यहाँ पर यह उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा कि जगन्नाथ मंदिर की सम्पूर्ण व्यवस्था की देखरेख के लिए बिहार धार्मिक न्यास बोर्ड द्वारा जो समिति बनाई गयी है उसमें अध्यक्ष उषा डालमिया तथा सचिव राय मदन किशोर के साथ कई गणमान्य समाजसेवको को सदस्य के रूप में रखा गया है। अत: इस समिति का यह दायित्व बनता है कि मंदिर परिसर में शिवराम डालमिया की एक प्रतिमा प्रतिष्ठित कर दें, ताकि आनेवाली पीढ़ियो को इस प्रकार के सात्विक अनुष्ठानों को सम्पन्न करने की प्रेरणा मिलती रहे।

अधिवक्ता, राजेन्द्र आश्रम मार्केट, गया

गया जी के परिप्रेक्ष में वैराग्य और गृहस्थ

श्री राम वचन सिंह

वैराग्य का अर्थ ही होता है निहित, स्वार्थ का त्याग और गृहस्थ शब्द का अर्थ है एक परिवार में रहते हुए भी सामाजिक चेतना एवं सामाजिक भावनाओं के साथ कर्म करना।

यही भावना गया जी में लिए जाने वाले श्राद्ध क्रिया में अनुभव करने को मिटाती है। दान पूर्वजों के लिए करने का अर्थ ही होता है कि उनके सुखो एवं मोक्ष के लिए कामना करना और यथा सामर्थ्य दान देकर उनके पास अपनी अनुभूतियों को पहुँचाना। यही श्राद्ध कर्म की मूल भावना है।

वैराग्य और गृहस्थ ऐसे शब्द है, जो जीवन के कर्मो में स्वत: आते ही है लेकिन इसकी अनुभूति या कहें कि इसको पहचानकर अंगीभूत करना आज के भौतिकवादी युग में कठिन हो जाता है। इसको पहचानकर कर्मो में वैराग्य भाव और गृहस्थ आज के प्रधानता दी जाय तो यह सभी के लिए सुखद एवं परोपकारी सिद्ध होगा। उदाहरणस्वरूप राजा दशरथ को अपने पुत्रों के प्रति मोह है तो पुत्रों के ;विषयों के पास उनकी सुरक्षा के लिए भेजना वैराग्य है यही राजा जनक लिए वैराग्य से गृहस्थ की ओर अग्रसारित होना पिता होने के कारण ही संभव हो सका। गृहस्थ और वैराग्य की इसी समरसता के फलस्वरूप उस समय के अनाचार, दुराचार से सभी रावण ऐसे नृसंश से लोगों को मुक्ति मिल जायेगी।

गयाजी के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो गीता में श्रीकृष्ण के चरित्र एवं दर्शन में यह स्पष्ट है कि गृहस्थ अपने कर्म में समर्पण का भाव रखे तो मोक्ष की प्राप्ति कर होती है। कर्म गृहस्थ के लिए आवश्यक है तो समर्पण वैराग्य के लिए। पूर्वजो के मोक्ष की इच्छा गृहस्थ भाव तो दान समर्पण है। अत: गृहस्थ और वैराग्य दोनो साथ–साथ चलते है। सिर्फ एकाग्र होकर दोनो के लिए समर्थता जुटानी होगी समर्थता जुटेगी कैसे यह प्रश्न उठता है। इसके मार्ग बहुत ही सरल है कि आप इसके बारे में सोचे उसमें हितकारी अहितकारी दोनो भावो का समावेश हाता है।

आप दोनो भावों के इस समावेश को अपना स्वरूप दे सकते है। जैसे कोई पिता अपने लड़के को विद्वान बनाना चाहता है। साथ ही धनवान भी लेकिन लड़का नहीं बन पाता। यह पिता और पुत्र के अपने अपने कर्म के अनुरूप हुए जो गृहस्थ है इसमें वैराग्य का अभाव दिखता है। और दूसरी तरफ एक व्यक्ति दूसरे का जान मारना चाहता है लेकिन नफा–नुकसान का भी आंकलन करता है यह उसमें वैराग्य और गृहस्थ होने का प्रमाण है। वह जेसे ही अपने निष्कर्ष पर पहुँचता है तब मारने की क्रिया छोड़ देता है। इसलिए वैराग्य और गृहस्थ साथ साथ चले तो अस्वाभाविक घटनाओं मेंकमी आयेगी ही।

गया जी की श्राद्ध क्रिया में वैराग्य और गृहस्थ का मिश्रण समाज को एकसूत्र में बांधने एवं मिश्रण समाज को एक सूत्र में बांधने एवं धर्म के प्रति अग्रसर रहने का मार्ग प्रशस्त करता है। सभी धर्मो में इस संतुलन का समावेश मिलेगा, चाहे वह ईसा हो या पैगम्बर या हजार कवि–मुनि गयाजी की क्रिया में सभी लोग मानते है कि वह शरीर नश्वर है। वैराग्य का भाव उत्पन्न करता है और नश्वर शरीर के प्रति मोह का क्षण गृहस्थ होने का संकेत देता है। गीता में श्रीकृष्ण अध्याय 2 के 43 श्लोक में कहा कि कर्मो के प्रति आसक्ति गृहस्थ है और कर्म से अनासक्ति वैराग्य हैं। पूर्वजो की मोक्षकी कामना करना आसक्ति है तो दान अनासक्ति है।

गृहस्थ और वैराग्य दोनो जहाँ पर हो, वहाँ पर उचित और अनुचित की व्याख्या या बताना सरल हो जायेगा। गया जी में एक दिन तीन दिन और 15 दिन का तर्पण का विधान है जो शास्त्रो में भी कहा गया है लेकिन यहाँ आन लाईन की व्यवस्था नही है आन–लाईन गृहस्थ इसमें सिर्फ स्वार्थ छिपा हुआ है। गया जी में आकर श्राद्ध करने में गृहस्थ और वैराग्य

दोनो साथ है इसलिए उचित है कि यह पितृया गया धाम में आकर ही सम्पन्न किया जाय।

ऐसा इसलिए कि गया जी आकर कोई भी व्यक्ति गया जी मे तर्पण क्रिया कर सकता है लेकिन आन लाईन सभी नही कर सकते है। धर्म एवं नियम वही मान्य है जो सभी के लिए अनुकूल हो, किसी विशेष के लिए नहीं।

अत: वैराग्य नियम है तो गृहस्थ नियति और इसे लेकर जो भी चलता रहेगा वह हमेशासुखी रहेगा और उस पर भगवान की कृपा बनी रहेगी ऐसा मुनियों का मत है। तर्पण और समर्पण दोनो गया जी में करते है। तर्पण निराकार को और समर्पण साकार ईश्वर को अत: सभी प्राणियों को चाहिए कि वह अपने जीवन में वैराग्य और गृहस्थ की भावनाओं से जुड़े। रक्षा करने से सभी सस्याओं का समाधान मिलता जायेगा क्योंकि वैराग्य हितकारी परोपकार होने के साथ सामाजिक नीति क्या पारस्परिक हित की भावनाओं से सम्पृक्त है। यर्थाथत: वैराग्य और गृहस्थ की यही परिभाषा है। इसमें आडम्बर के लिए लेश मात्र भी स्थान नही है।

खरहरी कोठी
पो० बुनियादगंज, गया - 823003
9471605890

✦

मगह गयादिक तीरथ जैसे

डॉ० कमला गोखरू

भगवत्प्रेम तथा तीर्थो के प्रति आदर भाव ने मुझे कुछ लिखने के लिए प्रेरित किया है। गया धाम की यात्रा से लौटने के बाद मन में गया धाम के प्रति अनुरक्ति हुई और उसने गया धाम की महत्ता स्वीकार कर ली। किन्तु गोस्वामी तुलसीदास ने ''मगह गयादिक तीरथ जैसे'' क्यों कहा ?यह प्रश्न देर तक मन मस्तिष्क में कौंधता रहा तथा अंतत: इस तथ्य को उन्वेषण के लिए बाध्य कर दिया। फलत: शोध के लिए मैं बड़ा श्रद्धा के साथ काशी के तुलसीघाट पर गई। गोस्वामी जी ने सुदीर्घकाल तक काशी में निवास करके साधना की थी तभी राम कथा कहते हुए उन्होंने वहाँ कई ग्रंथो की रचना भी की थी। गंगा के किनारे जिस घाट पर वे रहते थे उसका नाम कालांतर में तुलसी घाट पड़ा जो उसी घाट के समीप ही है किन्तु तुलसी बाबा के नाम पर वह घाट आज भी तुलसी घाट के नाम से प्रचलित है। वहाँ पड़ी एक जीर्ण पुरानी नाव को दिखा कर एक बूढ़े पुजारी ने मुझे बतलाया कि यह वही नाव है जिस पर चढ़कर तुलसी बाबा गंगा के उस मगह जाया करते थे। वे अक्सर मगध आया-जाया करते थे इसलिए उन्हें मगध से भी लगाव था तथा काशी के साथ ही उन्होंने मगह की भी प्रशंसा की है।

कासी मग सुरसरि क्रमनासा।
मरू मारब महिदेव गँवासा।।

गोस्वामी जी द्वारा काशी की तुलना मगध से किये जाने के पीछे कुछ महत्त्वपूर्ण कारण थे जिसका विवेचन यहाँ प्रासंगिक है।

सर्वप्रथम तो उनके (काशी के) बाजू में या बगल में मगध ही था। दूसरी ओर उपमेय हमेशा ऊपमान के समतुल्य ही होता है। अत: तुलना के लिए समान गुणवत अपेक्षित है। अत: धर्म और पवित्रता के क्षेत्र में मगध में काशी की समानता पाकर गोस्वामी जी ने दोनो की तुलना की तथा मगध का महिभाजन किया। उक्त अर्धाली की रचना उन्होने मगध की महिमा प्रतिपादित करने के लिए ही की है।

आगे वायु पुराण, मार्कण्डेय पुराण एवं महाभारत आदि ग्रंथो के भी देखने का अवसर मिला तब मगध क्षेत्रीय गयादि तीर्थो की महिमा समझ में आई। काशी भगवान शिव का निवास तथा काशी को शिव की नगरी बतलाया जाता है। वहाँ जो कुछ पूजा-पाठ होता है वह भगवान शिव के 'शिरोभाग' तक ही सीमित है। पुष्कर में प्रजापति ब्रह्मा का एकमात्र मंदिर है। वहाँ सर्वांग की पूजा होती है।

देवभूमि के विधि–विधान में भी सर्वाग पूजा दृष्टि है। परन्तु गया ही एकमात्र तीर्थ है जहाँ विष्णु अथवा भगवान नारायण के पद यानि चरण की पूजा होती है। वहाँ कोई सर्वांग पूजा पद्धति नहीं है, सिर्फ पद की पूजा होती है। वहाँ के विश्व प्रसिद्ध मन्दिर का नाम 'विष्णुपद मन्दिर' है जहाँ काले शलिग्राम पत्थर के पहाड़ पर भगवान विष्णु के चरण चिन्ह है। वह चरण–विग्रह यहाँ आदिकाल से पूज्य रहा है। शेष बहुत सारी देव–मूर्तियाँ बाद में स्थापित की गई हैं। मुख्य पूजा विष्णु चरण की ही होती है। अगर पौराणिक मान्यताओं पर ध्यान दे तो अनेक धार्मिक सम्प्रदायों और मतावलम्बियों में केवल वैष्णव ही ऐसे है जो चरण–पूजन करते हैं। दृष्टांत रूप में देखे तो पौराणिक आख्यानों के अनुसार गंगा भगवान विष्णु के चरण जटित चन्द्रकांतमणि के द्रवीभूत होने से निष्पन्न है जिसे ब्रह्म ने अपने कमंडल में तथा भगवान शिव ने अपने सिर पर जटाजूट में धारण किया है। अतः वैष्णव सम्प्रदाय में सिर्फ चरण को ही पूज्य माना गया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना सत्य हरिश्चन्द्र नाटक के तीसरे अंक में गंगा की पौराणिक महिमा का उल्लेख करते हुए कहा है –

श्री हरिपद नखचन्द कांतभनि जड़ित सुधारस
ब्रह्म कमंडल मंडल भव खण्डन सुर सरबरन
सिब सिर मालती माल भगीरथ नृपति पुण्य फल

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक : तृतीय अंक

वैष्णव सम्प्रदाय में पूजा सिर्फ चरण की होती है। विशिष्ट अवसरो में हमारे यहाँ बड़ों के चरणपूजन का ही विधान है। गोस्वामी जी ने भी राम चरित मानस के आरंभ में गुरू चरण की वन्दना की है आगे बढ़ कर वे नख तक सीमित हो जाते है।

वन्दऊ गुरू पद पदुमपरागा।
सुरूचि सुबास सरस अनुरागा।।
श्री गुरूपद नख मनिगन जोती।
सुनिश्चत दिव्य दृष्टि हिज होती
दलत मोह तम सो स प्रकासू।

किन्तु इस ज्योति के पाना आसान नही है और जिसके हृदय में यह ज्योति नहीं आई वह इस रहस्य को समझ नहीं सकता।

इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर की अमर कृति यह विष्णु मंदिर विश्व विख्यात है और इसकी ख्याति का कारण इसकी बनावट, कला सौन्दर्य, साफ सफाई और कुछ भी नही है। इसलिए यह विख्यात है कि यह तरण–तारण है। सनातन धर्म में मोक्ष की बड़ी कीमत है। मोक्ष प्राप्ति की कीमत बहुतो ने बहुत तरह से चुकाई है। बैकुण्ठी जैन धर्म में भी "अन्ते आवश्यक" है। और यह मुक्ति गया में ही सम्भव है। इसलिए किसी की मुक्ति पद सेवन से ही हो सकती है। इसलिए इस मुक्ति धाम में चरण का महत्व है। इस तरह की पूजा चरण–पूजा गया के अतिरिक्त और कही नहीं होने के कारण इसका महत्त्व बढ़ जाता है। इस चरण को निरंतर पखारने वाली फल्गु की महिमा भी इसी में सन्निहित है। पुराण कहते है कि काशी में तो मरने पर मुक्ति मिलती है, परन्तु विश्व के किसी भी कोने में कोई मरता है और उसे खानदान का कोई भी वारिस आकर फल्गु में जल देता है, तो उड़ने वाली धूल ही उसके सारे पुरखो को (पितृजनों को) मुक्त कर देती है। यह कोई गल्प नही शास्त्रोक्त है। इसलिए सत्य और प्रमाणिक है।

समचुम मैं अपनी अनुभूति बतला रही हूँ। मुझमें इसकी अनुभूति मिली है। विष्णुपद मंदिर में और वहाँ से निकल कर गदाधर भगवान के मन्दिर के सामने श्रृंगेरी मठ के बगल वाली सीढ़ियो से फल्गु नदी में उतरते समय कुछ ऐसा दिव्य अनुभव हुआ है, जिसे याद कर हमेशा रोमांच हो जाता है और उस मन्दिर तथा फल्गु की पावन धारा के प्रति एक दिव्य आकर्षण बन आता है। वह अनुभूति शब्दो में अवर्णनीय है। मगध क्षेत्र के ऐसे "गयादिक तीर्थको, उस पुण्यमय भूमि को मैं बार–बार अपना साष्टांग प्रणाम निवेदित करती हूँ।

हार्ट सेन्टर
जवाहर रंगमंच के निकट
अजमेर (राजस्थान)

मंदिरो के नगर में

सुश्री सुमित्रा कुमारी

गया ज्ञान एवं मोक्षकी नगरी है। ज्ञान को ही शायद मोक्ष कहा जाता है। इसलिए ज्ञान–विज्ञान संयोग होने से उत्पन्न प्रकाश के कारण को मोक्षधाम की संज्ञा इसे दी गई है। इस ज्ञान–विज्ञान का स्त्रोत यहाँ के मन्दिर ही रहे है, वे भग्नावशेष के रूप में हो या सौंदर्यमंडित हो। इसलिए गयाधाम में विश्व की सभी पुरियों, सभी तीर्थो एवं सभी धामो का वास कहा जाता है। ऐसी ही जगनाथ मंदिर भी गया के दक्षिणी भाग बोधगया में अवस्थित है। यहाँ श्री जगन्नाथ सुभद्रा एवं बलदेव का विग्रह है। वैसे तो शास्त्रों में इन सप्तपुरियों के नाम लेने भर से ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है परन्तु जो जगन्नाथ के दर्शन करते है उन्हें पुनः इस लोक में आना नहीं पड़ता है। परन्तु इस नगर में मंदिरो की भौतिक स्थिति इस तरह खराब हो गई थी कि उसमें बैठना तक भी मुश्किल हो गया था। सचमुच लोग यहाँ तक कहने लगे थे कि दूर से दर्शनकर लीजिए – यह कला मंदिर है। परन्तु नगर के मन्दिरो का पुनरूद्धार हुआ नगर सेठ के नाम से ख्याति प्राप्त दानवीर जिसका हृदय एवं मस्तिष्क सेवाभाव से प्लावित था – शिवराम डालमिया ने इसका बीड़ा उठाया। शिवराम डालमिया के हृदय में इस प्रकार जगन्नाथ का वास हो गया था कि जाड़े की कंपकपाती ठढ एवं गर्मी की तेज लहर एवं वर्षा की प्रचण्ड धार ने भी विचलित नही होने दिया। यहीं तक नहीं अपने रूग्ण शरीर को भी उन्होने आड़े नही आने दिया और उनके प्रयास से जगन्नाथ मंदिर बोधयगा आज जिस रूप मे है उसके सामानान्तर कोई दूसरा मन्दिर नही है। सौंदर्यीकरण हो या राग–भोग, अभ्यागत सेवा हो पतितोद्वार – शिवराम की प्रयास से ही आज भी जगन्नाथ मंदिर अपना आगोश फैलाए स्वागत को तैयार ही नहीं तत्पर हैं। यह नही अन्य वेदियों का भी उद्धार शिवराम बाबू ने किया। वस्तुतः यह चिन्ता की बात हो गई थी कि बाहर से आने वाले अतिथियो, पिण्ड दानियो एवं दर्शनार्थियों की धारणा गया धाम के प्रति अच्छी नही बनती थी। परन्तु अपने सेवा भाव, दान–भाव, कर्तव्य – भाव एवं ऋण भाव से शिवराम बाबू ने काम किया वह भी ऐसा कि दायें हाथ से दिया गया दान बाऐ हाथ को भी पता नहीं चला चुपचाप ये सारे कार्य हुए जिसमें अखबार वालो, या अन्य मिडिया की कोई भूमिका नहीं। आज शिवराम बाबू नहीं हैं, परन्तु आज पुनः गया की अन्यान्य वेदियाँ दोनां हाथ उठाकर या तो शिवराम बाबू की जय–जयकार कर रही है या उन्हें सहायतार्थ बुला रही है। यही मोक्ष है।

पुस्तकालय अध्यक्ष
राम लखन सिंह यादव कॉलेज, गया

✦

इक्कीसवीं सदी में गया का शैक्षणिक वातावरण

डॉ० मनोज कुमार अम्बष्ट

दिनांक 15 नवम्बर 2000 को बिहार से झारखण्ड के पृथक होने के पश्चात बिहार में गया अपनी विशिष्टताओ के कारण राजधानी पटना के बाद विकल्प के रूप में उभरा। दो धर्मो की महत्वपूर्ण स्थली, अन्तर्राष्ट्रीय पहचान, सड़क रेल और वायु मार्ग से जुड़े मैने बाढ़ की विभीषिका से दूर प्रमंडलीय मुख्यालय और राजधानी पटना तथा झारखण्ड दोनों से मात्र 100 कि०मी० की दूरी जैसे घटको में इसे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालीय शिक्षा की स्थिति तो यथावत बनी रही पर माध्यमिक शिक्षा, विश्वविद्यालीय शिक्षा, तकनकी प्रबंधन एवं व्यावसायिक शिक्षा तथा शिक्षण और प्रशिक्षण में गुणात्मक सुधार हुए।

माध्यमिक शिक्षा में सरकारी विद्यालयों की स्थिति पूर्ववत बनी रही, पर निजी क्षेत्र से अधिक सुविधायुक्त और बेहतर शिक्षा से जुड़े सस्थान खुलने लगे। डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल की कई शाखाएं बीसवी सदी के अंतिम दशक तक खुल चुकी थी। सदी में दूसरे दशक में गया में दिल्ली पब्लिक स्कूल के दस्तक देते है। जी०डी० गोयनका पब्लिक सकूल, बिड़ला समूह के ओपेन माइंडस जैसे प्रतिष्ठित विद्यालय खुले। इनमें शिक्षा तो अपेक्षाकृत महँगी थी पर उसका स्तर गुणात्मक था। साथ ही सीमित तथाकथित अच्छे विद्यालयों के नामाकंन की आपाधापी से थोड़ी राहत भी मिली।

उच्च स्तरीय शिक्षक और प्रशिक्षण के द्वार खुलने की कड़ी में पहला स्थान बिहार लोक प्रशासन से ग्रामीण विकास संस्थान का है जो भवन निर्माण की प्रत्याशा में वाल्मी, फुलवारीशरीफ पटना में संचालित हो रहा है। यह गया की जनता की आँखो के सामने अभी भले ही कार्यरत नही है, पर इसकी जानकारी अपेक्षित है।

बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान –

बिहार के विभाजन के उपरानत श्रीकृष्ण लोक प्रशासन संस्थान (प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान) एवं राज्य ग्रामीण विकास संस्थान (एस०आई०आर०डी०) राँची मे रह जाने के कारण बिहार सरकार को बिहार संवर्ग में भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों और बिहार प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु शीर्ष प्रशिक्षण संस्थान की आवश्यकता हुई।

बिहार सरकार ने अधिसूचना संख्या 68 दिनांक 28 मार्च 2002 के आलोक में प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान तथा अधिसूचना सं० 7036 दिनांक 15 सितम्बर 2005 के आलोक में राज्य ग्रामीण विकास संस्थान की स्थापना का निर्णय लिया। बाद में इन दोनो का विलय कर बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान (विपार्ड) का स्वरूप दिया गया तथा इसे इंडियन सोसायटीज एक्ट 1860 के अन्तर्गत पंजीकृत करवाया गया जो दिनांक 1 अप्रैल 2006 से प्रभावी हुआ। यह संगठन लोक प्रशासन, ग्रामीण विकास आपदा प्रबंधन पंचायती राज, गैर सरकारी संगठन, शहरी विकास, भूमि, जलप्रबंधन, स्वच्दता सबंधी प्रशिक्षण एवं शोध हेतु बिहार सरकार से शोध संस्था है, यहाँ भारतीय प्रशासनिक सेवा में बिहार संवर्ग के अधिकारियों तथा बिहार प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को प्रशिक्षित किया जायेगा। इसमें महानिदेशक अतिरिक्त मुख्य सचिव स्तर के होगें। संस्थान सम्प्रति वाल्मी, फुलवारीशरीफ पटना में संचालित हो रहा है। इसका विशाल एव भव्य संस्थान सह आवासीय परिसर गया के ब्रह्मयोनि पहाड़ी के दक्षिण के बाईपास पर गया–डोभी मार्ग से लगभग एक किलोमीटर पूरब पहाड़पुर में हो रहा है। आम जनता एवं छात्र भले ही इससे लाभान्वित न हो, गया में उसकी उपस्थिति गौरव की बात होगी।

गया इंजीनियरिग कॉलेज :–

सन् 1980–1994 के बीच निजी क्षेत्र में मगध इंजीनियरिंग कॉलेज के रूप में गया–खिरजसराय रोड पर श्रीकृष्ण नगर पो० नगरीआवाँ में शिक्षा संस्थान को बिहार सरकार द्वारा दिनांक 19 नवम्बर 2008 को गया इंजीनियरिंग कॉलेज के रूप में पुनजीर्वित किया गया। सम्प्रति यह आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी पटना में संबद्ध है और इसमें विभिन्न शाखाओं में 960 विद्यार्थी अध्ययनरत है।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम :–

2009 के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा स्थापित सोलह नये विश्व विद्यालयों में से एक सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार की स्थापना गया में करने का निर्णय केन्द्र सरकार ने लिया। गया में भवन निर्माण के पहले की आई० टी० कैम्पस पटना में इसका अध्यापन कार्य शुरू दिया गया। प्रो० जनम पांडेय इसमें पहले उप कुलपति और प्रो० एम० निहाल इसके पहले रजिस्ट्रार बने। बाद में पटना कैम्पस के साथ ही न्यू एरिया बिसार तालाब मुहल्ला गया में एक किराया के मकान में कक्षाएँ प्रारम्भ की

गयी जो सम्प्रति वहाँ से स्थानान्तरित होकर विनोवा नगर चंदौती गया में कार्यरत है। मोतिहारी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय रखा गया। दिनांक 26 सितम्बर 2013 ई में विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षान्त समारोह संपन्न हुआ। गुरूवार दिनांक 27 फरवरी 2014 को दोपहर 12:26 बजे ततकालीन लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने जिला मुख्यालय गया से 14 कि०मी० उत्तर पश्चिम गया पंचानपुर रोड पर दरियापुर में सेना द्वारा हस्तान्तरित तीन सौ एकड़ भूमि पर छह सौ करोड़ के लागत से बनने वाले प्रस्तावित भवन का शिलान्यास किया। ज्ञातव्य है कि श्रीमती कुमार इस विश्वविद्यालय की पहली कुलाधिपति थी। सम्प्रति विश्वविद्यालय में नौ पाठ (स्कूल) 17 विभाग है। इसमें अतिरिक्त छह प्रस्तावित पीठ है। सन 2016 से एल०एल०एम०एम० एवं पी०एच०डी० कोर्स शुरू होने वाले है।

अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी (ओ.टी.ए), गया

शौर्य, ज्ञान संकल्प के आदर्श वाक्य के साथ दिनांक 18 जुलाई 2011 को उद्घाटित आफिसर्स ट्रेनिक एकेडमी, गया भारतीय सेना का तीसरा कमीशन पूर्व प्रशिक्षण अकादमी है। द्वितीय विश्व युद्ध के समय छावनी के रूप में स्थापित उस स्थान को बाद में सेना सेवा कोर (उत्तरी) बनाया गया और फिर यह वर्तमान स्वरूप में आया। गया जंक्शन से 7 कि०मी० दक्षिण-पश्चिम में गया-डोभी मार्ग और गया-शेरघाटी मार्ग के मध्य त्रिभुजाकार रूप में यह 870 एकड़ (3.2 वर्ग कि०मी०) में फैला है। अकादमी का दक्षिणी छोर गया विमानपत्तन को छूता है और देश की प्रसिद्ध सड़क जी० टी० रोड (एन० एच० 2) यहाँ से 20 कि० मी० से भी कम दूरी पर स्थित है। अकादमी के पूर्व में गया-डोभी मार्ग को पार करते ही ब्रह्मयोनि पहाड़ी का पश्चिमी छोर स्थित है, जहाँ पर ड्राइविंग ट्रैक, पोलो ग्राउंड इत्यादि है। इस क्षेत्र के वृक्षारोपण कर गया के तापमान को कम करने का सफल प्रयास गया के पर्यावरण को भारतीय सेना की महत्वपूर्ण देन है। इस अबादमी के पहले कमाण्डेन्ट लेफ्टिनेन्स जेनरल विजय शर्मा बने। जुलाई 2011 से जून 2012 तक इसके पहले बैच में 149 अधिकारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिनका पासिंग आउट परेड दिनांक 8 जून 2012 को संपन्न हुआ। इस अकादमी की क्षमता 750 कैउटस की है। उम्मीद हैकि भारतीय सेना में अधिकारियों की कमी को दूर करने में इस अकादमीकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। हालांकि इस अकादमी के स्थापित होने के सौ वर्ष पूर्व ही पुरानी जेलखाना गया के श्री नन्द किशोर लाल जिनके कई वंशज भारतीय सेना के महत्वपूर्ण पदो को सुशोभित कर चुके है ने देश में मिलिट्री कॉलेज खोलने और बिहारियों की सेना में भर्ती की मांग की थी।

भारतीय प्रबंधन संस्थान बोधगया :-

सन् 2014 के केन्द्रीय बजट में नयी सरकार द्वारा घोषित तथा दिनांक 24 जून 2015 को केन्द्रीय मंत्रिमंडल के फैसले के आलोक में तत्कालीन मुख्यमंत्री और गया निवासी श्री जीतन राम माँझी के सद्प्रयास से अंतर्राष्ट्रीय शहर बोध गया के मगध विश्वविद्यालय के कैम्पस में भारतीय प्रबंध संस्थान की स्थापना हुई। मगध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति मो० इश्तयाक अहमद ने सरकार के निदेश पर विश्वविद्यालय की 110 एकड़ भूमि इस संस्थान को हस्तांतरित की। तसरी पीढ़ी के छह नये भारतीय प्रबंध संस्थानो में से एक यह भारत का सोलहवाँ भारतीय प्रबंध संस्थान है। भारतीय प्रबंध संस्थान कोलकाता उस साल का (सेंटर) दिनांक 31 अगस्त 2015 सोमवार को भारत सरकार की तत्कालीन मानव संसाधन मंत्री श्रीमती स्मृति इरानी ने इस संस्थान का उद्घाटन किया और मगध विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा संस्थान के भवन से 30 छात्रों के साथ पहले सन की शुरूआत हुई। मगध वि० वि० ने से अपना छात्रावास भी प्रदान किया।

राजकीय पोलिटेनिक टिकारी :-

बिहार सरकार के मंत्रिमंडल द्वारा सन् 2015 के लिए गये एक निर्णय के आलोक में राज्य में दस पॉलिटेकनिक स्थापित किये गये जिनें राजकीय पॉलिटेनिक टेकारी भी है। यह मगध प्रमडल का

दूसरा राजकीय पॉलिटेकनिक है। इन पॉलिटेकनिक का शैक्षणिक सत्र2016 में प्रारंभ हो गया राजकीय पॉलिटेकनिक टिकारी के प्रस्तावित भवन का निर्माण मखदुमपुर, टिकारी में होगा। सम्प्रति, यह संस्थान राजकीय पॉलिटेकनिक गया के नव निर्मित भवन से संचालित हो रहा है।

7. **राज्य वानिकी प्रशिक्षण संस्थान** – सोमवार दिनांक 5 सितम्बर 2016 को शाम में बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने बाइपास स्थित कोसडिहरा गाँव में राज्य वानिकी प्रशिक्षण संस्थान का उद्‌घाटन किया जहाँ वन विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्राप्त होता है। उन्होने उस दिन से छह दिवसीय वनरक्षी प्रशिक्षण सत्र में प्रशिक्षणर्थियों को संबोधित भी किया।

इन संस्थानो के गया में अवस्थित होने से संभव है कि गया की जनता को प्रत्यक्षत: बहुत लाभ न हो, पर यहाँ के शैक्षणिक वातावरण में गुणात्मक सुधार होगा और राष्ट्रीय स्तर के संस्थानो के खुलने से शिक्षा के क्षेत्र में गया की चर्चा राष्ट्रीय स्तर पर अवश्य होगी। गया के सामाजिक जीवन पर इसका शैक्षणिक व्यावसायिक और सीमित रोजगार का मिश्रित प्रभाव पड़ेगा, यह निस्संदेह है।

उप प्रबंधक
भारतीय स्टेट बैंक
क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालय, सासाराम

✦

वृषोत्सर्गसमं किञ्चित् साधनं न दिव: परम्

डॉ० रामनिहोर पाण्डेय

वृषोत्सर्ग सनातन धर्मावलम्बियों का और्ध्वदैहिक कृत्य (श्राद्ध–कर्म) का एक अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण धार्मिक कृत्य है। धर्मशास्त्रों में इसकी अनेकत्र अनिवार्यता एवं धार्मिक् महत्ता प्रतिपादित है। महाभारत (अनुशासन पर्व 125, 73–74) में जब ऋषियों ने पितरों से प्रश्न किया कि कौन–सा कर्म करने से मनुष्य पितृऋण से मुक्त होता है, तो पितरों ने कहा कि 'नीले रंग के वृषोत्सर्ग करने, अमावस्या को तिलमिश्रित जल द्वारा तर्पण करने एवं वर्षाऋतु में दीपदान से मनुष्य पितृऋण से मुक्त हो जाता है' –

नीलषण्डप्रमोक्षेण अमावस्यां तिलोदकै:।
वर्षासु दीपकैश्यैचव पितृणामनृणो भवेत्।।

इसी में आगे (वही, 78, 79–80) कहा गया है कि 'छोड़े हुए नील रंग के सांड की पूँछ यदि नदी आदि के जल में भीग कर उस जल को ऊपर उछालती है तो सांड छोड़ने वाले के पितर साठ हजार वर्ष तक उस जल से तृप्त रहते हैं। यदि छोड़ा गया वृषभ नदी या तडाग के तट पर अपने सींगों से कीचड़ उछाल कर खड़ा होता है तो वृषोत्सर्गकर्त्ता के पितर–लोक में जाते है –

नीलषण्डस्य लाड़गूलं तोयमभ्युद्धरेद् यदि।।
षष्टिं वर्षसहस्राणि पितरस्तेन तर्पिता:।।
यसतु श्रंगतं पंक कूलादुद्धत्य तिष्ठति।।
पितरस्तेने गच्छन्ति सोमलोकमसंशयम्।।

मत्स्यपुराण (22–7) में आख्यात है कि मनुष्यों को अनेक पुत्रों की अभिलाषा करनी चाहिए। क्योंकि उनमें से यदि एक पुत्र भी गया की यात्रा करेगा अथवा अश्वमेद्य यज्ञ का अनुष्ठान करेगा या नील वृष का उत्सर्ग कर देगा तो हमारा उद्‌धार हो जायेगा।

एष्टव्या बहव: पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत्।।
यजेत् वाश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत्।।

इसी प्रकार ब्रह्मपुराण (श्राद्धकल्प) में विवृत है कि मनुष्यों को बहुत से पुत्रों की अभिलाषा करनी चाहिए। यदि उनमें से एक भी गया चला गया अथवा कन्या विवाह कर दिया या नील वृष का उत्सर्ग कर दिया तो पितरों को उत्तम गति प्राप्त हो जायेगी।

गरुड़पुराण के प्रेतकल्प (अध्याय 14-15) में विवृत है कि 'तीर्थ सेवन तथा दान में निरन्तर लगे रहने तथा अन्य साधनों में सम्पन्न होने पर भी किबवृषोत्सर्ग के सद्गति नही होती, अतएव मनुष्य को वृर्षोत्सर्ग अवश्य करना चाहिए। दान, तीर्थ, तपस्या, या संन्यास तथा पितृक्रिया आदि सभी धर्मों में वृर्षोत्सर्ग का विशेष महत्त्व है। अग्निहोत्र, विविध प्रकार के यज्ञ और दानादि से प्राणी वह सद्गति नहीं प्राप्त करता, जो वृषोत्सर्ग से प्राप्त करता है। समस्त यज्ञों में वृषोत्सर्ग यज्ञ श्रेष्ठतम है। अतएव प्रयत्न करके इसे सम्पन्न करना चाहिए-

अग्निहोत्रादिभिर्यज्ञैर्दानैश्च विविधैरपि।
न तां गतिमवाप्नोति वृषोत्सर्गेण या भवेत्।।
सर्वेषामेव यज्ञानां वृषयज्ञस्तथोत्तमः।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन वृषयज्ञं समाचरेत्।।

इसी पुराण में अन्यत्र (प्रेतकल्प 6.130) कहा गया है कि वृषोत्सर्ग के अतिरिक्त अन्य कोई भी साधन नही है जो मनुष्य को स्वर्ग प्राप्ति की सिद्धि प्रदान करे।

इसी में अन्यत्र (प्रेतकल्प अध्याय 14) आख्यात है कि जिस प्रकार संसार में संन्यासी तथा ब्रह्मचारी अत्यधिक पूजनीय होते हैं, उसी प्रकार वृषोत्सर्गादि कर्मों को करने वाले सभी पुण्यात्माएं भी इसी संसार में पूजी जाती है। हजार संक्रांतियों और शताधिक सूर्यग्रहण के पर्वों पर दान देने से जो पुण्य मिलता है वह मात्र एक नील वृष को छोड़कर ही मनुष्य प्राप्त कर लेता है -

संक्रान्तिनां सहस्त्राणि सूर्यपर्वशतानि च।
दत्त्वा यत्फलमाप्नोति तदै नीलविसर्जने।।

देवीपुराण तथा भविष्यपुराण में कहा गया है कि वृषोत्सर्ग करने से पुरूषों की दस पीढ़ी पिछली तथा दस पीढ़ी अगली पवित्र हो जाती है। धर्मशास्त्रों के आधार पर निर्णयसिंधुकार (पृष्ठ 1230) लिखते हैं कि जो पुत्र पिता के लिए वृषोत्सर्ग नहीं करता वह पुत्र, पुत्र नहीं अपितु उच्चार (पुरीष) है न करोति वृषोत्सर्ग सुतीर्थे व जलांजलिम्। न ददाति सुतो यस्तु पितुरूच्चार्यः एवं सः।।

वृर्षोत्सर्ग दो प्रकार का कहा गया है - नित्य तथा काम्य (स च नित्यः काम्यश्च। निर्णयसिंधु पृ० 1230) एकादशाह के साथ सम्पन्न किया जाने वाला वृषोत्सर्ग नित्य है तथा अन्य समय विशेष प्रयोजन से किया जाने वाला वृषोत्सर्ग काम्य है। विष्णुधर्मसूत्र के अनुसार काम्य वृषोत्सर्ग आश्विन या कार्तिक मास की पूर्णिमा को किया जाता है। गरूड़ पुराण में इसे आश्विन मास के मध्य में कार्तिक, माघ तथा वैशाख मास की पूर्णिमा, संक्रान्ति तथा अन्य पुण्यकालो, व्यतिपात तथा पिता की क्षयाह तिथि पर करना प्रशंसनीय माना गया है। भविष्य पुराण में चैत्र मास तथा वैशाख मास की तृतीया को करने की बात कही गयी है।

गरुड़पुराण (प्रेतकल्प अध्याय 6 व 9) में राजा वीरवाहन द्वारा मथुरा में वृषोत्सर्ग करने, बंगदेश के राजा बभ्रुवाहन द्वारा कार्तिक मास की पूर्णिमा को अपने नगर में विदिशा नगर निवासी सुदेव नामक वैश्य के लिए वृषोत्सर्ग करने तथा विराधनगर के विश्वम्भर नामक वैश्य द्वारा पुष्कर तीर्थ में कार्तिक मास की पूर्णिमा को वृर्षोत्सर्ग करने का विशद् वर्णन किया गया है। वीर वाहन ने वृषोत्सर्ग कर के स्वर्ग में स्थान प्राप्त किया था। बभ्रुवाहन ने वृषोत्सर्ग करके प्रेतवाहन नाम प्रेत, जो मृत्यु के पूर्व सुदेव नामक वैश्य था, को प्रेतत्व से मुक्त किया था। विश्वम्भर नामक वैश्य वृषोात्सर्ग करने के फलस्वरूप अनेक तीर्थों के भ्रमण तथा दिव्य विषयों को भोगने के बाद वीरसेन के राजकुल में जन्म लेकर वीरपंचानन नाम से ख्याति प्राप्त की। काम्य वृषोत्सर्ग स्वयं के साथ-साथ व्यक्ति आचार्यवरणपूर्वक भी कर सकता है। नित्य वृषोत्सर्ग मृतक के एकादशाह (अथवा द्वादशाह) कृत्य के साथ ही किया जाता है और इसे श्राद्धकर्ता स्वयं करता है न कि आचार्यवरण द्वारा (अत्र स्वंयमेव सर्व कुर्यान्न तु काम्यवृषोत्सर्ग वदाचार्यवरणम् धर्मसिन्धु, पृष्ठ 742)। इसे घर पर नहीं करना चाहिए (अयं गृहे न कार्यः)। गरूड़पुराण (प्रेतकल्प, 5, 40-41) में कहा गया है कि जिसके एकादशाह में वृषोत्सर्ग नहीं किया जाता उसकी प्रेतत्व से निवृति नहीं होती। वृषोत्सर्ग से ही प्रेतत्व से

निवृति होती है, अन्य साधन से नही। वृषोत्सर्ग के बिना जो पिण्डदान दिया जाता है वह पूर्णतया निष्फल होता है। उससे प्रेत का कोई उपकार नहीं होता –

एकादशाहे प्रेतसय यसयोत्सृज्येत नो वृषः।
प्रेतत्वं सुस्थिरं तस्य दत्तैः श्राद्धशतैरपि।।
अकृत्वा यद्‌वृषोत्सर्गं कृतं वै पिण्डपातनम्।।
निष्फलं सकलं विद्यात्प्रमीताय न तद्‌भवेदत्।।

अतः पुत्र, सहोदर भ्राता, पौत्र, बन्धु-बांधव, संगोत्री अथवा सम्पत्ति लेने वाले अधिकारी, जो भी हो, उसे मरे हुए स्वजन के लिए वृषोत्सर्ग अवश्य करना चाहिए। पुत्र के अभाव में पत्नी, दौहित्र और दुहिता (पुत्री) भी इसे कर सकती है। पुत्रों की उपस्थिति में अन्य से इसे नहीं कराना चाहिए। जब मनुष्य की और्ध्वदैहिक क्रिया (वृषोत्सर्ग) करने वाला कोई न हो, तो मनुष्य स्वंय अपना जीवित श्राद्ध करे तथा वृषोत्सर्ग करे। यदि वह स्वयं न कर सके तो राजा और्ध्वदैहिक आदि क्रिया करें। राजा बभ्रुवाहन ने विदिशा नगर निवासी सुदेव नाम वैश्य के लिए वृषोत्सर्ग किया था।

वृषोत्सर्ग में किस प्रकार के वृषभ का उपयोग किया जाये, इसकी धर्मशास्त्रों में विशद विवेचना की गयी है। गरूड़ पुराण (प्रेतकल्प 6-19. 20) के अनुसार जो वृषभ लाल वर्ण का हो, जिसका मुँह एवं पुच्छ पाण्डु (श्वेत-पीतमिश्रित) हो, खुर तथा सीगों का वर्ण पीत हो वह नील वृष कहा जाता है

लोहितो यस्तु वर्णेन मुखे पुच्छे च पाण्डुरः।।
पीतः खुरविषाणेषु स नीलो वृश उच्यते।।

इसी पुराण में आगे कहा गया है कि ब्राह्मण को श्वेतवर्ण, क्षत्रिय को लोहितवर्ण, वैश्य को पीतवर्ण तथा शुद्र को कृष्णवर्ण का वृषभ उपयोग में लाना चाहिए। मत्स्यपुराण (207-38) के अनुसार जिस वृषभ के चारों चरण श्वेत हो तथा शेष शरीर का रंग लाह-रस के समान हो उसे नील वृषभ कहते हैं –

चरणानि मुखं पुच्छं यस्य श्वेतानि गोपतेः।
लाक्षारसर्वणश्च तं नीलमिति निर्दिशेत्।।

इसी पुराण (207, 16-18) के अनुसार ब्राह्मण के लिए ताम्र वर्ण अथवा कपिल वर्ण का वृषभ श्रेष्ठ होता है। लाल रंग के चिकने रोम वाला क्षत्रिय के लिए, सुवर्ण के समान वर्ण वाला वृषभ वैश्य के लिए तथा काले रंग का वृषभ शूद्र के लिए उत्तम माना गया है।

वर्णतस्ताम्रकपिलो ब्राह्मणस्य प्रशस्यते।
स्निग्धे रक्तेन वर्णेन क्षत्रिस्य प्रशस्यते।।
कांचनाभेन वैश्यस्य कृष्णेनाप्यन्त्यजन्मनः।।

इसी में (207-33, 35, 36) कहा गया है जिसकी लम्बी तथा मोटी पूंछ पृथ्वी पर रगड़ खाती हो और जिसका अगला भाग उठा हो वह नील वृषभ प्रशंसनीय माना गया है। जो घुमाए जाने पर स्वंय दाहिने घूमते हो और जिनके सिर तथा कन्धे समुन्नत हो वे धन्य तथा अपने समूह को बढ़ाने वाले होते है, जिसके सींगों के अग्रभाग तथा नेत्र लाल हो, श्वेत वर्ण का हो तथा खुर प्रवाल के समान लाल हो तो उससे श्रेष्ठ कोई वृषभ नहीं होता।

अन्यत्र इसी पुराण (207, 22-29) में आख्यात है कि काले तालु, ओंठ तथा मुखवाले, रूखे सींगो तथा खुरो वाले, अव्यक्त रंग वाले, नाटे, बाघ तथा सिंह के समान भयानक, काक तथा गृद्ध के समान रंग वाले, मूषक के समान अल्पकाय, काने, लूले, लंगड़े, ऊँची-नीची आंख वाले और विषम पैरो में श्वेत रंग वाले वृषभ का उपयोग नहीं करना चाहिए। धर्मसिंधुकार के अनुसार वृष एक वर्ष या दो वर्ष का हो तथा उसके साथ तीन, चार अथवा एक वत्सरी भी होनी चाहिए। यदि इन लक्षणों से युत वृषभ उपलब्ध न हो तो जो उपलब्ध हो उसी का उत्सर्ग कर दिया जाना चाहिए। गोशाला से वृषभ तथा वत्सरी (तीन, चार अथवा एक) मंगवाकर उसकी निम्न रूप से सम्यक प्रार्थना करें।

धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दायकः।
अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः शानितं प्रयचछ में।।
गरूड़ (प्रेतकल्प 6-23)
गंगायमुनयोःपेयमन्तर्वेदि तृणं चर।
धर्मराजस्य पुरतो वाच्यं में सुकुतं वृष।।वहीं 25

धर्म त्वं वृषरूपेण ब्रह्मणा निर्मितः पुरा।
तवोत्सर्गप्रभावान्मामुद्धरस्व भवार्णवात।।
गरूड़ (प्रेतकल्प 14–26–27)

'हे धर्म! आप वृषरूप में जगत को आनन्द देने वाले हैं। आप ही अष्टमूर्त्ति शिव के अधिष्ठान हैं। आप मुझे शान्ति प्रदान करें। आप गंगा–यमुना का जलपान करें तथा अनतर्वेदी में तृण चरे। वे वृष! धर्मराज के समक्ष मेरे पुण्यकर्म का वर्णन करें। हे धर्म! पुरातन काल में ब्रह्मा ने आपको वृष के रूप में बनाया है। आपके उत्सर्ग के प्रभाव से मेरा भवसागर से उद्धार हो। फिर किसी अयस्कार को बुलाकर उसके दाहिने कन्धे पर त्रिशूल तथा बांए ऊरूभाग पर चक्र अंकित करवाकर विधिवत् नहलाकर अलंकृत कर गंध, पुष्प, अक्षातादि से वत्सरी के साथ पूजन कर उत्सर्ग कर दे।

गरूड़पुराण (प्रेतकल्प, अध्याय 5) में कहा गया है कि यदि एकादशाह के समय यथाविधान वृषभ उपलब्ध न हो तो विद्वान ब्राह्मण कुश या चावल के चूर्ण (पिष्ट) का वृषभ बनाकर उसका उत्सर्ग करे।

एकादशोहेऽहिनसम्प्राप्ते वृषाभावो भवेद् यदि।
दर्भैः: पिष्टैश्य सम्पाद्य तं वृषं मोचयेद बुधः।।
वृषोत्सर्जनवेलायां वृषाभावः कथंचन।
मृत्तिकाभिश्च दीर्यौवा वृष त्वा विमोचयेत्।।

धर्मसिन्धुकार (पृष्ठ 742) ने भी इसका समर्थन किया और और कहा कि वृष के अभाव में मृतिका अथवा पिष्ट का वृषभ बनाकर होमादि विधि से उत्सर्ग करें – वृषाऽभावे मृदिभ:पिष्टैवा वृषभंत्वा होमादिविधिना वृषोत्सर्गः। किन्तु निर्णयसिंधुकार इस वचन को निर्मूल मानते हैं, जो उचित नहीं है। आजकल यदा–कदा वृषभ के स्थान पर वृषभ के प्रतीक रूप में नारियल का उपयोग किया जाता है। जंगलों के समाप्त होते जाते चारागाहों की कमी तथा उत्सर्जित वृषभ की असुरक्षा की दृष्टि से ये विकल्प उचित भी दिखते हैं तथा अनुकरणीय भी है। प्रतीकात्मक वृषभ के उत्सर्ग में उस पर चन्दन से त्रिशूल तथा चक्र अंकित कर देना चाहिए। संग्रह ग्रंथो में तथा गरूड़पुराण में विवृत है कि यदि पुत्रवाली तथा सौभाग्यवती स्त्री पति के सामने ही मृत्यु को प्राप्त हो जाय तो उसके लिए वृषोत्सर्ग न करे पयस्वनी गाय का दान करे।

वृषोत्सर्ग में मुक्त वृषभ को न तो बैलगाड़ी में जोते, न पकड़े। उसके साथ छोड़ी गयी, वत्सरी को भी न बांधना चाहिए न दुहना चाहिए –

विधारयेन्न तं कश्चिनन च कश्चन बाहोत।
न दोहयेच्च तां धेनु न न कश्चन बंधयेत।
धर्मसिन्धु (पृष्ठ 742)

मर्त्यलोक में प्राणी अकेला ही पैदा होता है, अकेले ही मृत्यु प्राप्त करता है और अकेले ही पाप–पुण्य का भोग करता है। बन्धु–बांधव मृत स्वजन को पृथ्वी पर मिट्टी का रेल और लकड़ी की भांति फेंक कर विमुख हो जाते है, धर्म ही उसका अनुसरण करता है। प्राणी का धन–वैभव घर में तथा बन्धु–बांधव, मित्रादि श्मशान में छूट जाते हैं। शरीर को अग्नि ले लेती है। केवल पाप–पुण्य ही जीवात्मा के साथ जाता है।

अतः देवकार्य से अधिक पितृकार्य का महत्व है। देवताओं से पहले पितरों को प्रसन्न करना चाहिए (देवकार्यादपि सदा पितृकार्य विशिष्यते। देवताभ्यः पितृणां हि पूर्वमाप्यायनं शुभम्। गरूड़ प्रेतकल्प (10,59)। प्राणी को मनुष्य जन्म बहुत बडे पुण्य से प्राप्त होता है। (महापुण्यप्रभावेण मानुष्यं जन्म लभ्यते)। तुलसीदास भी मानस में लिखते हैं कि मनुष्य का जन्म बड़े भाग्य से मिलता है। ये देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। ऐसा सभी ग्रंथो में कहा गया है (बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथहि गावा।) अतएव मानव–योनि प्राप्त कर शास्त्रानुकूल धर्माचरण करना चाहिए। जो ऐसा करता है उसे परम गति प्राप्त होती है। मनुष्य वृषोत्सर्ग करके न केवल पितरों को सद्गति प्रदान करता है, प्रत्युत अपना भी लोक–परलोक सुधारता है।

पूर्व-एसोसिएट प्रोफेसर
इलाहाबाद डिग्री कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

✦

गया श्राद्ध का समाजशास्त्र

श्री राजेन्द्र तिवारी

सदियों से विज्ञान के क्षेत्र में निर्बाध तरीके से हो रही तरक्की के बावजूद आम जनमानस में धर्म व पंथ आधारित कर्मकांड की पकड़ आज भी बनी हुई है। इसमें शक-संदेह की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। गया जी की धरती पर हर वर्ष पितृपक्ष (आश्विन महीने के पहले पखवाड़े) में जुटनेवाली लाखों की भीड़ इसका जीवंत उदाहरण व अकाट्य प्रमाण है। यहां पिंडदान करने से पितरो (पूर्वजो) को मोक्ष प्राप्त होता है या नहीं, इस पर बहस हो सकती है। गया श्राद्ध के पीछे धर्मांधता है या नही, इस पर भी तर्क-वितर्क चल सकता है, पर, स्वर्ग सिधार चुके अपने प्रियजनों को जन्म-मरण के झमेले से मुक्ति दिलाने की चाह में गया जी की धरती पर पांव रखने को आकुल-व्याकुल लोगों की भीड़ बड़ी संख्या में गरीब, मजदूर और जरूरतमंद लोगों की निजी अर्थव्यवस्था को एक हद तक मजबूती दिलाती है, इसमें किंतु-परंतु के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। ऐसा मानने का एक बड़ा कारण यह है कि तरक्की के अवसर की कमी में आर्थिक रूप से पिछड़ चुके गया व आसपास के ढेर सारे लोग साल भर इस आयोजन का इंतजार करते हैं। क्योंकि, यह आयोजन उन्हें उनके जीवन के अगले साढ़े 11 महीनों के लिए आजीविका का आधार मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है।

सरकारी व गैर-सरकारी एजेंसियों से मिलनेवाली जानकारी के मुताबिक हर वर्ष औसतन 5.5 – 6 लाख लोग पितृपक्ष में गया पहुंचते हैं। गया जैसे बिहार के एक छोटे शहर के लिए बाहर से आनेवाले लोगों की यह संख्या कम नहीं है। इस दौरान बाहर से आनेवालों की विभिन्न प्रकार की जरूरतें होती हैं। ऐसी जरूरतें, जिन्हें वे दबा नहीं सकते, नजर-अंदाज नहीं कर सकते मसलन चाय-नाश्ता, भोजन-पानी, आवास, दवा व ट्रांसपोर्ट आदि। इन जरूरतों से जुड़ी सुविधाएँ व सेवाएँ उपलब्ध कराने में बड़े वेंडरो के साथ ही बड़ी संख्या में ऐसे लोगों की भी भूमिका होती है, जिनके सामने दो जून की रोटियाँ जुटाने की चिंता रोज चुनौती बन कर खड़ी रहती है।

पितृपक्ष के दौरान गया आनेवाले आम तौर पर यह मान कर अपने घरों से निकलते हैं कि पूर्वजों के लिए मोक्ष की कामना मुफ्त नहीं हो सकती। इसकी कीमत चुकानी होगी। अत: वे खर्च करने की एक मानसिकता के साथ ही तैयारी कर चलते है। औसत आधार पर एक अनुमान है कि तब यहाँ आनेवाला हर शख्स करीब पांच दिन गया में ठहरता है और 2000-2500 रूपये प्रतिदिन खर्च करता है। अगर आनेवालों की संख्या पांच लाख भी मान ली जाये, तो स्पष्ट है कि पितृपक्ष में बाहर से आनेवाली भीड़ इस एक पखवाड़े में करीब 500 करोड़ रूपये गया के शहर-बाजार व समाज में खर्च करती है। पूर्वजों को मोक्ष के नाम पर और इसका सीधा लाभ स्टेशन व बस अड्डों पर उनके इंतजार में खड़े कुलियों से लेकर पंडा-पुरोहितो तक पहुंचता है। टैक्सेस के रूप में राज्य व केंद्र सरकारों तक भी, बीच में रिक्शाचालक, ऑटोचालक, चायवाले, पानवाले, मकानवाले, राशन व दवा दुकानवाले तक से इनकी जरूरतें जुड़ती हैं। पितृपक्ष के दौरान पिंडदानियों के इन सेवा-प्रदाताओं की आय आम दिनों की तुलना में दोगुनी से भी ज्यादा हो जाती है। कुछ मामलो में तो इनकी कमाई में तीन-चार गुणा तक की वृद्धि हो जाती है। इसके अतिरिक्त सेवा के नये-नये रास्ते भी खुल जाते है। मसलन पितृपक्ष के दौरान प्रेतशिला व ढुंगेश्वरी तक जानेवाले श्रद्धालुओं के लिए खटोलीवालो की सेवा, बहु-दिवसीय श्राद्ध के लिए लंबे समय तक गया प्रवास पर रहनेवालों के भोजन पकाने-बर्तन धोनेवालों की सेवा, बूढ़े-बुजुर्ग व बीमार लोगों के हाथ-पैर दबानेवालो की सेवा आदि। स्पष्ट है कि गया के शहर-समाज में पितृपक्ष

के आगे-पीछे करीब 20 दिनों तक प्रभावी दिखनेवालों एक खास किस्म के धार्मिक अर्थतंत्र के दायरे में आनेवाली ये तमाम सेवाएं-सुविधाएँ बाजार के साथ-साथ आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को भी काफी हद तक मजबूती दिलाती है। अत: इस गया-श्राद्ध के एक बड़े आर्थिक व समाजिक योगदान के रूप में देखा जाना चाहिए।

वैसे यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि गया-श्राद्ध देश दुनिया में दूर-दराज के इलाकों से ताल्लुक रखनेवाले लोगों को एक-दूसरे को देखने-सुनने व समझने का अवसर प्रदान करता है। इसका महत्त्व तब और ज्यादा महसूस होता है, जब हमें इस बात का ध्यान होता है कि भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा आज भी इस स्थिति में नहीं है कि वह अपने बल-बूते देशाटन-पर्यटन के लिए दूर कहीं जा सके। ऐसे में गया व आसपास के लोगों के लिए पितृपक्ष दो अलग-अलग भूभाग व समाज से आनेवाले लोगों से जुड़ने और अपने आचार-आचरण तथा सेवा-भाव से उन पर अपना प्रभाव छोड़ने का भी एक बड़ा अवसर होता है, इसमें भी दो राय की गुंजाईश नहीं।

वरिष्ठ पत्रकार, प्रभात खबर, पटना

✦

जन्म-मरण चक्र का अभाव ही मोक्ष

प्रो० अरुण कुमार प्रसाद

भारतीय दर्शन में वेदान्त दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। वेदान्त दर्शन का आधार उपनिषद् है। उपनिषद्, वेद का अन्तिम भाग है। वेद का अन्त होने के कारण उपनिषद् को वेदान्त कहा गया है। वेदान्त दर्शन का मूल है 'ब्रह्मसूत्र'। ब्रह्मसूत्र की रचना महर्षि बादरायण ने उपनिषदों के मतों में एकता को स्थापित करने के उद्देश्य से किया था। दार्शनिक दृष्टिकोण से महर्षि बादरायण का 'ब्रह्मसूत्र' बहुत ही संक्षिप्त और दुर्बोध था। अत: उनके बाद के विद्वानों ने ब्रह्मसूत्र परअपना अलग-अलग भाष्य लिखा। उन भाष्यकारों में शंकराचार्य एवं रामानुजाचार्य का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

शंकराचार्य का समय सन् 788 से 820 ई० माना जाता है। इनका ब्रह्मसूत्र पर लिखा भाष्य सबसे प्रसिद्ध है। शंकराचार्य अद्वैतवाद के प्रवर्तक एवं समर्थक है। इन्होने ब्रह्म एवं आत्मा को दो नहीं बल्कि एक माना है। इन्होंने ब्रह्म, जगत, आत्मा और मोक्ष पर बहुत ही गंभीर चिंतन किया है। ब्रह्म को वे अन्तिम सत्य मानते है। यही कारण है कि शंकराचार्य ने ब्रह्म को चरम तत्व के रूप में प्रतिष्ठित किया है। ब्रह्म के स्वरूप की व्याख्या शंकराचार्य ने पारमार्थिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से किया है। पारमार्थिक दृष्टिकोण से एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है और जगत मिथ्या है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से ईश्वर, जगत, जीव इत्यादि सभी के अस्तित्व पर विश्वास किया जाता है। शंकराचार्य व्यवहारिक दृष्टिकोण को भ्रम या माया कहते हैं। साधारण व्यक्ति का व्यवहारिक दृष्टिकोण माया की शक्ति से प्रभावित होता है। माया शक्ति से युक्त ब्रह्म सगुण ईश्वर के रूप में जाना जाता है। माया ईश्वर की शक्ति है, जिसके आधार पर वह विश्व का निर्माण करता है। माया के मूलत: दो कार्य हैं। पहला आवरण एवं दूसरा विक्षेप। आवरण के कारण ब्रह्म का वास्तविक स्वरूप हमसे छिप जाता है। विक्षेप के कारण सत्य के स्थान पर दूसरी वस्तु की प्रतीति हमें होती है। जैसे ब्रह्म के स्थान पर नानारूपात्मक जगत्। वस्तुत: सत्य पर पर्दा डालना और असत्य को प्रस्थापित करना माया के कार्य है। माया का अस्तित्व अविद्या में है। सत्य ज्ञान से अविद्या का नाश हो जाता है। जब तक हम माया भ्रान्ति से ग्रसित रहते हैं, तब तक यह संसार सत्य प्रतीत होता है। सत्य ज्ञान के पश्चात् इसका

अस्तित्व नहीं रहता है। जैसे जागे हुए व्यक्ति के लिए स्वप्न के दृश्य झूठे हो जाते है, वैसे ही ज्ञानी के लिए जगत मिथ्या हो जाता है।

शंकराचार्य ने आत्मा को ब्रह्म का ही रूप माना है। सत्य ज्ञान की प्राप्ति के बाद जीवात्मा शरीर के बंधन से मुक्त हो जाती है और ब्रह्म में विलीन हो जाती है, अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लेती है। मोक्ष का अर्थ जीवन-मरण के चक्र से या सभी प्रकार के सांसारिक दु:खों से छुटकारा पाना है। इस प्रसंग में एक राजकुमार का उदाहरण दिया जाता है कि यदि किसी राजकुमार को गड़ेरियों के बीच पाला-पोसा जाय, तो उसका राजकुमारत्व नष्ट नहीं होता है। परन्तु जब तक उसके राजकुमार होने का ज्ञान नहीं होता हैं, तब तक वह अपने को गड़ेरिया ही समझता है। यह राजकुमारत्व राजकुमार पर बाहर से आरोपित नहीं किया जाता है। यह उसकी अपनी अवस्था है, जिसे वह पुन: प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार अद्वैत के मोक्ष में भी एकमात्र आवश्यकता उस अज्ञानता को हटाने की है। सत्य ज्ञान द्वारा अज्ञानता का नाश हो जाता है। अज्ञान के समाप्त हो जाने पर यह स्पष्ट अनुभूति होती है कि जीव तो सदैव से ही ब्रह्म है। बंधन की अवस्था में इस सत्य पर आवरण पड़ा रहता है। मोक्ष की अवस्था में जीव ब्रह्म रूप में प्रकाशित हो जाता है।

शंकराचार्य ने जीव की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया है। जाग्रत अवस्था में हम विषयों के सम्बन्ध में मन और इन्द्रियों से जानते हैं। स्वप्नावस्था में इन्द्रियां काम नहीं करतीं, केवल मन क्रियाशील रहता है। स्वप्न देखने वाली आत्मा, परम आत्मा नही है। यही कारण है कि हम स्वप्न अपनी इच्छानुसार नहीं बना सकते। यदि ऐसा होता तो हम हमेशा सुहावने सपने ही देखते। गहरी नींद या सुषुप्तावस्था में मन और इन्द्रियाँ दोनों ही निष्क्रिय हो जाती हैं। आत्मा मानो अपने आप में विलीन हो जाती है और अपने वास्तविक स्वभाव को पा जाती है। यही एक प्रकार से अस्थायी रूप से जीव का ब्रह्म में विलीन हो जाना है। परन्तु यह मोक्ष की स्थायी स्वरूप नहीं है। यहाँ जीव की निरंतरता समाप्त नहीं होती है। व्यक्तित्व का केन्द्र सुषुप्तावस्था में भी बना रहता है। सुषुप्तावस्था और मोक्ष में यही अन्तर है। मोक्ष की अवस्था में अविद्या पूर्ण रूप से भस्म हो जाती है। वे सभी आवरण नष्ट हो जाते है, जो आत्मा के वास्तविक स्वरूप को छिपाये हुए थे। जीव आत्मस्वरूप अर्थात् ब्रह्म रूप में प्रकाशित हो जाता है और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। जहाँ दु:खो का पूर्ण विनाश हो जाता है।

शंकराचार्य के बाद वेदान्त के भाष्यकारो में रामानुजाचार्य का नाम विशेष रूप से आता है। इनका समय सन् 1027 से 1137 ई० माना जाता है। इन्होंने शंकराचार्य के अद्वैतवाद को अस्वीकार कर विशिष्टाद्वैतवाद को प्रस्थापित किया है। रामानुजाचार्य के अनुसार ब्रह्म परम सत्य है। ब्रह्म निर्गुण और निर्विशेष नहीं, बल्कि सगुण है। इसे रामानुज ईश्वर कहते हैं। ईश्वर एक है। ईश्वर के अतिरिक्त दो अन्य तत्त्व भी ब्रह्म में है, जिन्हें वे चित्त या चेतन और अचित्त या अचेतन कहते है। चेतन जीव है और अचेतन प्रकृति है। चित्त और अचित्त को ईश्वर का विशेषण माना गया है। ईश्वर को सृष्टि करने में चित्त और अचित्त दोनों तत्त्वों की आवश्कता पड़ती है। इस प्रकार ब्रह्म में ईश्वर, चित्त और अचित्त तीनों तत्त्वों की समष्टि है, फिर भी एक है। इसलिए रामानुजाचार्य के ब्रह्म को विशिष्टाद्वैत कहा जाता है। रामानुजाचार्य ने जगत् को सत्य माना है। जगत् ईश्वर की शक्ति प्रकृति का परिणाम है। रामानुजाचार्य के अनुसार आत्मा स्वभाव से ज्ञाता है। आत्मा का शरीर से सम्बन्ध कर्म-फल के कारण होता है। जीवों को कर्म करने के लिए संकल्प-स्वतंत्रता है। अतएव कर्म-फल भी उन्हें भोगने पड़ते हैं। यदि कर्म-फल का नाश हो जाय, तो शरीर सम्बन्ध की जरूरत नहीं होगी। इसलिए कर्मो और उनके फलों का आत्यन्तिक उच्छेद मोक्ष है। इस प्रकार मोक्ष जन्म-मरण का अभाव है, अज्ञान का विनाश है। इस शरीर से मुक्त जीव गोलोक या विष्णुलोक में निवास करते हैं, जहाँ उन्हें ईश्वर का साक्षात्कार होता है। ईश्वर से साक्षात्कार भक्ति से ही संभव है।

रामानुजाचार्य मुक्ति के लिए पाँच रूपों को मानते है। पहला सन्निध्य मुक्ति, अर्थात् ब्रह्म से सामीप्य लाभ करना। दूसरा, सालोक्य मुक्ति, अर्थात् ब्रह्मलोक की प्राप्ति। तीसरा सायुज्य मुक्ति, अर्थात् ब्रह्म के साथ एकरूप हो जाना। चौथा, सार्ष्टि मुक्ति, अर्थात् ब्रह्म के ऐश्वर्य का उपयोग करना और पाँचवा सारूप्य मुक्ति अर्थात ब्रह्म के स्वरूप का लाभ प्राप्त करना। रामानुजाचार्य जीवन-मुक्ति में विश्वास नहीं करते हैं। उनके अनुसार कर्म के पूर्ण विनाश के बाद ही शरीर का विनाश होगा। अतः शरीर के रहते मुक्ति संभव नहीं है।

रामानुजाचार्य ने मोक्ष को प्राप्त करने के लिए एक सरल मार्ग भी बतलाया है। यह मार्ग स्वंय को पूर्ण रूप से ईश्वर को समर्पित कर देने का है। एक सामान्य मनुष्य के लिए यही मार्ग उत्तम है। इस मार्ग पर चलने के लिए यह आवश्यक है कि भक्त को विश्वास हो कि ईश्वर हमारे सभी पापों को माफ कर मोक्ष प्रदान कर देगा। मोक्ष की प्राप्ति को बिल्ली और उसके बच्चे के उदाहरण से समझा जा सकता है। जिस प्रकार बिल्ली अपने बच्चों को सुरक्षित स्थान पर रखने के लिए उसे मजबूती से पकड़ती है और बिल्ली के बच्चे को इसमें कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। उसी प्रकार भक्त को मोक्ष प्राप्त करने के लिए ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण कर देना चाहिए। पूर्ण समर्पण से ईश्वरीय कृपा प्राप्त हो जाती है और मनुष्य को जन्म-मरण के बंधन से छुटकारा मिल जाता है।

अतः शंकराचार्य के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति का एकमात्र साधनसत्य ज्ञान है। रामानुजाचार्य भी ज्ञान को स्वीकार करते है परन्तु वे भक्ति सहित ज्ञान और ईश्वरीय कृपा को भी मोक्ष प्राप्ति का साधन मानते है।

उप प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
मिर्जा गालिब कॉलज, गया

✦

गया श्रद्ध एवं तर्पण से पितरों की मुक्ति

डॉ० कौशल किशोर पाण्डेय

विष्णु की नगरी गया धाम के महत्व को कौन नहीं जानता है जहाँ देश देशान्तर से आस्थावान धर्मनिष्ठ व्यक्ति अपने पितरों की मुक्ति के लिए पितृपक्ष में पधार कर श्रद्धा, तर्पणादि से पितरो के मोक्ष की कामना करते हैं।

वस्तुतः जिस प्रकार वर्ष में चार नवरात्र माने गये हैं, उसी प्रकार पितृपक्ष भी वर्ष में चार होते है परन्तु आश्विन नवरात्र की तरह भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से प्रारम्भ हो अमावस्या तक सोलह दिनों के काल को महालया के नाम से जाना जाता है।

श्राद्ध – श्रद्धा और विश्वास के साथ किया जाता है। श्रद्धा के बिना श्राद्ध की सफलता नहीं होती है।

श्रद्धया श्राद्धम्।

श्रद्धार्थमिंद श्राद्धम। इत्यादि अर्थो में 'अण' प्रत्यय करने पर 'श्राद्ध' शब्द बनता है। उपर्युक्त इनकी अनेक परिभाषाएँ हैं। अनेक ऋषि-महर्षियों ने श्राद्ध-संस्कार का शास्त्रों में वर्णन किया है। ब्रह्म पुराण के अनुसार देश, काल और पात्र में श्रद्धा द्वारा विधिपूर्वक पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को दिया जानेवाला भोजन "श्राद्ध" है –

देशे काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्।
पितृनुदिश्य विप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाहतम्।।

महर्षि पराशर के मतानुसार देश, काल तथा पात्र में हवि दान है विधि द्वारा तिल, यव और दर्भ (कुश) तथा मंत्रादि के साथ किये जाने वाले कर्म को श्राद्ध कहते हैं –

महर्षि वृहस्पति उस कर्म विशेष को श्राद्ध कहते है जिसमें भली भांति पकाये हुए उत्तम व्यंजन, दुग्ध, शहद और घृत के साथ श्रद्धापूर्वक पितृगण के उद्देश्य से ब्राह्मण आदि को प्रदान किये जाये।

श्राद्ध संस्कार के भेद –

मत्स्य पुराण में श्राद्ध तीन प्रकार के बताए गये हैं ''नित्यं नैमितिकं काम्यं त्रिविधिं श्राद्धमुच्यते'' – नित्य नैमितिक तथा काम्य।

यमस्मृति में पांच प्रकार के श्राद्ध नित्य, नैमित्तिक, काम्य वृद्धि तथा पार्वण का उल्लेख है।

भविष्य पुराण में बारह प्रकार के श्राद्ध – नित्य, नैमितिक काम्य, वृद्धि, सपिण्डन, पार्वण, गोष्ठि, शुद्धयर्थ, कर्माङ्ग, दैनिक यात्रार्थ और पुष्टयर्थ बतलाये गये है।

श्रौत एवं स्मार्त भेद से सभी श्राद्ध–संस्कार दो तरह के होते हैं – श्रौत श्राद्ध तथा स्मार्त श्राद्ध।

श्राद्ध करने की महत्ता –

प्राचीन काल में श्राद्ध संस्कार के प्रति लोगों की अटूट श्रद्धा रही है। वर्तमान में जनमानस का शास्त्रों से सम्पर्क कम होने से श्राद्ध कर्म पर श्रद्धा कम होती जा रही है, जिससे अधिकांश लोग इसे व्यर्थ समझकर नहीं करते है, शेष केवल रस्म–रिवाज की दृष्टि से श्राद्ध करते हैं। वस्तुतः श्राद्ध से सगे सम्बन्धी ही नही वरन् ब्रह्मा से लेकर तृण तक सभी प्राणी तृप्त होते है।

शुभ कर्म के परिपाक से पिता को यदि देवयोनि प्राप्त हो गया हो तो दिया गया श्राद्धान्न, वहाँ उसे अमृत होकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार मनुष्य–योनि में अन्न रूप में, तथा पशु योनि में तृण रूप में, नागादि योनियों में वायु रूप में, यक्ष योनि में पान रूप में तथा अन्य योनियों में भी तदनुरूप भोजन श्रद्धापूर्वक दिया गया प्राप्त कर ये सभी अत्यन्त आनन्द एवं तृप्ति को प्राप्त करते हैं।

वैसे श्राद्ध तो विविध प्रकार के शास्त्रों में कहा गया जिसका आलेख पूर्व में किया जा चुका है, परन्तु क्षयाह तिथि और पितृपक्ष नाम से दो प्रकार के श्राद्ध प्रति वर्ष करना चाहिए। पितृ पक्ष श्राद्ध मोक्षधाम नाम से प्रसिद्ध विष्णुनगरी ''गया'' में करना चाहिए, क्योंकि गया में श्राद्ध करने की अत्यधिक महिमा है –

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिर्पुत्रस्य पुत्रता।।

श्रीमद् देवी भागवत के अनुसार जीवनपर्यन्त माता–पिता की आज्ञा का पालन करने, श्रद्धा से भोजन कराने और गयातीर्थ में पितरो का पिण्डदान अथवा गया में श्राद्ध करने वाले पुत्र का पुत्रत्व सार्थक है।

जो व्यक्ति गया जाने में समर्थ होते हुए भी नहीं जाता है उसके पितर लोग सोचते हैं कि उसका सम्पूर्ण परिश्रम निरर्थक है। अतः सभी मनुष्यों को अपने पितरों के उद्धारार्थ गया अवश्य जाना चाहिए और सावधानी पूर्वक विधि–विधान से पिण्डदान करना चाहिए।

गयाभिगमनं कर्त्तु यः शक्तों नाभिगच्छति।
शोचन्ति पितरस्तस्य वृथा तेषां परिश्रमः।।
तस्मात् सर्वप्रत्नेन ब्राह्मणस्तु विशेषतः।
प्रदधाद् विधिवत् पिण्डान् गयां गत्वा समाहितः।।

अतः उपर्युक्त विधि तथा शास्त्रोक्त वचनों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को गया–श्राद्ध करना चाहिए। यदि विशेष रूप से कार्य में समर्थ नही हैं तो केवल तिल और कुश लेकर पितरो के नाम से जलादि दान करने पर भी पितर प्रसन्न हो जाते हैं तथा उन्हें आशीर्वाद प्रदान अवश्य करते हैं। इसमें संशय नहीं है।

प्राध्यापक एवं अध्यक्ष व्याकरण विभाग
ब्रह्मदेव मुनि उदासीन संस्कृत महाविद्यालय
हाजीपुर (वैशाली) बिहार

✦

गया तीर्थ में पार्वण श्राद्ध और मातृषोड्शी का महत्व

विजयानन्दन

जीवन में माता की महिमा ईश्वरादपि गरीयसी है। प्रत्येक व्यक्ति पर देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण कुछ के अनुसार गुरु ऋण तीन महान ऋण हैं। वेद पुराणादि भारतीय आर्ष ग्रंथो में से इसकी पुष्टि होती है। ''दैवाधीनं जगत्सवे'' अर्थात यह पूरा संसार देवताओं के अधीन है। हमारे रोम-रोम पर देवताओं की अवस्थिति है। वे इन्द्रियभिमानी देवता हमारे अंग प्रत्यंगों की रक्षा करते हैं। दैवी कृपा से ही हम जीवन धारण करते है। इनमें भी श्रेष्ठ त्रिदेव-ब्रह्मा विष्णु और महेश को क्रमश: सृष्टि के सर्जक, पालक और संहारक अधिदेव माना गया है। अत: स्पष्ट है कि आजीवन हम देवाधीन है और हमारे जीवन की जो कुछ उपलब्धि है, वह देवताओं के प्रसाद स्वरूप है। अत: हम देवताओं के ऋणी हैं।

ऋषियों के द्वारा दृष्ट एवं उपदिष्ट मंत्र हमारे जीवन के सारे धर्म-कर्मो के साधक हैं। हमारे सारे संस्कार उन्हीं मंत्रों के विनियोग से सम्पन्न होते हैं। मानव के गर्भाधान संस्कार से श्राद्ध पर्यन्त कोई ऐसा समय नही है जहाँ ऋषियों द्वारा संस्कृत मंत्रो का प्रयोग नही हो। इतने ही नहीं, हमारे वेद पुराणादि समस्त धर्मशास्त्रीय ग्रंथ जिनसे हमारे जीवन की गतिविधियों का संचालन होता है, ऋषि प्रणीत है। अत: स्पष्ट रूप से हम उन ऋषियों के भी ऋणी हैं।

माता-पिता के कायिक संयोग से हमारा जन्म होता है तथा हमारे पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा जीवन और संस्कार के निर्माण में माता-पिता तथा पितृजनों की अहम् भूमिका होती है। जिन गुरूजनों के निर्देशन में हमारी शिक्षा-दीक्षा होती है वे भी ऋषि तुल्य, देवतुल्य हैं। हम उनके भी ऋणी है। यहाँ ध्यातव्य है कि हमारे जीवन में प्रथम गुरु की भूमिका में हमारी माता होती है दूसरे गुरु की भूमिका में पिता तथा उनके बाद कोई अन्य। अत: पितृऋण जिसमें गुरुऋण भी समाहित है, सर्वाधिक गरीय और महत्वपूर्ण है।

हमारे शास्त्र-पुराणों में उक्त तीनो ऋणों को अदेय बतलाया गया है। अर्थात, इन्हें न तो हम वापिस चुका सकते हैं, नहीं तो उनसे मुक्त हो सकते हैं। किन्तु इन ऋणों को कुछ हल्का करने एवं उन पितरो की प्रसन्नता के लिए कुछ विशिष्ट उपाय बतलाये गये है। इनमें देवऋण से मुक्ति पाने के लिए देवोपासना व्रत, नियम, ध्यान-धारणा। सन्ध्या वन्दन, मंत्रजाप योग याादि की क्रियाएँ बतलायी गयी है।

आर्ष ऋण से मुक्ति पाने के लिए उनके द्वारा निर्दिष्ट धर्मो का पालन, ज्ञानार्जन, विद्यादान, आर्ष ग्रंथो के पाठ एवं तन्निर्दिष्ट संस्कारगत कर्मो का सम्पादन है। पितृऋण से मुक्ति के तीन उपाय बतलाये गये हैं : जीवन में उनकी सेवा तथा उनके आदेशो का पालन, उनके निधन के पश्चात श्राद्धादि कर्म तथा उनकी पुण्य तिथि पर ब्राह्मणों, दरिद्रों तथा अन्य जरूरतमंदो को दान देना, भोजन कराना तथा गयादि तीर्थो में उनका पिण्डदान और तर्पण। हमारे अधिकांश पुराण ग्रंथो एवं धर्मशास्त्रों में पितरों के निमित्त गया श्राद्ध एवं तर्पण तथा अन्य कई तीर्थ क्षेत्रों में श्राद्धादि की महिमा बतलाई गई है। देव कार्य की तरह पितृ कार्य भी हमारे दैनिक आचार में सम्मिलित है किन्तु आश्विन मास के पहले पक्ष को पितृ तर्पण एवं पितृ पूजन के लिए विशेष पर्व बतलाया गया है। 'तर्पण' शब्द संस्कृत के 'तृप' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है तृप्त करना, संतुष्ट करना। स्पष्ट है कि श्राद्ध के नाम पर दिये गये अन्न तथा तर्पण के नाम पर दिये गये जल से हमारे पितरो को (पितृ रूणी जनार्दन को) परितृष्टि प्राप्त होती है। अत: यह कार्य

प्रत्येक सद्गृहस्थ का पावन कर्तव्य है। ''श्राद्ध विवेक'' में बतलाया गया है कि 'गया पिण्ड प्रदानेन नरोमुच्येत मनमत्रयोत्' अर्थात् गया में पिण्ड एवं तर्पण करने से व्यक्ति उक्त तीनो ही ऋणों से मुक्त हो जाता है।

गया श्राद्ध के अंतर्गत पिता-पितामहादि से लेकर इष्ट-मित्र, बंधु-बान्धव, पशु-पक्षी, नौकर-चाकर तथा वैसे लोग जिनके कोई सपिण्ड (पिण्डदाता) नहीं है के भी श्राद्ध और तर्पण का विधान है किन्तु उस माता के लिए विशेष पिण्ड एवं श्राद्ध की व्यवस्था बतलायी गयी है जिससे हम अनेक जन्मों में भी ऋणमुक्त नहीं होते। ध्यातव्य है कि हमारे जिस शारीरिक पिण्ड के निर्माण में पिता की भूमिका क्षीण, वह आह्लादक होती है किन्तु माता की भूमिका दस महीने की है और वह क्लेशपूर्ण होती है। माता दस महीने तक अनेक प्रकार के कष्टों को झेलकर हमें गर्भ में धारण करती है। बच्चे को किसी प्रकार का कष्ट न हो इससे वह पूरी तरह सचेत रहती है, रहे, इसके लिए उन्हें खान-पान तथा दिन चर्या में अत्यधिक सावधानियों के साथ अनेक प्रकार के कटु-तिक्त औषधियों का सेवन करना पड़ता है। तदनन्तर मरणांतक पीड़ा झेलकर वह बच्चे को जन्म देती है। जन्म के पश्चात भी जब तक हम बड़े और प्रबुद्ध न हो जायें तब तक वे नाना तरह के कष्टों और पीड़ाओं को झेलकर हमारा पालन पोषण करती है, फिर शिक्षा दीक्षा तथा हमारे विकास एवं सुखमय जीवन के लिए सारे निजी सुख-स्वार्थों का त्याग करना पड़ता है। उसके बावजूद वे हमारे ही सुख से सुखी और हमारे ही दु:ख से दु:खी होती है। फिर भी आज के अधिकांश कुपुत्र अपनी माता की सुख-सुविधाओं का ख्याल नहीं करते, बल्कि उन्हें कष्ट और प्रताड़ना देते है। इसके बावजूद माता कभी अपने पुत्र का अनिष्ट चिन्तन नहीं करती। इसलिए जगदगुरू शंकराचार्य ने कहा है ''कुपुत्र जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'' उपनिषदों उद्घोष है - ''मातृदेवो भव! पितृदेवो भव! आचार्य देवो भव!'' अर्थात माता-पिता और आचार्य (गुरू अथवा निर्देशक) को देवता समझो। वे पूज्य हैं। उनकी सेवा में प्रमाद मत करो। इनमें भी सबसे पहला स्थान माता का है। विविध वेदो में प्रणीत ऋचाओं के योग से संकलित मातृसूक्त भी है जिसकी आठ ऋचाओं में चार ऋग्वेद से दो यजुर्वेद तथा दो अथर्ववेद से ली गई है। 'मातृसूक्त' की उक्त आठों ऋचाऐं मातृ महिमा को उजागर करती है,। स्मृतियों में बतलाया गया है -

''उपाध्यायद्दशाचार्य: आचार्याणां शतं पिता। सहस्त्रं तु पितृमान्याता गौरवेणातिरिच्यते'' - मनुस्मृति

अर्थात उपाध्यायों से दस गुणा आचार्य, आचार्यो से सौ गुणा पिता और पिता से हजार गुणी माता श्रेष्ठ एवं महान है, संतान की समस्त आपत्तियों और कष्टों को स्वंय झेलकर बच्चेका कल्याण चाहती है। स्वंय उन्हें भोजन नहीं मिले कोई हर्ज नहीं किन्तु अपने बच्चे को वे कभी बुभुक्षित नहीं देख सकती। वे अपने भोजन के पहले बच्चे को स्तनपान कराकर ही सुख का अनुभव करती है। ऐसी माता के लिए गया श्राद्ध (जो प्राय: पितृजनों के लिए मुक्तिप्रद विधान है) में प्रत्येक पार्वण में जहाँ अन्य पितरों के लिए मात्र एक पिण्ड देने का विधान है वहाँ माता के लिए उस एक से अतिस्क्ति सोलह पिण्डों का विधान किया गया है। माता के निमित दिये गये इस विशेष पिण्ड अथवा श्राद्ध का नाम ''मातृषोड़शी'' है। ध्यातव्य है कि पार्वण श्राद्ध में पितृ पितामहादि एवं मातृ मातामहादि को मिलाकर मुख्य रूप से बाहर पिण्डों का ही विधान है। तेरहवें आसन पर कुल गोत्र अगोत्र सगोत्र सारे पिण्डों का विधान है। तेरहवें आसन पर कुल गोत्र अगोत्र सगोत्र सारे पिण्ड गौण रूप से दिये जाते हैं। किन्तु 'मातृषोड़शी' में माता के उसी आसन पर (जहाँ बाहर मुख्य पिण्डों में उनका भी आसन होता है) अलग से सोलह पिण्ड दिये जाने का विधान है। ये सोलह पिण्ड पुत्र के जनन से लेकर पालन क्रम तक उनके द्वारा झेले गये कष्टों के निवारणार्थ आभार स्वरूप दिये जाते हैं। वे इस प्रकार है।

दस महीने तक पुत्र को गर्भ में धारण करने से होने वाली पीड़ा के निवारणार्थ पहला पिण्ड, पुत्र जन्म के समय होने वाली भीषण प्रसव वेदना के निवारणार्थ दूसरा पिण्ड, जाड़े की ठण्ड, ग्रीष्म का आतप तथा वर्षा ऋतु में वर्षा के कारण होने वाले कष्टों के निवारणार्थ तीसरा पिण्ड, बाल्य कालीन रोग–व्याधियों से संतान रक्षणार्थ मेले गये कष्टों के निवारणार्थ चौथा पिण्ड, दिन रात की परवाह न करके सदैव अपने स्तन को बच्चे के मुँह में दिये रहनेऔर बच्चे द्वारा निरंतर उसके शोषण किये जाने के कारण होने वाले क्लेश के निवारणार्थ पाचवाँ पिण्ड, बच्चे के रोग निवारणार्थ एवं रक्षणार्थ अनेक प्रकार की कटु–तिक्त औषधियों के सेवन से उत्पनन क्लेश निवारणार्थ छठा पिण्ड, क्षुधा विह्वल पुत्र को अन्न प्रदान करने के निमित्त सातवां पिण्ड, पैर के माध्यम से कभी कभी पुत्रों को जन्म देने में होने वाले भीषण कष्टों का निवारक आठवाँ पिण्ड, रात्रि में बालक के मुत्र–पुरीषादि से माता के कपड़े गीले और गंदे होने से उत्पन्न कष्ट के निवारणार्थ नौवाँ पिण्ड, संतान के जनन काल में कभी–कभी गांत्रभंग की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा उन्हें 'शल्य क्रिया' की आवश्यकता पड़ जाती है। इस असहय कष्ट के निवारण हेतु दसवाँ पिण्ड, यममार्ग में अत्यंत कष्टदायिनी वैतरणी नदी के संतरण में माता को बल मिले इसके लिए ग्यारहवाँ पिण्ड, पुत्र जननोपरांत तीन रात्रियों तक उपोषण क्रम में लगातार अग्नि सेवन से होने वाले कष्टो के निवारणार्थ बारहवाँ पिण्ड, पुत्र के जनन एवं पोषण क्रम में अनेक प्राणांतक यातनाओं के सहने के निमित्त तेरहवाँ पिण्ड बालक के अधीन होने पर माता को होने वाले क्लेश के विरणार्थ चौदहवाँ पिण्ड गर्भावस्था में ऊँची–नीची असमतल भूमि पर चलने से होने वाले क्लेशों के निवारणार्थ पन्द्रहवाँ पिण्ड और बच्चे को गर्भ में धारण करने से लेकर उनके पालन पोषण क्रम में अनेक प्राणान्तक यातनाओं को सहने के क्लेश निवारणार्थ सोलहवाँ पिण्ड देने का विधान है।

इस प्रकार मातृषोडशी के निमित्त सोलह पिण्डदान का विधान प्रत्येक पार्वण श्राद्ध में हर वेदी पर है। यत्र–तत्र मातृषोड़शीश्राद्ध मातृ गयामें करने का निर्देश प्राप्त होता है। इसके पूर्व मातृगया में जाकर सौभाग्य कुंड में स्नान का संकल्प इस प्रकार है – ''ओम् अत्र (तिथि कालादि उच्चारण पूर्वक) मातृणां स्वर्ग प्राप्तये सौभाग्य कुण्डे स्नानमहं करिष्ये। तदनंतर मातृषोड़शी श्राद्ध का संकल्प किया जाता है। उसमें माताओं के आवाहन मंत्र इस प्रकार है :–

आगच्छन्तु महाभागा पितरो में स देवताः।

कौक्षिण्यों याश्च पिण्डं में पिण्डमामत्य संस्थिता।।

इस प्रकार मातृषोड़शी के अंतर्गत अनेक जन्मों की माताओं का श्राद्ध सम्पन्न होता है तथा भगवती स्वरूपा उन माताओं की पुष्टि, तृप्ति एवं आशीर्वाद से कर्ता जीवन के सारे सुखोपभोग एवं निधनोपरांत अक्षय स्वर्गलोक प्राप्त करता है। इस क्रम में कर्त्ता को जगन्माता भगवती दुर्गा (माता गयेश्वरी अथवा माँ मंगला) को दर्शन–पूजन अवश्य करना चाहिए क्योंकि वे जगदात्री एवं पालिका हैं।

भगवती तारा निकेतन, परमानंद विहार
डेल्हा, खरखुरा रोड, गया - 823002
मो० - 9471431364

✦

दिवि सूर्यसहस्र भवेद्युग पदुत्थिता।
यदि थाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः।। (गीता)

''आकाश में हजार सूर्यों के साथ उदय होने से उत्पन्न जो प्रकाश हो, वह भी उस विश्वरूप परमात्मा के प्रकाश के सदृश कदाचित ही हो।''

पुराणों की दृष्टि में - गया तीर्थ

दया शंकर उपाध्याय

भारतीय संस्कृत वाङमय में त्रिविध साहित्य की प्रधानता सदा से रही है, जिनमें वेद, पुराण एवं ज्योतिष प्रधान हैं। विद्वानों का मत है कि वेद की शैली रूपकमयी, पुराणों की शैली अतिश्योक्तिमयी और ज्योतिष की शैली स्वभावोक्तिमयी है। पुराण भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड हैं। ''यास्क'' के निरूक्त (3/19) के अनुसार पुराण की उत्पति है - ''पुरानवं भवति'' अर्थात जो प्राचीन होकर भी नया होता है। पद्य पुराण के अनुसार ''पुरा परम्परां वष्ठि कामयते'' अर्थात जो प्राचीनता को यानी परम्परा की कामना करता है, वही पुराण कहलाता है।

पुराणों के अनुसार तीर्थ का मूल अर्थ है वह स्थान जहाँ पर किसी नदी को पार किया जा सके। गया तीर्थ की महिमा का उल्लेख अनेक पुराणों में मिलता है, साथ ही ''महाभारत'' में भी इसका उल्लेख आया है। पुराण में गया के संदर्भ में तर्पण, श्राद्ध, पिण्डदान आदि विषयों पर विशेष चर्चा की गई है।

अग्निपुराण (109 से 178 अ० तक) में पांच तीर्थों का उल्लेख है, जिसमें गया तीर्थ का विशेष उल्लेख है। अग्निपुराण (115/71) के अनुसार गया में अक्षयवट के नीचे पितरों के निमित किया गया श्राद्ध तथा ब्राह्मण भोजन अक्षय फलदायी होता है और समस्त पापों का विनाश करने वाला होता है।

पित्रादीनाश्मक्षयाय सर्वपाप क्षयाय च।
श्राद्ध वटतले कुर्याद् ब्राहणानां च भोजनम्।।

नारद पुराण (47/7) के अनुसार पितरों को अक्षय ब्रह्मलोक प्राप्ति की कामना से निम्न मंत्र से अक्षयवट का पूजन एवं नमस्कार करना चाहिए -

संसारवृक्ष शास्त्राय शेष पापक्षयाय च।
अक्षयब्रह्मदात्रे नमोऽक्ष्ययवटाय च।।

वायु पुराण (105/18) में कहा गया है कि गया में सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है - ''गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दधात्विचक्षणा:'' वायु पुराण (105/31) में आगे कहा गया है कि गया के लिए प्रस्थान मात्र कर देने से कर्त्ता का वह गमनरूपी प्रत्येक पद पितरों के लिए स्वर्गगमन का सोपान जाता है -

''गृहाच्चलितमात्रेण गयायां गमनं प्रति।
स्वर्गारोहण सोपानं पितृणां च पदे पदे।।''

वायु पुराण (105/16-17) में विवरण आया है कि ब्रह्मज्ञान, गया में श्राद्ध, गोशाला में मृत्यु एवं कुरूक्षेत्र में वास पुरूषों के लिए मोक्षदायक होता है -

''ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्धं गोगृहें मरणं तथा
वासः पुंसा कुरूक्षेत्रे मुक्तिरेवाचतुर्विधा।''

कूर्म पुराण (3/15) के अनुसार वे मनुष्य धन्य है जो गया में श्राद्ध और पिण्डदान करते हैं। उनके संदर्भ में ''मण्डलकरण'' के अनुसार देवताओं के लिए दक्षिणावर्त्त तथा प्रेत और पितरों के लिए वामवर्त्त मण्डल बनाने की विधि का उल्लेख आया है -

''प्रदक्षिणं तु देवानां पितृणाम् च प्रदक्षिणम्''

पुराणों में यह विचार भी व्यक्त किया गया है कि श्राद्ध में पढ़े गए श्लोक में स्वराघात नहीं होना चाहिए तथा शुद्ध उच्चारण होना चाहिए क्योंकि पितर शुद्ध पाठ से प्रसन्न होते हैं - ''भावम् उच्छन्ति देवता:, पितर विच्छन्ति अक्षर:'' वायु पुराण (112/59) में कहा गया है- आदि गदाधर देव का ध्यानकरते हुए श्राद्ध एवं पिण्डदान करने वाला सौ कुलों का उद्धारकर समस्त पितृगणों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति करता है-

आद्यं गदाधरं ध्यानम् श्राद्ध पिण्डादिदानतः
कुलानां शतमुद्धृत्य ब्रह्मलोकं नेयोत्पितृन्।।

अग्नि पुराण (116/10-11) का कथन है कि गया में साक्षात् विष्णु ही पितृदेव के रूप में विराजमान हैं, उनका दर्शन करके मनुष्य तीनो ऋणों से मुक्त हो जाता है –

''गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः
तं दृष्टवा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते वै ऋणत्रयात्।।''

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार श्राद्ध से तृप्त होकर पितृगण श्राद्धकर्त्ता को दीघार्यु, सन्तति, धन, विद्या, सुख, स्वर्ग, और मोक्ष प्रदान करते हैं –

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्ग मोक्ष सुखानि च
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिताः।।

महाभारत के अनुशासन पर्व में उल्लेख आया है कि पितरों की भक्ति करने से पुष्टि, आयु, वीर्य और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है – ''पुष्टिरायुस्था वीर्यं श्री श्चैव पितृभक्तितः।।''

शास्त्रों में गया में श्राद्ध एवं पिण्डदान करने का विधान बताया गया है। मत्स्यपुराण में तीन प्रकार के श्राद्ध का विवरण मिलता है, परन्तु कूर्मपुराण और वृहस्पति संहिता में पाँच (5) प्रकार के श्राद्ध का उल्लेख है किन्तु मुख्यतः सपिण्ड श्राद्ध दो प्रकार के ही बताये गए हैं। ''पिण्डपितृयाग'' (इसे श्रौत श्राद्ध भी कहते हैं) और स्मार्त श्राद्ध। श्रौत श्राद्ध में श्रुति द्वारा प्रतिपादित मंत्रों का प्रयोग होता है और स्मार्त श्राद्ध में वैदिक, पौराणिक, धर्मशास्त्र आदि द्वारा बताये गए मंत्रों का प्रयोग होता है। शास्त्र और पुराणों में कहा गया है कि गया में ''गज छाया योग'' में तर्पण और श्राद्ध करने का फल पाँच गुना अधिक मिलता है। अतः जो लोग पितृदोष का कष्ट झेल रहे हों वो गज छाया योग में गया में पितरों को प्रसन्न कर अपनी समस्त इच्छाएँ पूर्ण कर सकते हैं। वास्तव में गज छाया योग पितृ पक्ष में तभी बनता है जब सूर्य और राहू या फिर सूर्य या केतु की युक्ति हो। गरूड़ पुराण का उत्तरखण्ड प्रेतकल्प के नाम से जाना जाता है। पुराणों के अनुसार द्विज (ब्राह्मण) जाति को अपने परमाराध्य पितरों के श्राद्धकर्म द्वारा आध्यात्मिक आधिदैविक एवं आधि भौतिक उन्नति प्राप्त होती है।

पुराणों के अनुसार गया राजर्षि 'गय' की राजधानी थी, जिन्होने गया में यज्ञ किया था और ब्रह्मसर तालाब का निर्माण कराया था। मत्स्य पुराण (12, 17), ब्रह्म पुराण (3, 13, 104) वायु पुराण (85, 19) के अनुसार परशुराम ने गया में श्राद्ध किया था। भागवत महापुराण (10,11,79) के अनुसार बलराम ने पितरो के नाम यहाँ पिण्ड दान किया था। वायु पुराण (112, 60) के अनुसार गया, गय, गयादित्य, गायत्री, गदाधर, गयासुर गया के छः (6) स्थान मोक्षदायक हैं। यहाँ पितृ पिण्ड-दान से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। गरूड़ पुराण के अनुसार यहाँ पिण्डदान देना पुत्र के पुत्रत्व प्रतिपादित लक्षणों में अन्यतम है। ऐसा कहा जाता है कि गया में श्राद्ध कर्म वास्तव में सत्य की पूजा है और इसलिए गया को ब्रह्मज्ञान, श्राद्ध की भूमि कहा गया है। ''ब्रह्मज्ञानं गया श्राद्ध गो गृह मरणं तथा''।

वायु पुराण (105/18) के अनुसार सभी समय गया में श्राद्ध किया जा सकता है – ''गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दधाद् विचक्षणः'' वायुपुराण (105/46) के अनुसार गया में ऐसा कोई स्थान नही जो तीर्थ न हो। यहाँ सभी तीर्थो का सानिघ्य है –

गयायां न हि तत्स्थानं यम तीर्थं न विधते।
साांनिध्यं सर्वतीर्थानां गयातीर्थं ततो वरम्।।

साराशं यह कि गया में पुराणों के अनुसार समस्त क्रिया कलाप समाप्त हो जाने पर पिण्डदानकर्त्ता को गदाधर को नमन कर वन्दना करनी चाहिए। अग्निपुराण में कहा गया कि गदाधारण करने वाले पितरों को सद्गति प्रदान करने वाले तथा उन योगदाता भगवान गदाधर को मैं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हेतु (मैं श्राद्धकर्त्ता) प्रणाम करता हूँ –

गदाधंर गयावासं पित्रदीनां गति प्रदम्।
धर्म अर्थ काम मोक्षार्थ योगदं प्रणमाम्यहम्

पूर्व प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
श्री रामनगर, अपोजित बैंक कॉलोनी
मस्जिद रोड, मोराबादी, राँची - 834008

✦

पितृ-यज्ञ मनुष्य को दिव्य बनाता है

श्री अनिल स्वामी

साधारणतः मनुष्य यही समझता है कि उसका शरीर ही सब-कुछ है। अपने शरीर के सुख के लिए ही वह संसार के माया-जाल में फँसा रहता है। अपने स्वार्थ के लिए नाना प्रकार का कर्म-कुकर्म करता रहता है। किन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि इस शरीर के भीतर जो आत्मा है, वह अविनाशी है। अर्थात् वह उस प्रभु का अंश है, जो अखिल ब्रह्माण्ड का नियंता है। शरीर तो मात्र वस्त्र जैसा है, जिसे हम ऊपर से लाद लेते है। इसलिए यह शरीर जनमता है, मरता है तथा इसमें विभिन्न प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। किन्तु इसके अन्दर जो आत्मा है जो प्रभु का अंश है, उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नही होता। साथ ही उस आत्मा को –

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैन क्लेदयन्तयाते न शोषयति मारूतः।।

शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नही सकती, उसको जल गला नहीं सकता तथा वायु सुखा नहीं सकती, यही आत्मा मनुष्य के जीवन का चैतन्य स्वरूप है। यह चैतन्य स्वरूप जब स्थूल शरीर से विदा हो जाता है, तब मृत्यु आ जाती है। जब तक चैतन्य स्वरूप जिसे हम आत्म-स्वरूप भी कह सकते हैं, शरीर में विद्यमान है तब तक हम कर्म-बन्धन में भी बंधे है। यह कर्म-बन्धन दो प्रकार का है। हम आत्म-स्वरूप पर ध्यान दें या फिर स्थूल शरीर पर। आत्म-स्वरूप पर ध्यान देने से हम में दिव्यता आती है और स्थूल शरीर पर केन्द्रित रहने से हम में वासना जगती है। हमारी आत्मा दिव्यरूपा है; क्योंकि यह प्रभु का अंश है। अंशी होने के कारण इसमें दिव्यता का प्रकाश स्वभावतः भरा रहता है किन्तु, स्थूल शरीर पर केन्द्रित होने के कारण यह अन्धकाराछन्न हो जाती है। जिस प्रकार हीरे को यदि कीचड़ में रख दीजिए तो उसकी चमक दिखाई नही पड़ेगी, उसी प्रकार जब वासनाओं के दलदल में आत्मा घिर जायगी, तो उसका चैतन्य-स्वरूप कभी भी प्रस्फुटित नहीं हो सकता।

हमारी भारतीय संस्कृति तथा हमारे सभी आर्ष ग्रंथो में यह स्पष्ट निर्देश है कि जीवन को आनन्दमय रखने के लिए अपने सभी कामों को चैतन्योन्मुख रखें। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने मन को बराबर उस ओर केन्द्रित रखें जिससे हमारी आत्मा का प्रकाश प्रस्फुटित हो सके। पितर-पूजा अथवा श्राद्ध के जो भी कर्मकाण्डीय अनुष्ठान हैं उनका उद्देश्य यही है कि मनुष्य में आत्म-ज्ञान जगे। आत्म-ज्ञान तभी जगता है, जब हम में आत्म-स्वरूप का बोध जगता है।

मन स्थूल शरीर की सुख-सुविधा में लगा रहेगा। किन्तु इससे आत्म-स्वरूप की झलक नहीं मिल सकती है। शरीर को कोई लाख धोए-पोछे, तरह-तरह का साबुन लगाये, इससे आपका शरीर स्वच्छ हो जायगा, किन्तु आप स्वच्छ नहीं हो सकते, आपका चेतन-स्वरूप स्वच्छ नहीं हो सकता। इसके लिए आपको अपने मन पर काबू करना होगा। मन दौड़ेगा भौतिक सुविधाओं की ओर, किन्तु उस पर सवारी कसनी होगी। तभी वह आत्मोन्मुख होगा।

हमारे ऋषि-मुनि, जिन्होंने भगवान को पाया है अथवा भगवान जो अवतार हुआ है, उसके मूल में करूणा है। सभी संतो-महात्माओं-पैगम्बरों तथा स्वंय भगवान का अवतरण करूणा हुआ है। इसीलिए उनके जन्म और कर्म दिव्य होते हैं। सामान्य आदमी स्वार्थ के वशीभूत कर्म करता है। किन्तु भगवान तथा संत लोग तथा कल्याण की भावना से कर्म करते हैं। वे कर्म करने की ऐसी कला सिखाते हैं, जिससे कर्म करने का राग मिट जाए, भगवद्-रस आ जाय और मनुष्य का उद्धार हो जाए। भगवान ने गीता के चौथे अध्याय में कहा है – 'हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं। इस प्रकार जो मनुष्य तत्व को जान लेता है, वह शरीर को त्याग कर फिर जन्म को प्राप्त नहीं करता, अपितु मुझे ही प्राप्त करता है, कहा गया है कि जब मनुष्य मात्र अपने में सीमित होता है, तब वह शूद्र

होता है। जब परिवार में सीमित होता है, तब क्षुद्रता थोड़ी कमती है; लेकिन जो सभी प्राणियों का मंगल चाहता है उसमें विश्व-व्यापी मानवता के कल्याण की भावना जागती है और शूद्रता जड़-मूल में समाप्त हो जाती है। इसी कारण उनका जन्म और कर्म दिव्य हो जाता है। राम, कृष्ण, बुद्ध, कबीर, समर्थ रामदास, महात्मा गाँधी आदि संतो के पास क्या था?उनके हृदय में लबालब करूणा का स्रोत प्रवाहित होता रहता था। उनके हर काम 'बहुजनहिताय और बहुजन सुखाय' होते थे। इसलिए वे आज भी हमारे श्रद्धास्पद तथा पूजनीय हैं। उनके जन और कर्म दिव्य थे।

हम भी अपने जन्म और कर्म को दिव्य बना सकते हैं। आवश्यकता है मात्र अपने मन को भौतिकता से हटाकर अपने 'मैं' को मिटा कर - बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की ओर मोड़ देने की। इसका सहज उपाय है अपने अन्दर करूणा जगाने की। अपने आस-पास के बड़े-बुजुर्गो की सेवा करें ही साथ ही, हमारे पूर्वज जो आज सशरीर नहीं हैं, उनके प्रति भी श्रद्धा तथा पूरी निष्ठा के साथ पितर-पूजा करने की। पितृपक्ष की अवधि में देश-विदेश से जो लाखों लोग गयाधाम में आते है। उनसे हमें यहीं संदेश मिलता है कि हम अपने जन्म और कर्म को दिव्य बनायें। तभी हम गयाधाम में आने वाले तीर्थ-यात्रियों की अतिथि देवो भव: की भावना से उनका स्वागत कर सकते हैं तथा अपने परिवार, अपने समाज एवं देश-राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं।

भाजपा बिहार प्रदेश कार्य समिति
सदस्य-सह-जिला प्रभारी, नवादा

✦

आर्षग्रन्थों में गया

डॉ० राम निरंजन परिमलेन्दू

सहस्राधिक वर्षों से विभिन्न प्राचीन पौराणिक धर्म-ग्रन्थों में गया के महात्म्य की ज्योतिशिखा निरन्तर प्रज्ज्वलित है जिसके आलोक में युग-युगान्तर से हिन्दुओं की अखण्ड आस्था सुरक्षित रही है। सच तो यह है कि ''आत्रि स्मृति'' में 55 से 58 वाँ श्लोक वस्तुत: गया की महिमा ही है। ''कल्याण स्मृति'' के 29वें खड में और ''शंखस्मृति'' के 14वें अध्याय में गया की जो महिमा है वह अदभुत और विलक्षण ही है। शंख स्मृति में तो स्पष्ट रूप से कहा गया है कि गया जाकर जो कुछ पितरों को श्रद्धापूर्वक समर्पित किया जाता है, उसका अक्षय फल उन्हें प्राप्त होता है। पुराणों एव स्मृति-ग्रन्थों में तो यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जो पुत्र गया में श्राद्ध करें अथवा अश्वमेद्य यज्ञ करें वही सुपुत्र है। गया में जिस दिवंगत प्राणी के नाम से पिण्ड श्रद्धापूर्वक दिया जाता है, वह यदि नरक योनि में भी हो तो स्वर्ग चला जाता है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार के शास्त्रीय वचन संसार के किसी भी नगर को अब तक प्राप्त नहीं हुआ। याज्ञवल्क्य स्मृति, महाभारत (वन पर्व) वाल्मीकीय रामायण आदि में गया की महत्ता हजारों वर्षों से सुरक्षित है। वाल्मीकीय रामायण में तो यह स्पष्ट रूप से घोषणा की गयी है कि किसी दिवगंत प्राणी के वंशजो में से कोई एक व्यक्ति भी गया जाय और श्राद्ध करे तो उसके सभी पितरों का उद्धार होगा। लिंगपुराण के आध्याय संख्या 95 में तो गया के नामकरण पर भी एक विशेष तथ्य का उद्घाटन किया गया है कि भगवान सूर्य के पुत्र मनु का सुधुम्न नामक एक पुत्र था जो स्त्री योनि में रहने के समय इला कहलाता था। सुधुम्न के तीन पुत्र हुए इनमें से एक 'गय' था और उसी के नाम पर गया नगर ख्यात है। कहने का आशय 'गय' श्री सूर्य नारायण के पौत्र हुए।

वामन पुराण की अध्याय संख्या 90 में श्री विष्णु के अवतार वामन जी का स्पष्ट कथन है कि

गया में गोपति देव, ईश्वर त्रैलोक्य नाथ और गदापाणि मेरा नाम है। वाराह पुराण की अध्याय संख्या 183 में पितरो का कथन है कि गया श्राद्ध करके अक्षयवट की छाया में पिंडदान करना चाहिए, तभी हमारी मुक्ति संभव होगी। मत्स्य पुराण की अध्यय संख्या 22 में यह स्पष्ट रूप से घोषणा की गयी है कि परम पवित्र नाम से प्रसिद्ध गया सब तीर्थो में सर्वोत्तम है। इस प्रकार की विलक्षण, अद्भुत एवं अकल्पनीय घोषणा आज तक भारत के किसी भी तीर्थ स्थल के संदर्भ में नहीं व्यक्त की गयी। यह गौरव गया को ही प्राप्त है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के कृष्ण जन्म खण्ड में स्पष्ट रूप से कहा गया है जो मनुष्य गया के श्री विष्णुपद में पिंडदान करता है और विष्णु का पूजन करता है, वह मातृ पितृ गण का ही नही वरन् अपना भी उद्धार कर लेता है। पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड में कहा गया है कि गया पितरों का सर्वोत्तम तीर्थ है, जहाँ आश्विन माह के कृष्ण पक्ष में पिण्डदान और फल्गु में जलतर्पण करने से प्रेत–योनि में निवास कर रहे पितरों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। दिवंगत प्राणियों के निमित्त पवित्र पावनी फल्गु में जलतर्पण करने का जो महात्म्य है वह महात्म्य काशी की गंगा और प्रयाग की त्रिवेणी में भी नहीं है। यह गौरव संसार की किसी नदी को अब तक प्राप्त नहीं हुआ है।

वायु पुराण को अध्याय संख्या 43 से 50 तक वस्तुतः 'गया महात्म्य' ही है। 'गया महात्म्य' वस्तुतः वायु पुराण का नवनीत ही है। इस पुराण में जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश हैं, वे गया की शाश्वत और चिरन्तन महिमा से ही ओत–पोत है। कहा तो यह भी जाता है कि गया तीर्थ करने वाले मनुष्यों को अकाल मृत्यु होने पर भी प्रेत–योनि में निवास नहीं करना पड़ता है। गया–क्षेत्र में मृत्यु होने से ब्रह्म–ज्ञान के बिना भी मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। गया–क्षेत्र, प्राचीन पौराणिक मान्यताओं के अनुसार एक कोस में गयासिर और पाँच कोस में गया–क्षेत्र–तीर्थ। इसके मध्य में सम्पूर्ण तीर्थो का वास है और यहाँ गयासिर पर पिण्ड दान करने से 100 पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है। यहाँ जो कुछ भी दान किया जाता है उससे पितृगणो को अक्षय तृप्ति मिलती है। हिरण की नाभि में कस्तुरी रहती है और इसकी सुगंध से मृग को विह्वलता और चंचलता स्वतः बोध होता है क्योंकि उसे यह ज्ञात नहीं होता कि इस सुंगध का मूल स्त्रोत कहाँ है। इसी प्रकार हम अनेक तीर्थो की यात्रा करते है, किन्तु तीर्थो में महातीर्थ विष्णु तीर्थ अर्थात गया तीर्थ के महत्व से प्रायः अपरिचित ही रहते है और यही दुखद सत्य है। जरूरत इस बात कि है कि हम गया की गरिमा से परिचित हो उसके प्रति आस्था के दीप प्रज्ज्वलित करें, वर्तमान कमियों को दूर करने की चेष्टा करें और गया के गौरव को पुनः स्थापित करने में सम्यक् योगदान करें।

दक्षिण दरवाजा, गया
मो० 9470853118

✦

नचलति निजवर्ण धर्म तो यः सममतिरात्म सुहृदिपक्षपक्षे
नहरति नच हन्ति किञ्चदुच्चैःसितयवंस तयवेहि विष्णु भक्तम्

विष्णु पुराण – 3/7/20

जो पुरूष अपने वर्णधर्म से विचलित नहीं होता, अपने सुदृढ़ और विपक्षियों में समान भाव रखता है, किसी का धन हरण नहीं करता; न किसी जीव को मारता ही है, उस अत्यन्त रागादि शून्य और निर्मल मन व्यक्ति को विष्णु का भक्त जाना।

पितृ-मुक्ति की भूमि-गयाधाम

डॉ० सत्येन्द्र प्रजापति

आर्षग्रंथों के अनुसार श्राद्ध-तर्पण-पिण्डदान के लिए गयाधाम विश्व में प्रसिद्ध है। यह हमारी धार्मिक अध्यात्मिक और सांस्कृतक आस्था की पुण्यभूमि है। पितरों की आत्माओं की मुक्ति के लिए गयाधाम की भूमि स्वर्ग की सीढ़ी है। पितृगण कहते है कि जो पुत्र श्राद्ध और पिण्डदान के निमित्त गयाधाम की यात्रा करेगा, वह हम सब पितरों को भवबंधन और दु:ख-संसार से तरण-तारण कर देगा। वायुपुराण के अनुसार - ''गयां यास्यति य: पुत्र स नस्त्राता भविष्यति। अपने पितरो स्वजनों मित्रों, सत्पुरूषों के द्वारा किए गए सत्कर्मो के लिए हम उनके प्रति जो आदर सम्मान और कृतज्ञता की भावना अर्पित करते हैं वह श्राद्ध कहलाता है। पितृलोक एक ऐसा प्रतीक्षा लोक है, जहाँ मृत्यु के बाद हमारे पूर्वजों की आत्माएँ अपने वंशजों से श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान की अपेक्षाएँ करते है। उन्हीं प्यासी व विवश आत्माओं की मुक्ति के लिए हम पितृपक्ष में पितृ पूजाकर उनके ऋण से मुक्ति पाते है।

अग्निपुराण के अनुसार गया जी में साक्षात भगवानविष्णु पितृदेव के रूप में विराजमान है। गरूड़ पुराण में यह कहा गया है कि जिसने गरूड़पुराण नहीं सुना और गयाधाम में जाकर पितृश्राद्ध नहीं किया, वह पुत्र कहलाने का अधिकारी नहीं है। गया में सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है। गया-श्राद्ध के लिए समय का कोई प्रतिबंध नही है। चाहे अधिमास हो, गुरू-शुक्र अस्त हो, जन्मानस हो, वृहस्पति सिंह राशि में स्थित हों, यहाँ सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है। 'गयायां सर्वकालेषु पिण्ड दद्यात् विचरक्षण:।' वायु पुराण के अनुसार-गयाधाम में श्राद्ध-तर्पण और पिण्डदान करनेवाले पितृभक्त को काम, क्रोध तथा लोभ को छोड़कर सारी क्रियाएँ करनी चाहिए। ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर एक समय भोजन करना चाहिए। पृथ्वी पर शयन करना चाहिए, सत्य वचन बोलना तथा मन-वचन से पवित्र रहना चाहिए। जो इन नियमों का पालन करता है, वह गयातीर्थ का उत्तमफल प्राप्त करता है। नारदपुराण के अनुसार श्राद्धकर्त्ता को भी मुक्ति मिलती है।

पुराणों और धर्मग्रंथो में भी इस बात का वर्णन हुआ है कि कृष्ण की सलाह पर पाण्डवों ने गयाधाम में चार महीने तक प्रवास कर धर्मराज युधिष्ठिर के नेतृत्व में अपने पितरो के मोक्ष हेतु चतुर्मास पितृ यज्ञ किया था। भगवान राम और सीता ने भी राजा दशरथ के मोक्ष प्राप्ति के लिए गया में पिण्डदान किया था।

अपने वंशजो द्वारा श्राद्ध, तर्पण और पिण्डदान किए जाने पर संतुष्ट होकर पितृगण श्राद्धकर्ता को दीर्घायु, संतति, धन, विद्या सुख ऐश्वर्य और मोक्ष आदि का आशीर्वाद देते है।

आयु प्रजां धन विद्यां स्वर्ग मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितर: श्राद्धतर्पिता:।।

आज आवश्यकता है कि हम अपने पूर्वजों को पितृ पक्ष की पावन बेला में गया श्राद्ध तर्पण औरपिण्डदानकर उनकी आत्मा की शांति और मुक्ति के लिए हमेशा तत्पर रहें, उनकी खुशियाँ, अच्छाईयाँ और गुणों का अनुसरण कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करें। हमारे द्वारा गयाधाम में श्राद्ध तर्पण और पिण्डदान का अनुष्ठान करने से हमारी सभ्यता, संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना और धार्मिक एकता अक्षुण्ण रहेगी। पितरों के आर्शीवाद और मंगल कामनाओं से राष्ट्र, समाज, परिवार और श्राद्धकर्त्ता के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होगा और राष्ट्रीय चेतना और लोक आस्था बलवती, पल्लवित व पुष्पित होगी।

प्रधानाचार्य
जी.बी.एम. कॉलेज, गया

हे गयाजी नमन तुम्हें

श्री कमल नयन

चारों तरफ पहाड़ी है। बीच में बसी एक बड़ी आबादी। पुरातन की याद दिलाती। कभी चार फाटक। आज चारों तरफ सड़क–ही–सड़क है। बहुत कुछ बदला है। सालों साल से इस आबादी को देखते आ रहे है। इसमें क्या नही है? बहुत ढूँढा इसमें खामियाँ निकालने को। पर कुछ समझ नहीं आता। यह तो आबादी ही ऐसी है कि मन करता है नमन कर लें। यह आज की बात नहीं। वर्षो से इस आबादी को हम देख सुन और पढ़ रहे हैं। सब कुछ इसमें समाया है। धर्म, संस्कृति, आचार–विचार, सभ्यता, सौहार्द, अपनापन, भाईचारा, प्रेम और सहिष्णुता। क्या नही है और ऐसे में हम कही और कुछ ढूंढे, तो गयाजी के साथ बेमानी होगी। सांस्कृतिक नगरी के रूप में गयाजी को मान्यता दी गई है। धार्मिक नगरी के रूप में सभी आर्ष ग्रंथो में ही लिख दिए गए हैं। यही सब कारण है कि वर्षों–वर्ष से लोग इसे पूजते आए है। एक नहीं अनेक बार पूजते हैं। सुनते है कि पितृ–तर्पण और पिंडदान करने के निमित पुत्र एक बार भी गयाजी को स्पर्श करने अवश्य आते है। कालांतर से चली आ रही यह परंपरा अब एक विधि–विधान के रूप में तर्क–संगत दिखती है। यह किसी से भी अछूता नहीं है। अमीर–गरीब, ऊंच–नीच, बड़े–छोटे सब इसको करने के लिए गयाजी आते ही हैं फिर भी उनके मन में एक लालसा होती है। शायद उनके पितर उन्हें यह भाव दे जाते है – चलो पुत्र गया जी, बार–बार!

सोचिए, उस वक्त जब 364 वेदियाँ यहाँ विद्यमान थीं। 64 घरके तीर्थ पुरोहित इन 364 वेदियों के मालिक हुआ करते थे। अपने करपरदाज से इन वेदियों पर पिण्डदान का विधान पूरा कराते थे। जैसे एक बार ही पितृ को तृप्त करने की मान्यता है, उसी तरह 364 दिन (एक साल) गयाजी की भूमि पर रहकर 364 वेदियों पर पुरखों को पिंडदान किया जाता था। कितनी महत्त्व की बात है कि एक पुत्र अपने पितरों की आत्मा की शान्ति के लिए एक साल तक गया जी में श्राद्ध–कर्म कर के मोक्ष की इस भूमि पर उनके मोक्ष की कामना करता था। आज ना वो वक्त रहा और ना वो श्रद्धावान पुत्र!

समय के साथ श्रद्धा और भाव दोनों बदले हैं। लेकिन गयाजी वहीं है। आज भी 54 जीवंत पिंडवेदियों पर लाखों की संख्या में श्रद्धावान आने की उत्सुकता रखते हैं। गया की आबादी के बीच 15 दिनों की यह भीड़ यह दर्शाती है कि आज भी पितरों के प्रति पुत्र का प्रेम पहले से कम नहीं है। उम्र की सीमा अब नहीं है। विधान में भी नहीं है। सब कोई अपने पितरों को तृप्त करने के लिए आ–जा सकते है। यहीं कारण है कि एक पखवारा के पितृपक्ष में लाखों की भीड़ जमा होती है। समय बदला है। 364 दिन तो कभी हुआ करता था। आज एक दिन से लेकर 17 दिनों तक के श्राद्ध का विधान है। जिसे पुत्र अपने समयानुसार करते आ रहे हैं। गया धाम अब यह भी सोचता है कि 21वीं सदी की ओर भाग रही इस दुनिया में अगर पुत्र अपने पूर्वजों को नमन करने के लिए गयाजी आता है, तो यह उसका संस्कार है। जो उसको पीढ़ियों से मिली है। वर्त्तमान समय तो भागदौड़ में गुजर रहा है। मोबाईल, वेबसाइट, ऑनलाइन, फेसबुक, ट्वीटर आदि ने पुत्रों को इस तरह जकड़ लिया है कि वे बाहर नकलना भी नहीं चाहते हैं। पुत्रों के हाथ जो जलांजलि के लिए उठते थे, वह दिन भर इन्हीं तकनीको में उलझे रहते हैं। सब कुछ आधुनिकता से ओत–प्रोत हो गया है। लेकिन वैसे में भी अगर गया जी की पवित्र फल्गु नदी पर तर्पण और पिंडवेदियों पर श्रद्धा के साथ श्राद्ध करने पुत्र आ रहे है तो उन्हें नमन है। ये यथार्थतः गया को स्पर्श कर अपने पितरो को नमन करते हैं और सचमुच – हे गया जी नमन तुम्हें!!

पत्रकार, घुघरीटाँड, गया

मन के हारे हार है मन के जीते जीत

डॉ० नलिनी राठौर

विज्ञान का शाश्वत नियम है कि इस ब्रह्माण्ड का प्रत्येक तंत्र पदार्थ न्यूनतम ऊर्जा में रहना चाहता है, वही इसकी स्थिर अवस्था है। ऊर्जा बढ़ने के साथ या असंतुलित होने से अस्थिरता बढ़ती है। ब्रह्माण्ड की छोटी अनुकृति पिण्ड – यह शरीर है। इसमें भी वही सब कुछ विद्ययान है जो सम्पूर्ण सृष्टि में है। "**यत्पिण्डे तद ब्रह्माण्डे**"

मानव की भी मूल प्रकृति है स्थिरता, शांति। शांति का अर्थ है इनर हार्मनी, अर्थात् मैं अपने भीतर तृप्त हूँ, संतुष्ट हूँ। मेरा मन शांत है। मन चंचल होने पर अशान्त होता है।

हमारा वैदिक मंत्र है –

ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षः शान्तिः
आपः शान्तिः ओषधयः शांतिः
वनस्पतयः शांति विश्र्वेदेवाः शान्तिः
ब्रह्म शान्तिः सर्वः शान्तिः
शान्तिरेव शांतिः सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।
(यजुर्वेद 36/17)

द्यौलोक (के नक्षत्रो में) शांति स्थापित मिले। पृथ्वी तल पर शांति स्थापित मिले। जलाशय, वनस्पति, प्रकृति, में शांति परिव्याकृत मिले। पुष्पलता, औषध, अन्न में शांति का आधार मिले। अखिल विश्व की दिव्य शक्तियों में शांति विद्यमान मिले। ज्ञान, ध्यान, सागर, गगन में शांति की पहचान मिले।

हिन्दूधर्म में किसी भी पवित्र मंत्रोच्चार के बाद 'ॐ शांति; शब्द को तीन बार दोहराया जाता है। तीन बार कहने से बात परिपुष्ट हो जाती है।

बौद्ध धर्म में यदि शांति मुख्य सिद्धान्त है, तो ब्रह्मकुमारी का मुख्य वाक्य है – "मैं एक शान्त स्वरूप पवित्र आत्मा हूँ।" आत्मा का स्वधर्म है – शांति। जैन धर्म, सिक्ख धर्म भी शांति के संदेशवाहक हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी की 'पीत' (शांति) नामक कविता के अनुवाद का कुछ अंश

वहीं अश्रुविंदु का अवसान होता है
प्रसन्नरूप को प्रस्फुटित करने को
वही जीवन का परम लक्ष्य है
और शांति ही एकमात्र शरण है।
ॐ शांतिः, शांति, शांतिः।

जब प्रकृति की अंतनिर्हित ऊर्जा असंयमित होती है तो विनाश का संकेत देती है और जब मन असंयमित होता है तो मनुष्य का अधःपतन स्वाभाविक है। उद्विग्न मन सामयिक समस्याओं का समाधान तक ठीक तरह ढूंढ नहीं पाता। ऐसी दशा में उसके निर्णय, निर्धारण भी सही स्तर के होंगे, इसकी आशा नहीं की जा सकती। अशान्त मन में सुविचारों का आना संभव नहीं।

आत्मिक प्रगति का मुख्य माध्यम मन है। वही बंधन और मोक्ष का कारण है।

पापासंक्त हि बन्धाय पुण्यासंक्तं हि मुक्तये।।
मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोंः।।
– स्कन्दपुराण

पाप में आसक्त मन बन्धन का और पुण्य में संलग्न मन मोक्ष का कारण है। वस्तुतः मन ही मनुष्य को बंधन में डालता है और मुक्त करता है। मन की चंचलता एवं कुटिलता को नियंत्रित करके ही अध्यात्म साधना के मार्ग से प्रवृत्ति होती है। मन को विक्षेपों से मुक्त करके सदुद्देश्य में लय करके स्थिर बना लेना ही उपाय है। मन को जीत लेना ही सबसे बड़ी विजय है।

"गंगाद्वारश्च केदारं सन्नि हत्यां तथैव च।
एवानि सर्वतीर्थानि त्वा पापैः प्रमुच्यते।।
– व्यास स्मृति

जिसने अपने मन को जीत लिया उसके लिए गंगाद्वार, केदारनाथ आदि सभी तीर्थो का लाभ अपने आप सुलभ हो जाता है।

मन को निर्बंध होना मुक्ति है। इसलिए बन्धन से मुक्ति की इच्छा करने वालों को अपना मन निर्विष्य करना चाहिए।

"द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति च।
ममेति बध्यते जन्तर्निममेति विमुच्यते।।"

बंधन और मोक्ष में केवल दो पद का अन्तर है। मेरा है, यही बंधन है। मेरा नहीं है, यही मुक्ति है। निरर्थक स्मृतियों और कल्पनाओं में भ्रमण करना अनियंत्रित मन का काम है। अगर हम वास्तविक शांति चाहते हैं, तो हमें भीतर की ओर यात्रा करनी होगी। अपने अंदर मौजूद शांति को जगाना होगा। अपने मन को एकाग्र करना होगा। जब तक मन बाहर भटकेगा शांति भीतर नहीं उतरेगी। मन पर नियंत्रण कर लिया, तो फिर शांति को खोजने की आवश्यकता नहीं होगी।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन को वायुवेग से चलने वाले मन को वश में करने के दो उपाय बताये। (1) अभ्यास यानि वे योग साधनायें, जो मन को रोकती हैं और (2) वैराग्य यानि व्यवहारिक जीवन को संयमशील और व्यवस्थित बनाना।

प्रकृति से निकटता, मौन और ध्यान–व्यक्ति को भीतरी शांति प्रदान करते हैं। आन्तरिक स्थिरता को प्राप्त करना ही समाधि है। जिनका आत्मभाव विश्व–वसुधा के स्तर तक विकसित रहा है, वे उदार चरित कहलाते है। राम, कृष्ण, बुद्ध, चैतन्य, नानक, कबीर, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द जैसे महापुरूष इसी श्रेणी में आते हैं। मनुष्य का अहंभाव जब सीमा रहित हो विकास को प्राप्त कर लेता है तो व्यक्तित्व भी विराट एवं गरिमामय हो जाता है। यही वह अन्तिम लक्ष्य है जिसे प्राप्त कर मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है। वर्तमान समय में मनुष्य भौतिकता के पीछे पागल हो रहा है। सहज और प्राकृतिक जीवन से निरंतर दूर हो रहा है। कुंठाएँ जन्म ले रही हैं। मन सदैव उद्विग्न रहता है और अतृप्त लालसाओं के कारण अशांति बढ़ रही है। यदि हम ही अशांत है। तब पितरों की चिर–शांति की प्रार्थना पूरे मनोयोग से कैसे करेंगे ?अतः पितृपक्ष के इस पावन अवसर पर हम शांत चित्त से इस पुनीत कार्य को सम्पन्न कर अपने पितरों की मुक्ति की कामना करें।

सेवानिवृत्त प्रोफेसर रसायन विभाग
जी. बी. एम. कॉलेज, गया

✦

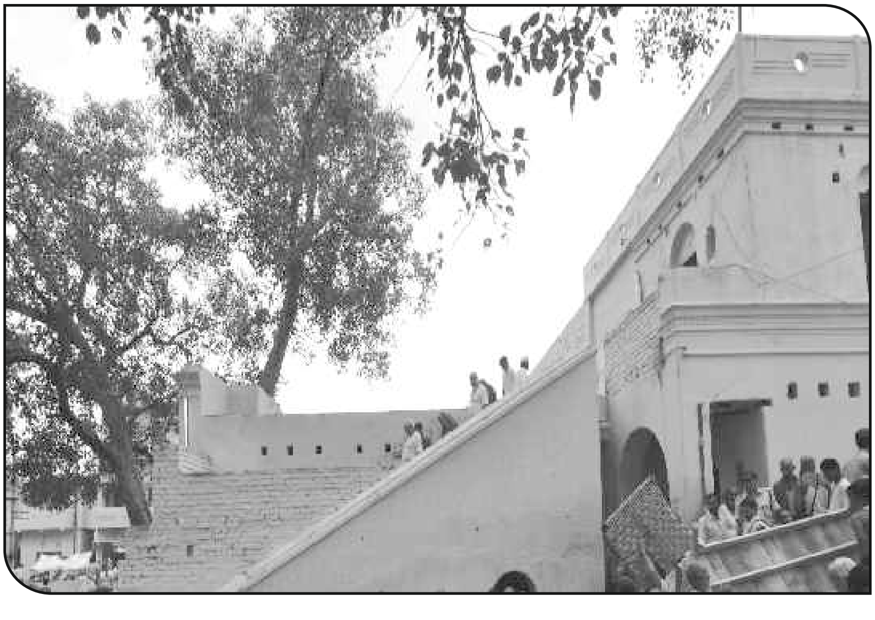

बेटा ! सुनो .... और जरा समझो

आचार्य नवीन चन्द्र मिश्र 'वैदिक'

हाँ बेटे! तुम्हारा क्या हालचाल है?पुत्र उत्पन्न करके मनुष्य तो पितृ-ऋण से छूट जाता है। मुझे प्रसन्नता है कि तुम पितृ-ऋण से छूट गए, परन्तु तुमसे एक प्रश्न है बेटा! जिन्दगी भर मैं और मेरी धर्मपत्नी तुम सब भाई-बहनों को पालन-पोषण में कोई कमी नहीं की, तो फिर मेरी वृद्धावस्था में तुम भाइयों के बीच पति-पत्नी (माता-पिता) दोनो को अलग-अलग बाँटकर के रखा। तुम्हें पता है न, यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया था कि एक कुआँ बीच में है, जो उफनता है तो अपने चारों तरफ के कुआँ को भर देता है और चारों तरफ के कुआँ एक साथ उफनने पर भी बीच वाले कुएँ को नहीं भर पाता है?युधिष्ठिर ने जो उत्तर दिया ऊपर में अंकित कर चुका हूँ बेटा! संतति धारा चलती रहे इससे पुत्र की कामना की जाती है। बेटा-बेटी समान है, तभी तो बेटी के बेटा नाती को भी श्राद्ध का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।

बेटा! मुझे दु:ख इस बात की है कि तुमने मेरे द्वारा धरती छोड़ने के बाद यथा-स्थिति श्राद्ध तो कर दिया परन्तु बाद में भूल गए। तुम कह रहे हो द्वादशाहे श्राद्ध कर दिया, पितृ-मिलन हो गया, वे स्वर्ग में है या नरक में या किसी योनि में जन्म ले लिए होगें तो मुझे बाद में कुछ करने क क्या प्रयोजन?कुछ लोग कहते है एक व्यक्ति का गया-श्राद्ध एक बार होना चाहिए। कुछ धर्मात्मा पुत्र कहते है कि गया-धाम में जिनका अग्नि-संस्कार हुआ हो उनके लिए बाद में कुछ नहीं करना चाहिए। कुछ चालाक बेटा कहते है बाहर से लोग गया में आकर गया-श्राद्ध करते हैं, गया वालों को कुछ करने की आवश्यकता नहीं। ठीक है बेटा। तुमने अपनी बुद्धि का परिचय दे दिया। शायद मेरे द्वारा संस्कार देने में कोई कमी रही होगी तभी तो तुमने ऐसा किया। मेरे बुद्धिमान बेटा दुनिया ने सुनाया उसे तो तुमने सुन लिया, अब मैं जहाँ जिस लोक में हूँ तुम्हे पता नहीं, परन्तु तुम उत्तम लोक में वास कराने हेतु मेरी बात सुनकर कुछ प्रयत्न कर सकते हो। कान और दिमाग लगा कर मेरी बात सुनो ....

मैंने अपने पूर्वजों का गया जाकर गया श्राद्ध किया था, तो तुम साथ में आए थे। तुमने देखा था न मैं अपने पिता पितामह-प्रपितामह, नाना-परनाना, वृद्ध परनाना और इन लोगों की पत्नियों के अलावे ससुराल, बुआ, मौसी, बेटी, बहिन के कुल के साथ-साथ सभी जान-पहचान वालो के लिए पिण्ड-दान किया था और गया-श्राद्ध के बाद भी मैं सभी के नाम पितृ-तर्पण, दान आदि श्रद्धा पूर्वक करता रहा तभी मेरे परलोक गमन के बाद पूर्व के पितरो में तुमने पितृ मिलन करके पितृ लोक दिलाया। शादी-विवाह, जनेऊ, गृह प्रवेश, यज्ञ आदि शुभ कार्य हुए, तो नन्दीमुख अभ्युदयिक श्राद्ध भी किया। यह तुमने देखा था और स्त्रियाँ शुभ कार्य में "पितृ निमंत्रण" गीत गाती है, यह भी सुना था बताओं बेटा! अगर हम पिण्डदान कर के पूर्वजों से पिण्ड छुड़ा लेते तो क्या आगे यह सब करना क्या न्याय-संगत होता?

दूसरा श्राद्ध तुमने किया। एक व्यक्ति का श्राद्ध गया-श्राद्ध एक ही बार करना चाहिए। हाँ बेटे! सुनो तुम्हे पता है कि मेरे पिताजी अर्थात् तुम्हारे दादाजी भी गया-श्राद्ध किए थे। पूर्व में गिनाए लोगों का पूर्ण श्राद्ध किया था, अब बोलो बेटा! पिताजी के पिता जी मेरे दादा जी हुए और मेरे पिताजी के दादा जी मेरे परदादा जी हुए, तो मैने पिताजी के साथ दादा जी एवं परदादा जी का भी पिण्डदान किया न, यह शास्त्र सम्मत है कि तीन पीढ़ी से आपको सम्बन्ध बना के रखना होगा और आगे सुना नाना-मौसा-फुफा आदि का भी पिण्डदान किया, तो क्या इन लोगों की संतान इस दायित्व से मुक्त हो गए?नहीं बेटे! सब का सब के प्रति अपना कर्तव्य और दायित्व होता है, इसे समझो किसी पर फेंक कर अपना पल्लू मत झाड़ लो।

हाँ बेटा! गयासुर ने भगवान से एक मुंड और एक पिण्ड का वरदान मांगा था। मुंड अर्थात् अग्नि संस्कार। गया में केवल अग्नि-संस्कार कर के अगर

तुम पतली गली से निकलने की कोशिश करते हो और कहते हो गया–श्राद्ध केवल बाहरी लोगों के लिए है गया वालो के लिए नहीं। मेरे आज्ञाकारी पुत्र! तुमने ध्यान नहीं दिया इस बात में अगर दम होता तो और जगह के साथ–साथ गया जिला के अलग पंडा जी होते?नहीं न; औरतो और हमारे गया–धाम के तीर्थ–पुरोहित गयापाल भी गया श्राद्ध बहुत उत्साह से करते है तो, गयावासी के लिए क्या सन्देश है जरा सोचो।

सृष्टिकर्त्ता प्रजापति ब्रह्माजी के पूर्वज कौन थे, फिर भी उन्होंने कुशा से चौदह ब्राह्मण बनाए और गया–श्राद्ध का बीजारोपण किया। वही चौदह ब्राह्मण चौदह गोत्र वाले तीर्थ–पुरोहित गयापाल हुए जिनके दिशा–निर्देशन में रहकर गया–श्राद्ध करने की परम्परा है।

और हाँ बेटा! तुम सब भाइयों के लिए भी सन्देश है। तुम सब एक ही भाई पर तर्पण–श्राद्ध का दायित्व देने के बाद बहुत बनता है तो थोड़ा धन व्यय करते हो, बस किनारे होकर जय श्री राम। सभी भाइयों को अपने–अपने तरीके से पुण्य तिथि, तर्पण, अन्न–वस्त्र, पात्रादि के दान का कर्तव्य पालन करना चाहिए। मैंने सभी भाइयों का समान रूप से पालन पोषण किया, तो तुम लोगों का भी तो है अपना–अपना कर्तव्य है। तुमने गरूड़ पुराण सुना है – स्पष्ट तो है

न श्रुंत गारूड येन गया श्राद्धं चनो कृतम्।
वृषोत्सर्गः कृतो नैवन च मासिक वार्षिके।।
स कथं कथ्यते पुत्रः कथं मुच्येत ऋण त्रयात्।
मातरं पितरं चैव कथं तारयितुं क्षमः।।

जो पुत्र न गरूड़ पुराण सुना नहीं तो गया–श्राद्ध किया वृषोत्सर्ग भी नहीं किया, मासिक वार्षिक श्राद्ध नहीं किया, वह कैसे पुत्र कहा जा सकता है वह तीन ऋण मुक्त होकर माता पिता को तारने में कैसे समर्थ हो सकता है? पाप–आचरण एवं धन–लोभ के कारण दुर्मति पैदा होती है, इसलिए पितृ–गण बहुत से पुत्रों की कामना करते है कि कोई भी पुत्र गया जाकर गया–श्राद्ध करेगा देवी भागवत में कहा गया है –

स्वात्मज धन लोभेन पापाचारः दुर्भतिः।
एष्टव्या बहवः पुत्राः यद्येकोऽपि गयां व्रजेत।।

गरूड़ पुराण में भी इससे मिलती–जुलती पंक्तियाँ हैं। बेटा! शाास्त्र ने तो सभी को अधिकार दिया है समाज या तुम एक पर दायित्व क्यों सौंपते हो?एक भाई ने गया–श्राद्ध कर दिया तो फिर कोई भाई नहीं कर सकता है?या करते हैं तो पूर्व में करने वाले भाई दुःखी होते है?प्रभु श्री राम ने गया श्राद्ध किया। सीता कुण्ड, रामशिला आदि उदाहरण हैं, तो भरताश्रम भी तो दर्शनीय वेदी है। धर्मराज युधिष्ठिर ने धर्मारण्य में पितृ–यज्ञ किया तो भीम द्वारा श्राद्ध वेदी भीम–गया भी तो उदाहरण है। जहाँ भाई भीम ने श्राद्ध किया था।

अगर तुम यह सोचकर मेरे लिए कुछ नहीं करते हो कि मेरे पिता ने तो स्वंय ही देवताओं और पितरों को संतुष्ट कर लिया तो क्या गरूड़ पुराण को केवल दस दिन के अन्दर सुनने भर परम्परा समझा, उसका मनन नहीं किया?मैं अपने पिता के दिवंगत होने पर कुल पुरोहित से गरूड़पुराण श्रवण कर रहा था। सपरिवार समूह में तुम भी बैठे थे। सप्तम अध्याय में कथा है ब्रभुवाहन नाम के राजा थे, जिन्हें सुदेव नाम प्रेत ने बताया कि मैने बहुत पुण्य अर्जित किया। परन्तु मेरे कुल में मेरी और्ध्वदैहिक क्रिया करने (मरणान्त कर्म) वाला कोई नहीं है। अतः मैं प्रेत हो गया। प्रेत के कथानानुसार राजा ने नारायण बलि आदि श्राद्ध सम्बन्धी सारे कार्य आदि पूर्ण किए और उसका प्रेतत्व नष्ट हुआ। अतः बाद के कर्म की भी आवश्यकता है बेटा।

एक बात और बेटा! कुछ नहीं करते हो, तो शायद आगे की पीढ़ी अपने दादा के नाम भी भूल जाय। अतः तुमसे जो हुए उसका ख्याल जितना रखते हो, तो तुम जिससे हुए उनके लिए भी सोचो और बिना संकोच के उत्साह के साथ तर्पण, श्राद्ध, दान करते रहो हम पितरों की आत्मा को चिर–शान्ति मिले। खुश रहो, प्रसन्न रहो। ठीक है बेटा! सुनो और जरा समझो। बस।

कृष्ण प्रकाश उपमार्ग
के०पी०लेन, मेखलौटगंज, गया
चल दूरभाष-9430071590

✦

‘श्राद्ध’ शब्द की व्युत्पत्ति एवं श्राद्ध की महत्ता

डॉ० सुमन जैन

‘श्राद्ध’ शब्द श्रद्धा से बना है। हमारे धर्मशास्त्रों एवं पुराणों में जो परिभाषाएँ श्राद्ध के विषय में दी गई हैं, उनसे भी स्पष्ट है कि ‘श्राद्ध’ एवं ‘श्रद्धा’ में घनिष्ट सम्बन्ध है। श्राद्ध में कर्त्ता का यह विश्वास रहता है कि उनके द्वारा सम्पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण की भावना से ब्राह्मणों को दिया गया दान किसी–न–किसी रूप में उनके पूर्वजों या पितरों को अवश्य ही मिलता है। स्कन्दपुराण में कहा गया है कि दान–कार्य के मूल में श्रद्धा ही प्रमुख है। इसमें विश्वास के साथ अटल धारणा भी होती है कि मनुष्य को यह कार्य करना ही चाहिए। ऋग्वेद में श्रद्धा को देवता के समान कहा गया है। तैत्तरीय संहिता में प्रसंग है कि ‘‘वृहस्पति ने इच्छा प्रकट की कि देव मुझमें विश्वास रखें, मैं उनके पुरोहित का पद प्राप्त करूँ।’’

‘श्रद्धा’ को सत्य भी कहा गया है और अश्रद्धा को झूठ। अर्थात सत्य की प्राप्ति श्रद्धा से ही होती है। श्राद्धों का पितरो के साथ अटूट सम्बन्ध है। उनके बिना श्राद्ध की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

महत्ता – सभी धर्मशास्त्रों ने श्राद्ध–कर्म को महत्वपूर्ण बतलाते हुए उसे मानव जीवन के लिए कल्याणकारी कहा है। एक धर्मसूत्र में कहा गया है कि प्राचीन काल में देव और मानव इसी पृथ्वी लोक में ही रहते थे। बाद में यज्ञों के कारण पुरस्कार स्वरूप देव लोग स्वर्गलोक चले गए और मनुष्य इसी पृथ्वीलोक पर निवास करने लगे। जो मनुष्य देवों के समान यज्ञादि करते हैं वे परलोक में देवों के साथ निवास करते हैं। दिवंगत प्राणियों को मुक्ति या आनन्द की ओर ले जाने के लिए किया गया कार्य श्राद्ध–कर्म कहलता है। लोग अपने पितरो को ब्राह्मणों के रूप में पूजते हैं।

विष्णु पुराण, वायु पुराण एवं भागवत पुराण में कहा गया है कि श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराना प्रमुख कृत्य है। इसी प्रकार महाभारत के शान्ति पर्व एवं विष्णु धर्मोत्तर पुराण में आया है कि श्राद्ध प्रथा की स्थापना विष्णु के बराह अवतार के समय हुई। इसलिए पितृपक्ष में अपने पितरो को दिए गए पिण्डों को भगवान विष्णु को समर्पित मानना चाहिए। यो भी गया में दिये गये पिण्डो को विष्णु–चरण में निवेदित करने की परम्परा है।

इस प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि ईसा की कई शताब्दियों पूर्व श्राद्ध–प्रथा का प्रचलन हो गया था। यह प्रथा आदि मानव मनु के समान प्राचीन है। इसकी चर्चा बहुत से धर्मग्रंथो में उस समय नहीं की गई है। कठोपनिषद में ‘श्राद्ध’ शब्द का उल्लेख मिलता है। जबसे पितरों के सम्मान में किए गए कार्यो की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई तो श्राद्ध शब्द की उत्पत्ति हुई।

इन्हीं पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सनातन धर्मावलंबी अपने पितरो के श्राद्ध–कर्म को बड़ी निष्ठा, लग्न एवं धार्मिक आस्था के साथ प्रतिवर्ष आश्विन–मास में कृष्ण–पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ करते है। ये श्राद्ध– कार्य पूरे पन्द्रह दिनों तक नियम एवं भक्ति पूर्वक सम्पन्न किए जो हैं। हर मनुष्य अपनी हैसियत के अनुसार इसमें भोजन एवं दान देते है।

श्राद्ध पितरों का ही किया जाता है, इन्हें देव भी कहा जाता है। गया नगर को पितरों का ‘मोक्ष–द्वार’ कहा जाता है। अत: पितृपक्ष में इस प्राचीन नगर में अथाह जनसमूह उमड़ पड़ता है। सभी धर्मशालाएँ एवं होटल इन्हीं पिंडदानियों से ठसाठस भरे रहते हैं। यहाँ का प्रशासन पूरी तैयारी के साथ सुविधाएँ उपलब्ध कराने को तत्पर रहता है।

अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

पितृपक्ष आश्विन कृष्ण पक्ष में ही क्यों?

श्री शिव वचन सिंह

गया भारतवर्ष का एक प्रख्यात पितृ–तीर्थ है जिसका विस्तार क्षेत्र पुराणों में पाँच कोस (वर्तमान माप दण्ड का 15 किलोमीटर) है। उसमें एक कोस (3 किलोमीटर) गया शीर्ष (गया सिर) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत गया–श्राद्ध सम्बन्धी अधिकांश महत्वपूर्ण वेदियाँ अवस्थित हैं। गया–तीर्थ में ब्रह्मण्ड के सभी तीर्थो का निवास है। इसलिए गयाधाम विश्व के सभी तीर्थो में श्रेष्ठ है।

गया–तीर्थ की खास विशेषता है कि यहाँ पितरों के निमित्त किये गये तर्पण, श्राद्ध, दानादि अक्षय होकर उन्हें प्राप्त होते है। यहाँ भगवान विष्णु की पूजा–अर्चना से मानव की समग्र कामनाएँ पूर्ण होती हैं और श्रद्धा पूर्वक प्रसन्नचित से किये गये श्राद्ध से पितरों को परमगति प्राप्त होती है। निश्चित रूप से यहाँ मुक्तिदायी परमात्मा आज भी दृश्यमान है। वायु पुराण में लिखा गया है –

यथार्चिते हरौ सर्व यज्ञाः पूर्णाः भवन्ति च।
तथा श्राद्धं तर्पणं च स्नानं वाऽक्षय स्त्विह।।
नोदते याजितोध्यक्तः पितृणां पश्या गतिः।
गयायां परमात्मा हि दूयतेऽ्यापि मुक्तिदः।।

महर्षि वेदव्यास ने बतलाया है क गया–तीर्थ में पिण्डदान श्राद्ध तर्पण दानादि करने से जो पुण्य फल प्राप्त होते है, उनका वर्णन सैकड़ों कल्पों में भी नहीं किया जा सकता। यथा :–

गयायां पिण्डदानेन यत्फलं लभते नरः।
न मया वक्तु शक्य कल्प कोटि शतैरपित।।

वायु पुराण के अनुसार गया–श्राद्ध चैत्र, वैशाख, आश्विन पौष, फाल्गुन एवं मकर यानि माघ मास में तथा इनके अतिरिक्त ग्रहण काल में करना सर्वोत्तम है। वायु पुराणकार के अनुसार –

मीने मेषे स्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मुकेधेर।
दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्ड पातनम्।।

यों तो गया धाम में सालोंभर (प्रत्येक दिन) पिण्ड दान किये जाते है; क्योंकि भगवान विष्णु ने गयासुर को प्रतिदिन एक मुण्ड और एक पिण्ड प्राप्त होने का वरदान दिया है, जो लोक प्रचलित है। जहाँ तक आश्विन कृष्ण पक्ष जिसे विशेष रूप से पितृपक्ष की संज्ञा दी गई है तथा पितृपक्ष महासंगम भी कहा गया है। उस समय विश्व के कोने–कोने से सनातन धर्मावलम्बी गया धाम में स्नान तर्पण पिण्डदान श्रद्धादि करने के लिए उमड़ पड़ते है। पितृपक्ष की अवधि आश्विन कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक मानी जाती है। अमावस्या को पितृ–विसर्जन की तिथि मानी जाती है तथा इसे 'महालया' की संज्ञा भी दी जाती है। पितृपक्ष के आरंभ से महालया तक पितर लोग गया धाम में आकर स्वकुलोत्पन्न संतानो अथवा सपिण्डो की प्रतीक्षा करते है। ताकि उनका कोई वंशज इस अवधि में गया–श्राद्ध पिण्डदान तर्पण आदि करके उन्हें मुक्ति दिलाये। इस समय यमालय छोड़कर पितर गयाधाम में आकर अपनी संततियों की प्रतीक्षा करते है, किन्तु अमावस्या तक अगर कोई उनका श्राद्ध तर्पण आदि नहीं करता तो वे निराश और दुखी होकर हाहाकार करते हुए अपनी संतानो को शाप देकर यमपुरी लौट जाते हैं। वायु पुराण में कहा गया है –

कन्या गते सवितरि पितरो यनित वै सुतान्।
शून्या प्रेत पुरी सर्व यावद् वृश्चिक दर्शनम्।।
ततो वृश्चिक सम्प्राप्ता निराशाः पितरो गताः।
पुनस्ते स्वभवनु यनित शापं दत्वा सुदारूणम्।।

अर्थात् सूर्य के कन्या राशि पर आते (कन्या के संक्रान्ति) होते ही पितर लोग यमलोग को खाली कर अपने पुत्र पौत्रो (संतानो) के यहाँ श्राद्ध तर्पणादि की आशा लेकर आते है और वृश्चिक की संक्रान्ति होने तक उनके यहाँ ठहरकर प्रतीक्षा करते है। सूर्य के वृश्चिक राशि के संक्रमण तक जब कोई उनका श्राद्ध तर्पणादि नहीं करता, तो वे उन्हें कठोर शाप देकर लौट जाते है। उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि आश्विन महीने का कृष्ण पक्ष पितरों के श्राद्ध तर्पण एवं पूजनादि के लिए शास्त्र विहित सर्वोत्तम समय है।

इसलिए इस माह के कृष्ण पक्ष को पितृपक्ष की संज्ञा दी गई है। इस अवसर पर पितृ–तीर्थ गयाधाम में विश्व प्रसिद्ध विशाल मेला लगता है, जिसमें लाखों की संज्ञा में लोग अपने पितरों के उद्धार हेतु यहाँ आते हैं। कृष्ण पक्ष को पितरों का दिन तथा शुक्ल पक्ष को उनकी रात्रि मानी जाता है। श्राद्ध का प्रश्स्त समय दिन ही माना गया है। रात्रि में किये गये श्राद्ध को लोग मध्यम श्रेणी का श्राद्ध मानते है। अतः कृ ष्ण पक्ष में ही श्राद्ध का विधान बतलाया गया है। इसके कुछ और भी कारण है। भाद्रपद मास की अमावस्या को 'कुशोत्पाटनी अमावस्या' की संज्ञा दी गई है। इस दिन का उखाड़ा गया कुश वर्ष भर पवित्र और कार्य के योग्य माना जाता है। अन्य दिन के उत्पाटित कुश चौबीस घण्टे के बाद अपवित्र हो जाते हैं।

अतः भाद्रपद कृष्ण अमावस्या को हर सदगृहस्थ को देव एवं पितृ कार्यो के लिए अनिवार्य रूप से कुशोत्पाटन करना चाहिए।

श्राद्ध–कर्म में कुश की महत्वपूर्ण भूमिका है। कुश को उखाड़ते ही (भाद्रपद अमावस्या को) पितर आशान्वित हो जाते हैं और अपने वंशजो की याद करने लगते हैं। आश्विन कृष्ण प्रतिपदा को वे पृथ्वी पर उतर आते है और पक्ष भर पुत्र–पौत्रों द्वारा पिण्डदान और तर्पण की आशा में प्रतीक्षारत होते है। अतः आश्विन कृष्ण पक्ष में पतृ–श्राद्ध प्रशस्त है। विधूर्ध्व भागे पितरो वसन्ति। अर्थात् चन्दमा के ऊपर (उर्ध्व भाग में) पितृलोक है। अतः वहाँ चन्द्रमा का प्रकाश नहीं मिलता। अतः कृष्ण पक्ष में पितृपक्ष होता है। कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा और सूर्य की दूरी उत्तरोत्तर कम होती जाती है और चन्द्रमा के ऊर्ध्व भाग अर्थात पितृलोक में बसने वाले पितर कृष्ण पक्ष में उत्तरोत्तर सूर्य का सानिध्य प्राप्त करते है। अमावस्या को तो सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि पर होते है। अतः महालया का अमावस्या को होती है, जो पितृपूजन के लिए सर्वाधिक प्रशस्त है।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी देखा जाय, तो सूर्य मेष राशि से मीन राशि तक प्रत्येक राशि में एक महीने तक संचरण करते है। आश्विन कृष्ण पक्ष वर्ष का मध्य छठा महीना होता है। इस समय सूर्य स्व–राशि (सिंह) से निकलकर मित्रराशि कन्या में प्रवेश करते है। ज्योतिषीय मतानुसारमित्रराशिस्थ ग्रह, मुदित अर्थात् प्रसन्न होते है। पितृपक्ष में फलागत सूर्य में सूर्य मुदितावस्था में आहलादक स्थिति में होते है। अतः आश्विन कृष्ण पक्ष में (कन्या राशिगत सूर्य में) पितरो का श्राद्ध सर्वोत्तम माना गया है। इससे उन्हें सूर्यमार्ग की प्राप्ति होती है।

इस संदर्भ में एक वैज्ञानिक दृष्टि यह भी है कि आश्विन कृष्ण पक्ष में सूर्य के कन्याराशि के संक्रमण काल में चन्द्रमा की ऊर्ध्व कक्षा जिसे लोक और शास्त्र मत में स्वर्गलोक कहा गया है। पृथ्वी के ठीक सामने रहती है। परिक्रमण क्रम में चन्द्रलोक और पृथ्वी का सीधा सम्बन्ध बनता है तथा दोनो की दूरी घट जाती है। इसलिए पितर भी आसानी से भूलोक पर आ जाते है और पुत्रों द्वारा दिये गये पिण्डादि श्राद्ध सामग्रियों को वे सीधे और आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। उपर्युक्त कारणों से ही पितृश्राद्ध के लिए आश्विन कृष्ण पक्ष की मान्यता पितृपक्ष के रूप में है। गया घराधाम का सर्वोत्तम पितृतीर्थ है। अतः इस अवसर पर प्रत्येक वर्ष यहाँ पितृ महासंगम हुआ करता है। इसे लोग पितृपक्ष मेला के नाम से जानते है। यों तो गया क्षेत्र में हर दिन हर समय श्राद्ध सम्पन्न होते हैं किसी समय की वर्जन नहीं है। शास्त्र पुराण तो यहाँ तक कहते हैं –

गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद्विचक्षणः।
अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरू शुक्रयोः।।
न त्याज्यस्तु गयाश्राद्धं सिंहस्थे च वृहस्पतौ।।

अर्थात बुद्धिमान लोगों को सभी समय गया में पिण्डदान करना चाहिए। अधिक मास में, जन्म दिन में तथा गुरू–शुक्र के अस्त होने पर भी गया श्राद्ध का त्याग नहीं करना चाहिए। अर्थात् गया श्राद्ध पितरो के प्रति पुत्र पौत्रों का पावन कर्त्तव्य है, जिसे उन्हें अवश्य संपादित करना चाहिए। गया–श्राद्ध करने से नरक की यातना भोगते पूर्वज भी मोक्ष को प्राप्त करते है। पुंनरकात् जायते इति पुत्रः अर्थात् पुत्र वही है जो पितरो को नरक से त्राण दिलाये और उसका एकमात्र उपाय है गया में उनका श्राद्ध करना।

वरीय अधिवक्त्ता-सह-समाजसेवी
वीणा कुँज, निकट जिला स्कूल, गया
मो० 9430050965

✦

भारतीय संस्कृति और संस्कार

डॉ० सोनू अन्नपूर्णा

भारतवर्ष की संस्कृति अति प्राचीन है और उसमें कई ऐसी विशिष्टताएँ हैं, जो उसे अन्य देशों की संस्कृति से श्रेष्ठ बनाती हैं। यहाँ की संस्कृति सभी धर्मो के लोगों को साथ लेकर चलती आई है और उसके अनुसार सभी मानव एक समान है। यहाँ न केवल अनेक धर्म और संप्रदायों के लोग रहते हैं, बल्कि अनेक भाषा-भाषी लोग भी हैं। सभी धर्मो के अपने-अपने रीति-रिवाज, खान-पान, वेश-भूषा आदि है, जो भिन्न-भिन्न हैं। इन सारी विभिन्नताओं के बावजूद यहाँ एकता है। सभी भारतीय हैं और इसके बाद ही कुछ और है और इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता। भारतवर्ष में जो मुख्य जाति निवास करती है, उसे 'हिन्दू' के नाम से जाना जाता है। कहीं-कहीं सभी भारतीयों के लिए 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग किया जाता है। हिन्दू-धर्म में बहुत सारे रीति-रिवाज तथा संस्कारों को मान्यता मिली हुई है। मनुष्य को इन सारे सस्कारों का पालन अपने जीवन में करना होता है। भारत में, खासकर हिंदुओं में इन संस्कारो का बहुत महत्त्व माना गया है और लोग इन संस्कारों का पालन करते हैं।

संस्कृत साहित्य में 'संस्कार' का प्रयोग शिक्षा, व्याकरण-संबंधी शुद्धि, परिष्करण, धार्मक विधि-विधान आदि अर्थो में किया गया है। 'संस्कार' भी संस्कृति के अंतर्गत ही आता है। मनुष्य को सभ्य बनाने में संस्कृति का बड़ा हाथ होता है। संस्कृति न तो भौगोलिक सीमा के बंधन को मानती है, न राजनीति को। यह अखिल मानवता की पूँजी होती है। यह 'वसुधैव कुटुंबकम्' की धारणा को लेकर चलती है। जैसा कि कहा गया यहाँ के बहुत सारे संस्कारो में से एक प्रमुख संस्कार है - अपने माता-पिता और गुरूजनों के प्रति श्रद्धा की भावना, जिसका पालन हर मनुष्य, हर हिन्दू करता है और इसी श्रद्धा के फलस्वरूप वह अपने पितरों का तर्पण इस गया धाम में करता है। माता-पिता जिंदगी भर अपने बच्चों के लिए कुछ-न-कुछ करते ही रहते हैं। अपने बच्चों के भविष्य के लिए वे अपना सब कुछ दाँव पर लगा देते हैं। अत: बच्चों का भी कर्त्तव्य बनता है कि वे अपने माता-पिता के लिए कुछ करें। दूसरे कहा जाता है कि पितृ ऋण से मुक्ति पाने के लिए भी लोग श्राद्ध या तर्पण करते हैं। इस तरह, यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है। गया इसलिए हिन्दुओं की मोक्षभूमि कहलाता है। हर हिन्दू यह चाहता है कि वह अपने पूर्वजों की मुक्ति के लिए एक बार गया जरूर आए और पितृपक्ष के अवसर पर पिंडदान करे। इससे एक ओर तो पितरों को मुक्ति मिलती है, दूसरी ओर पूर्वजों का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। पितरों की भी यही कामना होती है कि उनके वंशज गया धाम आकर उनका श्राद्ध करे, ताकि मोक्ष की प्राप्ति हो सके। गया पितृ-तीर्थ माना गया है। यहाँ लगातार पंद्रह दिनों तक लगातार दूर-दूर के राज्यों से लोग आकर अपने पूर्वजों के लिए तर्पण करते हैं। उनके लिए प्रार्थना करते हैं। अत: इस अवधि को 'पितृपक्ष' कहा जाता है। मत्स्यपुराण में इसकी महत्ता बताते हुए कहा गया है कि मनुष्यों को अनेक पुत्रों की अभिलाषा इसलिए करनी चाहिए कि उसमें से यदि एक भी पुत्र गया की यात्रा करेगा, तो उसका उद्धार हो जाएगा। इसी से गया धाम की महत्ता और इस संस्कार की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है। पितरों का उद्धार करनेवाली अंत:सलिला फल्गु भी यहाँ है, जिसकी महिमा 'वायु पुराण' में बताई गई है। इसी के पास परम पावन विष्णुपद मंदिर है, जहाँ भगवान विष्णु के चरण-चिन्ह अंकित है। श्रद्धालु इनका दर्शन कर धन्य-धन्य हो जाते है।

कहा जाता है कि भगवान राम और माता सीता ने भी दशरथ जी की मोक्ष-प्राप्ति के लिए यहाँ पिंडदान किया था। महाभारत-काल मे श्रीकृष्ण की सलाह पर पांडवों ने यहाँ चार माह तक रहकर चातुर्मास्य यज्ञ किया था। श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन परम भक्त चैतन्य महाप्रभु भी अपनी यात्रा के दौरान गया-धाम पधारे थे। इतना ही नही, उन्हें दीक्षा भी इसी गया धाम में मिली थी। अत: कहा जा सकता है कि यह भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है कि यहाँ मानव-मात्र के कल्याण की बात तो की ही जाती है, मरने के बाद मनुष्य की आत्मा की मुक्ति के लिए भी अनुष्ठान किए जाते हैं।

असो० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
गया कॉलेज, गया।

मन्दिरों का शहर - गया तीर्थ

श्री नवलेश वर्थवार

भारतीय संस्कृति के विकार में सिन्धु, सरस्वती, गंगा, यमुना आदि नदियों का योगदान रहा है। वहीं गंगा, नर्मदा के अतिरिक्त सोनभ्रद, पुनपुन, फल्गु, सकरी व दामोदर नदी का महत्व भी कुछ कम नहीं। फल्गु कोई अलग नदी नहीं, लीलाजन मोहाने के संगम से बना यह नदी यहाँ की सभ्यता संस्कृति का एहसास कराती है। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति ने न केवल भारत, बल्कि रूस, चीन और पूर्व में कम्बोडिया, जापान, वियतनाम, चम्पा, श्रीलंका व नेपाल को भी अपने सांस्कृतिक प्रकाश से दिव्यमान किया है। यह सनातन व बौद्ध धर्म के समागम के साथ जैन तीर्थंकरो की पवित्र भूमि रही है। सिक्खों के धर्म गुरू गुरू गोविन्द सिंह में भी यहाँ डेरा डाला गया है। शैव और शाक्त मत का उदय इसी पवित्र भूमि पर हुआ। प्राचीन ऋषियों में लोमस, व्यास, परासर, दुर्वासा, श्रृंगी, च्यवन, बाल्यमीकि, कपिल मुनी, मार्कण्डेय के अलावे चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस जैसे महापुरूषों ने भी अपनी ज्ञान ज्योति से इसे लोकित किया है। भगवान बुद्ध, महावीर की यह ज्ञान व तपोभूमि रही है। यही भगवान बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई और भगवान बुद्ध कहलाये। यहाँ की पवित्र नदियों, सरोवरो, पर्वते, पग-पग पर बने मन्दिर व पंचकोशी तीर्थ क्षेत्र में बनी पिण्ड वेदियाँ यहाँ की पौराणिक गाथाओं को जीवंत बताने के लिए पर्याप्त मानी गयी है। विन्ध्य श्रेणी की पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा वैदिक काल का कीकट प्रदेश आज का ''बिहार'' तथा वर्तमान गया जी को तीर्थो का प्राण कहा गया है। यह पवित्र धरती ज्ञान भूमि के साथ मोक्षदायिनी भी है। यहाँ पितरों की मुक्ति के लिए पिण्डवेदियों पर कामना करने का विधान है। यहाँ गंगा-यमुना संस्कृति के साथ बौद्ध और सनातन धर्म का समागम तथा शैव और शाक्त मत का उदय भी हुआ है। पावन फल्गु नदी के पश्चिमी तट पर विष्णु के चरण-चिन्ह् और सटे ब्रह्मयोनि पर्वत है, जो सृष्टि निर्माण की गाथाओं से जुड़ा है। इस पर्वत की तराई में बना कपिल मुनि का आश्रम व भष्म कूट पर्वत पर माँ मंगला के मन्दिर तथा इस मन्दिर की तराई में स्थित मार्कण्डेय मन्दिर है, जहाँ मार्कण्डेय ऋषि ने बैठकर दुर्गा सप्तशती का प्रथम अध्याय लिखा था। इस मन्दिर के बगल में स्थित गोदावरी मन्दिर जिसे काशी का अंश माना गया है। मन्दिर परिसर में बने चित्रगुप्त मन्दिर व कपाल भैरव स्थान इस शहर की प्राचीनता को दर्शाता है। इस सांस्कृतिक नगरी में हजारों प्रकार के देवी-देवताओं के दर्शन होते है। दिवालों पर बनायी गयी प्रतिमाओं, मूर्तियों, नदियों, तालाबों, पेड़ों, पत्थरों, खुदाइयों तथा चित्रकारियो में यह सब लाक्षणिक रूप से व्यक्त हैं। वेद पुराण तथा महाकाव्यों में वर्णित अनेक देवता-सूर्यदेव, विष्णु के विभिन्न अवतार, राम, कृष्ण, हनुमान की मूर्तियों पायी जाती हैं। फल्गु तट पर बसे इस गया-तीर्थ की महिमा महाभारत के वन पर्व में 84 व 95 अध्यायों में वर्णित है। उससे पता चलता है कि ब्रह्मयोनि का नाम पवित्र कूट था। इन तीर्थो की महिमा वायु पुराण में मिलती है। महाभारत में भी गया पिण्डदान व तर्पण का महत्व प्रतिपादित है। इन तीर्थो में अक्षयवट, महानदी, ब्रह्मसर, धर्मारण्य, यज्ञ कूप, धेनुक तीर्थ प्रमुख है। पांच मील में गया क्षेत्र दस मील में और गया शीर्षक्षेत्र एक कोस में है। यह क्षेत्र बोधगया के धर्मारण्य से लेकर गया शहर के प्रेतशिला पर्वत तक माना गया है। यहाँ के अन्य प्राचीन मन्दिरों में पिता महेश्वर, रामशिला पर्वत की तराई में स्थित मूंगा के बने गणेश की विशाल प्रतिमा, बंगला स्थान, बागेश्वरी, ढुंगेश्वरी तथा बराबर पहाड़ पर बाबा सिद्धनाथ के मन्दिर, इस पर्वत की तराई में ऋषि मुनियों के लिए बना रॉक कट मोनेस्ट्री की धार्मिक महत्ता भी कम नही है।

विश्व के बौद्ध स्थलो में बोधगया स्थित महाबोधि मन्दिर का अपना विशिष्ट स्थान है। विश्व के मानचित्र पर गया की पहचान बौद्ध धर्म एवम् श्राद्ध कर्म ने दिलवायी। गया के धार्मिक साम्राज्य पर तीन कश्यप बन्धुओं-उरूवेल कश्यप, गया कश्यप व नदी कश्यप के प्रभुत्व की चर्चा है। कहा गया है कि इनके द्वारा आयोजित महायज्ञ में अंग एवम् मगध महाजनपदों के असंख्य जन भाग लेकर कश्यप बन्धुओं को उपहार आदि प्रदान करते थे। परवर्ती काल में गया शैव एवं वैष्णव दोनो सम्प्रदायों के एक सशक्त केन्द्र के रूप में उभरा। बौद्ध धर्मावलम्बियों के लिए यह चतुर्थ महातीर्थो में एक है। जबकि सनातन धर्मावलम्बियों के लिए श्राद्ध कर्म हेतु सर्वश्रेष्ठ पितृतीर्थ है। गया मे विभिन्न धर्मों एवम् सम्प्रदायों और विभिन्न काल खण्डो में मन्दिरों का होना स्वभाविक है।

मैहर, सतना, मध्यप्रदेश
मो०-9431263521

सीता माता ने गया धाम में किया था दशरथ का पिंडदान

डॉ० मनोज कुमार निराला

युगों–युगों से भारत को धर्म प्राण देश कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ कई महान ऋषि–मुनियों समेत देवी–देवताओं ने भी मानव शरीर धारण कर जन्म लिया है। भारत की धरती पर कई चमत्कार भी होते है। शायद यही वजह है कि धार्मिक दृष्टिकोण से भारत की इस महान भूमि को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। मनुष्य जीवन चक्र में जन्म से शुरू हुई यात्रा मृत्यु और फिर पिंडदान पर आकर रूकती है। हिन्दू धर्म से जुड़े व्यक्ति काशी में प्राण त्यागकर मोक्ष को प्राप्त करना चाहते हैं; वही हर कोई यह भी चाहता है कि मृत्यु के पश्चात् उसकी आत्मा का पिंडदान गया में हो। इसके पीछे भी एक बड़ा कारण विद्यमान है।

बिहार स्थित गया को मोक्ष तीर्थ माना गया है। इसका वर्णन गरूड़ पुराण में भी अंकित है।

गया श्राद्धात् प्रमुयक्ति पितरोः भव सागरात्।
गदाधरानुग्रहेणते भान्ति परामां गतिम्।।

इसका अर्थ है गया में श्राद्ध करने मात्र से ही आत्मा को विष्णु लोक प्राप्ति होती है। वायु पुराण के अनुसार मीन, मेष, कन्या एवं कुंभ इन राशियों में सूर्य के होने पर अगर किसी का पिंडदान किया जाता है, तो यह उत्तम फलदायी साबित होता है। इसी तरह मकर संक्रांति के समय किया गया पिंडदान भी कल्याणकारी साबित होता है। गया–तीर्थ पर पिंडदान करने के महात्व को स्वंय भगवान राम ने भी स्वीकार किया है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार वनवास काल के दौरान भगवान राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ पिता का श्राद्ध करने गया धाम पहुँचते हैं। वे दोनों जरूरी सामान लेने जाते है और माता सीता उनकी प्रतीक्षा करती है। दिन बीतने लगा और श्रीराम और लक्ष्मण के आने की कोई आहट नहीं होती है। माता–सीता की व्याकुलता बढ़ती जाती है कि कहीं श्राद्ध का उत्तम समय बीत न जाए। माता सीता इंतजार कर रही थी अचानक दशरथ की आत्मा उनके पास आकर अपने पिंडदान की मांग करती है।

सीता जी फल्गु नदी के किनारे बैठकर वहाँ केतकी के फूलों और गाय को साक्षी मानकर बालु के पिंड बनाकर दशरथ को पिंडदान करती है। थोड़ी देर बाद जब भगवान राम और लक्ष्मण सामग्री लेकर लोटे तब सीता जी ने उन्हें बताया कि वे महाराज दशरथ को पिंडदान कर चुकी हैं। श्री राम ने उनसे कहा कि बिना सामग्री के पिंडदान संभव नहीं है इसलिए उन्होंने सीता जी से प्रमाण देने के लिए कहा।

सीता जी ने केतकी के फूल, गाय और बालु मिट्टी से गवाही देने के लिए कहा, लेकिन वहाँ लगे वट वृक्ष के अलावा किसी ने भी सीता जी के पक्ष में गवाही नहीं दी। फिर सीता जी ने महाराज दशरथ की आत्मा का ध्यानकर उन्हीं से गवाही देने की प्रार्थना की। सीता जी के आग्रह पर स्वंय महाराज दशरथ की आत्मा प्रकट हुई और उन्होंने कहा कि समय नष्ट न हो जाए इसलिए सीता जी ने उनका पिंडदान किया है। अपने पिता की गवाही पाकर भगवान राम आश्वस्त हुए। लेकिन फल्गु नदी और केतकी के कूल के झूठ बोलने पर सीता जी बहुत क्रोधित हुई और उन्हे श्राप दिया। सीता जी ने फल्गु नदी को श्राप दिया जा तू केवल नाम की ही नदी रहेगी तेरा सारा पानी सूख जाएगा। तब से लेकर आज तक फल्गु नदी का पानी सुखा हुआ रहता है। वह अंत सलिला हो गई। गाय को उन्होंने श्राप दिया "पूज्य होकर भी तू लोगों का जूठा खाएगी। वही केतकी के फूलों को श्राप मिला कि पूजा में उसका उपयोग कभी नहीं किया जाएगा।

वट वृक्ष ने सत्य बोला था इसलिए सीता जी ने उसे दीघार्यु का वरदान दिया और कहा कि हर सुहागन स्त्री उसका स्मरण कर अपने पति की दीघार्यु होने की कामना करेगी।

उ० मा० शिक्षक
अनुग्रह क० उ० मा० विद्यालय (गया)
मो० 9939974391 ई–मेल nirala519@gmail.com

गया में 'अन्दर गया'

श्रीमती उषा सिन्हा

संसार के पुराने, जीवन्त और विकास पथ पर गतिशील नगरों में गया भी एक है जिसके पुरानी आबाद बस्ती को ''अन्दर गया'' कहा जाता है। ये अन्दर और बाहर का चक्कर अपने आप में अनूठा और सार गर्भित है। पूरे देश में और देश के बाहर भी पुरानी आबादी के बाद कितने ही नगरों में नई आबादी बसी पर नगर के नाम में परिवर्तन तो बस नई/पुरानी के रूप मे हुआ जैसे नई दिल्ली तो पुरानी दिल्ली कहीं-कहीं पुराने व नए नगर के बीच 'सिटी' शब्द का प्रयोग भी होता है, तो कहीं-कहीं नव आबाद केन्द्र को न्यू टाउनशीप भी कहा जाता है, पर गया में 'अन्दर गया' अपने-आप से इतिहास का वह पन्ना है जिसमें यहाँ के इतिहास का कितना ही राज छिपा है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं सोलहवीं शताब्दी के अंतिम चरण से लेकर सतरहवीं शताब्दी के मध्य काल तक गया में जब आबादी फल्गु नदी के किनारे बसी तो सुरक्षा की दृष्टि से चार विशाल फाटक व 13 विशाल खिड़कियाँ बनवायी गयीं। इसके अलावा भी कुछ फाटको का अस्तित्व कायम रहा, जैसे कि पंचमहला फाटक, मछली फाटक, गुर्दा फाटक। ऐसे विशाल द्वार के चार अवशेष आज भी इस बस्ती में देखा जा सकता है। इन मकानो का निर्माण विन्यास भी अनूठा व कालात्मक है 'अन्दर गया' के बैठकों का भी एक जमाने में बड़ा नाम रहा। इन 14 बैठको में न सिर्फ तीर्थवृत्ति की चर्चा होती, वरन् साहित्यिक सांस्कृतिक गोष्ठियों का गवाह भी बनी। गया से लेकर देश दुनिया की बातें यहाँ अनवरत चलती थी। मल्ल विद्या, कुश्ती, पहलवानी, गायकी और संगीत के तमाम विद्या के सृजन व विकास मे अन्दर गया के अवदान को नकारा नही जा सकता। अन्दर गया का अपना बहार, बाजार और व्यपार वर्षों तक कायम रहा।

आज के 'अन्दर गया' का विस्तार भी कुछ कम नहीं। इसी अन्दर गया क्षेत्र में पंचमहल्ला, नउआगढ़ी, बहुआर चौरा, सूर्यकुण्ड, पिंडवैली, करसिल्ली, रामसागर, ऊपरडीह, मौलागंज, दक्षिण दरवाजा, देवघाट, हनुमान गच्ची, कृष्ण द्वारिका, मुण्डपृष्ठा, नारायण चुआँ, मेहन्दी बाग, देवचौरा, मल्लाह टोली, मेहन्दी बाग, तुलसी बगीचा, बैकुण्ठ घाट, गायत्री घाट, ब्राह्मणी घाट, सेन जी की ठाकुरबाड़ी आदि मुहल्ला विद्यमान है, जहाँ गया के गयापालो का आज भी पुश्तैनी मकान देखा जा सकता है। कभी इनके 14 टोले और 1484 घर थे। इस पूरे प्रक्षेत्र का विशद् सर्वेक्षण पहले फ्रासिस बुकानन और नए जमाने में डॉ० ललित प्रसाद विद्यार्थी द्वारा किया गया।

नए जमाने में भी इस पूरे क्षेत्र में इतिहास-पुरातत्व की बहार कायम है। गत वर्ष जापान की एक बाला तुमोको मुशिका ने यहाँ पर शोध किया तो इस वर्ष गयापाल समाज की ज्योत्सना आनन्द भी शोध कार्य में लगी हैं। सचमुच गया का दिल है अन्दर गया जो दर्शनीय है।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, गोदावरी, गया

✦

धर्मेणै वर्षयस्तीर्णा धर्मे लोकाः प्रतिष्ठिताः।
धर्मेण देवता ववृधुर्धर्मे चार्थः समाहित।।

महाभारत-वन 313/128

धर्म के द्वारा ऋषिगण इस भव-सागर से पार हो गए। सम्पूर्ण लोक धर्म के आधार पर ही टिके हुए हैं; धर्म से ही देवता बढ़े हैं और धन भी धर्म के ही आश्रित है।

क्या पितरो तक पिण्डदान पहुँच पाता है ?

श्री सुनील सौरभ

भारतीय संस्कृति और यहाँ की परंपराऐं सदियों से दुनिया के लिए आश्चर्य के विषय रही हैं। इन परंपराओं में शादी–विवाह में होने वाले विविध अनुष्ठान हों या फिर लोकमंगल, मानव कल्याण या विश्वकल्याण के लिए होने वाले यज्ञ हो, चाहे श्राद्ध संस्कार हो या पितरो को मोक्ष के लिए किया जाने वाला पिण्डदान आदि। इन सबके अलावा सैकड़ो तरह के धार्मिक–आध्यात्मिक अनुष्ठान भी भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी ये भारतीय परंपराएँ थोड़े बहुत बदलाव के साथ आज भी उसी रूप में चली आ रही है, जिस रूप में शुरू हुई थीं। इन्हीं परपम्पराओं में शामिल है हिन्दू (सनातन) धर्मावलम्बियों के द्वारा पितरों की मोक्ष–प्राप्ति के लिए किया जाने वाला तर्पण तथा पिंडदान। इसके द्वारा अपने पूर्वजों (पितरों) की मोक्ष प्राप्ति के साथ उनके आशीर्वाद से परिवार की सुख–समृद्धि और धन्य–धान्य की कामना की जाती है। लेकिन आज बहुत से लोग अपने को आधुनिक–स्मार्ट कहलाने के चक्कर में अपनी ही प्राचीन काल से चली आ रही संस्कृति और परंपराओं का मजाक उड़ाने से बाज नहीं आते हैं। इसी प्रकार अनेक व्यक्ति पिण्डदान के संबंध में तर्क करते देखे जाते हैं। कहते है पितरों के प्रति किया हुआ पिंडदान क्या उन तक पहुँच पाता है ?इस संदर्भ में शंकराचार्य स्वामी निरंजन देवतीर्थ ने एक बार एक सच्ची घटना सुनायी थी। इससे पिंडदान पर सवाल उठाने वाले तथाकथित आधुनिक चिंतन वाले लोगों को जवाब मिल जाता है। उनहोंने सच्ची घटना सुनायी। बताया, एक बालक अपने अभिभावक के साथ दिल्ली के मार्ग में ट्रेन से यात्रा कर रहा था। ट्रेन में उसे बड़ी जोरो की भूख लगी हुई थी। अभिभावक उसे अगले स्टेशन पर कुछ खिलाने का आश्वासन दिये जा रहे थे। इतने में बालक को एक झपकी आयी और वह सो गया। नींद खुलने पर जब अभिभावक ने उससे कुछ खा लेने को कहा, तो बालक ने बड़ी अन्यमस्कता से निवेदन किया कि अब उसे भूख नहीं है। पूछने पर बालक ने बतलाया कि इसी समय मेरे पूर्वजन्म की संततियों ने तर्पण किया है। जिससे वह तृप्त हो गया। बालक ने उस स्थान का निश्चित ठिकाना भी बताया। संयोग से वह स्थान मार्ग में ही पड़ता था। बालक की बातों को सुनकर आसपास के यात्रियों की सलाह पर सत्य का पता लगाने के लिए वह परिवार बालक को साथ लेकर उस स्थान पर गये। यह देखकर बालक के अभिभावकों को आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि वहाँ अभी ही श्राद्ध एवं तर्पण आदि की क्रियाएँ सम्पन्न हुई थीं। एक अन्य बात से पिंडदान पर सवाल करने वाले लोगों को इसका जवाब दिया जा सकता है। आधुनिक मशीन फैक्स से जिस प्रकार एक ओर से लिखकर भेजी गयी बातें हूबहू दूसरी ओर मिल जाती है, उसी तरह लोगों द्वारा किया गया पिण्डदान का हविष्य भी पितरों तक पहुंच जाता है। इसके बाद पितरगण अपनी संततियो को धन–धान्य प्राप्ति का भी आर्शीवाद देते हैं।

धर्मग्रंथो के अनुसार चार पुरूषार्थो में अंतिम मोक्ष की प्राप्ति का स्थान गया को ही माना गया है। धर्म, अर्थ और काम की पूर्णता तभी सार्थक है, जब मोक्ष सुलभ हो और यह गया–तीर्थ में सहज ही प्राप्त होता है। वायु पुराण में मुक्ति के चार साधन बताये गये है – ब्रह्मज्ञान, गया श्राद्ध, गौगृह में मरण और कुरूक्षेत्र का वास।

गया श्राद्ध से इक्कीस गोत्रों की सात पीढ़ियों के पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इन्हीं कारणों से सारी दुनिया के सनातन धर्मावलम्बियों को जीवन में कम–से–कम एक बार गयाजी की पावन भूमि पर अपने पितरों को पिंडदान कर श्रद्धा निवेदित करने के लिए जरूर आना चाहिए।

ब्यूरो प्रमुख, 'चौथी दुनिया' साप्ताहिक
गेवालबिगहा (गया) मो० 9431085007

समन्वय तीर्थ गया और पितृपक्ष

डा० राजीव रंजन पाठक

मगध महाजनपद और वर्त्तमान बिहार के अन्तर्गत आने वाले गया तीर्थ की महत्ता का बखान वेद, उपनिषद् और विभिन्न पुराणों में व्याप्त है। काल की दृष्टि से सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चारों युगों में इस तीर्थ के प्रति सभी महापुरूषो में एक विशेष प्रकार का आकर्षण दिखाई देता रहा है। सतयुग में गयासुर की भीषण तपस्या के कारण उत्पन्न संकट को दूर करने हेतु साक्षात् नारायण श्री विष्णु के साथ सारे देवी–देवता, सारी पवित्र नदियाँ, सरोवर और सभी तीर्थो का भी प्रतिदिन आगमन इस गया–तीर्थ मे होता है। ऐसा पुराण में उल्लिखित है। गयासुर ने श्रीहरि, विष्णु, शिव एवं अन्य सभी देवी–देवताओं को अपने शरीर पर सदा उपस्थित रहने का वचन लेकर गया को तीर्थों का सिरमौर बना दिया। त्रेता युग के रामायण काल में स्वंय श्रीराम, लक्ष्मण और सीता के आगमन की कथा को कौन नहीं जानता ?सीता के श्राप से तो सभी अवगत हैं ही। साथ ही, इस फल्गु की महिमा का उदात्त स्वरूप महाराज दशरथ ने माँ सीता से बालु का पिंड लेकर स्थापित कर दिया। विश्वकवि तुलसीदास ने भी पूरे रामचरित मानस में गया के लिए चौपाई की एक अर्धाली का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया है।

द्वापर के महाभारत काल में चार भाइयों का आगमन भीम गया वेदी नाम से स्वंयसिद्ध है। भीम के गदा धोने के स्थल को गदालोल वेदी के नाम से जाना जाता है। महाराज युधिष्ठिर के यज्ञ में ब्रह्मा द्वारा कल्पित ब्राह्मण उपस्थित किये गये थे, जिनके द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया था। आज इन्हें ही गयापाल तीर्थ–पुरोहित के रूप में मान्यता प्राप्त है। उस स्थल को 'धर्मारण्य' के नाम से जाना जाता है।

इस धरा धाम पर अनेक महापुरूष आकर्षित होकर आए, जिनमें पीरमंसूर, खानकाह चिश्तिया, गुरूनानक देव, चैतन्य महाप्रभु, विजयकृष्ण गोस्वामी, अघोरनाथ, गोरखनाथ, महर्षि कपिल और तीर्थकर महावीर आदि का नाम अग्रगण्य है। इन सबों के द्वारा इस धराधाम को पवित्रतम बनाने की अभूतपूर्व कोशिश की गई। इस क्रम में हम भगवान बुद्ध को भला कैसे भूल सकते है, जिन्हें मानने और चाहने वाले पूरी दुनिया में छाये हुए हैं। उस व्यक्ति की तपःस्थली और ज्ञानस्थली भी यही गया क्षेत्र है। आज इस गया क्षेत्र में वर्षपर्यन्त बुद्ध के अनुयायिओं का आना भी इस बात को सिद्ध करता है कि यह धरती पूरे विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। परंतु यह पवित्र भूमि पूरी दुनिया के लिए मोक्ष–भूमि के रूप में प्रतिष्ठित है और पितृपक्ष में हम अपने पितरों को पिण्डदान देकर मोक्ष प्रदान करने हेतु श्री हरि विष्णु से प्रार्थना करते हैं, जिससे उन्हें मोक्ष अथवा विष्णु लोक प्राप्त हो जाता है। ऐसा हमारे शास्त्रों का कथन है जिसे पूरी दुनिया हृदय से स्वीकार करती है।

आइये फल्गु गंगा की थोड़ी चर्चा कर लें, क्योंकि इसी के तट पर पिण्डदान के महत्वपूर्ण कर्म प्रतिपादित होते हैं। इस फल्गु के वर्तमान स्वरूप की स्थिति पर विचार करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। इसी फल्गु को विष्णुपदी गंगा एवं पंचनद के नाम से भी अभिहित किया जाता है। क्योंकि विष्णुपद तक आते–आते पांच नदियों का समाहार इस फल्गु में स्वीकृत है। यह बात अलग है कि श्री विष्णुपद के निकट फल्गु में आकर मिलने वाली मधुश्रवा को आज 'मनरसरवा नाला' के नाम से संबोधित किया जा रहा है। यह हमारे उदात्त चिन्तन और पितरों के प्रति उपेक्षा का एक जीवंत उदाहरण है। खेद है कि आज आजादी के 70 वर्षो बाद भी हम इस मधुश्रवा संज्ञा को सुरक्षित रखने में पूरी तरह असमर्थ है और इसे मनसरवा नाला कहते है। सरोवरों की ओर चले तो गायत्री सरोवर से लेकर ब्रह्म सरोवर, बैतरणी, रूक्मिणी, गोदावरी, रामसागर, सूर्यकुंड, उत्तरमानस, रामकुंड आदि सरोवरो की वर्तमान

स्थिति तो स्नान–मार्जन के योग्य अब नहीं रह गयी है। वेदियों की स्थिति भी बहुत उत्तम नहीं मानी जा सकती। साथ ही बहुत सी वेदियाँ विलुप्त हो गई। कहा जाता है कि यहाँ 365 वेदियाँ थीं। जो लुप्त होते होते 40 से 45 बच गई हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि आदिकाल से अद्यतन इस पवित्रतम धराधाम पर सभी धर्मो के शीर्षस्थ व्यक्तियों द्वारा यहाँ आकर अपना योगदान दिया गया; क्योंकि किसी न किसी धर्म से दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति जुड़ा होता है और यहाँ सारे शीर्षस्थ धर्मगुरूओं का आगमन उन्हें सहज खींच लेता है। अतः आर्य परंपरा में सर्वोच्च स्थान पर आसीन गया क्षेत्र सनातन धमावलंबियों का पवित्रतम तीर्थ स्थल तो है ही, बल्कि विश्व के सारे धर्मावलंबियो के लिये भी यह तीर्थस्वरूप बन गया है। इसकी हिफाजत, स्वच्छता, सौन्दर्यीकरण, ऐतिहासिक धरोहर, सांस्कृतिक विरासत साहित्य–संगीत–कला और पहलवानी आदि की सुरक्षा–संरक्षा एवं उसका संवर्धन गयावासियों का प्रथम कर्त्तव्य है। इसी भांति हम अपने पूर्वजों के प्रति समर्पित भाव से उपस्थित रह सकते है, जो हमारे वर्तमान और भविष्य को सुन्दरतम बनाने में सहयोग प्रदान करेगा।

निदेशक मानस मंच
मानस निकेतन पूर्वी रामसागर, गया

पिता, पितर और पितृयज्ञ

श्री कमलेश मिश्र

मानव की उत्पत्ति सृष्टि का सर्वोत्तम उपहार है। संसार में मनुष्य जन्म लेता है और नित्य, नैमित्तिक प्रायश्चित और उपासना कर्म करता हुआ जीवन–यापन करता है और तभी मनुष्य का जीवन सफल माना जाता है। पिता का स्थान सबसे ऊँचा है। ईश्वर कोई–न–कोई रूप धारण कर संसार का पालन करता है। ईश्वर ही पिता के रूप में अवतरित होकर हमारा पालन–पोषण करते हैं। पिता की पूजा ही ईश्वर की पूजा है। ईश्वर का ही अंश पिता हैं। पितृ–पूजन से ही पुत्र को संसार में सब कुछ प्राप्त हो जाता है। गरूड़ पुराण में स्पष्ट उल्लेख है –

आयुः पुत्रान यशः स्वर्ग, कीर्त्ति पुष्टिं बलं श्रियम्।
पशून् सौख्यं धनं धान्यं, प्राप्नुयात् पितृ–पूजनात्।।

अर्थात पिता की पूजा (पिता का आदर, सेवा, मरणानन्तर श्राद्ध कर्म आदि) से पुत्र को वह सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जो संसार में सुख पूर्वक जीने के लिए अनिवार्य हैं। यहाँ 'पिता' शब्द से ही 'पितर' का भी बोध है। पिता का अर्थ माता–पिता दोनो हैं। अर्थात माता–पिता की सेवा करना और मरने के बाद श्राद्धादि कर्म करने में ही पुत्र की पुत्रता है। इसी बात की पुष्टि अनेक शास्त्रों ने की है। माता–पिता यदि प्रसन्न हैं तो सभी देवी–देवता प्रसन्न हैं। श्लोक द्रष्टव्य है –

''पिता धर्मः पिता स्वर्गः, पिता हिं परमं तपः।
पिता पितरिमापन्ने, प्रीयन्ते सर्व देवताः।।

यह ध्रुव सत्य है। किन्तु आज की संतान इन दोनो देवी–देवता की पूजा न करके मन्दिरों एवं तीर्थस्थानों का भ्रमण कर रहे हैं जो हास्यास्पद है। मेरी मान्यता है कि पिता के समान कोई दूसरा गुरू नहीं हो सकता। यही पिता पुत्र का मार्ग–दर्शन कर उसके जीवन को सफल बनाता है। एक गुरू भी यही करते हैं। 'पृ–पूरण–पालयोः'' धातु से पिता शब्द निष्पन्न है।

जो जीव जन्म देकर उसका लालन करता है तथा उसकी आवश्यकता की पूर्ति करता है, वही पिता कहलाता है। पिता के रहते संसार में दूसरे गुरू की खोज में भटकना आश्चर्य का विषय है– ऐसा मेरा मत है। पिता विद्वान हो या मूर्ख, साक्षर हो या निरक्षर, दोनो ही स्थिति में वे आदरणीय हैं। उसकी उपेक्षा कर सुख की परिकल्पना करना ही व्यर्थ है।

जीवन को सफल बनाने के लिए मातृ-पितृ पूजन से बढ़कर कोई दूसरी पूजा नही है। यहाँ पूजन शब्द का अर्थ, दोनो (माता-पिता) की संतुष्टि तथा मरणानन्तर श्राद्ध कर्म करना अभिप्रेत है। जीवन में मनुष्य पञ्च महायज्ञ करता है। पंच महायज्ञों में पितृ यज्ञ की भी मान्यता है। मनुस्मृति में श्राद्ध तर्पण तथा पिण्डदान को पितृयज्ञ कहते हैं। हिन्दू धर्म दर्शन में मृत्युपरान्त, मृतक को पितृ या पितर मानकर उनके प्रति सम्पूर्ण आस्था तथा श्रद्धा देने के लिए उन्हे पिण्डदान, श्राद्ध तथा तर्पण का विधान है। इससे सुख समृद्धि की वृद्धि तथा स्वर्गस्थ पितरो की तृप्ति होती है। दैनिक तर्पण देने की परम्परा भी हिन्दू संस्कृति में मिलती है। प्रति वर्ष पितृपक्ष के अवसर पर श्राद्ध करने में भी हिन्दू वर्ग पूर्ण आस्था रखता है। योग वाशिष्ट में कहा गया है कि पितृ मृत्युपरान्त अपने परिवारों एवं कुटुम्बियों से अपेक्षा करते हैं कि वे पिण्डदान करें जिनसे उनको नये शरीर की प्राप्ति हो।

गयाधाम विष्णु की पवित्र नगरी है। यहाँ साक्षात गदाधर विष्णु भगवान स्थित हैं। यदि पुत्र गयाजी में श्राद्ध करता है तो अत्युत्तम है। यदि नहीं तो कहीं भी रहे अपने पितरों को श्रद्धापूर्वक पिण्डदान करे इसी में उसके जीवन की सार्थकता है। 'श्राद्ध' शब्द बड़ा व्यापक अर्थ में व्यवहृत है। ''श्रद्धया दीयते यस्मात् तत श्राद्धम्''। अपने मृत पितरों के उद्देश्य से श्रद्धा पूर्वक किये जाने वाला कर्म विशेष ही श्राद्ध कहलाता है। श्राद्ध में 'श्रद्धा' अपेक्षित है। महर्षि पुलस्त्य ने कहा है –

संस्कृत व्यंजनाद्यं च पयोमधुघृतान्वितम्।
श्रद्धया दीयते यस्मात् श्राद्धं तेन निगधते।।

अर्थात घृत-मधु से युक्त सुसंस्कृत उत्तम व्यंजन को श्रद्धा पूर्वक पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मण को दिया जाए उसे 'श्राद्ध' कहते हैं।

श्राद्ध तर्पण का अर्थ है – पितरों का आह्वान सम्मान एवं उनकी क्षुधापूर्ति। जिसे ग्रहण करने के लिए पितर प्रति वर्ष पितृ पक्ष में अपनी संतानों के द्वार पर जाकर प्रतीक्षा करते हैं। पितरों को श्राद्धादि तर्पण करने से उन्हें सद्गति, शान्ति एवं मोक्ष मिलता है। यह भी मान्यता है कि श्राद्ध के दौरान जो भी वस्तु पितरों को प्रदान की जाती है, वह उनको के अवश्य पहुँचती है। मनुस्मृति कहती है कि –

''यद्यद्ददाति विधिवत् सम्यक श्रद्धा समन्वितः।
तत्तते पितृणां भवति परन्नान्नाम् अक्षयम्।।

यहाँ एक बात प्रसंगतः कहना चाहता हूँ कि पिण्डदान आदि ज्येष्ठ पुत्र द्वारा ही किया जाना चाहिए। इसे अनेक पुत्रों द्वारा करने का निषेध है। हाँ अपने बड़े भाई से अनुमति लेकर छोटा भाई श्राद्ध कर सकता है, ऐसा करना शास्त्र विहित है।

अन्त में अपने भावी संतानो से मेरा आग्रह है कि आपके जीने का तौर-तरीका जो भी हो किन्तु अपने पितरो का (माता-पिता) श्राद्ध-तर्पण करें तथा उनके आर्शीवाद से अपने भविष्य को सुखद बनाकर शतायु बनें। श्राद्ध न करने वाले प्राणी को पग-पग पर कष्ट होता है। फिर अभिशप्त परिवार आजीवन कष्ट झेलता है। उपनिषद का वाक्य है –

''देव पितृ कार्यान्यां न प्रभदितव्यम'' अर्थात् देव पितृ कार्य से विमुख न हो।।

सूर्यदेव नगर, मानपुर, गया - 3

✦

गयाश्राद्ध-पर्व

पं० मणिलाल बारिक

''श्राद्धकल्प'' का वचन है –

''प्रेतान्पितॄ च निर्दि य भोज्यञ्च
प्रियमात्मनः।
श्रद्धया दीयते यस्मात्तस्माच्छ्राद्धं निगद्यते।।''

ऐसे प्रमाणानुसार एवं दृक्ग्रमान्प्रचलनानुसार'' शरीरत्यक्त संबंधियों की आत्माओं के सम्मान में श्रद्धापूर्वक अनुष्ठेय संस्कार (और्ध्वदैहिक आहुति) अन्त्येष्टि आदि संस्कारों को श्राद्ध कहते है। अर्थात प्रेतों को तथा पितरों के निर्दिष्ट जो उनका प्रिय

भोज्य पदार्थ, श्रद्धापूर्वक अपनी वस्तु, प्रदान की जाती है, उस क्रिया को श्राद्ध कहते हैं वह भी श्रद्धादिरहित नहीं। ''श्राद्ध'' शब्द की व्युत्पति ही ''श्रद्धा अस्मिन्नस्ति इति श्राद्धम्'' है, क्योंकि वैसे भी ''श्रद्धा'' और ''श्राद्ध'' दोनो ही संस्कृत शब्द ''श्रत्'' धातु से ही निर्मित है। व्यवहार में भी ''मैं अमुक का श्राद्ध करने जा रहा हूँ'' ऐसा कहने पर किसी मृतक विषयक संस्कार का ही बोध होता है। श्रद्धा का अर्थ है – आस्था, निष्ठा, विश्वास।

श्राद्ध के बहुत प्रकार हैं। जिन्हें तीन भागों में बांटा गया है :- नित्य श्राद्ध, नैमित्तिक श्राद्ध एवं काम्यश्राद्ध। गया श्राद्ध ''नित्यश्राद्ध'' है। किसी निमित विशेष से किए गए श्राद्ध को नैमित्तिक श्राद्ध कहा जाता है किसी एक व्यक्ति को उद्देश्य कर किया गया एकोदिष्ट श्राद्ध भी नैमित्तिक है तथा किसी कामना विशेष की सिद्धि हेतु कृत श्राद्ध काम्य श्राद्ध है। श्राद्ध के साथ गया का अन्योन्याश्रय संबंध है। श्राद्ध में गया का इतना महत्व है कि आप श्राद्ध कहीं भी कर सकते हैं। सबसे पहले श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा आदिगदाधर ताम्यां चैव नमस्कृत्य ततः श्राद्धं समाचरेत्। आगे – ''कुरूक्षेत्रं गया गंगा प्रभासः पुष्कराणि च। तीर्थान्येतानि पञ्चानि श्राद्धकाले भवन्तिह।

इस प्रकार गया, भगवान विष्णु इन दोनों का स्मरण और कुरूक्षेत्र, गंगा, प्रभासतीर्थ एवं पुष्कर तीर्थ सहित गया को निष्ठा पूर्वक आवाहित कर श्राद्धकृत्य का सम्पादन करना चाहिए।

दशकों पूर्व मुंबई निवास–काल में श्राद्ध समय ऐसा करने–कराने वालो से मैं बिनोदपूर्वक प्रश्न करता था कि – ''श्राद्धकाले मुम्बापुर्या ध्यात्वा'' क्यों नही बोलते, क्योंकि गया तो यहाँ से 17 सौ किलोमीटर दूर है, जहाँ मेरा घर है, उसका ध्यान क्यों करते हो ?तो वह हँसकर बोलते – ''नियम ही है यह''।

चन्द्रमा से पितर रस प्राप्त करते है जो दिन में तथा अमावस्या को अहोरात्र नहीं मिल पाता। चन्द्रमा के क्रमशः क्षीण होने से उन्हें क्रमशः अतृप्ति होती है। इसी कारण दिन में मध्याहन में और उसमें भी अमावस्या को उनकी तृप्ति का सत्प्रसास करना उन्हें वैसे ही सर्वाधिक प्रिय होता है जैसे किसी अतिक्षुधित–तृप्ति को सन्तृपित मिले। इसलिए अमाश्राद्ध का बड़ा महत्व है। इन्हीं कारणों से पितरो की अभ्यार्थना का सर्वोपयुक्त काल मध्याहन माना गया है। भारतीय पञ्चांगानुसार प्रत्येक महीने में दो पक्ष 15–15 दिनों के होते हैं। कृष्णपक्ष को पितृपक्ष एवं शुक्ल पक्ष को देवपक्ष कहा जाता है। देवयोनि का पूजाऽर्चना के लिए जैसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण तिथि पूर्णिमा है, वैसी ही महत्ता पितरयोनि के लिए अमावस्या की है।

कन्या राशिगत सौरमास की अमावस्या सबसे महत्व वाली होने से इसे ''महालया'' कहा जाता है। इस वर्ष यह 20 सितम्बर को है। जिनके माता–पिता नही रहे हैं ऐसे पुत्रो को पितृपक्ष में एक बड़ा सहज–स्वभाविक उत्साह सा होता है कि हम क्यों न जिस गया का ध्यान सभी श्राद्धों में किया जाता है, वहीं जाकर अपने पूर्वजो का श्राद्ध करें। इन पन्द्रह–सत्रह दिनो में एक पर्व उपस्थित हो जाता है। फलस्वरूप गया में ''पितृपक्ष मेला'' बन जाया करता है। पथ, रेल एवं वायु परिवहन की सुविधाओं के विकास के युग में तीर्थयात्रियों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हो जाने पर भी सरकारी और सामाजिक व्यवस्था नितान्त अपर्याप्त प्रमाणित होती है। स्वयं तीर्थ कोई वस्तु नहीं होती है, भारतीय संसÑति में इसकी महत्ता स्थापित है। मानव को शान्ति उपलब्ध कराने में तीर्थ कितने उपयोगी सिद्ध होते हैं, यह शिक्षा न तो प्रशासनिक अधिकारियों को पाठ्यक्रमों में दी जाती है, नही गया के सामान्य नागरिकों को सहज से प्राप्त होती हैं। क्योंकि संस्कृति संस्कृत में है, और संस्कृत से शिक्षा प्रणाली ने दूरी बनाई हुई है। तब तो केवल एक ज्ञात–अज्ञात सी प्राचीन परंपरा का निर्वहन मात्र ही किया जाता है।

मंत्री, गयापाल तीर्थवृान्त सुधारणी सभा,
श्री विष्णुपद क्षेत्र, गया

✦

गया जी में श्राद्ध करना पुत्र होने की योग्यता है

आचार्य पं० अमरनाथ बौधिया

भारत में सनातनकाल से पुत्र होने की योग्यता कुछ इस प्रकार से निर्धारित है –

''जीविते वाक्यकरणात् मृताहे भूरिभोजनात।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिपुर्त्रस्य पुत्रत।।''

जीवनकाल में आज्ञाऽनुपालन तथा अन्त्येष्टि में अधिक भोजनदान से गया में पिण्डदान करना तक को पुत्रत्व–योग्यता का मानक बताया गया है। क्योंकि भारत की संस्कृति कृतज्ञ–संस्कृति है। वह अंग्रेजी संस्कृति नहीं है जो जिस भारत ने उसे व्यापार की सुविधा दी, उसी का सदियों खून चूसा। ऐसा भारतीयों ने किसी देश के साथ किया है क्या ?हमारी संस्कृति ने तो यावज्जीवन संबंधी–आत्माओं का आभारी माना है। वह चाहे शरीर में हो वा शरीर पिंजरमुक्त। त्रिविधि श्राद्ध प्रकरणों में प्रतिवार्षिक (तिथि) श्राद्ध भी यावाज्जीवन करणीय 'नित्यश्राद्ध' श्रेणी का श्राद्ध बताया गया है। जिसे ''प्राणै: कण्ठगतैरपि कर्त्तव्यं'' ऐसा निर्दिष्ट किया गया है। अन्वाहार्यक द्धप्रतिमासिकक्ष्र तिथि श्राद्ध का भी परामर्श दिया गया है शास्त्रों में। गया–श्राद्ध की पद्धति अन्य श्राद्धों से अलग है। गया–श्राद्ध करने के लिए कोई कालबर्जना नहीं है। वायु पुराण कहता है ''गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दधाद्विचक्षन: दधात् अर्थात सभी समय देना चाहिए। किसी को तब भी सन्देह रह गया हो, तो आगे कहा है ''अधिमासे, जन्म दिने, चास्तेऽपि गुरूशुक्रयो: न त्यक्व्यं गया श्राद्धं सिंहस्थेऽपि वृहस्पतौ।'' गुर्वस्त, शुक्रास्त, अधिकमास, जन्मदिन, सिंहस्थ वृहस्पति भी गया–श्राद्ध में व्यवधान नहीं।

इस छोटे से प्रकरण के अन्त में दो शब्दों में यह विचार किया गया है कि– सभी श्राद्धों में गया का इतना महत्त्व क्यों है ?निश्चय ही इसका मूल कारण है – गया में विष्णुपद का होना बता यह है कि समस्त स्थावर–जंगम सृष्टि से पूर्व जो पंचतत्व (पञ्चमहाभूत) आविभूर्त हुए उनमें केवल आकाश ही विभु हैं, अनणु है। शेष पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु में अणु होते है। अमर कोष कहता है वियद्विणुपदं वा तुपुंस्याकाश विहायसी। आकाश के शेष तीन पयार्यवाची शब्दों में ''विष्णुपद'' भी आता है। विष्णु अर्थात् सब में अनत: प्रविष्ट और सर्वत्र परिव्याप्त। उसका पद आक्रोश जो सब कुछ के भीतर घुसा हुआ है और सब जगह है। अकेला है। अणुओं में बँटा हुआ नहीं है। गया की समस्त पवित्र वेदियो का केन्द्र यही विष्णुपद है। विष्णुपद गया की सर्व–प्रमुख वेदी है। गया का केन्द्र है और सभी वेदियों में प्राचीनतम भी है। कोई 1 घंटे के लिए गया आए अथवा 15 दिनों, 17 दिनों के लिए, विष्णुपद पर यदि श्राद्धतर्पण नहीं हुआ, तो उसका महत्व नहीं। इसके केवल अपने कैम्पस में ही 19 श्राद्ध–वेदियाँ हैं। तो हम जो श्राद्ध–तर्पण दान पूजा अर्चना अर्पित करते है, वह विष्णुपद अर्थात् आकाश के माध्यम अर्थात् परमपिता परमेश्वर के चरण के माध्यम से करते हैं जो सर्वत्र है। समान है। एक है, विभु है। 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना।' वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक समान परिव्याप्त है। तो जहाँ भी हमारे उदिष्ट जन, स्थूल शरीर रहित भी हमारे आराध्य पूर्वज जिस लोक में भी हैं, वहाँ भी आकाश है, ईश्वर है, परमात्मा है। इसलिए उसके माध्यम से हमारे कायिक, वाचिक, मानसिक संकल्प में इंगित (फ्रिक्वेन्ट) श्रद्धापात्र तक हमारा उत्सर्ग निश्चित रूप से कर्रेक्ट पहुँचता है, पहुँच पाता है। क्योंकि आकाश ध्वनि प्रस्तार का माध्यम है।

जैसे हमारी फोनिक कॉल तत्क्षण सुदूर अमेरिका–यूरोप में भी अत्यधिक दूर होने पर भी आकाश के माध्यम से पहुँच जाती है, टयून्ड फ्रिक्वेन्सी की लाइन द्वारा। वहाँ भी आकाश के टुकड़ा रहित एक विभु होने से ही यह सम्प्रेषण संभव हो पाता है। उसी प्रकार विश्व ब्रह्माण्ड के सबसे अधिक विश्वसनीय पोस्ट औफिस मालिक भगवान के माध्यम से हमारी भावनाएँ, भावनाओं से बने समर्पण निश्चित सुनिश्चित रूप से हमारे पितरों तक पहुँचते हैं, अन्त में यह कहना आवश्यक कि जो पुत्र अपने पितरों के उद्धार के लिए गयाजी में तर्पण तथा पिण्डदान एवं पितर–पूजा करते हैं, वे ही यथार्थत: पुत्र होने की योग्यता धारण करते हैं। इसी कारण गयाधाम श्राद्ध प्रमुख है।

गयापाल-पुरोहित, विष्णुपद, गया

पिण्डदान : उद्भव एवं विकास

श्री मुद्रिका सिंह

पिण्डदान अंत्येष्टि क्रिया का अन्तिम चरण है। किसी व्यक्ति के इस लोक से प्रस्थान के बाद उसके निकटतम जीवित सम्बन्धी द्वारा परलोक में उसके भावी जीवनकी सुख–सुविधा एवं कल्याण के लिए उसका अंतिम संस्कार न करते हैं वही पिण्डदान है। हिन्दू समाज में जीवित अवस्था में होने वाले विविध संस्कारो की तुलना में मरणोपरान्त होने वाले विभिन्न संस्कारों का महत्त्व कम नहीं है; बल्कि इहलोक की अपेक्षा परलोक के लिए होने वाले संस्कारों का महत्त्व कहीं ज्यादा है।

विभिन्न संस्कारों की तरह मरणोपरान्त संस्कार का भी उद्भव एवं विकास रहस्यावृत है। फिर भी विभिन्न मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के आधार पर इसके उद्भव के लिए दो प्रमुख कारण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। पहला मृत्यु एवं मृतक के भय, दूसरा मृतात्मा के प्रति श्रद्धा, स्नेह, ममता इत्यादि। आदिम मानव के लिए मृत्यु जीवन को झकझोर देने वाली एक सामान्य घटना थी। किसी व्यक्ति की मृत्यु से न केवल उसके जीवन का नाश होता है, बल्कि उसके साथ ही उससे जुड़े समस्त सम्बन्धों का अन्त हो जाता है। इसके कारण जीवित सम्बन्धियों में व्याकुलता एवं दहशत के भाव पैदा हो जाते हैं। इस कारण जीवित व्यक्ति द्वारा मृत्यु को टालने का यथा–सम्भव अथक प्रयास किया जाता है, किन्तु यह प्रयास न कभी सफल हुआ है और न कभी होगा। क्योंकि मृत्यु जीवन का स्वाभाविक अन्त है। इस संसार की कोई भी चीज अनश्वर नहीं है।

किसी की मृत्यु के पश्चात जीवित सम्बन्धियों के मन में यह भ्रम पैदा हो जाता है कि मृत व्यक्ति की आत्मा को जब तक परम शान्ति नहीं मिलती तब तक वह किसी योनि में भटकता रहेगा और इस स्थिति में वह हानि भी पहुँचा सकता है। ऐसी किंवदती है कि मृतक को इहलोक से यमलोक तक पहुँचने में लगभग एक वर्ष का समय लग जाता है। इसलिए पिण्डदान के समय एक साल तक की सभी सामग्रियाँ श्राद्धकर्म के माध्यम से ब्राह्मण देव को अर्पित की जाती हैं।

पिण्डदान की दूसरी सबसे सबल अवधारणा मृतक के प्रति श्रद्धा, स्नेह, प्रेम एवं ममता पर आधारित है। निर्विवाद तौर पर एक बात सामने उभरकर आती है कि मृतक एवं जीवित प्राणी के बीच रक्त का सम्बन्ध अभी भी बना हुआ है। उसके मृत माता–पिता का खून अभी भी उसकी धमनियों में प्रवाहित हो रहा है। इस वजह से जीवित सम्बन्धी मृतक के भावी कल्याण के लिए स्वेच्छापूर्वक दृढ संकल्प के साथ तैयार रहते हैं और मृतात्मा को सही स्थान चयन करने में सहयोग के लिए तत्पर दिखाई देते हैं, ताकि उन्हें किसी चीज की कमी के कारण बेवजह कोई कष्ट उठाना न पड़े। परलोक को लोग इस लोक का प्रतिरूप मानते हैं। इसलिए नए सिरे से जीवन प्रारम्भ करने हेतु वे सारी चीजें दी जाती हैं, जो जीवन के लिए आवश्यक होती है।

किवदंती है कि आदि काल में मृतात्मा के लिए दी जाने वाली सारी वस्तुएँ मृतक के साथ ही चिता में जला दी जाती थीं। कालान्तर में बुद्धिजीवी ब्राह्मणों के द्वारा यह प्रचारित एवं प्रसारित किया गया कि ब्राह्मण अपनी ब्रह्मविद्या के द्वारा वे सारी चीजें मृतक के पास पहुँचा देते हैं। फलत: लोगों ने ब्राह्मणों पर विश्वास व्यक्त किया और वे सारी चीजें ब्राह्मणों को दी जाने लगी।

मृतक अभी भी जीवित है यही पिण्डदान का सिद्धान्त है। इसलिए मृतक के परिजनों द्वारा उसे विविध जरूरतों की चीजों को संकलित करने के लिए वे सभी अभिप्रेत हुए। वे पिण्ड ग्रहण करने के लिए अपने पितरों को आमंत्रण देते है। जैसा कि ऋग्वेद में वर्णित है। पिण्डदान की प्रथा सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में प्रचलित है। चावल के गोले (पिण्ड) को प्रेत के शरीर (पिण्ड) के अवयवों का

पूरक माना जाता है। पिण्ड के साथ ही जल गिराया जाता है, जिसे तर्पण कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि यमपुरी में सर्वदा अन्धेरा रहता है। इसलिए अन्धकारमय मार्ग को प्रकाशित करने के उद्देश्य से दीप–दान अर्थात दीपक जलाया जाता है और अन्त में वे सारी चीजें (खाद्य–सामग्री) ब्राह्मणों को दे दी जाती है, ताकि वे स–समय मृतक के पास पहुँच जाये। अन्त में ब्राह्मण भोजन के माध्यम से उन्हें भोजन भी करवाया जाता है।

कालान्तर में पिण्डदान के स्वरूप एवं पिण्डदानी के स्वरूप में भी परिवर्तन दिखाई देने लगा। सर्वप्रथम पिण्ड दान का अधिकार ज्येष्ठ पुत्र को प्राप्त था। पुन: कनिष्ठ पुत्र को यह अधिकार दिया गया। हेमाद्री में शंख वचन के अनुसार –

'पुत्राभावेतु पत्नी स्यात् पत्न्या भावे सहोदर:' का उल्लेख मिलता है। लेकिन अगर पुत्र, पत्नी या कोई सहोदर भी उपलब्ध नहीं हो, तो यह अधिकार निकटतम परिजनों को दिया गया। पहले माँ–बहनों को अग्नि–संस्कार में शामिल होना वर्जित था, परन्तु धीरे–धीरे यह बन्धन भी ढीला पड़ता गया और अब जितने भी परिजन शुभ चिन्तक होते हैं, बगैर किसी भेदभाव के पिण्ड विधान में भाग लेते है। वर्तमानपरिदृश्यमें तो इसे इतना व्यापक जन समर्थन प्राप्त हो गया है कि अज्ञात नाम गोत्र के मृतक जो किसी प्राकृतिक आपदा के शिकार हो जाते हैं उन्हें समाज–सेवी सामाजिक कार्यकर्त्ता, धर्मानुरागी विद्वजन पिण्डदान विधान द्वारा पिण्ड समर्पित करते हैं। इस प्रकार हम देखते है कि सनातन धर्मावलम्बी हिन्दू–समाज में यह प्रथा युग–युग से चली आ रही है और आगे भी चलती रहेगी। समय–समय पर इन में परिवर्तन होता रहता है। सम्भवत: भविष्य में कुछ और भी परिवर्तन हो सकते हैं।

गौतम बुद्ध कॉलनी
बड़की डेल्हा, गया - 823002
मो० - 9431207620

सर्वमंगला शक्तिपीठ - मंगला गौरी

राम नरेश सिंह 'पयोद'

गया की मंगलागौरी शक्ति पीठ के असम राज्य की कामख्या की शक्तिपीठ के समतुल्य मान्यता प्राप्त है। यह जागृत पीठ है। तांत्रिक विधि विधानके साथ पूजनअर्चन करने पर सिद्धि प्राप्त होती है। क्योंकि कृष्ण ने भी गीता में कहा है –"मैं मंत्र के वश में हूँ। मंत्र के द्वारा कोई भी हमें आसानी से बांध सकता है।" धर्मशास्त्र के अनुसार सती के जले शव को कंधे पर लेकर जब भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र खोल तांडव नृत्य शुरु किया तो स्तन का भाग गया में जिस स्थान पर गिरा वह स्थान मंगला गौरी के नाम से पूजनीय और प्रसिद्ध बन गया। यह स्थान गया शहर के दक्षिणी छोर पर एक छोटी–सी पहाड़ी भष्मकूट पर्वत पर अवस्थित है। इस देवी की भाव भक्ति से पूजन करने पर मनवांछित फल मिलतें हैं। प्रत्येक मंगलवार को यहाँ भक्तों की भारी भीड़ जमा होती है। चैत तथा आश्विन की नवरात्र में भीड़ का क्या कहना! उस समय यहाँ मन्दिर समिति तथा प्रशासन द्वारा भी भक्तों के दर्शन की विशेष व्यवस्था की जाती है।

मन्दिर परिसर में श्री मंगलेश्वर गणेश, श्री मंगलेश्वर शिव भष्मेश्वर शिव, विशाल हवनकुंड तथा वर्षो से हरा भरा रहने वाला मौलश्री वृक्ष स्थित है। यहाँ अन्नपूर्णा मन्दिर एवं पुंडरीकाक्ष मन्दिर भी है। इस शक्तिपीठ की एक बड़ी विशेषता यह है कि मनुष्य अपने जीवन काल में यहाँ श्राद्ध–कर्म सम्पादित कर मोक्ष का भागी बन सकता है। इस मन्दिर का अस्तित्व मगध साम्राज्य के शासन के पूर्व से है। विभिन्न धर्मग्रन्थों में जैसे देवी भागवत त्रिपुरा रहस्य, कल्याण चंडी में इसे बिहार का प्रमाणिक शक्तिपीठ माना गया है।

इस मन्दिर की बाहरी दीवार पर संपूर्ण दुर्गा सप्तशती अंकित है। रामचन्द्र नायक ने मंदिर के पुनः निर्माण में गिरि परिवार और स्थानीय लोगों के अमूल्य सहयोग की चर्चा की है। मंगला सिंह द्वार से मन्दिर में प्रवेश करते ही भीम गयावेदी का प्रथम दर्शन होता है। यहाँ महाबली भीम के ठहरने के कुछ निशान भी है। यहाँ पिंडदान भी होता है। माँ के मन्दिर के चारो ओर प्रदक्षिणा करने का मार्ग बना है जहाँ माँ का जाप करते हुए भक्तगण प्रदक्षिणा करते हैं। मन्दिर परिसर में ही खड्‌गधारी माँ दुर्गा का भी एक छोटा-सा मन्दिर है। मुख्य मन्दिर के ठीक सामने दो तल्लों में विभाजित शिव मंदिर है, जहाँ चतुर्भुज भगवान की प्रतिमा है। इसके अलावे यहाँ हवनकुंड यज्ञशाला, पूजन-गृह मन्दिर की शोभा बढ़ाते हैं। माँ सती के शरीर के अंग यहाँ गिरने के पूर्व भी माँ मंगला काली की पूजा होती थी। इससे यह पता चलता है कि शक्ति पीठ के रूप में यह स्थान कितना प्राचीन है। आज इस भौतिक युग में भी यहाँ प्रतिवर्ष लगभग बीस लाख भक्तगण दर्शन कर सुख पाते हैं। अन्त में माँ के चरणों में यह छोटा श्लोक समर्पित है -

या देवी, सर्व भुतेषुऽ दया रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्ये, नमस्तस्ये, नमस्तस्ये नमो नमः।।

पयोद निकेतन, डालमिया कम्पाउन्ड
लखीबाग रोड नं० 1, गया - 823003
मो० 7033669695

राष्ट्रीय एकता के लिए श्राद्ध और तर्पण का महत्त्व

श्री विजय कुमार सिन्हा

पितृपक्ष मेला, पूर्वजों को मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से पावन स्थली गयाधाम में भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी से आश्विन अमावस्या तक पिंडदान, श्राद्ध, तर्पण आदि अनुष्ठानों के द्वारा जोर शोर से होता है। इनकी महत्ता और प्रसंगिकता अकट्य है। यह महज अनुष्ठान ही नहीं, अपितु इसके माध्यम से राष्ट्र, समाज, परिवार सबके उत्थान के लिए प्रयत्न करने की प्रेरणा जाग्रत होती है।

पिंडदान से जन्म-भूमि के प्रति प्रेम की प्रेरणा विकसित होती है। पितृपक्ष मेला और पिंडदान, श्राद्ध, तर्पण आदि क्रियाएँ राष्ट्रभक्ति तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने वाली हैं। ये जातीय भेदभावों को भुलाकर सामाजिक सौहार्द सुदृढ़ करने वाली है। यह लोक मंगल अनुष्ठान न केवल हमारे पूर्वजों को मोक्ष दिलाते हैं, अपितु, समृद्धि के लिए वृक्षरोपण, पशुपालन आदि कार्यक्रमों को बढ़ावा देते है। श्राद्ध, तर्पण के पीछे लोकमंगल तथा समस्त जगत के कल्याण की भावना निहित होती है। इन अनुष्ठानों के पीछे कितने उदात्त उद्देश्य छिपे रहते है।

अपने निकट या दूर के संबंधी, इष्ट मित्र, जाने-पहचाने, राष्ट्र के लिए मर-मिटने वाले शौर्य सेनानी जो दिवगंत हो चुके हैं इनकी मुक्ति के लिए किया गया महा अनुष्ठान उदात्त भाव से परिपूर्ण है। समस्त मानव-समाज और विश्व समुदाय के कल्याण की भावना इसमें सन्निहित है। पितृपक्ष मेला में विभिन्न प्रदेशों से विभिन्न भाषा, विभिन्न वेषधारी श्रद्धालु लोग आते है साथ ही विदेशो से भी अब प्रचुर श्रद्धालु पिण्डदान करने आते है। उनमें जाति-वर्ग भाषा व्यवहार आदि का भेदभाव नहीं दिखाई देता। यहाँ आकर 'जाति' शब्द गौण हो जाता है। गया के पंडे सबको यजमान, पिण्डदानी आदि कहकर संबोधित करते है। इससे राष्ट्रीय एकता और सौहार्द के भावों का सुमधुर भाव हृदय मे पनपता है। सामाजिक सेवा, अतिथि देवो भव को चरितार्थ करने हेतु इस पुण्यमय अनुष्ठान से बढ़कर और क्या हो सकता है?

अतः यह महापर्व लोक मंगल और मृतात्माओं की मुक्ति का ऐसा सेतु है जिसके द्वारा भव-सागर पार किया जा सकता है।

पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष
मिर्जा गालिब कॉलेज, गया - 823002
दूरभाष-9431330196

गया संग्रहालय–सह–मगध सांस्कृतिक केन्द्र, गया

(एक झलक)

डॉ० विनय कुमार

धरोहरों, पुरावशेषों, कलाकृतियों को संग्राहिक, संरक्षित एवं सम्वर्द्धित करने में संग्रहालयों की मुख्य भूमिका होती है। अपार जन समूह एवं प्रशासकीय शक्तियों का सहयोग जिस संग्रहालय को प्राप्त होता है उसका क्रमिक विकास भी होता है। विश्व प्रसिद्ध मोक्षदायिनी विष्णु की महान नगरी एवं ज्ञान प्राप्ति स्थली बौद्धगया को कौन नहीं जानता ?गया की इस धरती पर कला एवं संस्कृति अदभुत है, जिनके अति दुलर्भ प्रदर्श सर्वत्र फैले हुए हैं, विराजमान है। गया जिलाके लगभग प्रत्येक गाँव में कलात्मक चिन्ह नजर आते है। प्राचीन काल से ही गया कलात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। गया के सुदुर गाँवों में भी कलात्मक अवशेष बिखरे मिलते हैं। भारतीय कला के विकास में मगध क्षेत्र का विशेष योगदान सदियों से रहा है। गया संग्रहालय में प्रदर्शित संग्रहित एवं संरक्षित अदभुत अमूल्य पुरावशेषों के दुर्लभ नमूने बखूबी देखे जा सकते हैं।

गया संग्रहालय 23 नवम्बर 1952 में स्थापित हुआ, परन्तु इसका विधिवत् उद्घाटन 27 नवम्बर 1952 के 9:15 बजे गया नगर पालिका भवन के एक भाग में नगर पालिका, गया के अध्यक्ष श्री राधा मोहन प्रसाद द्वारा किया गया। 27 नवम्बर 1952 को इसे सार्वजनिक रूप से जनता के लिए खोल दिया गया। तत्पश्चात ज्ञान पिपासु बुद्धिजीवियों द्वारा कलात्मक अवशेषों का संग्रह आरम्भ हो गया।

हालांकि सन् 1885 में ही इस संग्रहालय निर्माण का बीजारोपण हो गया था, जब वर्तमान जिला केन्द्रीय लोक पुस्तकालय खोला गया। अंग्रेजो ने स्थानीय कलाकृतियों को संरक्षित करने के लिए उन्हें वहाँ इकटठा करना शुरू कर दिया था। इस प्रकार परोक्ष रूप से वर्तमान संग्रहालय की नीव उसी समय पड़ गई थी। उस समय प्राप्त कलाकृतियों में पाल कालीन बुद्ध की बैठी हुई मूर्ति मंजुश्री, दो राजकीय बन्दूकें जिसके घोड़ों और कुन्दों पर हाथी दाँत के बेहतरीन नक्कासी है और एक लम्बा सा भाला भी रखा गया ये सभी वस्तुए सन 1976 में राजकीय संग्रहालय गया को हस्तांतरित कर दी गई।

गया संग्रहालय के क्रमिक विकास में तत्कालीन दो कलक्टर मि० ग्रियर्सन और मि० ओल्डहैम का विशेष योगदान रहा है, जिन्होने प्राचीन कलाकृतियों का विवरण सिलसिलेवार से रखा। मि० ग्रियर्सन ने 1885 से 1891 तक के कार्यालय में गया जिले पर एक टिप्पणी का नाम था ठपींत च्मेंदजे स्पमि ंदक छवजमे वद जीम क्पेजतपबज व ि ंलं तत्पश्चात मि० ओल्डहैम ने 1898 से 1902 के दौरान प्रक्षेत्र में कई दौरा कर प्राचीन कलाकृतियों की तस्वीरे खिंचवाकर इकट्ठा किया।

दिन–बदले, युग बदला। लगभग 90 वर्षों के एक अंतराल के बाद संग्रहालय आन्दोलन पुनः जोर पकड़ा जिसका श्रेय श्री बलदेव प्रसाद को जाता है। यह आन्दोलन महान समाज सेवी तथा स्थानीय वकील श्री बलदेव प्रसाद ने शुरू की। 23 अप्रैल 1947 को सोसायटी ऑफ इन्डियन कल्चर की स्थापना हुई जिसका मुख्य उद्देश्य क्षेत्र की पुरातात्विक और ऐतिहासिक धरोहरों को बचाना था। इस दिशा में तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट जे०सी० माथुर ने श्री बलदेव प्रसाद के साथ प्रस्तावित संग्रहालय के लिए प्राचीन कलाकृतियाँ एकत्र करना आरम्भ किया। तत्पश्चात 21 जनवरी 1950 को सोसायटी ने गया संग्रहालय बनाने के लिए घोषणा की। समिति गठित की गई जिसका पदेन अध्यक्ष जिला मजिस्ट्रेट तथा सचिव पुलिस सुपरिमटेण्डेण्ट बनाये गये। श्री बलदेव प्रसाद संयुक्त सचिव बने। गया संग्रहालय का नाम गया संग्रहालय रखने का प्रस्ताव पारित किया गया।

गया संग्रहालय हेतु कलाकृतियों के संग्रहण

में स्थानीय नागरिकों की भूमिका काफी सराहनीय रही जिनमें प्रमुख रूप से उमाशंकर भट्टाचार्य उर्फ राजा बाबू, श्री छोटे लाल भैया तथा कृष्णा लाल बैंक प्रमुख थे, जिन्होंने 1952 से 1954 के बीच भेंट स्वरूप वस्तुएँ प्रदान की। गया संग्राहालय जिसका नाम सामूहिक सहमति से अब गया संग्रहालय–सह–मगध सांस्कृतिक केन्द्र गया कर दिया गया है जिसमें विभिन्न आकार–प्रकार के पुरावशेषो, कलाकृतियों एवं देवी देवताओं की प्रतिमााएं संग्रहित तथा प्रदर्शित है।

गया जिला के खिजरसराय से प्राप्त पाल कालीन विष्णु की काले पत्थर की मूर्ति जिसकी लम्बाई 9 फुट है, आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। विष्णु की यह मूर्ति 8वी से 10वीं शताब्दी की है। विष्णु की दूसरी मूर्ति दशावतार की है जिसका निर्माण 11वी शताब्दी की है। विष्णु दशावतार की यह मूर्ति दाबथु नामक स्थान से प्राप्त की गई है। ब्राह्मण देवी देवताओं की मूर्तिया 6वी से 12वी शताब्दी की है। अन्य देवी देवताओं की मूर्तियों में शिव, नृत्यरत - शिव, भैरव, लकुलिस, अजा–एक पद, उमा–महेश्वर, सूर्य, रेवन्त, अग्नि, कामदेव, हरिहर, सरस्वती, पार्वती, दुर्गा, चामुण्डा, नृत्यरत, गणेश भैरव आदि की है। ब्राह्मण मूर्तियों के पश्चात बौद्ध प्रतिमाओं का स्थान है। इसके अन्तर्गत अवलोकितेश्वर मंजुश्री, मंजुवर, मैत्रेय, तारा, अपराजिता की प्रतिमाएं संग्रहालय में प्रदर्शित है।

पाण्डुलियाँ जो 16वीं से 19वीं सदी की है इनमें श्रीमद्भागवत गीता, स्कन्द पुराण, रामचरित मानस, दुर्गा सत्पशती प्रमुख हैं। सिक्के में स्वर्ण रजत तथा कास्य की है। फारसी में आइने–ए–अकबरी, खम्साई शेख निजामी उपलब्ध हैं। मृण मूर्तिया (टेराकोटा) इसा पूर्व तीसरी से 8वीं सदी की है जो वैशाली और कुम्हरार से प्राप्त की गई हैं।

व्यक्ति परमात्मा का दूत होता है। इसका पुनीत कर्तव्य है अन्त में छिपे पड़े ईश्वरीय संदेश को विश्व के सम्मुख रखना। इस नाते हमारा पूरा मगध क्षेत्र सबसे अलग है। जिसने अपने अस्तित्व को आज भी विश्व में अनमोल बनाये रखा है। इसे सुरक्षित संरक्षित और संग्रहित करने की आवश्यकता हम सभी की है। हम अपने समस्त धरोहरों, पुरावशेषो एवं कलाकृतियों को सुरक्षित, संरक्षित एवं संग्रहित करने में सचेष्ट रहें।

कला संस्कृति एवं युवा विभाग का यह केन्द्र गया संग्रहालय–सह–मगध सांस्कृतिक केन्द्र जिला प्रशासन एवं इस क्षेत्र के व्यापक जन समूहों के सहयोग से सामाजिक, सांस्कृतिक शैक्षणिक ज्ञानोपार्जन तथा मनोरंजक गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संग्रहालयध्यक्ष
गया संग्रहालय-सह-
मगध सांस्कृतिक केन्द्र, गया

✦

स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक निर्देश

डॉ० रामदीप मिस्त्री

पितृपक्ष के अवसर पर गयाधाम में लाखों की संख्या में सनातन धर्मावलंबी आते हैं। इस भीड़-भाड़ के कारण, बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। खान-पान के कारण पेट का खराब होना, पाचन शक्ति की गड़बड़ी तो साधारण बात है। इसके अलावा भी कई प्रकार के रोगों से लोगों को जूझना पड़ता है। इसे ध्यान में रखते हुए तथा यों भी आज के जमाने में हमारे घर के बुजुर्गों तथा बालकों की जीवन-शैली को देखते हुए कुछ ऐसे नुस्खे तथा दवाइयों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है जिनके तत्काल सेवन से आराम पाया जा सकता है।

आज दौड़-धूप की जिन्दगी बन गयी है। किसी को इतनी फुर्सत नही है कि वो अपने घर के बुजुर्गों तथा बच्चों पर पूरा ध्यान दे। ऐसी स्थिति में कुछ औषधियों के साथ बुजुर्गो को ऐसी दिन-चर्या बना लेनी चाहिए, जिससे उनका स्वास्थ्य बना रहे और वे अपना कार्य अपने ढंग से निष्पादित करते रहें। इसी प्रकार के कुछ नुस्खे यहाँ दिए जा रहे है -

1. सुबह उठने के बाद शौच से पहले 1-2 गिलास गुनगुना पानी पीने से लीवर शुद्ध एवं विषमुक्त होने के साथ-साथ कब्ज की बीमारी दूर होती है।
2. प्रतिदिन 10-15 मिनट प्राणायाम करने से सम्पूर्ण शरीर को लाभ मिलता है तथा रक्त संचार बेहतर होता है।
3. प्रातः कालीन सूर्य की रौशनी में 10-15 मिनट रहने से प्राकृतिक विटामीन-डी एवं हड्डियों को भी मजबूती मिलती है।
4. स्नान करने से पहले दोनो पैरों के अंगूठो एवं तलवों में सरसो के तेल मालिस कर लेने से वृद्धावस्था तक नेत्रों की ज्योति अच्छी रहती है।
5. स्नान सिर पर पानी डालकर शुरू करना चाहिए जिससे शरीर की गर्मी पैरो से निकल जाती है।
6. सुबह का नाश्ता अपने समय पर अवश्य ले लेना चाहिए
7. खाना खाने के तुरत बाद सोना नहीं चाहिए। इससे पाचन क्रिया में खराबी आती है।
8. भोजन हमेशा भूख से कम अपने पेट का आधा भाग करना चाहिए तीसरा भाग पानी तथा बाकी का चौथा भाग वायु के लिए रखें।
9. चाय और कॉफी का सेवन कम से कम करना चाहिए इसमें कुछ ऐसे पदार्थ होते है जो लीवर को काफी नुकसान पहुँचाते हैं। एक कप चाय पचने में लगभग छह घंटे लेती है और शरीर को पाचन तंत्र को भी खराब करती है।
10. रात को खाना खाने के बाद बायें करवट सोना चाहिए जो पाचन क्रिया को मजबूत करता है।
11. प्रतिदिन शरीर की मालिश सरसों या औषधीय तेल से करने से बात-विकार और थकावट दूर होती है।
12. खाना में अधिक मशालेदार तला, छना तथा गरिष्ट भोजन न लेकर सुपाच्य भोजन लें।
13. **माथे का दर्द** - पुराने माथे के दर्द में चोट लगने से बचना, जर्क होने वाले कार्यों से बचना, भारी कार्य करने से परहेज करना, माथा को सोंट-सांट नही करना, तला, छना समान कम खाना, बार-बार पेन कीलर दवाईयाँ नहीं खाना।
14. **जोड़ों का दर्द एवं कमर दर्द** - इस तरह के दर्द में ठण्डा सामान दही, केला, चीनी के सामान, कद्दू, मुली, अमरूद, खीरा, टमाटर, पपीता, कोल्ड ड्रिक्स तथा फ्रिज का समान नही खाना चाहिए।
15. **गिलटियों का दर्द** - अगर गिलटियाँ गर्म लगे तो उसे गर्म सामान से सेक न कर बर्फ से सेकाई करनी चाहिए।

16. **दाँत का दर्द** – दाँत दर्द होने पर कोई आलपिन, सुई या कोई भी नुकीले लोहे के सामान से दाँत को खोदना नहीं चाहिए। इससे टेटनस होने का भय बन जाता है।

17. **पेट में गैस बनना** – यह बीमारी अभी आम लोगों में पाई जा रही है। यह मानसिक तनाव, अमाशय, प्रोटिन युक्त भोजन कुछ सब्जियाँ जैसे गोभी, शलजम, मूली, सेम, आलू बुखरा, पेपची, कटहल, अण्डा, मुर्गा, मीट, बैग्न, ओल अधिक गैस पैदा करते हैं।

पेट के गैस से बचने हेतु उपाय – गैस की तकलीफ में एलो पैथीक दवाईयाँ अधिक प्रभावी नहीं होती हैं। इसके लिए खान–पान की आदतों में सुधार की आवश्यकता है।

- सुबह–शाम सैर अवश्य करें।
- खूब पानी का सेवन करें।
- भोजन करते समय हड़बड़ी में नहीं करें।
- खाना खूब चबा–चबा कर खाया करें।
- धुम्रपान, तम्बाकू, पान मशाला, शराब, गुटखा, पान मशाला, सिगरेट की आदत छोड़ दें।
- पर्याप्त नीन्द सोयें।
- पेट के गैस का होमियोपैथिक उपचार अवश्य करें'

पेट में गैस के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। लोग तरह–तरह का चूर्ण, चटनी, बाजार में प्रचलित गैस की दवाईयों पर निर्भर न रहें बल्कि पेट के गैस की समस्या के समाधान के लिए लक्षणो के आधार पर होमियोपैथिक चिकित्सक की सलाह पर होमियोपैथिक दवाइयों का सेवन करें। गैस के उपचार में प्रयोग होने वाली दवाईयाँ कुछ इस प्रकार है :–

- अधिक भोजन करने के कारण अधिक गैस बने तथा कब्ज रहे एवं बार–बार पैखाना जाना पड़े तो नक्स भोमिका 200 शक्ति का प्रयोग करना चाहिए।
- गरिष्ट भोजन करने के बाद गैस बने तो पल्सटिला 200 शक्ति से लाभ होती है।
- अधिक गैस के कारण पूरा पेट फूल जाए गैस निकलने से भी आराम न मिले तो चायना 200 शक्ति प्रयोग करना चाहिए।
- पुराने कब्ज या कड़े मल के साथ गैस हो और पेट का निचला हिस्सा फूल गया हो तो लाईकोपोडियम 200 शक्ति राहत देती है।
- गैस के कारण पेट का ऊपरी हिस्सा फूल जाए तथा डकार आने पर आराम मिले तो कार्वोभेज 200 शक्ति में प्रयोग करना चाहिए।
- गैस के साथ–साथ अगर धड़कन काफी तेज हो तो बैप्टीसिया 200 शक्ति में प्रयोग करना चाहिए।

करसिल्ली, निकट विष्णुपद
चाँदचौरा, गया (बिहार)
मो० नं०-9431409385

✦

गया का साहित्यिक गौरव है साहित्य सम्मेलन

श्री नचिकता वत्स

गया सदैव से मगध क्षेत्र का साहित्यिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है। यहाँ कि भूमि बौद्धिक रूप से आदि काल से ही उर्वर रही है। अनेको साहित्यकारों ने अपनी जीवन की लंबी अवधि गया में गुजारा है और इसका केंद्र बिंदु पिछले सत्तर वर्षो से गया के आजाद पार्क स्थित गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन रहा है। गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपने सत्तर वर्षो की अनवरत यात्रा में अपने आदर्श और मानक मूल्यों के साथ निरंतर सक्रिय है। सम्मेलन के वर्तमान महामंत्री डा० राधानंद सिंह के अनुसार ''समय–समय पर परिस्थितियाँ इसको पगबाधित करती रही; परन्तु यह अथक यात्री की

तरह निरंतर गतिमान रहा'' इसकी स्थापना 1946 ई० में साहित्यकार सर्वश्री पं० श्यामदत्त मिश्र, हंस कुमार तिवारी, प्रो० अर्जुन चौबे कश्यप, प्रो० बलभद्र झा, गुलाब जी, कृष्णकांत प्रसाद आदि महान हिन्दी सेवियों के सतत प्रयास से की गई। हंस कुमार तवारी इसके पहले अध्यक्ष तथा डा० शिवनंदन प्रसाद इसके प्रथम मंत्री निर्वाचित हुए। सम्मेलन के उद्देश्य की घोषणा करते हुए इसकी नियमावली में यह कहा गया कि ''इसका उद्देश्य हिन्दी भाषा एवं साहित्यिक गतिविधियों को प्रचार–प्रसार करना है'' ऐसा कहा जाता है कि विख्यात साहित्यकार एवं तत्कालीन जिलाधीश श्री जगदीश चंद्र माथुर के सौजन्य से नगरपालिका ने सम्मेलन को भवन के लिए जमीन दी थी। भवन पर लगे शिलापट्ट से यह ज्ञात होता है कि गया के ही बागेश्वरी प्रसाद जी ने अपनी पूजनीया मौसी सरस्वती कुँवर की स्मृति में दो कमरों का निर्माण कराया था।

साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप में अब तक निम्न विद्वानों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है।

1. श्री हंस कुमार तिवारी, 2. श्री मोहन लाल महतो वियोगी, 3. डा० जनार्दन झा 'द्विज', 4. आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री, 5. श्री कामता प्र० सिंह 'काम', 6. श्री अमरेन्द्र नारायण अग्रवाल, 7. श्री सूर्य प्रसाद महाजन, 8. डॉ० शिवनन्दन प्रसाद, 9. पं० श्यामदत्त मिश्र, 10. डॉ० सिद्धि लाल माणिक, 11. श्री अखौरी अनिरूद्ध प्रसाद, 12. डॉ० सुरेन्द्र चौधरी, 13. श्री रामनरेश पाठक, 14. श्री गोपाल लाल सिजुआर, 15. डॉ० बैद्यनाथ प्रसाद खेतान, 16. श्री राधाकृष्ण राय, 17. डॉ० नीलिमा सिन्हा, 18. डॉ० रामकृष्ण मिश्र, 19. डॉ० वंशीधर लाल, 20. श्री गोवर्धन प्रसाद 'सदय' (वर्तमान)

वर्तमान में एक बड़ी उपलब्धि ''गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन'' ने दर्ज की है। प्रत्येक शनिवार को पिछले चार वर्षो से काव्य–संध्या का आयोजन होता आ रहा है। इसमें नए व पुराने कवि अपनी कविताओं का पाठ करते है एवं बाद में कविताओं की समीक्षा सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य करते है। काव्य चक्र के अंतर्गत आयोजित होने वाले इस काव्य संध्या से खासकर नवांकुर कवि काफी लाभान्वित हो रहे हैं। कविता एवं साहित्य से युवाओं को जोड़ने में सम्मेलन का यह प्रयास सफल रहा है। इसके अतिरिक्त सम्मेलन भवन में पुस्तकालय की भी सुविधा 2013 से जारी है, जहाँ संध्या समय में पुस्तक प्रेमी अपनी ज्ञान पिपान को शांत करने आते है।

प्रकाशन के क्षेत्र में भी गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का योगदान महत्वपूर्ण है। सम्मेलन की साहित्यिक पत्रिका अन्तः सलिला का अनियतकालीन अंक वर्षो से प्रकाशित होता आ रहा है। अन्तः सलिला में मगध के साहित्यिक सांस्कृतिक योगदान पर आधारित निबंध, कविता, कहानियों के साथ–साथ अन्य अनेक प्रकार की रचनाऐं प्रकाशित की जाती है, इनमें शहर से गुजरते हुए, अस्वस्थ खड़ा है आज भी, 'यह रेत है चंदन', 'धुरफंदी लाल चुनावी दंगल में' आदि शामिल है। आजकल यहाँ से हरेक माह साहित्य सलिला का प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य सम्मेलन को अन्य विद्वानों ने भी सींचा है उनमें प्रो० डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन', आचार्य विश्वनाथ सिंह, डॉ० राम विनोद सिंह, आचार्य गिरिजानन्दन मिश्र आदि नाम स्मरणीय है। सम्मेलन के एकादश अधिवेशन को विशिष्ट अतिथि के रूप में भइया जी, जैनेन्दुजी दिनकर जी जैसे, कवि हिन्दी के यशस्वी कहानीकार, उपन्यासकार, आलोचक और निबंधकार ने भी अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित किया है।

ग्राम+पो०- लारी
जिला-अरवल (बिहार) 804421
मो०-9934599395

✦

पितृपक्ष महासंगम

श्री दिलीप कुमार देव

गयाधाम के लिए पितृपक्ष की अवधि अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस अवधि में लगता है जैसे गयाधाम के कण-कण से आध्यात्मिक ऊर्जा का स्फुरण होता रहता है। हर तरफ केवल धर्म और श्रद्धा-भक्ति लहराती रहती है। किसी भी मंदिर-परिसर में अथवा बाजार में हर जगह आपको धार्मिक भावनाओं का ही संचरण दिखाई पड़ेगा है।

मंदिरों में लोग व्यस्त हैं- उसे सजाने-सँवारने में; ताकि जो तीर्थ-यात्री यहाँ आयें, उन्हें नयनाभिराम मंदिर का सम्पूर्ण परिवेश दिखाई पड़े। बाजार में भी तीर्थ-यात्रियों की आवश्यकतानुसार सामग्रियों को जुटाये रखने की होड़ प्रत्येक व्यापारी में दिखाई पड़ेगी। साधारण नागरिकों के मन में भी एक कार्यशील उत्साह दिखाई पड़ता है कि वे अपना परिवेश सज-धज कर रखें। ताकि उनके परिवेश से आने-जाने वाले तीर्थ-यात्रियों को कोई असुविधा न हो।

कहने का अर्थ यह है कि गयाधाम के जन-जन के मन में यह दृढ़ भावना है, अतिथि देवो भव! सभी लोग गयाधाम आने वाले सनातन धर्मावलंबियों के स्वागत के लिए तत्पर रहते हैं। जहाँ तक प्रशासन की बात है- प्रशासन का सम्पूर्ण तंत्र पितृपक्ष महासंगम की सर्वतोमुखी सफलता के लिए कटिबद्ध रहता है। इस वर्ष भी मेला की अवधि से, तीन-चार माह पूर्व से ही गया के जिलाधिकारी महोदय ने अपने निर्देशन में मेले की पूरी तैयारी का निरीक्षण प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने सभी विभागों को इस ओर उन्मुख कर दिया का कि मेला का महासंगम पूर्ण रूपेण सफल रहे और उसी का परिणाम है पितृपक्ष मेला की पूरी तैयारी समयानुसार सन्तोषप्रद रही है।

जन सम्पर्क पदाधिकारी होने के नाते मुझे यहाँ के पण्डा समाज तथा नागरिकों से मिलने का प्रायः अवसर आता रहता है और उनकी प्रतिक्रियाएँ भी मिलती रहती हैं। उसी आधार पर मुझे यह प्रतीत होता है कि इस बार मेले के लिए जो भी प्रशासनिक व्यवस्था की गयी है- उसे यहाँ के नागरिकों तथा यहाँ के पण्डा समाज ने हृदय से सराहा है। पितृपक्ष की महत्त्पूर्ण अवधि के अवसर पर देश-विदेश से जो सनातन धर्मावलंबी आते हैं, उनकी संख्या लाखों में आँकी गई है। गया प्रशासन दृढ़ता के साथ सभी तीर्थ-यात्रियों को समुचित सुविधा प्रदान करता है; ताकि किसी भी श्रद्धालु को उसके कर्मकांडीय अनुष्ठानों को सम्पादित करने में कोई कठिनाई न हो।

भगवान विष्णु की इस नगरी में शुद्ध अध्यात्म भाव से ही कार्य सम्पन्न होते हैं। मैं भी भगवान विष्णु से यही याचना करता हूँ कि पितृपक्ष के अवसर पर जो तीर्थ यात्री आएँ, वे गया की एक अच्छी छवि लेकर लौटें।

उप-निदेशक, जन-सम्पर्क विभाग
मगध प्रमंडल, गया

✦

बिनु सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभं न सोई।।

- रामचरितमानस

पिण्डदान कार्यक्रम

05.09.2017		पुनपुन पयपुजा ओर गोदावरी श्राद्ध
06.09.2017	प्रथम	फल्गु स्नान और श्राद्ध
07.09.2017	दूसरा दिन	ब्रह्मकुण्ड श्राद्ध, प्रेतशिला श्राद्ध, रामशिला श्राद्ध, रामकुण्ड श्राद्ध, काकबली
08.09.2017	तीसरा दिन	पंचतीर्थ उत्तर मानस श्राद्ध, उदीची श्राद्ध, कनखल श्राद्ध, दक्षिणमानस श्राद्ध, जिह्वालोल श्राद्ध, गजाधर जी का पंचामृत स्नान
09.09.2017	चौथा दिन	सरस्वती स्नानतर्पण पंचरत्न दान मातंगवापी श्राद्ध, धर्मारण्य कूप के मध्य में श्राद्ध, बौद्ध दर्शन (बोधगया)
10.09.2017	पाँचवा दिन	विष्णुपद श्राद्ध
11.09.2017	छठा दिन	(सोलह वेदी) (सोलह वेदी) रूद्रपद, ब्रह्मपद, विष्णुपद श्राद्ध, गार्हपत्याग्नि पद श्राद्ध, आहवनीयाग्नि पद श्राद्ध
12.09.2017	सातवाँ दिन	(सोलह वेदी) कार्तिकपद श्राद्ध, दक्षिणाग्नि पद श्राद्ध, गार्हपत्याग्नि पद श्राद्ध, आहवनीयाग्नि पद श्राद्ध
13.09.2017	आठवाँ दिन	सोलह वेदी, सीताकुण्ड (बालू का पिण्ड) कन्वपद, मतंगवापी, अगस्तपद, इन्द्रपद, काश्यपपद, गजकर्णपद दूध तर्पण अन्नदान एवं रामगया श्राद्ध, सीताकुण्ड (बालू का पिण्ड) सौभाग्य दान एवं पांवपूजा
14.09.2017	नवम दिन	गयासिर, गयाकुप श्राद्ध (त्रिपिण्डी श्राद्ध)
15.09.2017	दशम दिन	मुण्डपृष्ठा श्राद्ध, आदि गदाधर (आदि गया), धौतपद श्राद्ध एवं चाँदी दान
16.09.2017	ग्यारहवें दिन	भीमगया, गौप्रचार, गदालोल श्रद्धा
17.09.2017	बारहवें दिन	विष्णु भगवान का पंचामृत स्नान पूजन एवं फल्गु में दूग्ध तर्पण
19.09.2017	तेरवहें दिन	वैतरणी गोदान एवं तर्पण
20.09.2017	पन्द्रहवें दिन	गायत्रीघाट दही चावल का पिण्ड आचार्य दक्षिणा पितृ विदाई

HOTELS & GUEST HOUSES

1	MAHABODHI	Bodhgaya	2900801, 7546988900
2	HOTEL IMPERIAL	Bodhgaya	
3	DELTA INTERNATIONAL	Bodhgaya	2200854, 9431225234
4	HOTEL GOUTAM	Bodhgaya	2200109, 943129009
5	ROYAL RESIDENCY	Bodhgaya	2200124, 9431831836
6	TAJ DARBAR	Bodhgaya	2200053, 9431289452
7	HOTEL GALAXY	Bodhgaya	2200006, 9430247704
8	HTL. ANAND INT.	Bodhgaya	2200026, 9934891205
9	BUDDHA RESENCY	Bodhgaya	
10	HOTEL URVELA	Bodhgaya	2200236
11	HOTEL VISHAL	Bodhgaya	2200633, 9835417477
12	HOTEL SHASHI	Bodhgaya	2200459
13	ANUKUL Guest House	Bodhgaya	2200118
14	SHANTHI BUDHA Guest House	Bodhgaya	2200519
15	RAHUL BUDHA Guest House	Bodhgaya	2200536, 9431289421
16	HOTEL SUJATA	Bodhgaya	2200481,9431224698
17	R.K INTERNATIONAL	Bodhgaya	2200506
18	HOTEL TOSHITA	Bodhgaya	2200760, 9304636579
19	HOTEL NIRANJANA	Bodhgaya	2200475, 9431477395
20	LOTUS NIKKO	Bodhgaya	2200700, 2200789
21	HOTEL MAHAMAYA	Bodhgaya	2200676,9931276680
22	HOTEL TATHAGAT	Bodhgaya	2200106,9939491063
23	HOTEL BUDHA VIHAR INT.	Bodhgaya	2200506, 9572807755
24	HOTEL LUMBNI	Bodhgaya	2200351
25	HOTEL JEEVAK	Bodhgaya	2200646, 9934473633
26	BODHGAYA RIGENCY	Bodhgaya	8969466281
27	SAMBODHI RETREAT	Bodhgaya	6950080
28	HOTEL OM INT.	Bodhgaya	9199186640
29	HOTEL VIPASHNA	Bodhgaya	9934600777
30	KRITI Guest House	Bodhgaya	9430841313, 9006307888
31	ARIHANT Guest House	Bodhgaya	9507530300
32	RAINBOW Guest House	Bodhgaya	2200308, 9431280810
33	SHANTI SAKYA Guest House	Bodhgaya	2200439
34	HAPPY Guest House	Bodhgaya	
35	SHANTI Guest House	Bodhgaya	2200129, 9835818081
36	SANG PRIYA Guest House	Bodhgaya	
37	PUJA Guest House	Bodhgaya	
38	DEEP Guest House	Bodhgaya	
39	WELCOME Guest House	Bodhgaya	
40	SANGMITRA	Bodhgaya	9434070240
41	AMRAPALI Guest House	Bodhgaya	
42	JYOTI Guest House	Bodhgaya	
43	BEEYUTY Guest House	Bodhgaya	9472932045
44	ARYA Guest House	Bodhgaya	22001144
45	RAVI Guest House	Bodhgaya	9431155080
46	RAHUL Guest House	Bodhgaya	9931463849
47	HARSH & YASH Guest House	Bodhgaya	
48	EKWAL Guest House	Bodhgaya	9933655175
49	Hotel Royal View International	Gaya	0631-2220340
50	Hotel Darwar International	Gaya	9431223155
51	Hotel Gaya Regency,	Gaya	0631-2221153, 9934098892
52	Satyam International,	Gaya	9430057604
53	Hotel Ajatsatru	Gaya	9934480814
54	Annapurna Hotel	Gaya	9352791400

HOTELS & GUEST HOUSES

55	Hotel Gautam	Gaya	9386804133
56	Vikash Hotel	Gaya	9334233672
57	Gaurav Hotel	Gaya	9931075334
58	Aalok Hotel,	Gaya	9835293435
59	Mushkan Hotel,	Gaya	9939391978
60	Aanand Hotel,	Gaya	9304104555
61	Classic Hotel,	Gaya	9771532865
62	Amarnath Guest House	Gaya	9430281309
63	Raj Kumar Guest House,	Gaya	9304463428
64	Subhas Hotel,	Gaya	8521402739
65	Vishnu Bhojanalay	Gaya	9939208410
66	Vishnu Rest House,	Gaya	9472971649, 8092742622
67	Singh Station View,	Gaya	0631-2222045, 9973941235
68	Hotel Birat In,	Gaya	9234455311
69	Aakash Hotel,	Gaya	9471002103
70	Buddha Bihar	Gaya	9709866604
71	Lal Guest House,	Gaya	9934058151
72	Laxman Guest House,	Gaya	9973940360
73	Atithi Guest House,	Gaya	9431290446
74	Chabra Residency,	Gaya	9835414667
75	Grand Place,	Gaya	9122928709
76	Pal Guest House,	Gaya	9386067942
77	Chandralok Guest House,	Gaya	7352474945
78	Tirupati Guest House	Gaya	9097553241
79	Durga Guest House	Gaya	9430476313
80	Swathi Guest House	Gaya	9934414265
81	Shivam Guest House	Gaya	9835292117
82	Siddharth Hotel	Gaya	9102162888, 9102163888
83	Ratnya Priya Guest House	Gaya	0631-2222999
84	Hotel Orbit	Gaya	0631-2220958
85	Samman Hotel	Gaya	9934024179
86	Bishnu Maya, Rest House	Gaya	9771532865
87	Prithivi Rest House	Gaya	7549518665
88	Hotel Vrindawan,	Gaya	0631-2229999, 9934011735
89	Hotel Neelkamal,	Gaya	0631-2221050, 9955062668
90	City Surya,	Gaya	0631-2222321, 7783806661
91	Hotel Surya,	Gaya	0631-2224004, 9431081702
92	Hotel Royal Surya,	Gaya	9334477222, 9122536444
93	Hotel Heritage,	Gaya	8083490956
94	Hotel Garv,	Gaya	0631-2222069, 2222269
95	Fiesta Resort,	Gaya	9431224402
96	Hotel, Gharana,	Gaya	0631-2225512,9470416563
97	Saraogi Hotel,	Gaya	0631-2222575
98	Saraogi Place	Gaya	0631-2220999, 9431223203
99	Vishnu International,	Gaya	0631-2224422
100	Royal Guest House,	Gaya	9661533562
101	Chandan Guest House,	Gaya	0631-2220486
102	Hotel Vishal,	Gaya	0631-2222307
103	Hotel Vashudhara,	Gaya	0631-2220550
104	Palm Gurden	Gaya	9939408422
105	Hotel Vize	Gaya	9431289874
106	New Vize,	Gaya	9470411456
107	Kripal Lodge,	Gaya	9955062902

अन्य महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल

बोधगया

बोधगया विश्व के प्रमुख एवं पवित्र बौद्ध–तीर्थस्थलों में से एक है। यहीं बोधि वृक्ष के नीचे गौतम ने अलौकिक ज्ञान प्राप्त किया जिसके उपरांत उन्हें बुद्ध कहा गया। हिमालय की तराई में स्थित कपिलवस्तु (वर्तमान नेपाल में) के शाक्य गणराज्य के राज कुमार के रूप में जन्में तथागत के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ जैसे ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण दोनों बिहार में ही घटित हुईं। बौद्ध धर्म का वास्तविक उद्‌भव बिहार में हुआ और बुद्ध के उपदेशों एवं उन के सरलतम जीवन शैली के उदाहरण और हर जीवित प्राणी के प्रति अन्य–अन्यतम करुणा के कारण पूरे विश्व मे फैल गया। महत्वपूर्ण यह भी है की बिहार राज्य का नाम भी (विहार) शब्द से व्युत्पन्न है जो जिसका तात्पर्य उन बौद्ध–विहारों से है जो प्रचुर मात्रा में बिहार में फैले थे। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के सैकड़ों वर्ष बाद मगध के मौर्य राजा अशोक (269 ईपू से 232 ईपू) ने बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान, सुदृढ़ीकरण एवं व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए अनेक प्रयास किए। अशोक ने बौद्ध भिच्छुओं के लिए चैत्य और विहार बनवाए। उसने अनेक अभिलेख खुदवाये जो प्रस्तर शिलालेखों के रूप में महत्वपूर्ण एतिहसिक धरोहर है, जिनमें बुध और बौद्ध धर्म से जुड़े अनेक बातों का पता चलता है। अशोक के अभिलेख जो आज भी अतिवशिष्ट हैं, विद्वानों और तीर्थ–यात्रियों के लिए बुद्ध के जीवन की घटनाओं एवं शिक्षाओं की जानकारी का महत्वपुर्णा स्रोत हैं। यहां अत्यंत भव्य महाबोधि मंदिर है जिस में वास्तविक बोधिवृक्ष अभी भी खड़ा है। इस मंदिर का स्थापत्य सैकड़ों वर्षों के सांस्कृतिक विरासतों का समन्वय है, हालांकि इस की भवन निर्माण कला गप्त युगीन कला का अदभुत नमूना है। यह मंदिर विरासत के रूप में अभिलेख भी रखता है, जिनमें 7 वीं से 10 वीं सदी ई0 के बीच के श्रीलंका म्याँमार और चीन से आए तीर्थयात्रियों के यात्रा विवरण मिलते हैं। यह शायद वही मंदिर है जहाँ सातवीं सदी में ह्वेनसांग आया था।

महाबोधि मंदिर

यह मंदिर बोधिवृक्ष के पूर्व में स्थित है। इसका स्थापत्य अदभुत है। इसकी चौड़ाई 48 वर्ग फुट है जो सिलिंडर पिरामिड के रूप में इस की गर्दन तक उठती चली गई है, क्योंकि इसका आकर सिलिन्डरिकल है। मंदिर की कुल उँचाई 170 फुट है और मंदिर के शिखर पर छत्र है, जो धर्म की संप्रभुता का प्रतीक है। इसके चारों कोनों पर स्थित मीनार कलात्मक ढंग से बनाए गये हैं जो पवित्र बनावट को संतुलन प्रदान करते हैं। यह पवित्र इमारत पर फहराया गया एक महान बैनर है, जो दुनिया को सांसारिक समस्याओं से ऊपर उठकर , मानव के दुखमय जीवन को शांति प्रदान करने के लिए बुद्ध के पवित्र प्रयासों का प्रचार करने के लिए और ज्ञान के अच्छे आचरण और अनुशासित जीवन के माध्यम से दिव्यशांति प्राप्त करने के लिए किए गये प्रयास का प्रतीक है। मंदिर के अंदर मुख्य क्षेत्र में बुद्ध की बैठी हुई मूर्तिस्थित है जिस में वे अपने दाएँ हाथ से बनी हुई है जो श्रद्धालूओं के दान से लाई गई थी। मंदिर का पूरा छत्र कलात्मक निर्मित स्तूपों से भरा हुआ है। ये स्तूप विभिन्न आकर के हैं जो पिछले 2500 सालों के दौरान बनाए गये हैं। इनमें से ज्यादातर स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत आकर्षक हैं। प्राचीन वेदिका जो मंदिर को चारों ओर घेरती हैं पहली सदी ईपू. की है और यह उस सदी की रोचक स्मारकों में से एक है।

80 फुट बुद्ध प्रतिमा

महान बुद्ध की मूर्ति को 80 फुट की बुद्ध प्रतिमा के रूप मे जाना जाता है। इसका अनावरण एव लोकार्पन 18 नवंबर, 1989 को समारोहपूर्वक 14वें पवित्र दलाई लामा की उपस्थति मे किया गया था, जिन्होने इस 25 मीटर की प्रतिमा को आशीर्वाद प्रदान किया। यह महान बुद्ध की पहली प्रतिमा थी जिसे आधुनिक भारत के इतिहास में बनाया गया था। यह प्रतिमा महाबोधि मंदिर बोधगया के आगे स्थित है। यहाँ पर सुबह 7 बजे से 12 बजे तक दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक दर्शन किया जा सकता है।

अनिमेष लोचन चैत्य

यह विश्वास किया जाता है कि बुद्ध ने महान बोद्धिवृक्ष को बिना पलकें झपकाये देखते हुए यहाँ एक साप्ताह बिताया था। वर्तमान बोधिवृक्ष वास्तविक वृक्ष का संभवत: पांचवाँ उतराधिकारी है, जिसके नीचे बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था। वज्रासन महाबोधि वृक्ष के नीचे एक पत्थर का प्लेटफार्म है, जिसपर मान्यता है कि बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के तीसरे हफ्ते बैठकर पूर्व की ओर देखते हुए ध्यान लगाया करते थे। **चक्रमण**– यह पवित्र चिन्ह है जो बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के तीसरे हफ्ते बाद में ध्यान की मुद्रा में टहलने से बना है। मान्यता है कि यहां बुद्ध ने अपने पदमचरण रखे थे। रतनगढ़ में बुद्ध ने एक सप्ताह बिताया था जहां विश्वास है कि उनके शरीर से पाँच रंग फूटने लगे थे।

कोटेश्वर नाथ मंदिर

गया जिला के बेलागंज प्रखंड के पाई बिगहा के आगे मेन कोटेश्वरनाथ मंदिर अवस्थित है। भगवान शिव के पवित्र मंदिर के रूप मे प्रसिद्ध यह मोरहर दरघा नदियों के संगम पर स्थित है। पटना से दक्षिण 120 किमी की दूरी पर स्थित कोटेश्वर मंदिर के बारे मे मान्यता है कि इसका निर्माण 8वीं सदी ई० के आसपास हुआ था। कोटेश्वर मंदिर का गर्भगृह लाल पत्थर के एक टुकड़े को काटकर बनाया गया है जिसमे एक विशाल शिवलिंग के आसपास 1008 छोटे शिवलिंग हैं, जो लगभग 1200 साल पुराना है। यह कहा जाता है कि वाणासुर का मेला और देवकुंड घने जंगल मे अवस्थित थे। उषा यहाँ मंदिर मे भगवान शिव की पूजा-अर्चना के लिए आती थी। जिस दौरान भगवान शिव प्रकट हुए और उसकी इच्छापूर्ति हेतु सहस्र लिंगों की स्थापना करने का निर्देश दिया। उसके बाद शिवलिंग की स्थापना हुई। इसके परिणाम स्वरूप भगवान शिव ने उसकी इच्छा पूरी की और उसका अनिरुद्ध से विवाह हुआ। अनिरुद्ध भगवान कृष्ण के पौत्र थे जिनके साथ पत्नी के रूप मे उषा ने अपना जीवन गुजारा। यह स्थान प्राचीन काट मे शिवनगर के रूप मे जाना जाता था। कई ग्रंथों मे उल्लेख है कि सहस्र शिवलिंग की स्थापना द्वापर युग के अंत में की गई थी।

यह विश्वास किया जाता है कि इस स्थान में इतनी शक्ति है कि जो भी तीर्थयात्री यहाँ आता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है। स्वाभाविक रूप से प्रत्येक वर्ष सावन के महीने मे तीर्थयात्री यहाँ जलाभिषेक एवं पूजा अर्चना के लिए आते हैं। सामान्यता भगवान शिव के पवित्र स्थलों पर बड़ी संख्या में तीर्थयात्री सालों भर आते हैं, लेकिन सावन के पवित्र महीने मे यह संख्या और बढ़ जाती है। यह स्थान पक्की सड़क द्वारा मख्दूमपूर, शकुराबाद, घेजन, टेकारी और बेला रामपुर से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। इस मंदिर में द्रविड़ शैली मे हाल मे एक नया शिखर निर्मित किया गया है। हालाँकि इसके आंतरिक स्थापत्य वास्तविक स्वरूप में ही संरक्षित किया गया है। इसके गर्भगृह एव आंशिक बदलाव किए गये हैं। यह मंदिर मुख्यत: ईंटों और ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित है जिसे इसके प्रवेश द्वार अंतराल एवं स्तंभ मे देखा जा सकता है।

ढुंगेश्वरी मंदिर

दुँगेश्वरी गुहा मंदिर जसे महाकाल गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है बोधगया (बिहार) के उत्तर-पूर्व में 12 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ तीन पवित्र बुद्ध गुफाएँ हैं, जिनके बारे मे मान्यता है की यहाँ बुद्ध ने ध्यान लगाया था। ढुंगेश्वरी गुहा मंदिर प्राचीन गुफाएँ हैं। इन गुफाओं में भगवान बुद्ध बोधगया आने के पूर्व कई वर्षों तक कठोर निग्रह के साथ तपस्या की थी। इन तीन मुख्य गुफाओं मे कई पवित्र बुद्ध आवशेष हैं और एक हिंदू-धर्म से जुड़ा है। ढुंगेश्वरी गुहा मंदिर स्थानीय लोगों में 'सुजाता स्थान' के नाम से लोकप्रिय है। इस मंदिर से जुड़ी एक प्रसिद्ध कहानी है। यह माना जाता है की कठोर तपस्या के कारण बद्ध बिल्कुल शकाय हो गये थे। जब वे बरगद वृक्ष के नीचे सुजाता का आग्रह स्वीकार किया और भोजन ग्रहन किया। बुद्ध इसके उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ना तो स्व के प्रति अति आग्रह और ना तो स्व के प्रति अतिनिग्रह ज्ञान प्राप्ति का सही तरीका है। बुद्ध ने माध्यम मार्ग के ज्ञान को प्राप्त किया। जो परम निर्वाण को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। दुँगेश्वरी गुहा मंदिर इसी घटना का प्रतीक स्मारक है। सिद्धार्थ गौतम के बारे मे विश्वास किया जाता है की बोधगया मे ज्ञान प्राप्ति करने हेतु जाने के पूर्व उन्होंने यहाँ छः वर्षों तक ध्यान लगाया था। दो छोटे मंदिर इस घटना की याद मे यहाँ बनाए गये हैं। यहाँ स्वर्ण से बनी एक बुद्ध मूर्ति बुद्ध के कठोर निग्रह को दर्शाती हुई एक गुफा मंदिर मे रखी गई है और लगभग 6 फुट ऊँची विशाल बुद्ध मूर्ति दूसरे मंदिर मे रखी है। एक हिंदू देवी ढुंगेश्वरी की मूर्ति भी गुहा मंदिर मे अंदर रखी गई है।

राजगीर

गया से 80 किमी तथा पटना से 110 किमी दूर स्थित राजगीर का नाम राजगृह से पड़ा जिसका तात्पर्य है राजा का घर। यह शहर भगवान बुद्ध के समय में प्रसिद्ध मगध साम्राज्य की राजधानी था, जब पाटलिपुत्र शहर नही बसा था। राजगीर नालंदा से 14 किमी की दूरी पर अवस्थित है। राजगीर भारत के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है। राजगीर की प्राकृतिक सुंदरता अद्‌भुत है क्योंकि यह पाँच पवित्र पहाड़ों से घिरा है। राजगीर शहर बौद्धों के साथ-साथ जैन लोगों के लिए भी अत्यंत प्रिय है। यहीं पहाड़ी पर दो गुफाएँ हैं, जो भगवान बुद्ध को विश्राम के लिए अत्यंत प्रिय थीं, यहीं पहाड़ी पर उन्होंने अपने दो प्रसिद्ध उपदेश भी दिए थे।

राजगीर के प्रमुख पर्यटक स्थल :

शांति स्तूप - रत्नागिरि पहाड़ी की चोटों पर स्थित अत्यंत सफेद पठारों से निर्मित यह संरचना बौद्धों के लिए सबसे आकर्षक स्थल है यहाँ स्थित चार सोने की मूर्तियाँ बुद्ध के जन्म, संबोधि, शिक्षाओं व मृत्यु को दर्शाती हैं।

गृधकूट पर्वत - यह भगवान बुद्ध के प्रिय स्थलों में से एक था, जहाँ उन्होंने संबोधि प्राप्ति के उपरांत कई बार उपदेश दिये। यहीं पर उन्होंने दो प्रमुख सूत्रों का प्रतिपादन किया - लोटस सूत्र और प्रज्ञानपरिमिता

प्राचीन अवशेष - यहाँ राजा बिंबिसार और आजातशत्रु से जुड़े अनेक स्थल, गुफाएँ एवं प्राचीन राजगृह शहर के अवशेष दर्शनीय हैं। यहाँ आजातशत्रु द्वारा निर्मित 5 वीं सदी ई.पू. का किला देखा जा सकता है जहाँ उसने अपने पिता को कैद करके रखा था। इसकी 115 कि.मी. लंबी बाहरी दीवार पठारों के खंडों से निर्मित है।

बराबर गुफाएँ

गया से 24 किमी दूर बिहार के जहानाबाद जिले में अवस्थित, बराबर की गुफाएँ चट्टानों को काटकर बनाई गयी भारत की प्राचीनतम अवशिष्ट गुफाएँ है, जो ज्यादातर मौर्य साम्राज्य 322 का 185 ई.पू. के दौरान बनी जिसमें अशोक के कुछ अभिलेख भी हैं। यह मखदूमपुर प्रखंड मुख्याल्य से 11 किमी दूर स्थित है। बुद्ध धर्म को अपनाने के बावजूद अशोक ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता की नीति के तहत जैन एव अन्य संप्रदायों को भी फलने–फूलने का अवसर दिया। ये गुफाएँ मक्खली गोसाल द्वारा संस्थापित आजीवन संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा प्रयोग मे लाने के लिए बनाई गई थी। मक्खली गोसाला बुद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध और जैन धर्म के 24 वे अंतिम तीर्थकर महावीर के समकालीन थे। इन गुफाओं में चट्टानों को काटकर बनाई गई कई बुद्ध एवं हिंदू मूर्त्तियाँ हैं। बराबर की अधिकतर गुफाओं मे दो कमरे बने हैं, जिन्हें ग्रेनाइट की चट्टानों को काटकर बनाया गया है जिन की आंतरिक सतह पर ऊँचे दर्जे की चमकयुक्त पॉलिश की गई है और आकर्षक प्रभाव है। पहला कमरा एक बड़ा आयताकार हॉल है, जहाँ पूजा करने वेल लोग इकट्ठा होते थे और दूसरा कमरा छोटा है जो गोल एव गुंबदनुमा है, पूजा के लिए बनाया गया था। संभवतया इस दूसरे आंतरिक कमरे मे एक छोटा स्तूर जैसी संरचना होती थी लेकिन अब ये खाली है । ये सात गुफाएँ (सतगढवा) मौर्य सम्राट अशोक के समय में आजीवकों के लिए बनवाया गया था। ये गुफाएँ कठोर एकामक ग्रेनाइट चट्टानों को काटकर बनाई गई है जिनपर असाधारण पोलिश की कला का सुंदर नमूना प्रस्तुत करते हुए आंतरिक दीवारों पर असाधारण चमक वाली पॉलिश की गई है।

पितृपक्ष महासंगम

गया विश्व में पितरों के उद्धार के लिए सर्वश्रेष्ठ तीर्थ-स्थल माना गया है। इसे तीर्थों का प्राण कहा गया है। पौराणिक काल से ही इसकी महत्ता प्रतिष्ठापित है। कथाओं में कहा गया है कि सतयुग के पूर्व ब्रह्म ने सृष्टि का निर्माण किया, तब इसका श्रीगणेश गया के ब्रह्मयोनि पर्वत से ही हुआ था। गया का **पितृपक्ष मेला** हर वर्ष भादों के शुक्लपक्ष के अनन्त चतुर्दशी के दिन से प्रारंभ होता है। इस वर्ष यह मेला दिनांक **05 सितम्बर, 2017** से प्रारंभ होकर **20 सितम्बर, 2017** तक चलेगा। गया में सारे भारतवर्ष के तीर्थाटन करने वाले यात्री, निर्धारित विधि से अपने पूर्वजों की श्राद्ध-क्रिया करने आते हैं। श्राद्ध-क्रियाओं में पूर्वजों की आत्माओं की शांति के लिए पिंडदान एवं तर्पण करना ही प्रधान कर्म है, जो मुख्यत: तीन स्थलों-फल्गु नदी के तट पर, विष्णुपद मंदिर में तथा अक्षयवट के नीचे संपादित किया जाता है।

विष्णुपद मंदिर वैष्णवों के लिए प्रमुख तीर्थस्थलों में एक विशिष्ट स्थान रखता हैं। वर्तमान विष्णुपद मंदिर का निर्माण इन्दौर की **महारानी अहिल्याबाई** ने सन् 1766 ई० में जयपुर के प्रसिद्ध स्थापत्यकारों को बुलाकर कराया था। इस विशाल मंदिर की ऊँचाई 100 फीट तथा मण्डप 50 वर्ग फीट है। भगवान विष्णु के चरण चिन्ह के कारण ही इसका नाम विष्णुपद है, चरण चिन्ह 13 इंच लम्बा हैं।

ब्रह्मयोनि पहाड़ के पास अक्षयवट में एक विशाल वटवृक्ष है जहाँ गया में तीर्थ-कर्मों का अन्त होता हैं। कुछ तालाबों के तट पर भी पिंडदान किया जाता है, जिनमें उत्तर मानुष, सूर्यकुण्ड, वैतरणी, गोदावरी तथा सीताकुण्ड प्रधान हैं विष्णुपद मंदिर के पश्चिम में मार्कण्डेय नाम का शिव मंदिर है, जहाँ से मंगलागौरी देवी के मंदिर तक सीढ़ियाँ जाती हैं। विष्णुपद के निकट पश्चिम की ओर सूर्य मंदिर है। इस मंदिर में भगवान सूर्य के सारथी के साथ सात घोड़े वाली एक प्रतिमा है। इस मंदिर के सामने सूर्यकुण्ड हैं, जहाँ पिण्डदान किया जाता है। गया नगर के चारों ओर पहाड़ की चोटियों पर अवस्थित धर्मस्थलों पर भी पिंडदान किया जाता है, जिसमें उत्तर में रामशिला पहाड़ी (715 फुट ऊँचाई), उत्तर-पश्चिम में प्रेतशिला पहाड़ी (873 फुट ऊँचाई) इत्यादि प्रमुख है।

पितृपक्ष मेला में आये श्रद्धालुओं के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएँ

आवासन व्यवस्था :-

यात्रियों के ठहरने के लिए मेला क्षेत्र में पण्डागृहों, धर्मशालाओं तथा होटलों में आवासन की व्यवस्था रहती हैं इसके अतिरिक्त जिला प्रशासन द्वारा निम्नलिखित 26 स्थलों पर आवासन की व्यवस्था की गई है।

1.	जी. एस. एम. कन्या उ. वि. जेलप्रेस	14.	मध्य विद्यालय, शहमीर तक्या
2.	हरिदास सेमिनरी +2 उ.वि., गया	15.	न्यू मध्य विद्यालय, चाँदचौरा
3.	मध्य विद्यालय, डंकन	16.	कन्या म. वि. विराजमोहनी, गया
4.	मध्य विद्यालय, केन्दुई	17.	मध्य विद्यालय, घुघरीटांड
5.	हादी हाशमी +2 उ. वि., गया	18.	मध्य विद्यालय, अक्षयवट
6.	महावीर इन्टर विद्यालय, गया	19.	चन्द्रशेखर उ. वि. अक्षयवट
7.	महावीर मध्य विद्यालय, गया	20.	राजेन्द्र मध्य विद्यालय, गोदावरी
8.	अनुग्रह नारायण उच्च वि., गया	21.	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
9.	अनुग्रह नारायण मध्य वि., गया	22.	प्रखण्ड संसाधन केन्द्र, नगर निगम
10.	राजकीय कन्या उच्च वि., रमना	23.	अभ्यास म. वि., डायट कैम्पस
11.	टी० मॉडल इन्टर विद्यालय, गया	24.	रामरूचि बालिका इन्टर वि., गया
12.	टी० मॉडल मध्य विद्यालय, गया	25.	शहीद उच्च विद्यालय, गया
13.	+2 जिला स्कूल, गया	26.	निगमा मोनेस्ट्री, बोधगया

सम्पर्क पदा० :- **वरीय उप-समाहर्त्ता**, गया # 9471006318

यातायात व्यवस्था :-

तीर्थ यात्रियों को यातायात सुविधा उपलब्ध कराने हेतु जिला प्रशासन द्वारा 6 रूटों का निर्धारण किया गया है –

1.	रेलवे स्टेशन से विष्णुपद	2.	विष्णुपद से प्रेतशिला
3.	गांधी मैदान से विष्णुपद	4.	विष्णुपद श्मशान घाट से बोधगया
5.	गया कॉलेज खेल परिसर उत्तरी गेट से रामशिला/प्रेतशिला	6.	कण्डी नवादा से गया कॉलेज खेल परिसर/विष्णुपद मंदिर

मेला अवधि में **रिंग बस सेवा** चलाई गई है। यात्रियों की सुविधा के लिए बस, ऑटो एवं रिक्सा भाड़ा निर्धारित कर दिया गया है। साथ ही, प्री–पेड ऑटो सेवा **गया रेलवे स्टेशन** से 34 विभिन्न स्थलों के लिए उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही, टैक्सी ऑन कॉल की सुविधा निम्न टूर एवं ट्रैवेल्स के द्वारा उपलब्ध कराई जा सकेगी :-

डिलाईट टूर एवं ट्रैवेल्स गया # 9431225290	**अखण्ड ज्योति टूर एवं ट्रैवेल्स** गया # 9431272040	**गुरूकृपा टूर एवं ट्रैवेल्स** गया # 9934290558	**प्रेम टूर एवं ट्रैवेल्स** गया # 9430073077

सम्पर्क पदा० :- **जिला परिवहन पदाधिकारी**, गया # 9631629952

निःशुल्क स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर :-

तीर्थ यात्रियों के लिए चिकित्सा की विशेष सुविधा निम्न अस्पतालों में उपलब्ध कराई गई है :

1. अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, गया	2. जयप्रकाश नारायण अस्पताल, संक्रामक रोग अस्पताल एवं प्रभावती अस्पताल

24 घंटे कार्यरत शिविर

1. विष्णुपद मंदिर	2. रेलवे स्टेशन	3. गया कॉलेज खेल परिसर	4. निगमा धर्मशाला, बोधगया

इसके अतिरिक्त प्रातः 6 से संध्या 6 बजे तक कुल 12 स्थानों पर स्वास्थ्य शिविर बनाए गए हैं एवं 21 आवासन स्थलों पर संध्या 4 बजे से रात्रि 8 बजे तक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध रहेगी। शिविरों में डॉक्टर, पारा मेडिकल स्टॉफ एवं आवश्यक दवायें सुलभ है।

सम्पर्क पदा० :- **सिविल सर्जन**, गया # 9470003278

पण्डागणों की पहचान :-

पण्डों एवं उनके अधि त प्रतिनिधियों को **संवास सदन समिति, गया** के मुहर एवं हस्ताक्षर से फोटो आईडेंटिटी कार्ड निर्गत किया गया है। पहचान पत्र जरूर देखें। वेबसाईट एवं मोबाईल एप्प पर पण्डागणों की सूची उपलब्ध है।

सम्पर्क पदा० :- **सचिव, संवास सदन समिति**, गया # 8969669177

जन वितरण प्रणाली की दुकान :-

तीर्थयात्रियों को कुकिंग गैस उचित दर पर उपलब्ध कराने हेतु मेला क्षेत्र में विष्णुपद में एक अस्थाई बिक्री केन्द्र की स्थापना की गई है तथा यात्रियों की सुविधा हेतु सुधा डेयरी के नौ स्टॉल लगाये गये।

सम्पर्क पदा०– **जिला आपूर्त्ति पदा०**, गया # 9473460772

हेल्पलाईन :- गया शहर के महत्वपूर्ण स्थानों पर **"May I Help You"** सहायता केन्द्र की स्थापना की गई है। तीर्थ यात्री अपनी समस्याओं से प्रशासन को अवगत कराएँ।

सम्पर्क पदा० – **वरीय उप-समाहर्त्ता**, गया # 9835146531

पार्किंग स्थल :- नगर के पाँच स्थानों पर वाहनों के लिए पार्किंग स्थल बनाये गए है

सिकड़िया मोड़ बस स्टैण्ड	गया कॉलेज खेल परिसर	
प्रेतशिला पहाड़ी के निकट खाली स्थान पर	केन्दुई	आई०टी०आई०/पॉलिटेक्निक मैदान परिसर

छोटी–छोटी वाहनों का प्रवेश ब्रह्मसत तालाब के उत्तर तरफ प्रतिबंधित रहेगा।

सम्पर्क पदा० :- **जिला परिवहन पदाधिकारी**, गया # 9631629952

सूचना केन्द्र :- गया रेलवे स्टेशन एवं **विष्णुपद मंदिर** परिसर में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग का सूचना केन्द्र संचालित है। प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एवं कर्मचारी आपकी सेवा में 24 घंटे उपलब्ध हैं।

सम्पर्क पदा० :- **जिला जन-सम्पर्क पदा०**, गया # 9431631095

महत्वपूर्ण सरोवर :-

1. रुक्मिनी तालाब	2. वैतरणी तालाब	3. गोदावरी,	4. सूर्यकुण्ड,
5. ब्रह्मसागर,	6. रामशिला तालाब	7. पितामहेश्वर तालाब	

प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम :-

मेला में आये श्रद्धालुओं के स्वस्थ्य मनोरंजन के लिए प्रतिदिन सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग एवं पर्यटन विभाग के कलाकारों द्वारा संध्या 5:00 से 7:00 तक सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा आध्यात्मिक ज्ञानवर्द्धन के लिए मेला अवधि में संध्या 7:00 बजे से 10:00 बजे तक विष्णुपद मंदिर के प्रांगण में देश के विख्यात प्रवचनकर्त्ताओं द्वारा प्रवचन एवं भजन संध्या आयोजित है।

विशेष अनुरोध :-

- सड़े-गले खाद्य सामग्रियों का सेवन न करे।
- नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले एवं असामाजिक तत्वों से सावधान रहे।
- किसी अपरिचित व्यक्ति द्वारा दी गई खाद्य सामग्रियों का सेवन न करें।
- चापाकल एवं शुद्ध जलकूपों से पेयजल लें और गन्दे जल का व्यवहार पीने के लिए न करे।
- किसी भी समस्या या जानकारी के लिए निकटतम सहायता शिविर अथवा गश्ती दल से संपर्क करें। अफवाहों पर ध्यान न दें।
- वेदी, तालाब एवं सरोवरों को स्वच्छ रखें। पूजन सामग्रियों का विसर्जन तालाब में न करे।
- कृपया शौचालय का प्रयोग करें।
- कृपया अन्यत्र गंदगी ना फैलायें तथा प्रशासन को साफ सफाई में सहयोग दें।

सुरक्षा व्यवस्था (Police Help) :-

तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा एवं विधि-व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने के लिए नगर के पुलिस पदाधिकारियों/थानों के मोबाईल नम्बर निम्नलिखित हैं :-

1. कोतवाली थाना # 9431822198	2. सिविल लाईन्स थाना # 9431822199
3. मुफस्सिल थाना # 9431822201	4. डेल्हा थाना # 9431822219
5. बोधगया थाना # 9431822208	6. बेला थाना # 9431822209
7. रामपुर थाना # 9431822220	8. मगध मेडिकल थाना # 9431822222
9. विष्णुपद मंदिर थाना # 9431092838	

मेला क्षेत्र में कुल 70 स्थानों पर 24 घंटे पुलिस शिविर कार्यरत है, मंदिर परिसर में भी मेला थाना का गठन किया गया है। इन सुरक्षा शिविरों पर दण्डाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल की तैनाती की गई है। आवश्यकता पड़ने पर इनकी सहायता लें।

बिहार सरकार

राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

अधिसूचना

संख्या 8/नियम संशोधन (रा०मेला) – 03 09/2011 259 (8)/रा० दिनांक 02/09/2014

विभागीय अधिसूचना सं०–677 (8) रां० दिनांक 10.09.2009 द्वारा बिहार राज्य मेला प्राधिकार के प्रबंधन मे दिए गये निम्नांकित मेलों को राजकीय मेला का दर्जा दिया जाता है।

(i) पितृपक्ष मेला, गया

(ii) हरहिर क्षेत्र मेला, सोनपुर (सारण)

बिहार राज्यपाल के आदेश से
ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय, गुलजारबाग, पटना को अधिसूचना की दो प्रति एवं सी०डी० के साथ बिहार राजपत्र के असाधारण अंक में प्रकाशनार्थ प्रेषित करते हुए अनुरोध है कि उसकी 500 (पाँच सौ) अतिरिक्त प्रतियाँ राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को उपलब्ध करायी जाय।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– माननीय मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव, बिहार, पटना/माननीय मंत्री, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के आप्त सचिव, बिहार, पटना/मुख्य सचिव, बिहार, पटना/प्रधान सचिव, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के प्रधान आप्त सचिव, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– सभी प्रमंडलीय आयुक्त, बिहार/सभी जिला पदाधिकारी, बिहार को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– सभी विभाग/सभी विभागाध्यक्ष, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

महत्वपूर्ण दूरभाष संख्या/मोबाईल नम्बर

गया (कोड – 0631)	दूरभाष/मोबाईल
जिला पदाधिकारी	2222900, 2222800
वरीय पुलिस अधीक्षक, गया	2222901, 2222902
नगर पुलिस अधीक्षक, गया	9473191722
उप–विकास आयुक्त, गया	9431818351
सिविल सर्जन, गया	9470003278
अनुमंडल पदाधिकारी, सदर, गया	9473191246
पुलिस उपाधीक्षक, नगर, गया	9431800110
पुलिस उपाधीक्षक, विधि व्यवस्था, गया	9431800110
पुलिस उपाधीक्षक, यातायात, गया	9304055789
अधीक्षक, मगध मेडिकल कॉलेज, गया	9470003301
अधीक्षक, जय प्रकाश नारायण अस्पताल, गया	9470003263
अधीक्षक, प्रभावती अस्पताल, गया	9470003303
रेलवे स्टेशन प्रबंधक, गया	9471006726
रेलवे टूरिस्ट इन्फॉरमेशन सेन्टर, गया	2200672
रेलवे इन्क्वायरी, गया	2223320
संवास सदन समिति मेला नियंत्रण कक्ष, गया	2223114, 2223115 2223116, 2223117
फायर ब्रिगेड, गया	101, 222258 9199130188

आपातकालीन दूरभाष :- पुलिस - 100 फायर - 101 एम्बुलेंस - 102, 108

पितृपक्ष महासंगम - 2017

के अवसर पर पिण्डदान हेतु आगत सभी तीर्थ यात्रियों के सुविधार्थ स्थापित

हेल्पलाईन 'ई-समाधान'

9304401000

हेल्पलाईन सुविधा 24×7 उपलब्ध है।

www.pinddaangaya.in

ANDROID APP ON Google play App Store **pinddaangaya**

तीर्थयात्री द्वारा तर्पण

फल्गु में जलांजलि

पिण्डदान करते तीर्थयात्री

श्राद्धपूर्व तर्पण करते पिण्डदानी

पितृपक्ष मेला का दृश्य

ब्रह्मकुण्ड के तट पर तीर्थ–यात्री

गया में श्राद्ध का अनुष्ठान

विष्णुपद मन्दिर परिसर में तीर्थयात्री

2017 आस्था का संगम

गोदान करते पिण्डदानी

पावन ब्रह्मकुण्ड में तर्पण

प्रेतशीला पर बैंहगी के सहारे जाते तीर्थ यात्री

प्रेतशिला पर तीर्थयात्री

सामूहिक तर्पण

सीताकुण्ड पर पिण्डदान

फल्गु महा–आरती

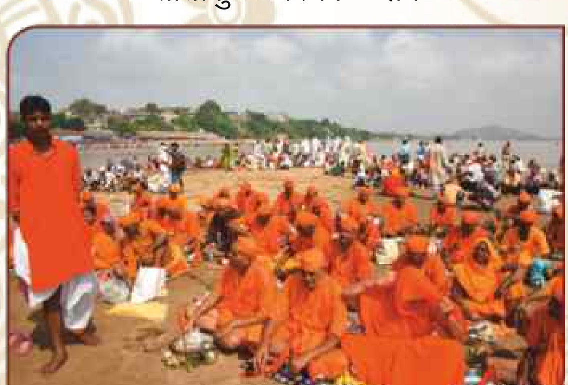

फल्गु तट पर पिण्डदानी

सूर्य–नमस्कार करते श्रद्धालु

मेले का विहंगम् दृश्य

मेले में सहायता शिविर

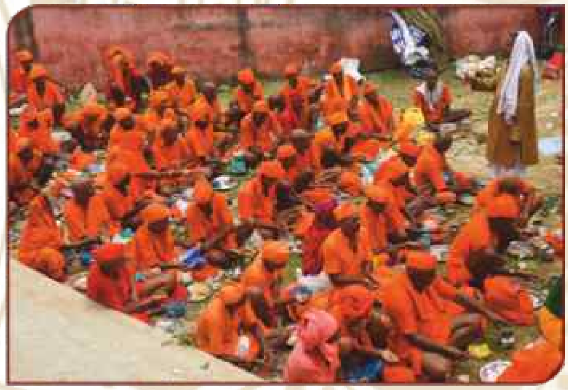

सामूहिक पिण्डदान

श्राद्धकर्म में संलग्न यात्री

आचार्य के निर्देशन में पितर–पूजा

गदाधर पर तीर्थयात्री

डोंगी के सहारे सीताकुण्ड जाते श्रद्धालु

Fortnight of the Ancestors
pitrapaksha
MAHASANGAM

गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

धर्मारण्य

सीताकुण्ड

वृद्ध परपितामहेश्वर

ब्रह्मयोनि पर्वत

प्रेतशिला पर्वत

रामशिला

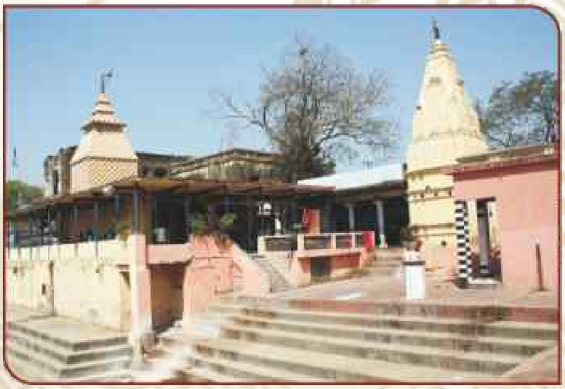

पितामहेश्वर

पवित्र फल्गु

गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

विष्णुपद मन्दिर

गया गदाधर मन्दिर

मार्कण्डेय मन्दिर

देवघाट

ब्रह्मसरोवर

अक्षयवट

सूर्यकुण्ड

जनार्दन मन्दिर

गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

महाबोधि मन्दिर, बोधगया

४० फीट ऊँची बुद्ध प्रतिमा

माँ मंगलागौरी मन्दिर

बगला स्थान

दुर्लभ मूँगा के गणेश (रामशिला)

दुर्लभ स्फटिक शिवलिंग (रामशिला)

सुजाता गढ़, बोधगया

माँ दु:खहरणी मन्दिर

2017 महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का भ्रमण

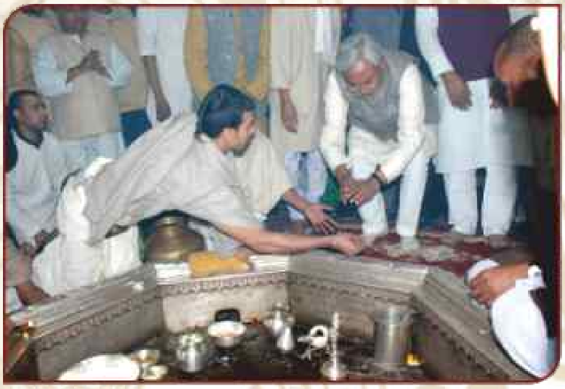

मा० मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार विष्णुपद में पूजा–अर्चना करते हुए

मन्दिर परिसर में मा० मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार

मा० शिक्षा मंत्री श्री कृष्णनंदन प्र. वर्मा मेला क्षेत्र का भ्रमण करते

मुख्य सचिव, बिहार श्री अंजनी कुमार सिंह देवघाट में

नगर विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री चैतन्य प्रसाद देवघाट पर

मा० कृषि मंत्री श्री प्रेम कुमार मेला क्षेत्र का निरीक्षण करते

विष्णुपद क्षेत्र में आयुक्त, जिलाधिकारी एवं अन्य

मेले की व्यवस्था में संलग्न आयुक्त तथा जिलाधिकारी

2017 तैयारियों की समीक्षा

मा० मुख्यमंत्री एवं उप–मुख्यमंत्री के द्वारा पितृपक्ष तैयारी की समीक्षा

मा० मुख्यमंत्री एवं उप–मुख्यमंत्री के द्वारा पितृपक्ष तैयारी की समीक्षा

मा० पर्यटन मंत्री, बिहार श्री प्रमोद कुमार के साथ समीक्षा

मा० स्वास्थ्य मंत्री, बिहार श्री मंगल पाण्डेय के साथ समीक्षा

मा० कृषि मंत्री मंत्री, बिहार श्री प्रेम कुमार एवं रेल प्रशासन के साथ समीक्षा

मुख्य सचिव, बिहार श्री अंजनी कुमार सिंह की अध्यक्षता में समीक्षा

जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ समीक्षा

पुलिस प्रशासन के साथ समीक्षा

2017 तैयारी में प्रशासन

मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह पितृपक्ष मेला मोबाईल एप्प जारी करते हुए

प्रमण्डलीय आयुक्त श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव के साथ मेला क्षेत्र का भ्रमण

प्रमण्डलीय आयुक्त श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव के साथ मेला क्षेत्र का भ्रमण

पितृपक्ष मेला 2017 का लोगो जारी करते हुए जिलाधिकारी श्री कुमार रवि

पितृपक्ष के अवसर पर विधि व्यवस्था एवं नागरिकों के साथ समन्वय बैठक

जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ पितृपक्ष मेला की समीक्षा

पितृपक्ष मेला कॉल सेन्टर का उद्घाटन

पितृपक्ष मेला कॉल सेन्टर का निरीक्षण

विष्णुपद क्षेत्र व धार्मिक स्थलों पर दें ध्यान

जागरण संवाददाता, गया : मुख्यमंत्री ने कहा कि विष्णुपद क्षेत्र एवं धार्मिक केंद्रों के सुंदरीकरण पर ध्यान दें। सड़कों की मरम्मत के संबंध में विभागीय प्रधान सचिव को एनएच-83, मसौढ़ी-पुनपुन रोड को प्राथमिकता के आधार पर दुरूस्त कराने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि वन विभाग के समन्वय से पितृवाटिका को स्थान चिह्नित किया गया है, जहां पर पिंडदान के लिए आनेवाले श्रद्धालु अपने ... में पौधे लगाएंगे।

पितृपक्ष मेले की तैयारी की समीक्षा

... सचिव • जागरण

तीर्थयात्रियों को न हो किसी तरह की परेशानी : प्रभारी मंत्री

संवाददाता ▸ गया

पितृपक्ष के मौके तीर्थयात्रियों को किसी तरह की परेशानी नहीं हो, इसका पूरा ख्याल रखा जाये. मेले के दौरान तैयारी ऐसी की जाये कि यहां आनेवाले तीर्थयात्री यहां की याद संजोये अपने घर वापस जाये. उक्त बातें रविवार को मेले की तैयारी का जायजा लेने पहुंचे जिले के प्रभारी सह शिक्षा व विधि मंत्री कृष्णनंदन वर्मा ने विष्णुपद इलाके में अधिकारियों से कही. उन्होंने कहा कि तैयारी में किसी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जायेगी. समय रहते यहां चलायी जा रही योजना...

व्यवस्था ऐसी हो कि लोग खुश हो जाएं

गया | प्रभात संवाददाता

पितृपक्ष की तैयारी

- संक्रामक अस्पताल दूसरे स्थान पर करें स्थानांतरित
- सीएम नीतीश कुमार ने पितृपक्ष मेला की तैयारी की समीक्षा की

पिंडवेदियों व धार्मिक स्थलों को विकसित करेगा पर्यटन विभाग

डीएम के साथ पर्यटन मंत्री ने गया की महत्ता के दृष्टिकोण से सुविधा की बात...

परिसदन में पर्यटन मंत्री के साथ बैठक करते जिलाधिकारी • जागरण

पितृपक्ष मेले की तैयारी की डीएम ने की समीक्षा

मेले में निजी आवासनों के निबंधन की तिथि आज तक

मेले की तैयारी की समीक्षा करते डीएम व अन्य।

जल्द से जल्द करायें विष्णुपद मंदिर इलाके का सौंदर्यीकरण : चैतन्य

संवाददाता ▸ गया

पितृपक्ष मेले की तैयारी का जायजा लेने पहुंचे प्रधान सचिव चैतन्य प्रसाद ने निगम के अधिकारियों से श्मशान घाट पर कहा कि हर काम में गुणवत्ता होनी चाहिए. इस दौरान बेतरतीब पेवर्स बिछते देख प्रधान सचिव भड़क उठे. उन्होंने कहा कि पेवर्स बिछाने में किसी तरह के मानक का ख्याल नहीं रखा जा रहा है. इसे दोबारा उखाड़ कर बिछाया जाये. साथ ही मनसरवा नाले का पानी नि... ढ...

...मेले को लेकर विष्णुपद मंदिर परिसर में निरीक्षण के दौरान दिशा-निर्देश देते

प्लेटफॉर्म पर लगेगी सीसीटीवी, तीन अतिरिक्त कंपनी फोर्स की होगी तैनाती, स्टेशन पर बेहतर होगी लाइटिंग

जंक्शन पर तीर्थयात्रियों की बेहतर सुरक्षा, सेवा और सुविधा मिलेगी : रेल एसपी

सिटी रिपोर्टर | गया सदर

पितृपक्ष मेला की तैयारी

जंक्शन पर पितृपक्ष मेला में आने वाले तीर्थयात्रियों की बेहतर सुरक्षा, सेवा और सुविधा दी जाएगी। ये बातें रेल एसपी जितेन्द्र मिश्र ने सोमवार को हुई बैठक में कही। रेलवे के सभी विभागों के पदाधिकारियों के साथ हुई बैठक में पितृपक्ष मेला की तैयारी पर चर्चा हुई। रेल एसपी ने बताया कि तीर्थयात्रियों की सुरक्षा को लेकर प्लेटफॉर्म पर सीसीटीवी कैमरा ...

- जीआरपी, आरपीएफ व स्थानीय पुलिस के साथ समन्वय बनाकर काम का निर्देश

ट्रैक किनारे स्थित गांव के लोगों को किया जाएगा जागरूक

मेला क्षेत्र से हटाया गया अतिक्रमण

जागरण संवाददाता, गया : पांच सितंबर से पितृपक्ष मेला शुरू होगा। मेला में आए श्रद्धालुओं को किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े, इसको लेकर जिला प्रशासन और नगर निगम ने गुरुवार को मेला क्षेत्र में अतिक्रमण हटाया।

अतिक्रमण हटाने में नगर निगम सिटी मैनेजर सुरेंद्र राम, राजस्व पदाधिकारी विजय कुमार सिन्हा, चांदौती अंचलाधिकारी विजय कुमार सिंह सहित काफी संख्या में पुलिस बल था। सिटी मैनेजर ने बताया कि पितृपक्ष मेला क्षेत्र में अतिक्रमण हटाया जाएगा। अतिक्रमण हटाने का काम सिविल लाइंस थाना के पास प्रारंभ किया, जो दिग्घी तालाब, कोयरीबारी, नादरागंज, रामसागर तालाब, चांदचौरा मोड़, समीर तकिया, ...

दिग्घी चौराहा पर अतिक्रमण हटाता जेसीबी • जागरण

पितृपक्ष मेला क्षेत्र में विशेष सफाई शुरू

जागरण संवाददाता, गया : विश्वप्रसिद्ध राजकीय पितृपक्ष मेला का शुभारंभ पांच सितंबर से होने जा रहा है। मेला में आए तीर्थयात्रियों को परेशानी न हो, इसके लिए निगम कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहता है। मेला क्षेत्र में सफाई से लेकर पेयजल, शौचालय तक के लिए निगम ने बेहतर काम रखा है। मेला में तीर्थयात्रियों को सुविधा को लेकर ... के घाटों की सफाई की जा रही है। निगम द्वारा श्मशान घाट, देवघाट, गदाधर घाट की सफाई की जा रही है। निगम के स्वास्थ्य प्रबंधक शैलेंद्र ... ने बताया कि पितृपक्ष मेला क्षेत्र में सफाई अभियान शुरू है। करीब 20 अगस्त से ही ...

तैयारी

- प्रत्येक दिन चार सौ सफाईकर्मी कर रहे मेला क्षेत्र की साफ-सफाई
- श्मशान घाट का शौचालय हुआ चालू, तालाब के टूटे टाइल्स की मरम्मत

551 कर्मियों की सूची तैयार

पितृपक्ष मेला क्षेत्र नगर निगम द्वारा दो पाली में सफाई कराने की योजना बना रहा है। दो पाली में सफाई को लेकर 551 सफाईकर्मी की सूची बना लिया गया है। प्रथम पाली में सुबह 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक तथा दूसरा पाली 2 बजे से शाम 8 बजे तक सफाई की जाएगी। रात्रि में भी मेला क्षेत्र की सफाई किया जाएगा।

घाटों पर नहीं फेंके मलबा

मेला क्षेत्र फल्गु नदी के घाटों पर मलबा फेंकने वाले पर नगर निगम द्वारा कानूनी कार्रवाई किया जाएगा। मेला क्षेत्र में घाटों पर मलबा फेंकने पर प्रतिबंध है। स्वास्थ्य प्रबंधक ने बताया कि ... घाट पर मलबा स्थानीय लोगों द्वारा फेंका गया है। अगर घाटों पर मलबा फेंका गया तो निगम कानूनी कार्रवाई करेगा।

आयुक्त ने अधिकारियों को दिया टास्क

प्रमंडलीय आयुक्त ने पितृपक्ष मेला क्षेत्र का किया भ्रमण, अधिकारियों को दिये कई निर्देश

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

गया।

आसन्न पितृपक्ष मेला की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। मेले में बेहतर व्यवस्था हो, इसके लिए प्रमंडलीय आयुक्त जितेन्द्र श्रीवास्तव काफी गंभीर हैं। बुधवार को उन्होंने एवं जिलाधिकारी कुमार रवि ने पितृपक्ष मेला की तैयारियों की अद्यतन स्थिति के संबंध में प्रगति की समीक्षा के लिए मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया। सर्वप्रथम आयुक्त एवं जिलाधिकारी ने विष्णुपद क्षेत्र, देवघाट का भ्रमण किया।

जिलाधिकारी ने आयुक्त को विष्णुपद क्षेत्र में पितृपक्ष मेला के लिए जिला प्रशासन एवं विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों के संबंध में जानकारी दी। देवघाट पर नगर निगम के माध्यम से बेहतर साफ सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश ...

... एवं पौराणिक पृष्ठभूमि के विषय में संक्षिप्त विवरण फोटो सहित पितृपक्ष के लिए तैयार वेबसाईट पर अपलोड करने को कहा। इंडिया पावर को विष्णुपद क्षेत्र में अवैध विद्युत कनेक्शन के विरूद्ध कारवाई का निर्देश दिया गया। नगर आयुक्त को घाट पर विचरण कर रहे सांड, गाय को पकड़कर गोशाला में रखवाने का निर्देश दिया गया। पटना नगर निगम से इसके लिए विशेष हाइड्रोलिक वाहन अभी से ही मंगवा लेने को कहा गया। वहीं सदर अनुमंडल पदाधिकारी को पशुचारा का आकलन कर पशुपालन विभाग के माध्यम से आवंटन प्राप्त करने का निर्देश दिया गया। आयुक्त ने आवारा पशुओं को पकड़ने हेतु वाहन क्रय करने का निर्देश दिया। विष्णुपद के बाद आयुक्त एवं जिलाधिकारी ने सीताकुंड का निरीक्षण किया। ...

पितृपक्ष मेले के दौरान प्रशासन व पुलिस फ्रेंडली हो : डीएम

■ सहारा न्यूज ब्यूरो।

गया।

पितृपक्ष मेला में फ्रेंडली प्रशासन एवं फ्रेंडली पुलिस दिखना चाहिए। पितृपक्ष मेला में देश विदेश से आने वाले तीर्थ यात्रियों से मित्रवत व्यवहार रखें, उनकी सहायता करें, कठिनाई में उन्हें सहयोग करें ताकि वे जब वापस जायें तो अपने ... पितृपक्ष मेला में मिले ...

समिति के सदस्यों से उक्त बातें कह रहे थे। जिलाधिकारी ने 11.08.17 को मुख्य सचिव, बिहार की अध्यक्षता में पितृपक्ष मेला की तैयारियों की समीक्षा बैठक में प्राप्त निर्देशों के संबंध में सभी को अवगत कराते हुए कहा कि हर्ष का विषय है कि आईडीएच अस्पताल में यात्री भवन निर्माण की स्वीकृति दी गई जिसका पर्यटन विभाग के द्वारा निर्माण कराया जायेगा। पीएचईडी द्वारा बेहतर मापदंड के शौचालयों निर्माण का निर्देश है। पितृपक्ष मेला के अवसर पर अतिरिक्त रेलगाड़ी चलाने हेतु अनुरोध पत्र भारतीय रेल को भे...

पिंडदानियों के लिए बनेगा छह मंजिला भवन

गया | प्रधान संवाददाता

संक्रमण रोग अस्पताल परिसर की एक एकड़ जमीन पर लिफ्टयुक्त छह मंजिला आवास स्थल का निर्माण होगा। शुक्रवार को पटना सचिवालय में पितृपक्ष मेला की तैयारी की समीक्षा के दौरान मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह ने इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति प्रदान कर दी।

समीक्षा के दौरान आयुक्त जितेन्द्र श्रीवास्तव ने बताया कि संक्रमण अस्पताल परिसर में चार एकड़ जमीन अनुउपयोगी है। यात्रियों के ठहराव के लिए निवास स्थान बनाने का प्रस्ताव पर्यटन विभाग को दिया गया है। यात्री ...

पटना में शुक्रवार को पितृपक्ष मेला पर कैलेंडर जारी करते अधिकारी। • हिन्दुस्तान

पेशेवर एजेंसियों को ...

का भी निर्देश दिया गया। आवारा पशुओं विशेषकर गायों को गौशाला आदि में रखने के लिए कहा गया। मुख्य सचिव ने कहा कि प्रकाश पर्व में शौचालय की जैसी व्यवस्था की गई थी उसी तरह प्री फैब शौचालय की व्यवस्था की जाए। पटना गया एनएच 83 को पितृपक्ष मेला के मौके पर दुरूस्त कराने का निर्देश दिया गया।

मोबाइल एप हुआ लॉंच

इस मौके पर गया जिला प्रशासन द्वारा तैयार किया गया मोबाइल एप मुख्य सचिव ने लॉंच किया। डीएम कुमार रवि ...

प्रकाश पर्व के तर्ज पर होगी व्यवस्था

■ सरकार से मिलेंगे पर्याप्त रुपये

संवाददाता ▸ गया

पटना में आयोजित प्रकाश पर्व के तर्ज पर पितृपक्ष मेले को आयोजित करने का निर्देश मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह ने दिया है. शुक्रवार को पटना में आयोजित बैठक में मुख्य सचिव ने कहा कि इस काम को करने में कुशल एजेंसी की व्यवस्था करने के लिए ...

पटना सचिवालय में पितृपक्ष मेले से संबंधित पुस्तक का लोकार्पण करते मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह, डीजीपी पीके ठाकुर, गृह सचिव अमीर सुबहानी, पर्यटन सचिव ...

पिंडदानियों की सुविधा के लिए एप लांच

पितृपक्ष मेले में पिंडदानियों की सुविधा हेतु मुख्य सचिव ने मोबाइल एप लांच किया. इस बारे में डीएम ने बताया कि इस मोबाइल एप के माध्यम से वहां पहुंचने वाले यात्रियों को गया कैसे पहुंचा जाये, कहां ठहरें, पंडाजी की सूची, अनुष्ठान कार्यक्रम, किराया दर, यातायात व्यवस्था, टूर पैकेज, कॉल डायरेक्टरी व तीर्थ स्थलों की जानकारी मिलेगी. उन्होंने कहा कि पितृपक्ष मेले को लेकर जिला प्रशासन द्वारा कॉल सेंटर स्थापित किया गया है. इसके नंबर-91-9304401000 पर वहां की सारी जानकारी भी ली जा सकती है. वहीं, तीर्थ यात्रियों को www.pinddaan-gaya.in वेबसाइट पर भी पूरी जानकारी मिलेगी. इस मौके पुलिस महानिदेशक पीके ठाकुर, गृह विभाग के प्रधान सचिव आमिर सुबहानी, भूमि व राजस्व सुधार विभाग के प्रधान सचिव विवेक कुमार सिंह, वित्त विभाग के प्रधान सचिव सुजाता चतुर्वेदी, नगर विकास विभाग के प्रधान सचिव चैतन्य प्रसाद, पथ निर्माण विभाग के ...

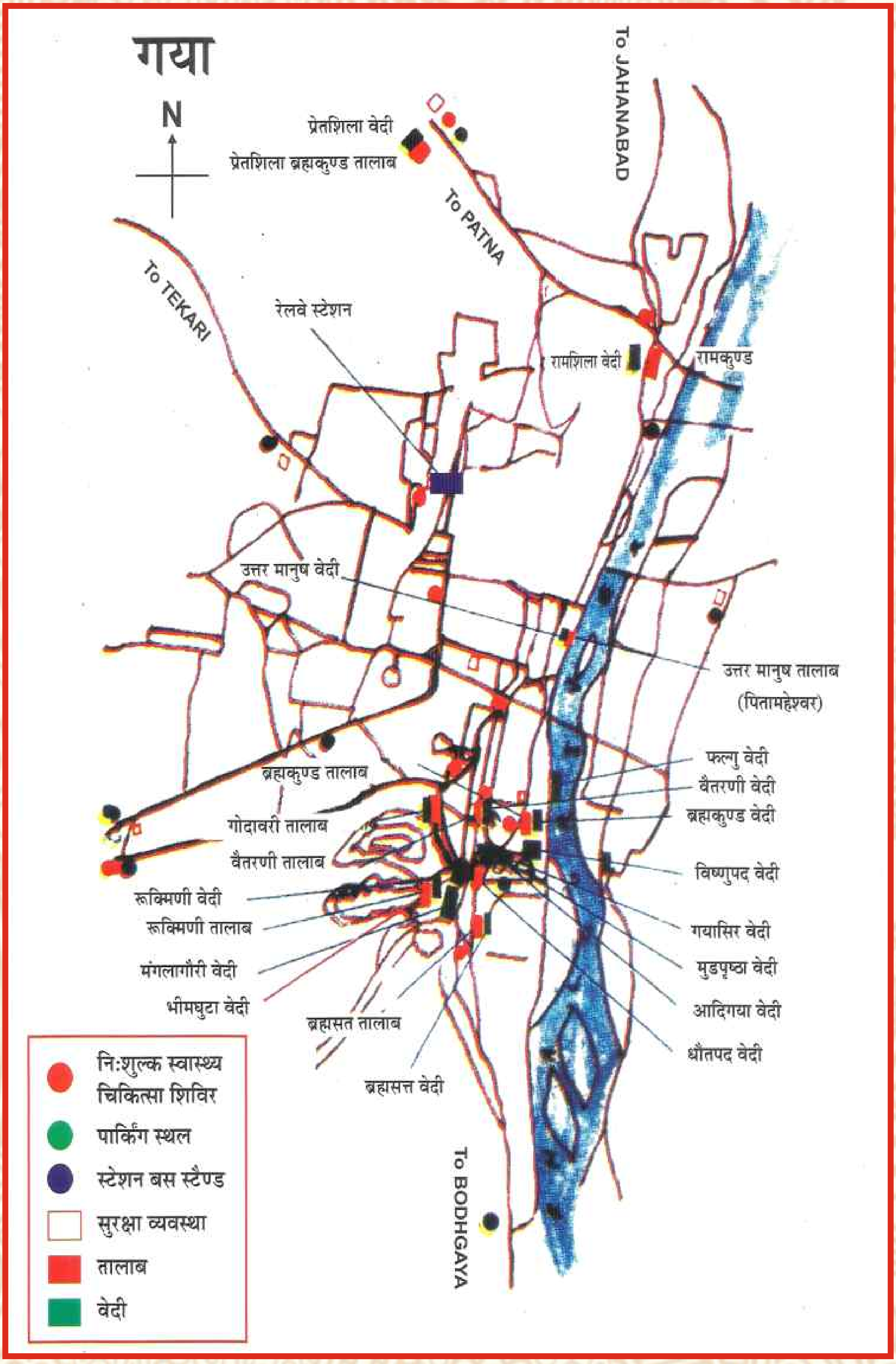
गया
N
To JAHANABAD
प्रेतशिला वेदी
प्रेतशिला ब्रह्मकुण्ड तालाब
To PATNA
To TEKARI
रेलवे स्टेशन
रामशिला वेदी
रामकुण्ड
उत्तर मानुष वेदी
उत्तर मानुष तालाब
(पितामहेश्वर)
ब्रह्मकुण्ड तालाब
फल्गु वेदी
वैतरणी वेदी
गोदावरी तालाब
ब्रह्मकुण्ड वेदी
वैतरणी तालाब
विष्णुपद वेदी
रूक्मिणी वेदी
रूक्मिणी तालाब
गयासिर वेदी
मुडपृष्ठा वेदी
मंगलागौरी वेदी
आदिगया वेदी
भीमघुटा वेदी
ब्रह्मसत तालाब
धौतपद वेदी
ब्रह्मसत्त वेदी
नि:शुल्क स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर
पार्किंग स्थल
स्टेशन बस स्टैण्ड
सुरक्षा व्यवस्था
तालाब
वेदी
To BODHGAYA

Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha MAHASANGAM

पितरों के प्रति हमारी श्रद्धा ....

पितृपक्ष महासंगम

संस्कृतियों का संगम :

हेल्पलाईन (24×7) :
9304401000

कन्ट्रोल रूम :
0631 - 2223114 - 17

www.pinddaangaya.in

ANDROID APP ON Google play
App Store

pinddaangaya